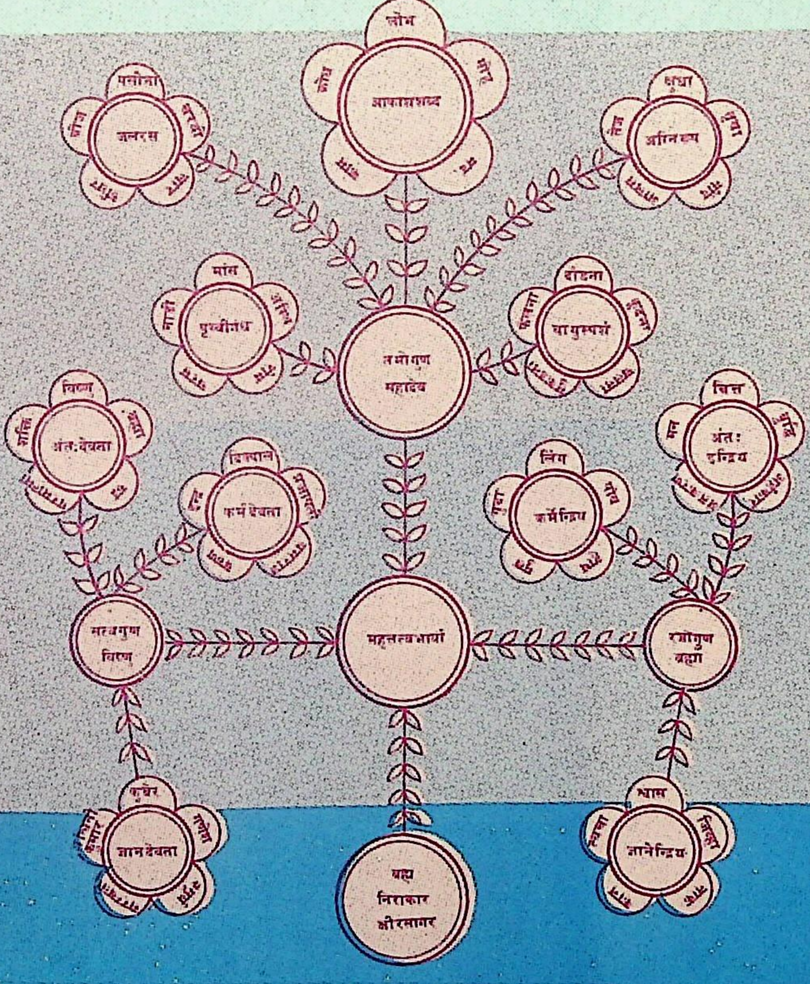
अभिलाखसागर



खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन
बम्बई

एक ॐकार सद्गुरु प्रसाद

अभिलाखसागर

श्रीस्वामि अभिलाख उदासीकृत

☆

मुद्रक एवं प्रकाशकः
खेमराज श्रीकृष्णदास,
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, मुंबई - ४०० ००४.

संस्करण : जून २०१६, सवंत् २०७३

मूल्य : २०० रुपये मात्र ।

Printed by Shri Sanjay Bajaj for M / s Khemraj Shrikrishnadass proprietors Shri Venkateshwar press Mumbai 400 004. at their Shri Venkateshwar press, 66, Hadapsar Industrial Estate, Pune-411013.

प्रस्तावना

★

विदित हो कि, आजकल इस दुनियामें लोग और तरहके हुए हैं कि कोई स्त्रीपर ध्यान देते हैं। कोई द्रव्यपर ध्यान देते हैं। कोई व्यापार करते हैं, कोई चाकरी करते हैं। कोई इस दुष्ट पेटके वास्ते लोगोंको फँसाते भी हैं तथा चोरी भी करते हैं। परंतु मैं कहांसे आया, फिर कहां जानेवाला हूं। मेरा कर्तव्य क्या है। इस बातपर कोई भी ध्यान नहीं देता। अर्थात् मायाजालमें बद्ध हो गये हैं। ऐसे लोगोंपर उपकार करनेके वास्ते मेरे गुरु श्रीस्वामी "अभिलाख दासजी" उदासी अयोध्यावासीने यह ग्रंथ अपने अनुभवसे बनाया और शहर एलचपुर अमीनाथ महादेवपर संवत् १९४९ आश्विन पूर्णिमाके दिन हँसते बोलते शरीर छोड़ दिया और भी इनके बनाये ज्योतिष वैद्यक, रसायन, रमल आदि विषयोंमें बहुत ग्रंथ हैं। मेरे गुरु, महात्मा, साधु, सिद्ध थे। इन्होंने चार धाम, सातों पुरी, हिंदुस्तान, तुर्कस्तान चीन, कोष्ठा आदि सब देशोंमें जहां आदमीकी गति हो सकती है, तहां तक यात्रा की है। और बहुत लोगों पर प्रत्यक्ष उपकार किये हैं। कितनेक कोढ़ियोंका शरीर अच्छा किया, अंधोंको आंखें दिये, इन्दौरमें एक मालीका मरा हुआ लड़का जिला-दिया, खण्डुवामें कुछ कारण होनेसे रेलगाडी पर बड़ा चमत्कार दिखाके बहुत लोगोंको परिचिति दिखाई। ऐसे एक कि बहुत ही चमत्कार इनके जगतमें प्रसिद्ध हैं, मैं भी यात्रा समय उन्नीस वर्षतक इनके साथ यात्रा करता रहा अस्तु प्रकृत –'अभिलाखसागर" ग्रंथमें ग्यारह तरंग हैं। प्रत्येक तरंगमें एक चार आठ कई लहरियां हैं. इस ग्रंथका ऐसा ख्याल है कि, इस ग्रंथकारने आप ही शिष्य होकर सैंतालीस महात्मा गुरुओंके पास जा 'ब्रह्म क्या चीज है और इसका अनुभव कैसे मैं पाऊंगा ? ऐसा ब्रह्मके विषय प्रश्न किया है फिर महात्मा गुरुओंने अपने अपने भिन्न-भिन्न मतसे उत्तर दिये। परंतु ब्रह्मका अनुभव नहीं हुआ और उनके कहनेमें बहुत असंगति भी थी। इसीसे उन सब मतोंका खंडन किया। फिर आखिर एक महात्मा गुरुसे 'नाम ब्रह्म है' ऐसा उपदेश पाया और इस प्रकार अनुभव भी हुआ, इससे नाम ब्रह्म है ऐसा अंतमें सिद्धांत किया है। ऐसा यह ग्रंथ मेरे गुरुके स्वयं हाथसे लिखा हुआ मेरे पास था मैंने यथामति शुद्ध करके वह गुरुसेवा तथा लोकोपकारके वास्ते कल्याणस्थ लक्ष्मीवेंकटेश्वर' छापखानेके अधिकारी श्रीयुत गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदासजीको तथा श्रीयुत खेमराज श्रीकृष्णदासजीको सब रजिष्टरी हक्कसहित दे दिया है। इसमें कुछ मेरी भूल चूक हो तो साधु महाशय क्षमा करें।

द:-रामदास उदासी, अयोध्यावासी

अभिलाखसागरकी विषयानुक्रमणिका

★

इति अभिलाखसागरकी अनुक्रमणिका समाप्त

अभिलाखसागर

ॐ

श्रीगणेशाय नमः

प्रथम तरंग

वन्दनविचार

प्रथम—वारंवार श्रीगुरु महाराजके चरणकमलकी धूलीको आदि-मध्य-अन्त तीनों कालमें पैरी पैर और मत्था टेकता हूं। जो महाघोर (भव) सागररूपी संसार पार होनेके निमित्त सहज जहाज है और अज्ञानरूपी अन्धकार नाश होनेके कारण अखण्ड सूर्य है।

दूसरे—निर्गुण निराकार निरंजन अविनाशी अलख नामको मन, कर्म, वचनसे कोटयनु कोटि निहोरा और वन्दना करता हूं। जो सर्वव्यापक और सर्वकर्ता और सर्वज्ञ होकर आजतक किसीके निश्चयमें नहीं आया और ब्रह्मा, विष्णु, महेश, शेष, गणेश आदिक देवताओंने भी उसका भेद नहीं पाया।

तीसरे—उस निराकारकी इच्छा माया महामोहिनीको जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति तीनों अवस्थामें महापद्म जुहार और नमस्कार करता हूं। जो अद्वैत अखण्ड परब्रह्म परमात्माके

ज्ञान नष्ट करके आवागमन जन्म मरण गुप्त उपाधि संसारमें सर्वज्ञ चैतन्य साक्षीको मोहित और बंधन किया और कनक कामिनीरूपी विषय होकर चारों प्रकारके जीवोंको कीट मर्कटके समान—अज्ञान और अशक्त किया ।

चौथे—आहार निद्रा मैथुन तीनों प्रकृतिको स्थूल सूक्ष्म कारण तीनों शरीरसे हजारों निछावर और अरदास करता हूं जो । चौरासी लाख योनिमें प्रधान होकर कोई जीव चराचरको क्षणमात्र शान्त नहीं किया और जीवनपर्यन्त हर्ष भय तथा दुःख सुखसे कोई निवृत्त नहीं होता ।

पांचवें—तमोगुणी अहंकार हमको प्रात मध्याह्न सायंकाल त्रिकालमें अर्व खर्व पालागन और प्रणाम करता हूं । जो इन्द्रपदवी प्राप्त होनेपर भी आशा तृष्णा और वासनासे रहित नहीं होता और अज्ञानरूपी शरीरका तदाकार होकर अपने निराकार रूपको भूलकर शरीरके दुःख सुखको अपना दुःख सुख जानता है ।

छठें—अपने माता पिताको भूत भविष्यत् वर्तमान तीनों कालमें लाखों विनती और करुणा करता हूं । जिसने मल और मूत्रसे इस देहको विमल करके अज्ञान समयमें पालन किया और नाना प्रकारका प्रपंच समान ज्ञान, संसारी मार्गका उपदेश किया ।

सातवें—भेष और बानेको बाल तरुण वृद्ध तीनों अवस्थामें साष्टांग अनन्त दंडवत् और धोक देता हूँ । जिसके

बनानेमें यह शरीर प्रपंची पंच धातु जडकी कुधातुसे सुधातु होजाती हैं और पाषाणरूपी जड बुद्धि विमल होकर पारसरूप हो जाती है ॥

इति अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद इष्टदेव आदिक वन्दनविचार नाम प्रथम तरंग ॥ १ ॥

दूसरा तरंग

ग्रन्थविचार

अब कुधातुजन्मकी कथा अथवा गृहस्थाश्रमकी व्यवस्था वर्णन करना इस ग्रन्थमें निरर्थक और विस्तार है । केवल सुधातुजन्मकी कथा सूक्ष्म सिद्धान्त ब्रह्मज्ञानका जो सन्त और महात्माओंके सत्संगमें प्राप्त हुआ अभिलाखसागरग्रन्थ नाम धरके गुरु-शिष्यका सम्वाद जो तरंग और लहरीके समान है सो वर्णन करता हूं । जिसके पढने और सुननेसे श्रोता वक्ता अधिकारीजन सिद्धान्त पदार्थको जानकर अत्मज्ञान और ब्रह्मज्ञानके सुखको प्राप्त होवेंगे और अनेक प्रकारकी भ्रमना जो ब्रह्म निराकारके विचारमें ब्रह्मज्ञानी जगज्ज्ञानी वादविवाद करते हैं नाश होकर निश्चय तत्त्वपद जो अनेक महात्माओंके सत्संगमें सिद्धांत हुवा जानेंगे और दासको इस परिश्रमके बदले भूल चूक माफ करके आशीर्वाद देवेंगे । यह मूर्ख अज्ञान सर्व भेषका सेवक "अभिलाखदास" उदासी जब संचित प्रारब्धके संयोगसे संसारीव्यवहारके योग्य नहीं रहा

अथवा इस प्रपंचके संयोग अपनेमें सामर्थ्य नहीं देखा तब जगत्के व्यवहार और सम्पदासे हानि ग्लानि मानकर भगवच्छरण जानेकी इच्छा की और अच्छे २ सन्त महात्मा सिद्धोंके शरणमें जाकर भगवच्छरण जानेकी राहका विचार किया और बहुत काल सातों पुरी चारों धाम चारों दिशामें ऐसे गुरुकी खोजमें जो भगवच्छरण जानेकी राह शुद्ध निर्मल उपदेश करे भ्रमता रहा। बडे २ सिद्ध महात्मा श्रीमन्त सन्त महन्त स्थानधारी जमा-तधारी जिनके अखाडेमें हजारों चेला नौकर चाकर हाथी घोडा राजेश्वरी स्थान मकान माफी जागीर वर्षासनवाले मिले, परन्तु अपना मनोरथ सिद्ध नहीं हुआ । वे लोग भगवच्छरण जानेकी राह क्या जानें ? तब लाचार होकर जंगल उत्तराखण्डको जहां सुमेरुगिरि और हिमालय पहाड और सन्त महात्माओंका मूलस्थान और खान है तहां चला-गया । वहां भी अनेक महात्माओंके सत्संगमें कुछ काल रहकर उनका ज्ञान ध्यान देखता रहा । जो सन्त महात्मा अपने विचारमें अच्छा आता रहा उनकी सेवा करके प्रसन्न हुए और वे लोग भी अपने २ ज्ञान बुद्धि प्रमाण जैसा जिनको अनुभव था, तैसा तिसको भगवच्छरण जानकी राह उपदेश करते रहे । वही संवाद यथार्थ जैसाका तैसा गुरु शिष्यका प्रश्नोत्तर केवल ब्रह्म-ज्ञानका सूक्ष्म सिद्धान्त कहता हूं । श्रोता वक्ता अधिकारी सम्बन्धीजन ब्रह्मज्ञान मेरी वन्दना और

निहोरेपर कृपा करके अच्छी तरह ध्यान रक्खे कि इस ग्रन्थमें महात्मा गुरुशब्द अनेक हैं उनका विस्तार आगे ग्रन्थ देखनेमें प्रगट होगा । नाम और पता उनका अच्छी तरह ध्यानमें नहीं है इस कारण नहीं लिखता । और मैं शब्द एक केवल ग्रन्थका कर्ता मूर्खता अज्ञानताकी सम्पूर्ण सत्ता "अभिलाखदास उदासी" आत्मज्ञानी अयोध्यावासी हूँ । ग्रन्थका यह कारण (उत्पत्ति) जानना चाहिये ।

इति अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद कारणोत्पत्ति ग्रन्थ विचारनाम दूसरा तरंग ॥ २ ॥

तीसरा तरंग

मार्ग विचार

भगवच्छरण जानेकी राह भगवान जाने

श्रीष्टदेवाय नमः ॥ प्रगट हो कि, जंगल उत्तराखंडमें अनेक पहाडोंके बीचमें एक बडा पर्वत है,उसका आदि और अंत किसीने नहीं जाना । उसको छोटा सुमेरुगिरि नाम पर्वत कहते हैं । उसपर अच्छे २ महात्मा सिद्ध इच्छारूपी ज्ञानस्वरूपी वास करते हैं । उनका हाल सम्पूर्ण देवसमान है । आकाशगंगाका जल, कंद, मूल भोजन अष्टप्रहर परब्रह्मका ज्ञान ध्यान वैराग्यमें दृढ इस रहनी और वृत्तिसे सदा आनन्दमें रहते हैं । उस मंडलीमें एक महात्मा संपूर्णज्ञान और भक्तिके रूप जो दर्शाते थे तब मैं उनके पास गया और सब हाल अपना कहकर भगवच्छरण जानेकी राह पूँछी

तब महात्मागुरु बोले कि मेरेको४युग अथवा४८ वर्ष हो गये, राहका पता नहीं मिला। मेरे ज्ञानमें जिसको वह अपनी शरणमें बुलावे वह जा सकता है और रास्ता भी उसीको प्राप्त होगा, दूसरा कोई जा नहीं सकता और मार्ग भी प्राप्त नहीं हो सकता। मैंने हाथ जोडकर कहा कि, भगवान्के बुलानेका क्या कारण है ? उसके दरबारमें अपने बिना कौन बडा कार्य है ? जो बुलावेंगे। इस ज्ञानमें संसारी प्रपंच छोडने वाले धोबीके कुत्ते हुए,न घरके न घाटके,और मैं भी सर्पकी तरह अज्ञान होकर छछुंदर पकड लिया; अब छोडता हूं तो अंधा होता हूं और खानेमें प्राण जाता है. और तुमने पहले अपने गुरुसे राहका विचार क्यों नहीं किया ? और जब गुरुने राह नहीं बताया तो तुमने क्या उपदेश पाया, और चार युग विना विचारे क्यों परिश्रम किया ? आखिर ऊटका पाद हुआ और आगे भी जो परिश्रम होगा निरर्थक जावेगा। मेरे ज्ञानमें भगवानके बुलानेपर आसरा रखना निश्चय आकाश फलफूलकी आशा करना है। यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे। मुझको जबाब दिया कि, मेरेको भगवच्छरण जानेकी राह नहीं दर्शाती और तुम भी जब खोजना करके हार जाओगे तब हमारा ज्ञान याद होकर प्रमाणहोगा।

इति अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद तीसरे तरंगमें
भगवच्छरण नाम प्रथम लहरी।

हठयोगआदि भगवच्छरण जानेकी राह बहुत हैं

श्रीसरस्वत्यै नमः ॥ मैं दूसरे महात्माके पास गया और

सब हाल अपना कहा तब महात्मा गुरु बोले कि, भगवच्छरण जानेकी राह अनेक हैं। इस उपायके वास्ते चार वेद छः शास्त्र अठारह पुराण व्यासभगवान्‌ने बनाये और लाखों ग्रंथ दूसरे आचार्योंके बनाये हुए मौजूद हैं और योगशास्त्र प्रमाण अनेक राह भगवच्छरण जानेकी प्रगट हैं। उन राहों मेंसे किसी राहपर जाना चाहिये। मैंने हाथ जोडकर कहा कि, मेरे जानेके योग्य जो राह निर्मल और शुद्ध हो उसका कृपा करके उपदेश कीजिये मैं जाऊंगा तब महात्मा गुरु बोले कि; प्रथम राह भगवच्छरण जानेकी श्रवण मनन निदिध्यास है। भगवत्‌की कथा अष्ट प्रहर प्रेमसे श्रवण करना और उसका एकांतमें मनन करना अथवा विचार करना है। पीछे उसका निदिध्यास करना अर्थात् दृढ होना उस प्रमाण चलना, अनेक भक्तोंको इसी राहसे भगवत्‌की प्राप्ति हुई अथवा मुक्ति हुई। मैंने हाथ जोडकर कहा कि, मुझको कथामें प्रीति नहीं होती और अर्थ समझमें नहीं आता और सुनी हुई वार्ता भूल जाता हूँ और कथा आरंभके पहले निद्रामें नाकसे शब्द आरंभ होता है और पुराणोंकी कथापर निश्चय नहीं आता। जैसे कुंभजऋषिने सातों समुद्रोंको हाथकी गद्दीपर रखकर पान कर लिया और पीछे मूत दिया। इस राहसे मेरा जाना किस प्रकारसे होवे? तब महात्मा गुरु बोले कि, दूसरी राह भगच्छरण जानेकी देवप्रतिमा पूजन है विष्णु शिव शक्ति किसी देवताकी मूर्ति पाषाण तथा धातुकी स्थापित करके नवधा भक्तिसे विधि-

पूर्वक आचार्यके उपदेश प्रमाण पूजन करेगा और उस मूर्तिके स्वामीको प्रसन्न करेगा तो उसको भगवतकी प्राप्ति होगी। मैंने हाथ जोडकर कहा कि, मैं बादीके रोगसे अशक्त हूँ नित्य स्नान नहीं करता, जल सांपस्वरूपी दर्शाता है, दोप्रहरतक नींदमें पडा रहता हूं, कीर्तन भजन मूर्तिमें कछु प्रीति होती नहीं, इस राहसे मेरा जाना क्योंकर होवे ? तब महात्मा गुरु बोले कि, भगवच्छरण जानेकी तीसरी राह आत्माकी सेवा भक्ति और उपकार है। यथाशक्ति दूसरी आत्माको अपनी आत्माके समान जाने। बहुत भक्तोंको इस राहसे भगवत्‌की प्राप्ति हुई, तुमको भी होगी। मैंने हाथ जोडकर कहा कि जब अपने भोजन वस्त्रका ठिकाना नहीं है और अपना काम अपनेसे नहीं होता तब दूसरेका उपकार तथा सेवा होनी कठिन है। मुझको नित्यका कर्म सुमेरुगिरी (पहाड) समान दर्शाता है। इस राहपर मेरा जाना नहीं हो सकता विचार करो ? तब महात्मा गुरु बोले कि, चौथी राह भगवच्छरण जानेकी तीर्थकी यात्रा है। कोई सातों पुरी, चारों धाम और सर्व तीर्थकी परिक्रमा और दर्शन और स्नान करेगा वह निश्चय करके भगवच्छरणको जावेगा। मैंने हाथ जोड करके कहा कि, मुझसे एक कोस भी चला नहीं जाता। चारों अवस्थामें एक भी तीर्थ होना दुर्लभ है। नित्यकर्मको थोडी दूर जाना पहाड हो जाता है यह राह मेरे जाने योग्य नहीं है ? तब महात्मा गुरु बोले कि, पांचवी राह भगवच्छरण जानेकी समाधि

है । जो कोई अष्टांग योग सम्पूर्ण सिद्ध करेगा सो भगवत्‌को प्राप्त हो जावेगा । मैंने हाथ जोडकर कहा कि, मुझसे जप तप क्रिया नहीं पूरी होती । तब अष्टांग योग कैसे सिद्ध होगा ! आसन लगाना, श्वास चढाना बहुत कठिन है; मैं नहीं कर सकना । तब महात्मा गुरुने छठवी राह जलशयन जलधाराकी बतायी । मुझसे ठंढका सहन नहीं हो सकता । सातवीं राह चौरासी धूनी पंकधूनीको बताया मुझसे अग्निका तेज सहा नहीं जाता । आठवीं राह शूलशय्या बताया, उसमें कांटा चुभता है । नौवीं राह झूला बताया, उसमें चक्कर आता है । दशवीं राह ऊर्ध्वबाहु होना बताया, उसमें क्षणमात्र हाथ उठाया नहीं जाता । ग्यारहवीं राह मौन होनेका बताया,मुझसे एक पल चुप रहा नहीं जाता । बारहवीं राह ठाढेश्वरी होना बताया, मेरेसे चार घडी खडा नहीं रहा जाता । कमरमें बडा दर्द होता है ।

इस प्रमाण महात्मा गुरुने अनेक राह बताया परन्तु मेरे जाने योग्य कोई राह नहीं पाया. तब जवाब दिया कि इसके सिवाय और कोई राह भगवच्छरण जानेकी मेरे ज्ञानमें नहीं है । जो कोई आजतक गया सो इसी मार्गपर गया । तुम्हारा जाना भगवच्छरणमें नहीं हो सकता और कदाचित् दूसरा मार्ग तुम्हारे योग्य होवे तो विचार करो । मेरेको ज्ञान कुछ नहीं है ॥

इति अभिलाखसागर गुरुशिष्यसवाद तीसरे
तरंगमें दूसरी लहरी

नामकी महिमासे भगवच्छरणको सब जाते हैं।

श्री शारदायै नमः ॥ मैं दूसरे महात्मा गुरुके पास गया और सब हाल अपना कहा, तब महात्मा गुरु बोले कि, ध्यानसे आकाशमार्गमें देखो और मेरी आंखोंपर अपना हाथ फेर दिया ॥ उस राहकी लीला जो देखता हूं तो बडे२ आलसी अकर्मी अज्ञानी अजात विमानोंपर चढकर आनंद समेत भगवच्छरणको चले जाते हैं। मुझको यह राह बहुत पसन्द आई और महात्मा गुरुसे उस राहपर जानेका उपाय पूछा। तब महात्मा गुरु बोले जो लोग उस राहपर जाते हैं उनको उपाय पूंछलो। मैंने उस राहके निकट जाकर एक जानेवालेसे तीन प्रश्न किये कि, महाराज। आप कौन हैं और कहां जाते हैं और क्योंकर जानेकी समार्थ्य प्राप्त हुई? तब उस जानेवालेने बडी बेपरवाहीसे मुझे जवाब दिया कि मेरा नाम कबीरदास जुलाहा है और भगवच्छरणको जाता हूं। एक समय श्री महाराज रामानुजस्वामीनेकाशीके मणि-कर्णिका घाटपर रातको अनदेखे मेरे ऊपर पांव रख दिया। जब उनको आदमी मालूम हुआ तब दयावान् होकरके भगवत्का नाम मुखसे उच्चारण किया, उस नामको याद करके मैंने मगध देशमें प्राण छोडा, जहां जीवको मरने उपरान्त गधायोनि प्राप्त होती है। परन्तु उसी भगवत्के नामके आधारसे मैं भगवच्छरणको जाता हूं। यह सुनकर मैं चुप हो रहा और दूसरे जानेवालेसे भी वही तीन प्रश्न

किये । उसने भी ऐसा जवाब दिया कि, मैं गणिका(वेश्या) हूँ भगवच्छरणको जाती हूँ । एक तोतेका नाम पढाती थी उस आधारसे भगवच्छरणको जाती हूं । इसी तरह स्त्री पुरुष जो कोई मिला उससे उस राहके जानेकी सामर्थ्य नामकी माहिमा मालूम हुई. यह सुनकर महात्मा गुरुकी शरणमें जाकर सब कथा विस्तारसहित कह दिया तब महात्मा गुरु बोले कि; अब तुझको क्या सन्देह है ? नामकी रटन करके तू भी चला जा । मैंने हाथ जोडकर कहा कि, भगवत्के नाम अनन्त हैं, किस नामकी महिमा ऐसी है जिसके आधारसे मैं भगवच्छरणको जाऊं?यह शंका सुनकर महात्मा गुरु बोले कि, यह शंका मुझसे समाधान नहीं होगी । मेरे ज्ञानमें भगवत्के सब नाम बराबर हैं । जिस नामकी रटन करेगा वही मुक्तिदाता है कम सिवाय कोई नहीं है ॥

इति अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद
तीसरे तरंगमें तीसरी लहरी ।

रामनाम प्रधान होकर बारह वर्ष भजन हुआ ।

श्रीजानकीवल्लभाय नमः । मैं दूसरे महात्माके पास गया और सब हाल अपना कहा तब महात्मा गुरु बोले कि, यहांसे थोडी दूरपर एक विचारनगरकी हाट है वहां भगवत्की दशों अवतार मूर्ति एक एक रुपयेपर बिकती हैं मोल लेकर आओ । तब तुम्हारा बोध कर दिया जावे मैं तुरंत उस हाटमें गया और दुकानदारको दश रुपैया

देकर दशों मूर्ति भगवतकी मांगीं । तब उसने नौ मूर्ति नौ अवतारकी मुझको दीं और एक रुपैया फेरकर कहा कि, राम अवतारकी मूर्ति मेरे यहां जितनी बनती हैं उतनी सब महादेवजीके यहां चली जाती हैं और एक मूर्तिका दाम लाख रुपैया मिलता है । चुपचाप वह नौ मूर्ति और एक रुपैया फेर लाकर महात्मा गुरुके आगे रख दिया और हाथ जोडकर कहा--गुरुमहाराज ! इस मूर्तिके ज्ञानसे मुझको बोध हो गया कि, सब नामोंमे रामनाम बडा है, परंतु यह संदेह उत्पन्न हुआ कि, इसका कारण क्या है ? तब महात्मा गुरु बोले कि, रामावतारने सब अवतारोंमें राजा होकर ग्यारह हजार वर्ष राज्य किया और परशुराम अवतारको जनकपुरमें गुप्तज्ञान दिया और बाल्मीकि ऋषि इस नामको उलटा 'मरा मरा' जाप करके सिद्ध हुए जो पहले व्याधाके समान थे । रामनाम उलटा सीधा बराबर है । सबमें रमा होनेसे रामनाम हुआ और जो सदा काल अमर रहे उसको राम कहते हैं । और रमापति भी रामको कहते हैं और शिवजी अपना इष्टदेव जानते हैं । और सर्व उपासनावाले अन्तसमय राम राम सत्य कहते हैं । इस उपदेश को सुनकर मुझको रामनामका बडा बोध हुआ और भजनमें बडी प्रीति उत्पन्न हुई और महात्मा गुरुसे भजनकी रीति विचार किया । तब महात्मा गुरु बोले कि, जंगलमें पहाडके ऊपर एकान्तमें रहना, कन्द मूल फल भोजन करना, प्रहर रात्रि बाकी रहे तब नित्य

उठना, स्नान करके नित्य कर्म गायत्री गुरुमंत्र आदिक जपनेके पीछे जल अग्निसम्मुख रख करके तुलसीकी माला लेकर बैठना, एक लाख रामनामका अजपा कंठसे जाप करना । पांच प्रहरमें पूरा हो जाता है । सांझको तारा देखकर फलाहार करना । पीछे एक प्रहर रात्रिको रामायणका पाठ करना । एक प्रहर पीछे मध्यरात्रिमें शयन करना अष्ट प्रहर रामका ध्यान करना । कोई दिन इस साधनमें तेरा मनोरथ सिद्ध होगा और प्रत्यक्ष दर्शन रामका होगा । मैंने महात्मा गुरुकी आज्ञानुसार बडे प्रेमसे बारह वर्ष जंगलमें उत्तराखंडमें उसी सुमेरुगिरि (पहाड) के ऊपर वनस्पति कंदमूलका भोजन करके एक लाख नित्य अजपा जाप किया और जैसा आहार व्यवहार महात्मा गुरुने बताया था उसी प्रमाण सब सम्पूर्ण वर्ताव किया और तुलसीकृत रामायणके भी तीन पाठ पूरे हो गये । सर्व व्यवहार महात्मा गुरुकी आज्ञानुसार पूरा हुआ परंतु कुछ चमत्कार प्रत्यक्ष देखनेमें नहीं आया ॥

इति अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद तीसरे तरंगमे चौथी लहरी । इति तीसरा तरंग ॥ ३ ॥

चौथा तरंग

भजनपरिमाण विचार

अनेक जन्मके भजनमें भी प्राप्त होना उसका दुर्लभ है

श्रीराधावल्लभाय नमः ॥ जब बारह वर्षतक रटन करते हो

गये और रामका दर्शन प्रत्यक्ष नहीं हुआ अनेक अनुभव भयानक मनोहर शान्त जो हुआ वह भ्रमरूपी यथार्थ नहीं हुआ । कदाचित् सम्पूर्ण उस अनुभवका विस्तार इस ग्रन्थमें किया जावे तो महाभारत हो जावे । इस वास्ते कुछ वर्णन नहीं किया गया और एक विचार अपनी भूलका प्रसिद्ध हुआ कि, महात्मा गुरुसे सम्पूर्ण विधि भजनको पूंछा था । परंतु परिमाण नहीं पूछा कि, कबतक भजन करना चाहिये । इस संदेहके उत्पन्न होनेसे भजनकी प्रीति सम्पूर्ण जाती रही और ऐसा ज्ञान दृढ हुआ कि, पहले भजनका परिमाण विचार करना चाहिये इस विचारमें एक महात्माके पास जो उसी पर्वतपर विराजमान रहे थे, मैं गया और भजनका परिमाण पूछा । तब महात्मा गुरु बोले कि, हमको चौवीस वर्ष हो गये सवा लाख राम नाम नित्य एक पांवसे खडा हो अजपा जाप करता हूं । परन्तु चमत्कार देखनेमें अभी पहला दिन है और पिछले ग्रन्थोंके सिद्धान्त देखनेमें प्रगट होता है कि; अनेक जन्मके भजनमें भी प्राप्त होना उसका दुर्लभ और कठिन है । शेषजी दो हजार जिह्वासे सदा अखंड भजन करते हैं । महादेवजी अट्ठासी हजार वर्षकी समाधि लगाते हैं । सरस्वती शारदा गणेश आदिक देवता सदा भजन करते हैं । भजनका परिमाण कोई नहीं कह सकता । तुमको बारह वर्षमें महाप्रलय होगया । यह ज्ञान सुनकर बडी चिन्ता उत्पन्न हुई । बारह

वर्षका भजन मिथ्या ऊंटका पाद हो गया रामनाम विष समान कडुआ लगा । ब्रह्मप्राप्तिकी आशा जाती रही । अनेक जन्मके आसरेपर भजन नहीं हो सकता । तत्काल फल सब चाहता है । भजनकी प्रीति विपरीत होगयी सब आसन मुद्रा छोडकर जलपान त्याग कर दिया पंदरह दिन अपने आसनपर निराहार पडा रहा और भूंखा मौतका रास्ता देखता रहा ।

इति अखिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद चौथे तरंगमें प्रथम लहरी ।

सर्वजीव जड चेतन राम है

श्रीरघुवीराय नमः ॥ उस समयमें एक महात्मा गुरु सर्वज्ञ वेषवाले आप कृपा करके आये और मेरे दुःखका कारण पूछा । मैंने सब हाल अपना विस्तार सहित कह सुनाया । तब महात्मा गुरु बोले कि भजनका परिमाण किस वास्ते पूंछते हो ! तुमको क्या चमत्कार देखनेकी इच्छा है ? मैंने हाथ जोड़कर कहा कि, मुझको केवल रामके दर्शनकी इच्छा है और कुछ वासना नहीं है । तब महात्मा गुरु बोले कि, ज्ञानमें यह जीव जड चेतन सब राम है । सबमें वही राम है उसका शुद्ध चैतन्य स्वरूप पहले निराकार था और पांच तत्त्वसे भी जुदा था । यह सबको प्रकट है जब अपनी इच्छासे अपनी मायामें मोहित होकर आकार होगया तब जीव हो गया । फिर जब

मायाका संग छोड देवे तब राम होजावे जैसे कोई पंडित वेदपाठी वेश्याके संग बाजा बजावे, भडुआ कहावे। जब उसका संग छोड करके पोथी पढे तब पंडित हो जावे। और जैसे सिंहका बच्चा आदिसे बकरियोंमें रहे, सिंहका पुरुषार्थ नहीं रहेगा। इसका प्रमाण यह निराकार ब्रह्म मायाके संग आकार होकर जीव होगया। तेरेको चमत्कार देखनेकी इच्छा है तो मायाका संग छोडदे। मैंने हाथ जोडकर कहा कि, माया बडी प्रबल है, ब्रह्मलोकतक इसका राज्य है, त्रिभुवनमें इसको कोई जीत नहीं सका, ब्रह्मा पंचमुखसे चतुरानन होगये, महादेव मोहिनीरूपपर कामातुर होकर दौडे, नारदका मुख बन्दरका हुआ, चन्द्रमाका कलंक सर्व जगत्को प्रकट है, इन्द्रके शरीरमें हजारों भग होगये, गरुड़के मोहको काग भुशुंडने छुडाया फिर हम ऐसे पापी जीवोंकी क्या सामर्थ्य है जो मायाको छोड सकें ? यह मायाशरीर छूटनेपर भी संग रहेगी। ऐसा शास्त्रका प्रमाण है और माया ब्रह्म निराकारकी छाया है बिलग नहीं हो सकती। यह सुनकर महात्मा गुरु बोले कि, मैं तुम्हारा समाधान नहीं कर सकता। मेरेको जो ज्ञान था वह कहा ॥

इति अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद चौथे तरंगमें दूसरी लहरी

काचके मोर्चेके समान भजनसे माया छूटती है

श्रीसीतापतये नमः ॥ मैं दूसरे महात्मा गुरुके पास गया और सब हाल अपना कहा तब महात्मा गुरुने एक छोटा लोहेका कांच (मुकर) मोर्चेमें भरा हुआ बहुत पुराना मेरेको दिया मैं उसको आठ प्रहर साफ करके थक गया पर साफ नहीं हुआ । तब महात्मागुरुसे विनती की कि, यह मोर्चा बहुत मुद्दतका है, एक दिनमें नहीं छूटेगा । कदाचित् दो चार दिनमें खटाई आदिकमें छोडकर साफ करे तब छूटेगा महात्मा गुरुने कहा–अच्छा. मैं चार रोजमें साफ शुद्ध करके लाया, और सम्मुख रख दिया । तब महात्मा गुरु बोले कि, इसी प्रकारसे माया छूट जावेगी. जैसा पाप-रूपी मोर्चा पुराना होगा वैसा उसके छुडानेमें काल व्यतीत होगा । मैंने हाथ जोडकर कहा कि, यह दृष्टांत इस सिद्धांत में प्रतिकूल है, आपने विना विचारे दुःख दिया । मोर्चा अनादि नहीं है, माया अनादि है, मोर्चेकी खटाई बहुत है, मायाकी कोई नहीं । मोर्चा छुटाना आता है, माया जुडानी नहीं आती. अनेक महाप्रलय होगये, इस जीवकी गति नहीं हुई । इस महाप्रलयमें पचास वर्ष हो चुके, एक दिन हजार चौजुगीका होता है । तब महात्मा गुरु बोले कि मायाके जुडानेका उपाय उत्तम सत्संग है, औ खटाई भजनकी बहुत ही चोखी हैं । और सौ वर्ष ब्रह्माका भजनके प्रतापसे लोम बराबर हैं । देखो लोमशऋषि ब्रह्माके पुत्र भजनके प्रतापसे

ब्रह्माके मरनेको नित्यका उपाधि जानकर एक बाल अपने शिरका उखाडते हैं। इस कारण तुम अपने जीवात्माको भजनकी खटाईमें कुछ काल छोड दो और सत्संगके उपायसे विमल किया करो, कांचके समान हृदय तुम्हारा विमल हो जावेगा और चौरासी लाखजीव रामस्वरूपीदर्शावेंगे, जैसे सूर्यका प्रकाश सबमें दर्शाता है। मैंने हाथ जोडकर कहा कि, गुरु महाराज आपकी कृपासे मुझको यह ज्ञान है और पहले भी था कि भजनके प्रतापसे सब कुछ हो सकता है और कुछ काल विधि संयुक्त जैसा चाहिये वैसा भजन किया, परन्तु अज्ञानरूपी यह संदेह उत्पन्न हो गया है कि, कबतक भजन करना चाहिये, कदाचित् आपको भजनका परिमाण आता हो तो उपदेश कीजिये, मैं फिर भजन करूँगा। यह सुनकर महात्मा गुरु बोले कि, भजनका परिमाण कोई नहीं कह सकता और यह उत्तर नहीं दे सकता ॥

इति अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद चौथे
तरंगमें तीसरी लहरी

मायासे ब्रह्म जीव हुआ। भजन औषध है, गुरु वैद्य हैं

श्रीवसिष्ठाय नमः ॥ मैं दूसरे महात्माके पास गया और सब हाल अपना कहा, तब महात्मा बोले कि, ब्रह्म निराकार कर्ता जिसको तुम राम कहते हो वह आप मायाके रोग लगनेसे जीवरूपी आकार हो गया है, भजन उसका

औषध है और गुरु वैद्य हैं। जबतक रोगका नाश न हो जावे तबतक औषध खाना धर्म है, जब रोग नष्ट हो जावेगा, तब औषध आप ही आप छूट जावेगा यह सिद्धान्त सबको मालूम है, इसी प्रमाण भजन करते २ जब माया छूट जावेगी तब मनोरथ सिद्ध हो जावेगा और भजन भी छूट जावेगा; इसके सिवाय दूसरा परिमाण भजनको कोई नहीं है। त्रिभुवनमें कोई परिमाण नहीं कह सकता, सच्चे प्रेमसे सदा अखंड भजन करो; परिमाणका विचार मत करो माया अज्ञान भ्रम वासना भूल एक अर्थके शब्द हैं चेतनको सब साक्षी हैं और शुद्ध आत्माको घेरे हुए हैं जब भजनके प्रतापसे ये पांचो विकार रोग समान नष्ट हो जावेंगे वही आत्मा परमात्मस्वरूप प्रकाशमान होजावेगा और भजन भी छूटजावेगा ॥

इति अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद चौथे
तरंगमें चौथी लहरी

इति चतुर्थ तरंग

पांचवां तरंग

जडब्रह्मविचार

पृथ्वी ब्रह्म है

श्रीरामनाथाय नमः ॥ जब महात्मा गुरुने भजनके परिमाणको रोगका दृष्टांत दिया तब बहुत चिंता उत्पन्न हुई, इस कारण कि ब्रह्म निराकार होना सबका मत है।

जब निराकार है तो रोग नहीं लगना चाहिये, रोग दुःख शरीरको होता है और सिद्धान्तमें माया ब्रह्मसे प्रबल हुई और रोगीके भजनमें कोई आरोग्य नहीं होगा। ऐसा ब्रह्म कहां रहता है और कैसा स्वरूप है और क्या गुण उसमें है ? पहले ब्रह्मका निरूपण अच्छी तरह होना चाहिये पीछे भजनका परिमाण विचार हो जावेगा, ब्रह्मके सिद्धान्तमें बडा पोल दीखता है कोई निराकार कहता है, कोई साकार बताताहै, कोई भोगी जानता है, कोई रोगी मानता है ऐसा विचार करके एक महात्माके पास जाकर सब हाल अपना कहा और ब्रह्मपदार्थका स्वरूप विचार किया। तब महात्मा गुरु बोले कि, स्थूलरूप ब्रह्मका पृथ्वी है पृथ्वीसे आकाश हुआ, आकाशसे वायु हुई, वायुसे अग्नि प्रगट हुई, अग्निसे जल प्रगट हुआ सर्व सृष्टि जड चेतन पृथ्वीसे उत्पन्न होकर पृथ्वीमें मिल जाती है चराचर जो जीव रूपमानमें हुआ सो सब पृथ्वीसे उत्पन्न हुआ, अन्तमें सब पृथ्वी होगा और प्रथम शब्दका अर्थ ब्रह्म निश्चय अनुमान होता है। नाम सबका अर्थ संयुक्त है पृथ्वीका नाश नहीं होता प्रलय शरीरनाश हो जानेको कहते हैं। जल रुधिर है, वायु श्वास है, अग्नि ज्ञान है, आकाश शब्दस्थान है और इसका बहुत विस्तार यंत्र पंचीकरण और दोहा चौपाईमें देखो।

चौपाई

पृथ्वीरूप ब्रह्मको जानो। जलको बीज रुधिर पहिचानो॥

पंचीकरण स्वरूपतत्त्व.

		पृष्ठ २०	पृष्ठ २३	पृष्ठ २५	पृष्ठ २७	पृष्ठ २९
सं०	नाम	पृथ्वी	जल	अग्नि	वायु	आकाश
१	देहशरीर	स्थूल	सूक्ष्म	कारण	महाकारण	केवल
२	स्वरूप	ताडक	डंडक	कुंडल	अर्धचंद्र	बिन्दु
३	प्रमाण	उलटपलट	अंगुष्ठप्रमाण	अर्धप्रमाण	मसूरप्रमाण	अणुप्रमाण
४	अवस्था	जाग्रत्	स्वप्न	सुषुप्ति	तुरिया	उन्मनी
५	विषय	गंध	रस	रूप	स्पर्श	शब्द
६	अंतरिन्द्रियें	अहंकार	बुद्धि	चित्त	मन	अंतःकरण
७	कर्मेन्द्रियें	गुदा	लिंग	पाव	हाथ	मुंह
८	ज्ञानेंद्रियें	नाक	जिह्वा	नेत्र	त्वचा	कान
९	आकाशप्रकृति	रोम	लार	नींद	फैलोनो	काम
१०	वायुप्रकृति	चिरम	चरबी	तृषा	दौडनो	क्रोध
११	अग्निप्रकृति	नाडी	पसीना	क्षुधा	कूदनो	लोभ
१२	जलप्रकृति	मांस	बीज	तेज	चलनो	मोह
१३	पृथ्वीप्रकृति	अस्थि	रुधिर	आलस्य	सुकडनो	मंद
१४	वाक्	वैखरी	मध्यमा	पश्यंति	परा	परमपरा
१५	गुण	रजोगुण	सत्त्वगुण	तमोगुण	सगुण	निर्गुण
१६	अभिमान	शरीर	बीज	ज्ञान	आत्मा	निराभिमान
१७	अहंकार	अहम्	कोहम्	सोहम्	शिवोहम्	निरोहम्
१८	प्राण	अपान	उदान	प्राण	समान	व्यान
१९	वायु	धनंजय	देवदत्त	किरकिल	कूर्म	नाग
२०	कोश	अन्नमय	प्राणमय	मनोमय	विज्ञानमय	आनंदमय
२१	प्रतिमा	गणेश	सूर्य	लिंग	शक्ति	ओंकार
२२	इष्ट	ब्रह्मा	विष्णु	रुद्र	ईश्वर	सदाशिव
२३	देव	इंद्र	वरुण	यम	कुबेर	विष्णु
२४	प्रधान	वेद	दशअवतार	द्वादशलिंग	मंत्र	समाधि
२५	वर्ण	पीत	रक्त	कृष्ण	नील	श्वेत
२६	रस	मधुर	लोन	चरपरा	खाटा	फीका
२७	क्रिया	उत्पत्ति	पालन	प्रलय	सर्वसाक्षी	सर्वत्याग
२८	योनि	भूचर	जलचर	नभचर	चराचर	अचर
२९	खान	पिंडज	अंडज	उद्भिज्ज	स्थावर	स्वेदज
३०	अवस्थागुण	नेत्र	कंठ	हृदय	मूर्धा	शिखा
३१	अवस्थानिगुण	त्रिपुटी	श्रीहाट	गुल्हाट	भ्रमरगुंफा	ब्रह्मरन्ध्र
३२	रूप	विराट	हिरण्यगर्भ	सूर्यज्योति	महत्तत्व	कर्ता
३३	आसन	कलेजा	फिफडा	तिल्ली	बुक्का	पित्ता
३४	आवन	मुख	जिह्वा	वामचक्षु	वामनासिका	वामकान

पंचीकरण स्वरूपतत्त्व

नं०	नाम	पृष्ठ २०	पृष्ठ २३	पृष्ठ २५	पृष्ठ २७	पृष्ठ २९
३५	जीवन	गुदा	लिंग	दक्षचक्षु	दक्षनासिका	दक्षकान
३६	ज्ञान	अनरीती	अमिथ्या	अविचार	अविवेक	अद्वैत
३७	भोग	स्थूल	परविगत	आनंद	अपरिमेय	निरामय
३८	निरत्यय	क्षर	अक्षर	कूटस्थ	अत्मप्रिय	- उत्तमपुरुष
३९	मार्ग	पिपीलिका	विहंगम	कपी	मीन	शेष
४०	दिशा	पूर्व	पश्चिम	उत्तर	दक्षिण	ऊर्ध्वदिशा
४१	कोन	नैर्ऋत्य	ईशान	आग्नेय	वायव्य	अर्धकोन
४२	आकाश	घट	मठ	मध्य	चिदा	शून्य
४३	मात्रा	आकार	इकार	उकार	मकार	पूर्ण ओंकार
४४	मात्रा दुसरी	ह्रस्व	दीर्घ	पुलित	अर्ध	अनुराग
४५	शून्य	अर्धशून्य	ऊर्ध्वशून्य	मध्यशून्य	अर्धशून्य	महाशून्य
४६	मुद्रासमाधि	खेचरी	भूचरी	चाचरी	अगोचरी	उन्मनी
४७	मुद्राज्ञान	संमुखी	उन्मनी	शांभवी	आत्मभसिनी	पूर्वबोधिनी
४८	वेद	ऋग्वेद	यजुर्वेद	सामवेद	अथर्वणवेद	आकाशवाणी
४९	गायत्री	प्रथमपदा	द्वितीयपदा	तृतीयपदा	चतुर्थपदा	पंचपदा
५०	वादवंत	तत	वितंत	मृदंग	सुस्वर	अनहद
५१	लोक	मृत्युलोक	वैकुंठलोक	कैलासलोक	सत्यलोक	लोकालोक
५२	अग्नि	वडवा	मंद	उदर	शाक	कपरा
५३	दुसरीअग्नि	क्रहा	काम	दग्न	संभिता	ब्रह्म
५४	आनंद	विषयानंद	योगानंद	अद्वैतानंद	परमानंद	महानंद
५५	मुक्ति	सालोक्य	सामीप्य	सारूप्य	सायुज्य	स्वयंभू
५६	शक्ति	क्रिया	ज्ञान	इच्छा	आदिविज्ञान	मूलप्रकृति
५७	लिंग	आचार्य	गुरु	शिव	प्रासाद	ब्रह्मलिंग
५८	मुख	सद्योजात	वामदेव	तत्पुरुष	ईशानमुख	अधोमुख
५९	कला	उरमय	धुमरा	ज्योति	जीआला	कलातीत
६०	भूमिका	पस्तिपा	गताजाता	सलोकता	सुलीनता	साक्षात्कार
६१	पुरुषार्थ	धर्म	अर्थ	काम	मोक्ष	निर्विकल्प
६२	भक्ति	श्रवण	मनन	निदिध्यास	साक्षात	पुरणकोहा
६३	प्रकृति	भय	मैथुन	क्षुधा	हर्ष	निद्रा
६४	स्वर	उदात्त	अनुदात्त	स्वरित	सोहम्	अनहद
६५	दुसरासुर	जडेसुर	मनजलेसुर	ओतकेसुर	सुसुर	नभसुर
६६	शस्त्र	फरसा	अंकुश	भाला	- खांडा	बाण
६७	स्वरूप	चौकोर	लंबा	त्रिकोन	गोल	शून्य
६८	आहार	अन्नजल	मैथुन	मोह	गंध	शब्द
६९	रोग	रक्त	कफ	पित्त	वात	सन्निपात
७०	प्रमाणअंगुल	बारह १२	सोलह १६	चार ४	आठ ८	शून्य.
७१	आश्रम	ब्रह्मचारी	गृहस्थ	वानप्रस्थ	संन्यास	परमहंस
७२	पंचमुख	संतान	धन	रूप	बल	बुद्धिज्ञान

वायूको शक्ती अनुमानो । अग्नि ज्ञानतत्वको दरशानो ॥
व्योम शून्य कुछ रूप न होई । पृथ्वी ब्रह्म कहै सब कोई ॥
रूपवान जो वस्तु दिखावै । ताको कारण भूमि दिखावै ॥
स्थूल गंध ताडक जागृत । हम अपना अंडज प्राकृत ॥
रज गुदा वैखरी गोचर विषयानन्द खेचरी अच्छर ॥
निराकार कुछ काम न आवै । पृथ्वी सर्व अकार दिखावै ॥
पृथ्वी रूप अनादी जानो । अविनाशी उसको पहचानो ॥

दोहा—परथम जाको नाम है, सोई है भगवान ।
पृथ्वीसे आकार है, पृथ्वीसे चौखान ॥
पृथ्वी सबको रूप है, रूप बिना कुछ नांय ।
पृथ्वी सब ब्रह्मांड है, और शून्य सब ठांय ॥

सर्व सृष्टिका आधार पृथ्वी है. सिवाय पृथ्वीके और कोई तत्व स्थूल रूपवान् नहीं हो सकता । युगादिमें पहले पृथ्वीकी पूजा होती है । मेरे ज्ञानमें पृथ्वी ब्रह्म है. मैंने हाथ जोडकर कहा कि, पृथ्वी जलके ऊपर जमगई है और नित्य एक परिक्रमा सूर्यदेवताको देती है हिरण्याक्ष दैत्यने विष्ठामें छिपाया था जिस कारण वराह अवतार हुआ । राजा पृथुने गौ बनाकर सब औषधि पृथ्वीसे निकाला और वे उसे रातको सब शिराने तकिया बनाकर रख लेते थे और चन्द्रमा सदा काल पूर्णमासीको पृथ्वीसे भोग करता है और यह नाशवान् शरीर केवल मृत्तिका स्वरूप है । जब चैतन्य जीव साक्षी नहीं रहता, तब भयंकररूप

मुर्दा हो जाता है और प्रलयकालमें पहले पृथ्वीका नाश होजाता है इसलिये पृथ्वीको ब्रह्म कहना अनुचित है । यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे ।

इति अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद पांचवें तरंगमें प्रथम लहरी

जल ब्रह्म है

अथ श्रीबदरीनारायणाय नमः ॥ मैं दूसरे महात्माके पास गया और सब हाल अपना कहा, तब महात्मा गुरु बोले फिर ब्रह्मका सूक्ष्म स्वरूप जल है । जलसे पृथ्वी, पृथ्वीसे आकाश, आकाशसे वायु, वायुसे अग्नि पैदा हुई. यह शरीर जब मुर्दा हो जाता है तब जल नहीं रहता और जड चेतन जो आकार रूपवान है वह सब जलका स्वरूप है और जलका स्वरूप सिद्धान्तमें जोव अनुमान होता है और आदिमें सबको उत्पत्तिका कारण जल दीखता है और जलको आपरूप कहते हैं, और जलसे सब शुद्ध होता हैं । किसी पात्रमें जल कुछ काल रक्खो उसमें जीव आपही आप प्रगट होजाता है और वर्षाऋतुमें कदाचित् जल न बरसे तो जगतमें प्रलय हो जावे और व्यास भगवान्‌का मत ऐसा है कि, उसी जलकी इच्छासे आदिमें कमलका फूल होता है उसमें ब्रह्मा उत्पन्न होता है, वह ब्रह्मा अपने विचारसे सारा जगत् बनाता है और अन्तमें सौ वर्षके पीछे यह जगत् और वह ब्रह्मा दोनों जल हो जाते हैं । इस

कारण जलको ब्रह्म निश्चय जानना चाहिये और विस्तार-सहित जलका स्वरूप यंत्र पंचीकरण और दोहा चौपाईमें देखो ।

चौपाई

जलसे कमल कमलसे ब्रह्मा । वह सब लोकको सिरजा ब्रह्मा॥
उत्पत्ति स्थिति परलय करै । जलसे तीन लोक अवतरै ॥
जलसे सागर जलसे गंगा । जलसे सब रस जलसे रंगा ॥
जलसे बिन्दु बिन्दुसे काया । निश्चय जल भगवान कहाया ॥
जलसे चौदह रतन निकारा । जलसे चौरासी परचारा ॥
जलसे जीव जीवसे ज्ञान । ज्ञान विना अन्धा अज्ञान ॥
जलसे है ब्रह्म पृथ्वी माया । रात दिवस सबको दरशाया॥
सूक्ष्म दंड अंगुष्ठ परमाना । योगानन्द बीज परधाना ॥

दोहा—लिंग सतोगुख मध्यमा, को हम जल चर खान॥
पालन अंडज भूचरी, यजुर्वेद ईसान ॥
हिरनगर्भ जलको कहैं, मुक्तसमेत विचार ।
वामदेव मुख ज्ञान बुध, यह अभिलाखविचार ॥

और कोई तत्त्ववादी ऐसा कहता है कि, बीजका स्वरूप जल है और वेदमें बीज ब्रह्म प्रधान हैं । मैंने हाथ जोडकर कहा कि कमलका झाड क्षीरसागरमें नारायणकी नाभिसे उत्पन्न हुआ है, जलसे नहीं और जल स्वतः नहीं रह सकता दूसरेके आधार है और मुर्दा शरीरमें भी जल रहता है और

सूखे लक्कडमें तथा पत्थरमें भी जल रहता है, जलकी प्रकृति मलमूत्रकी है, मेघ वर्षाता है सूर्य सोखता है और प्रलयमें नाश हो जाता है और जड है, यह कुंभज ऋषि सातों समुद्रोंको पी गये, पीछे मूत्रकी राहसे निकाला जो स्वतः प्रत्यक्षमें नहीं है उसको ब्रह्म कहना योग्य नहीं, जल अग्निसे पैदा होता है, यह सुनकर महात्मा चुपचुप हो रहे॥

इति अभिलाखसागर गुरुशिष्य संवाद पाचवें तरंगमें

दूसरी लहरी

अग्नि ब्रह्म है

श्री जगन्नाथाय नमः। मैं दूसरे महात्माके पास गया और सब हाल अपना कहा। तब महात्मा गुरु बोले कि ब्रह्मका कारणरूप अग्नि है। अग्निसे जल पैदा हुआ, जलसे पृथ्वी, पृथ्वीसे आकाश, आकशसे वायु उत्पन्न हुई। तेज रूप होकर घट घट में व्यापक है। जब तेज नहीं रहता तब शरीर मुर्दा भयंकररूप हो जाता है और आजतक जिस अधिकारीने ब्रह्मका अनुभव पाया होगा सो तेजरूप ही पाया। होगा पश्चिमका मुल्क बहुत पुराना है वहां अग्नि-होत्री अर्थात् आतिशपरस्त बहुत हैं वे लोग अग्निको ब्रह्म जानते हैं और दीन महम्मदीवाले भी खुदाको नूर कहते हैं। मूसा पैगम्बरको नूरका अनुभव हुआ और श्रीकृष्ण भगवानने अर्जुनको समुद्रमें जो दर्शन कराया

वह ज्योतिस्वरूपका था। राजा दशरथको चार लडके अग्निने दिये। अग्निसे अन्धकार नाश होता है और गर्मीसे उत्पन्न, सर्दीसे नाश होना सबको प्रगट है और विस्तार सहित इसका स्वरूप यंत्रपंचीकरण औ चौपाईमें देखो।

चौपाई

तेजरूप है जगतका कर्ता। तेज रूप है ब्रह्म अकर्त्ता॥
तेज न होय शून्य हो जावे। तेज न होय तमोगुण छावे॥
ज्योतिस्वरूप ब्रह्म कहै बेदा। ब्रह्म अग्निमें नहिं कछु भेदा॥
घट अद्वैत विकार जलावै। तेज रूप परमेश्वर पावै॥
चारों दिशा अग्निकी पूजा। करे नेमसे राजा परजा॥
तेज ब्रह्ममें भेद न जानो। निर्गुण सगुण ब्रह्म पहिचानो॥
कारण अर्थ पहर परमाना। सोहं प्राण मनोंमें ध्याना॥
रहत सुषुप्ति गुप्त अविचार। शून्य चाचरी मध्य ओंकार॥

दोहा—तेजरूप भगवानको, जो जानै कुछ और।
ज्ञानी संत समाजमें, सपन न पावै ठौर॥
तेज ब्रह्म अद्वैत है, ज्योति विदित संसार।
नेत्र विना अभिलाखसे, भटकत फिरै अपार॥

मैंने हाथ जोड़कर कहा कि, जलसे अग्नि नाश हो जाता है और तेजका शत्रु अन्धकार प्रत्यक्ष है। दीन महम्मदी-वाले खुदाको नूर नहीं कहते, उसकी उपमा है--पश्चि-मके मुल्कमें पैगम्बर अतिशय परस्तोंको कतल करके

कुरान पढाया । अग्निमें शान्ति शीतलता स्वतःपना स्थिरता जो ब्रह्म लक्षण हैं सो कुछ नहीं अग्निका विकार लोभ है, प्रकृति क्षुधा तृषा आलस्य मैथुन पांच हैं । महाप्रलयमें अग्निका भी नाश है और अग्निका स्वभाव कर्त्ता नहीं है, नाशवान् है, अग्निकी उत्पत्ति वायुसे है । अग्निको ब्रह्म कहना अज्ञान है । यह सुनकर महात्मा गुरु चुप रहे ॥

इति अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद पांचवें तरंगमें

तीसरी लहरी

वायु ब्रह्म है

श्रीद्वारकेशाय नमः ॥ मैं दूसरे महात्माके पास गया और सब हाल अपना कहा । तब महात्मा गुरु बोले कि, ब्रह्मका महाकारणरूप वायु है, वायुसे अग्नि, अग्निसे जल, जलसे पृथ्वी, पृथ्वीसे आकाश उत्पन्न हुआ, वायु श्वास होकर घट २ में व्यापक है, । जब वायुरूपी श्वास निकल जाता है तब सब जीव निर्जीव हो जाते हैं । योगी लोग वायुका समाधिमें साधन करके ब्रह्मसमान हो जाते हैं और यह ब्रह्मांड वायुके आधारसे स्थिर और चर है और गरमी सर्दी वर्षातका वायु कारण है. वायुका बंधन और जीवकी उत्पत्तिका अर्थ एक है । जब वायु वायुमें मिल जाती है तब जीवकी मुक्ति होजाती है । विचारसे बसका कर्त्ता वायु

दर्शाता है। और विस्तारसहित वायुका स्वरूपयन्त्रपंचीकरण और दोहा चौपाईमें देखो।

चौपाई

वायूसे ब्रह्मांड बनाया । वायू चारों तत्त्व उपजाया ॥
शक्तिविना सब नाश कहावै। शक्तिविना सत्य नहिं पावै ॥
शक्ति प्राणसमान चराचर। परमानन्द अप्रमेय मंतर ॥
पंच प्राणसे रहै शरीरा । वायू सबको करै अधीरा॥
तीन लोक वायू पर बसे। वायूके बल रोवे हँसे ॥
वायूसे वर्षा ऋतु आवै। वायू शून्य समाधि लगावै ॥
वायू सूरज चन्द्र चलावै। पांच तत्त्वतामें दरसावै॥
वायू बोलै वायू चलै। वायू बान्धै वायू खुलै ॥

दोहा—वायू अर्ध मकार है, उत्तम पुरुष विवेक।
आतम भास अगोचरी, सर्व साक्षि यह एक ॥
वायू ब्रह्म अनादि है, सत्य रूप सब साख।
ब्रह्म हेत घर घर फिरै, यह मूरख अभिलाख ॥

मैंने हाथ जोड़कर कहा कि, जहां आकाश नहीं है वहां वायु नहीं जा सकती। योगी वायुके साधनसे ब्रह्मका विचार करते हैं पकडनेवाला दूसरा है। वायु वायुको नहीं पकड सकता। वायु एक तत्त्व जड है, महाप्रलयमें उसका भी नाश है। वायु कोई प्रत्यक्ष पदार्थ नहीं है। पृथ्वी जिस प्रकार कल सिवाय रेल प्रमाण चलती है उस प्रमाण वायुका

अनुमान होता है। जैसे दौडनेमें वायु विशेष मालूम होती है। वायुकी संख्या ४९००० है। और शरीरमें पंच प्राण पंच वायु हैं और वायु नाम एक देवताका है जिसका पुत्र हनुमान है और वायुमें स्थिरता और स्वरूप नहीं है वह कैसे ब्रह्म होगा यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे ॥

इति अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद पांचवें तरंगमें
चौथी लहरी

आकाश ब्रह्म है

नवग्रहाय नमः ॥ मैं दूसरे महात्मा के पास गया और सब हाल अपना कहा। तब महात्मा गुरु बोले कि, ब्रह्मका केवल रूप आकाश है। आकाशसे वायु, वायुसे अग्नि अग्निसे जल, जलसे पृथ्वी पैदा हुई, सर्वविस्तार ८४ लाख योनिका इन चारों तत्त्वोंसे उत्पन्न होकर अन्तमें सब आकाश हो जाता है और सबकी संमति है। यह जगत् ब्रह्मसे उत्पन्न होकर पीछे ब्रह्ममें लय हो जाता है। इस प्रकार सारा जगत् आकाशसे उत्पन्न होकर अंतमें सब आकाश हो जाता है और शरीरमें जो पोलाणरूपी आकाश है वही जीव चैतन्य अंतःकरण अनुमान होता है उसके बंद हो जानेसे श्वास बन्द हो जाता है। घट बाहरमें आकाशरूपी ब्रह्म सर्वत्र व्यापक है। निर्गुण निराकार शब्द आकाशको शोभा देते हैं और जिस तरह ब्रह्म अनंत

बेअन्त सबसे बडा व सबसे छोटा है। उस प्रकार आकाश भी है और वेदमें--खं ब्रह्म लिखा है। अनेक महात्माओंका मत है कि, ब्रह्म आकाश है और विस्तारसहित आकाशका स्वरूप यंत्र पंचीकरण और दोहाचौपाईमें देखो।

चौपाई

व्योम अकाश स्वर्ग नभ ताका। खंको ब्रह्म कहैं करिसाखा॥
सबसे बडो छोट जो होई। निराकार देखे सब कोई॥
पकड न आवै सबको पकरे। ब्रह्म अकाश कहे सब सुधरे॥
ब्रह्म अकाशका अन्त न पावै। ब्रह्म अकाश न आवै जावै॥
ब्रह्म अकाशका अभेद अनादी। शंका करै सो मिथ्यावादी॥
निराकार निर्गुण निर्लेपा। ऐसो ब्रह्म अकाश अलेपा॥
केवल बिन्दु उन्मनी निर्गुण। ऐसो ब्रह्म अकाशनिरंजन॥
ब्रह्म अकाशमें भेद लगावै। बिना पूँछका पशू कहावै॥

दोहा--ऐसा ब्रह्म अकाश है. शंकारहित अभेद।
ओंकार कर्ता पुरुष, कहत पांचवा वेद॥

षट् शास्त्र पुराण बहु, चार वेदका सार।
ब्रह्म अकाश अभेद है यह अभिलाख विचार॥

मैंने हाथ जोडकर कहा कि, आकाशको इच्छा नहीं हो सकती और वायु आदिककी उत्पत्ति आकाश जडसे कहना अज्ञानका मत है। जहांतक सूर्यका प्रकाश है उसको आकाश कहते हैं। महाप्रलयमें उसका नाश हो जाता है।

जिसमें कुछ सार नहीं उसको आकाश कहते हैं, ज्योतिषमें सात आकाश प्रमाण हैं, पंचीकरणमें पांच आकाश हैं। और आचार्योंने लाखों आकाश पाताल कह दिये हैं। शरीरमें अन्तसमय पोलाणको कौन बंद करता है ? वह कौन है ? और ब्रह्मके भजनमें क्या आनंद प्राप्त होगा ? आकाश शून्य जड है, आजतक किसी भक्तने आकाश ब्रह्मसे फल नहीं पाया, आकाश क्योंकर ब्रह्म हो सकता है। यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे।

इति अभिलाखसागर गुरु शिष्यसंवाद पांचवें तरंगमें पांचवी लहरी

पंचतत्त्व मिलकर ब्रह्म हैं

श्रीसनकादिकाय नमः। मैं दूसरे महात्माके पास गया और सब हाल अपना कहा तब महात्मा गुरु बोले कि, ब्रह्मका स्वरूप एक तत्त्व नहीं है। पांचो तत्त्व मिलकर उसका स्वरूप सम्पूर्ण होता है। जुदा २ देखनेमें खंडन दर्शाता है. एक आचार्यका मत ऐसा है कि, आकाश ब्रह्मका मुख तथा शिर है, वायु हाथ है, अग्नि पेट है, जल कमर है, पृथ्वी पांव है जगत् उसका स्वप्न है, जैसे अपनेको स्वप्नमें जगत भासता है। दूसरेका मत ऐसा है कि, आकाश उसका रूप है, वायु श्वास है अग्नि प्रकाश है, जल पृथ्वी मल मूत्रसमान है, चौरासी लाख

जीव उसके कीडे हैं, उसमें उत्पन्न होकर उसमें मिल जाते हैं; तीसरेका मत ऐसा है कि, पृथ्वी उसका रूप है, जल रुधिर है, वायु शक्ति है, अग्नि ज्ञान है, आकाश स्थान है, चौरासी लाख योनि उसके अंग हैं. इस सिद्धान्तमें विराट् पुराण देखो. चौथेका मत ऐसा है कि, आकाश कैवल्य शरीर है, वायु महाकारण शरीर है, अग्नि कारण शरीर है, जल सूक्ष्म शरीर है, पृथ्वी स्थूल शरीर है, ये पांचों शरीर जुदे २ नामके हैं, सबको एक जानना । उस शरीरमें चौरासी लाख योनि गुप्त प्रगट होती हैं । पांचवेंका मत ऐसा है कि, उसका अनादि निराकार रूप आकाश है, यह रूप महाप्रलयके पीछे बना रहता है, जब सृष्टिकी रचना उसको बनानी होती है, तब अग्निरूप हो जाता है और वायु उसकी शक्ति है, उसको ब्रह्म और माया निराकाररूप कहते हैं. जब दूसरीबार आकार है तब जल पृथ्वीका रूप हो जाता है, उस रूपसे सब आकार सृष्टिका जड चेतन उत्पन्न होता है, अन्तमें निराकार हो जाता है, पंचतत्त्वकागुण अन्त कोई नहीं कह सकता । जिस तरह जलमें बुद्बुदा या लहरी या तरंग आप ही आप प्रगट होते हैं और पीछे उसमें मिल जाता है;इसी तरह यह सारा जगत् पंचतत्त्वके संयोगसे उत्पन्न और नाश होकर पंचतत्त्वमें मिल जाता है. और पांचतत्त्वके कारणसे यह जगत् पांच प्रकारका है अंडज पिंडज, ऊष्मज, स्थावर, देव आदिक गुप्त योनि ये पांच

योनि जगत्में हैं, पांचतत्त्वके सिवाय चौदह भुवनमें कुछ पदार्थ नहीं है, तत्त्व पद ब्रह्म है, पंच तत्त्वकी सत्ता निराकारसे पंच प्राण होता है, उसकी सत्तासे अन्तःकरण होता है, वह अन्तःकरण ज्ञानेंद्रिय तदाकार है उसके आधारसे पंच विषयको जानकर पंच कर्मेन्द्रिय द्वारा सब कार्य होता है । इसके सिवाय और कोई ब्रह्म नहीं है जो विचार करो वही पंचतत्त्वकी रचना है; प्रगट विचार यंत्र पृष्ठ ३५ प्रकृति पंचतत्त्वब्रह्ममें और चौपाईमें देखो—

चौपाई

पंचतत्त्व सब जग उपजाया । पंचतत्त्व सब देव बनाया ॥
शक्ति ज्ञान शब्द सब रहै । पंच देह मानुषकी कहै ॥
पांचविषय सब तत्वविचारो । ब्रह्मा विष्णु महेशअकारो ॥
रूपमान सब तत्त्वसे होवै । निराकार अनुभव नहिं देवै॥
पंच तत्त्व भोगै चौरासी । पंच तत्त्व जोगी संन्यासी ॥
पंच तत्त्व राजा महराजा । पंच तत्त्व जड चेतन साजा ॥
पंच तत्त्व पुरुष अरु स्त्री । पंच तत्त्व गोरख भरतरी ॥
पंच तत्त्वसे खाली कहां । ज्ञान बुद्धि जावै नहिं जहां ॥
पंच तत्त्व सब ब्रह्म कहावै । अनुभवमें दूजा नहिं आवै ॥
पंचीकरण जुदा जो लेखै । ज्ञानवान सब एकहि देखै ॥
पांचसे एक एकसे पांचा । ऐसा ब्रह्म नचावत नाचा ॥
पंच तत्त्वको ब्रह्म बतावै । सब अपनी अभिलाख पुरावै॥

वर्ग		नम्बर		१ स्थूल प्रकृति	२ सूक्ष्म प्रकृति	३ संबंध प्रकृति	४ तत्त्व तत्त्वसें	५ पंचआ-धारब्रह्म	६ शोनित स्वब्रह्म	७ देवता
पृथ्वी स्थूल		१	१	रोम	शब्द	अहंकार	मद	पात्र	मनुष्य	गणेश
		२	२	चरम	स्पर्श	अपान	मुकडना	मल	पशु	दिक्पाल
		३	३	नाडी	रूप	नाक	आलस	रूप	पक्षी	शेष
		४	४	मांस	रस	गुदा	रुधिर	स्थूल	कीडी	कुमार
		५	५	अस्थि	गंध	गंध	अस्थि	विषय	पिंडज	प्रजापति
यंत्र प्रकृति पंचतत्व ब्रह्म पृष्ठ ३२	जल सूक्ष्म	१	६	लार	सुख	बुद्धि	मोह	कमल	सुगंध	वरुण
		२	७	चरबी	हाथ	प्राण	चलना	मूत्र	मनुष्य धारी	स्वामी कार्तिक
		३	८	पसीना	पाव	जिह्वा	तेज	रुधिर	पशुपक्षी धारी	ब्रह्मा
		४	९	बीज	लिंग	लिंग	बाज	सूक्ष्म	दुर्गंध	इंद्र
		५	१०	रुधिर	गुदा	रस	मांस	कर्मेंद्रिय	स्थावर	चंद्र
	अग्निकारण	१	११	नींद	कान	चित्त	लोभ	पेट	पंची	शिव
		२	१२	तृषा	त्वचा	उदान	कूदना	प्रकाश	जलचर	सूर्य
		३	१३	क्षुधा	आंख	आंख	क्षुधा	ज्ञान	कीडी	वासुदेव
		४	१४	तेज	जिह्वा	पाँव	पसीना	कारण	नाग	यमराज
		५	१५	आलस	नाक	रूप	नाडी	ज्ञानेंद्रिय	अंडज	काल
वायु महाकारण		१	१६	फैलना	व्यान	मन	क्रोध	हाथ	आतप काल	शक्ति
		२	१७	दौडना	समान	अपान	दौडना	स्वासा	शरद काल	हनुमान्
		३	१८	कूदना	उदान	त्वचा	तृषा	शक्ति	वर्षाकाल	कुबेर
		४	१९	चलना	प्राण	हाथ	चरबी	महा कारण	सदाकाल	भैरव
		५	२०	सुकडनो	अपान	स्पर्श	चर्म	प्राण	उष्मज	सुराचानि
आकाश केवल		१	२१	काम	अंतः करण	अंतः करण	काम	शिर	भूत	विष्णु
		२	२२	क्रोध	मन	बयाण	फैलना	रूप	अमर	ओंकार
		३	२३	लोभ	चित्त	कान	नींद	स्थान	सिद्ध	नारायण
		४	२४	मोह	बुद्धि	मुख	लार	केवल	देव	लक्ष्मा
		५	२५	मद	अहंकार	शब्द	रोम	अंतः करण	मेघ	ब्रह्म

दोहा--पंचतत्त्व सब एक है, ब्रह्म अलख अद्वैत ।
निराकार निर्गुण अलख, नहीं कृष्ण नहीं श्वेत॥
अनुभव बूझे ब्रह्मकी, जो देवै अज्ञान ।
ब्रह्म निरूपण ना कियो, ना पायो गुरु ज्ञान ॥
आदि युगादि अनादिसे, पंच तत्त्वको खेल ।
अनुभव विन सब झूठ है मूरख भूले गैल ॥
पंचतत्त्व अभिलाखसे, ब्रह्मप्रत्यक्ष प्रमाण ।
भरम भूल अज्ञानमें, घर घर गयो मैं श्वान ।

कवित्त--तत्त्वको पसार सब जगत दिखाय देते, तत्त्वको पसार शून्यमें दिखात है । तत्त्वको पसार सब रूपमें प्रकाश होत, तत्त्वको पसार सब जीवमें दिखात है ॥ तत्त्वको पसार सब चार खान देखत है तत्त्वको पसार राग दोषमें दिखात है तत्त्वको प्रमाण जान तत्त्वको प्रधान मान, तत्त्व अभिलाष ज्ञान तत्त्व सब बात है ॥

मैंने हाथ जोड़कर कहा कि, अग्निका जलसे वैर है और वायुका पृथ्वीसे वैर है, इसको एक जगह करनेवाला कौन है ? और सर्व मतका ज्ञान है कि, महाप्रलयमें पंचतत्त्वका नाश हो जाता है और जगत्‌की उत्पत्तिका कारण बीज न दर्शाता है, पंचतत्त्व उसको मदद देते हैं, कदाचित् बीज हो तो पंचतत्त्वसे कुछ प्रगट नहीं हो सकता और सिवाय मृत्युलोकके चौदहभुवनोंमें जो जीव हैं उनके शरीर माया-रूपी हैं । इसमें पांच तत्त्व नहीं हैं । अनेक भक्तोंको दर्शन देता

है पंचतत्त्व नरक स्वर्गमें और राम रावणमें हैं । ब्राह्मण भंगीमें हैं, गधा और महात्मामें हैं स्वप्नमें जो पदार्थ दर्शाता है उसमें कोई तत्त्व नहीं है । चौबीस अवतार वेद पुराण शास्त्र गुरु सर्व पूजनीयका अपमान इस ज्ञानमें प्रगट दर्शाता है । जडरूपी पंचतत्त्वको ऐसी सामर्थ्य नहीं है कि, सातों आकाश सातों पातालमें चौरासीलाख सृष्टि अनन्त भांतिकी उत्पन्न और पालन करके संहार करे, तत्त्व और ब्रह्म दो शब्द हैं तत्त्वको ब्रह्म कहना मूर्खका काम है; यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे ॥

इति अभिलाखसागर गुरु शिष्यसंवाद पांचवें
तरंगमें छटी लहरी

ब्रह्म विराटरूप है

श्रीसर्वजगते नमः ॥ मैं दूसरे महात्माके पास गया और सब हाल अपना कहा । तब महात्मा गुरु बोले कि, ब्रह्मका रूप विराट् यावत् ब्रह्मांड उसका रूप है, जब आदिमें ब्रह्म अद्वैत रहा तब कोई तत्त्व आदिक नहीं था और तम प्रकाश भी नहीं रहा उसके पीछे जो कुछ उत्पन्न हुआ वह अब हुआ; इस कारण सब उसका स्वरूप है । इसके सिवाय जो पदार्थ आदि अनादिसे उत्पन्न हुआ है उसका नाश नहीं हुआ । कीडोंसे ब्रह्मातक, घाससे सुमेरुगिरि (पर्वत) तक ज्योंका त्यों हुआ है और कोई नई सृष्टि भी

आजतक नहीं हुई; जैसे समुद्रमें लहरें उत्पन्न हो नाश हुआ करती हैं उसी प्रमाण यह चौरासी लाख योनि भी गुप्त प्रकट हुआ करती हैं। ताम्बूलका पत्ता जैसे नित्य उत्पन्न होता है वैसे नित्य नाश होता है। पृष्ठ ३९, ४०, ४१,में विराट् रूपके यंत्रमें और दोहा चौपाईमें देखो-

चौपाई

ब्रह्म विराट सत्य परधान। वेद शासतर कहत पुरान ॥
पंच तत्त्वका पुतला बने। चौदह लोक ब्रह्म सब गने ॥
शिर आकाश पांव पाताल। सूरज अलख चरण दिकपाल॥
मस्तक चन्द्र बरौनी तारा। चोटी बादल अस्थिपसारा ॥
ऐसी उपमा सब जग मोहे। ब्रह्म विराट अखंड पिरोहे ॥
अन्तःकरण ज्ञान सब झूंठा। सहज सुषोपतिमें सब डीठा ॥
सुखदुःखमान अपमान अनिथ्या। नरकस्वर्ग सबजानो मिथ्या॥
रूप विराट एक ब्रह्मंडा। पूरण ब्रह्म अभिलाख अखंडा ॥

दोहा-चार खान ब्रह्मांडमें स्वर्ग पताल मिलाय।
ब्रह्म रूप निश्चय करो, और ज्ञान जर जाय ॥
शिर आकाश पाताल पग, और मध्य सब अंग॥
मलसे उपज्यो जीव यह, करता अहं अहंग ॥
यह विराट संसार है, वेद शास्त्र हैं साख।
ध्यान गुरू उपदेशसे, करै सदा अभिलाख ॥

यंत्र विराट्रूपब्रह्म।निराकार			
नंबर	विराट्	सूक्ष्म	बोध
१	ब्रह्म	अंत:करण	अंतरिंद्रिय १
२	शक्ति	मन	२
३	विष्णु	चित्त	३
४	ब्रह्मा	बुद्धि	४
५	शिव	अहंकार	५
६	कुबेर	कान	ज्ञानेंद्रिय १
७	गणेश	त्वचा	२
८	सूर्य	आंख	३
९	सरस्वती	जिह्वा	४
१०	अश्विनीकुमार	नाक	५
११	वरुण	मुख	कर्मेंद्रिय १
१२	इन्द्र	हाथ	२
१३	दिग्पाल	पांव	३
१४	प्रजापति	लिंग	४
१५	यमराज	गुदा	५
१६	आकाश	शिर	आकाशप्रकृति १
१७	कैलास	कंठ	२
१८	वैकुंठ	हृदय	३
१९	क्षीरसागर	पेट	४
२०	मध्यलोक	कमर	५
२१	विराट्	फैलना	वायुप्रकृति १
२२	वायु	दौडना	२
२३	आवागमन	कूदना	३
२४	स्वासा	चलना	४
२५	अदृष्ट	सिकुडना	५
२६	मौत	नींद	अग्निप्रकृति १
२७	प्यास	तृषा	२
२८	तृष्णा	क्षुधा	३
२९	अग्नि	तेज	४

यंत्र विराट्‌रूपब्रह्म निराकार

नंबर	विराट्	सूक्ष्म	बाध.
३०	नींद	आलस	५
३१	तेल	लार	जलप्रकृति १
३२	दूध	चरबी	२
३३	ओस	पसीना	३
३४	बरफ	बीज	४
३५	जल	रुधिर	५
३६	वनस्पति	रोम	पृथ्वी प्रकृति १
३७	दशों दिशा	चर्म	२
३८	नदी	नाडी	३
३९	मिट्टी	मांस	४
४०	पहाड	अस्थि	५
४१	ब्रह्मलोक	ब्रह्मांड	सर्वशरीर १
४२	बादल	चोटी	२
४३	चंद्र	मस्तक	३
४४	वर्षाऋतु	भौं	४
४५	तारा	बरौनी	५
४६	रात	पलकबंदहोना	६
४७	दिन	पलक खुलना	७
४८	ग्रहण	नेत्र दुखना	८
४९	संध्या	पलक	९
५०	सुगंध	इडा	१०
५१	दुर्गंध	पिंगला	११
५२	लज्जा	ऊपरका होठ	१२
५३	प्रीत	नीचेका होठ	१३
५४	वैर	दंत	१४
५५	अरुण मेघ	हसना	१५
५६	बिजली	छींक	१६
५७	कोहरा	मुखधूम	१७
५८	अक्षर	बोलना	१८

यंत्र विराट्रूपब्रह्मनिराकार			
५९	जिन्नलोक	गरदन	१९
६०	उदयास्ताचल	कंधा	२०
६१	देवता	अंगुलीहात	२१
६२	भाग	रेखा	२२
६३	धनुप	नाखुन	२३
६४	कल्पवृक्ष	छाती	२४
६५	कामधेनु	चुचा	२५
६६	नरक	पीठ	२६
६७	शून्यलोक	नाभी	२७
६८	मैथुन	अंड	२८
६९	जीव	मल	२९
७०	शरीर	मूत्र	३०
७१	अतलवितललोक	चुतड	३१
७२	सुतललोक	जंघा	३२
७३	रसातललाक	घुटना	३३
७४	महीतललोक	पिंडली	३४
७५	पाताललोक	पांव	३५
७६	तलातललोक	तलवा	३६
७७	दैत्यलोक	अंगुलीपाव	३७
७८	भोर	कपोल	३८
७९	चारोंयुग	अवस्था	३९
८०	षटरस	जिह्वा	४०
८१	उत्पत्ति	जागना	४१
८२	भूकंप	करवटबदलना	४२
८३	चौरासीलाखयोंान	आहार	४३
८४	शीसमारचक्र	घुमना	४४
८५	माया	इच्छा	४५
८६	काम	भग	४६
८७	वर्षाकाल	बालअवस्था	४७
८८	सर्दकाल	तरुणअवस्था	४८
८९	आतपकाल	वृद्धअवस्था	४९

अनेक ग्रन्थ और पुराणका मत है कि, ब्रह्म विराट्‌रूप है, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक अखंड, विराट् एक है, मैंने हाथ जोडकर कहा कि, विराट्‌रूप ब्रह्मका अनेक ग्रन्थोंमें लिखा है, आपने सबसे अधिक सम्पूर्ण बताया, आपकी बुद्धि नहीं है, चौंबीस अवतार किसके होते हैं ? राम कृष्ण ब्रह्म नहीं थे तो कौन थे ? ब्रह्मा विष्णु महादेव मिथ्या हैं या सत्व ? व्यासभगवानने अठारह पुराणोंमें ब्रह्मलीला कही है उसके वाक्य ब्रह्मवाक्य समान हैं. बडे २ राजा बादशाह जो लाखों सुखको छोड करके जंगलमें चले जाते हैं उनको क्या प्राप्त होता है ? हजारों भक्तोंको कलियुगमें परमेश्वरका दर्शन हुआ एक ब्राह्मण होता है, उसका पाँव धोकर संसार पीता है । एक भंगी होता है, उसको कोई छूता नहीं । एक पत्थर हीरा है और एक पाखानेमें लगाया जाता है सब पञ्चतत्त्व हैं परंतु प्रकाशरूप परमात्माका कुछ और ही है । पंचतत्त्वके ज्ञानमें भक्तिका नाश होता है । भक्तिविरुद्ध पुरुष दैत्य प्रसिद्ध होता है चैत्यन्य अवस्थामें कोई अपने ऊपर विष्ठा नहीं करता । कदाचित् ब्रह्मपद तत्त्व होता तो कोटचनुकोटि योगसे भजन कीर्तन पूजा न होती । अश्वमेधयज्ञका फल कौन देता है ? दिन रात कौन करता है ? इस ज्ञानमें मेरा बोध नहीं होगा; लाखों शंकायें हैं ब्रह्मासे भी विराट् ब्रह्मका बोध नहीं होगा, यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे ॥

इति पांचवें तरंगमें सातवीं लहरी

शब्द ब्रह्म है

श्रीओंकाराय नमः ॥ मैं दूसरे महात्माके पास गया और सब हाल अपना कहा । तब महात्मा गुरु बोले कि, शब्द ब्रह्म है, आदिमें ओम् शब्द जगत्का कर्ता वेदमें प्रधान है, उसका अर्थ मैं हूं उस शब्दसे चौरासी लाख सृष्टि उत्पन्न होगयी । जबतक ॐ का ओंकार रहेगा तबतक यह सृष्टि बनी रहेगी और शरीरमध्य भी जबतक शब्द है तबतक सब कुछ है । शब्द नाश होने उपरान्त शरीर भयंकर मुर्दा हो जाता है । शब्द रहित ब्रह्मका ज्ञान भी नहीं हो सकता, ब्रह्मा, विष्णु, महेश आदि देवताओंको जब अनुभव हुआ तब शब्दसे हुआ । आदिमें ब्रह्माको तत्त्वशब्दका अनुभव हुआ । चार वेद, छःशास्त्र, अठारह पुराण, मंत्र, गायत्री, सब शब्द हैं, भजन, स्मरण, कीर्तन सब शब्द होना अनेक आचार्योंका मत प्रसिद्ध है । वे लोग ओंकारको ब्रह्म जानते हैं, कोई ज्ञानी उसको सोहं कहते हैं । जो नासिकाद्वारा सब जीवोंके आपही आप उच्चारण होता है । अर्थ वही मैं हूं । ओहं सोहं जाप वेद परमाण है । जो कोई जाप करे तो ब्रह्मका अनुभव होवे । कुछ चौपाई ओंकारबानी सिद्धांतकी देखने योग्य है--

चौपाई

निराकारको माथ नवाऊं । घटघटकी अभिलाख मिटाऊं ॥
सबसे आदितत्त्व आकास । जिसकी आदि न पायो व्यास॥

उसकी आदि बखानै कौन । इच्छारूपी उपज्यो पौन ॥
पूरण पवन भयो यह जबहीं । पावकतत्त्व प्रकटभइ तबहीं ॥
पावक पवन मथ्यो आकाश । आपरूप उपज्यो परकाश ॥
आपरूप स्थिर जब भयो । ताको रूप पृथ्वी भयो ॥
आदि तत्त्व वेदनमें आवै । चार खानके जीव कहावै ॥
बाहरसे भीतर जब आवै । निराकार ओंकार कहावै ॥
चार वेद उसका गुण गावै । छहों शास्त्र भेद नहिं पावै ॥
अक्षर तीन एक सुर मानो । वव्वा कक्का ररा जानो ॥
वाका आदि कहे सब कोई । कर्ता धर्ता जानो सोई ॥
काको कारण मध्य पहचानो । राको कारज अन्त बखानो ॥
कर्ता कारण कारज होई । ताको कर्म कहो सब कोई ॥
अक्षर तीन कर्ममें आनो । जैसाका तैसा दर्शानो ॥
कर्म प्रधान वेद अस कहै । जैसा करै सो तैसा लहै ॥
व्यंजन तीन एक स्वर जानो । ताको ॐ कार पहिचानो ॥
ब्रह्मरूप आयो ॐ कार । मायारूपी मिल्यो मकार ॥
मम्मा मोहरूप जब आयो । अक्षर चार वेद कहवायो ॥
बानी चार पदारथ चारी । चारों युग अभिलाख पुकारी ॥
वव्वा सामवेद कहवावै । कक्का यजुर्वेद सब गावै ॥
रराको ऋग्वेद बतावै । मम्मा वेद अथर्वण गावै ॥
तीन वेदमें ब्रह्म विचार । चौथा वेद मोहका सार ॥
अक्षर तीन एक स्वर होई । भये अठाइस अक्षर सोई ॥
योग्य तिथी नक्षत्र अठाइस । ॐ कारकी सब पैदाइश ॥

निर्गुणसे सहगुण जब भयऊ। लख चौरासी पैदा भयऊ ॥
बब्बा वास करै मन माही। कक्का चितमें रहे समाही ॥
ररीं अवध विलास बखानो। मम्मा अहंकार पद जानो ॥
अन्तस निराकार कहवावै। शून्य सरूप अकाश बतावै ॥
हैं ॐकारमें अक्षर तीन। माया मिले पांच परवीन ॥
पांच तत्त्वका खेल बनाया। रातदिवस सबको दरसाया ॥
ॐकार एक शब्द कहावै। ताको रूप कौन लख पावै ॥
किञ्चित् शब्द पकडमें आवै। शब्द करंता लखा न जावै ॥
आपहिआप आपको ध्यावै। तीन लोकमें पता न पावै ॥
आदि एक निर्गुणमें आवै। पांच तत्व हुइ जग उपजावै ॥
पाचों पाञ्च पचीस कहावै। तीस रूपकी देह बतावै ॥
पंचविषय अरु पंच विकार। ज्ञान कर्म दश इन्द्री सार ॥
पंच प्राण अरु वायू पंच। पंच अवस्था भये शिर पंच ॥
रजगुण ब्रह्मा सतगुण हरी। तमगुण शंकर करता करी ॥
सुरज और गणेश मिलावे। पांच देवका नाम बतावे ॥
शब्द स्परश रूप निहारो। तरुगन्ध सुभाव विचारो ॥
त्वचानाक अरु शरवण बानी। चक्षु ज्ञान अरु इन्द्री जानी ॥
हाथ पांव मुख लिंग गुदा। कर्म इन्द्री जानो सदा ॥
प्राण अपान व्यान समान। पंच प्राण प्रगटे उदान ॥
नाक किरकिला कुर्रम मानो। दत्त धनंजय वायू जानो ॥
जाग्रत स्वप्न सुषुप्ती सबको। तुर्य उन्मनी योगी जनको ॥
चौदह इन्द्रिय रजोगुण मानो। चौदह देव सतोगुण जानो ॥

पांच तत्त्व पच्चीस विकारा । तमगुणसे उपज्यो संसारा ॥
ॐकार सब जग उपजाया । ब्रह्मा विष्णु महेश कहाया ॥
आदि शब्द ओंकार कहावै । ताकी महिमा कही न जावै॥
मंत्र गायत्री है ॐकार । राम कृष्ण जानो ॐकार ॥
महा वाक्य ॐकार कहावै । बीज मन्त्र ॐकार कहावै ॥
ओहं सोहं है ॐकार । तैतिस अक्षरका आधार ॥
ॐकार सोलह स्वर जानो । अक्षरसहित नहीं कछु मानो॥
ॐकार चौबिस औतार । शक्ति भैरव पवनकुमार ॥
अष्टादश पुराण ॐकार । मन्त्र यन्त्र वरणों ॐकार ॥
ॐकारसे ध्यान लगावै । निराकारका दर्शन पावै ॥
श्वास २ पर अजपा जापै । परमानन्द मुक्तिसे थापै ॥
आसन वज्र खेचरी मुद्रा । जपै शुद्ध होकर दिन पंद्रा ॥
गणितप्रमाणजपै जब लाख । पूरनहोय दास अभिलाख ॥
संवतउन्निस सौ चौव्वालिस । कृष्णपक्ष वैशाख अमावस ॥

कवित्त शब्दसे आकाश और पताल मृत्युलोक भयो, शब्दसे पसार खंड दीपको दिखात हैं । शब्दसे सुवर्ग वर्ण ब्राह्मण और क्षत्री भयो, शब्दसे कहाये वैश्य शूद्र चार जात हैं । शब्दसे शरीरजीव इन्द्री और ज्ञान बुद्धि, शब्दसे अनेक यंत्र मंत्र करामत है । शब्दसे है सत्य नाम शब्दसे असत्य नाम शब्दसे अनेक शब्द शब्द तत्त्व बात है ॥

मैंने हाथ जोडकर कहा कि, शब्द मुँहसे होता है और मुँह शरीरमें होता है उसमें आकाश होता है। शब्द आकाश

प्रकृति है, पञ्च विषयमें एक विषय है। शब्द जड है, उसका मालिक करनेवाला है शब्द स्वतः आप ही नहीं हो सकता गूंगे पुरुष भी होते हैं। उष्मजयोनिके जीव शब्द नहीं करते। गुदासे शब्द होता है वह कुछ प्रधान नहीं है। वेदमें ब्रह्म निराकार प्रधान है जो ओंकार ब्रह्म जानेगा वय शब्दको ब्रह्म नहीं कहेगा। ओंकार वाणी बहुत शुद्ध है, परन्तु वह शब्द किस प्रकारसे ब्रह्म हो सकता? यह सुनकर महागुरु चुप हो रहे ॥

इति अभिलाखसागर गुरु शिष्यसवाद पांचवें
तरंगमें आठवीं लहरी

अक्षर ब्रह्म है

श्रीचित्रगुप्ताय नमः ॥ मैं दूसरे महात्माके पास गया और सब हाल अपना कहा। तब महात्मा गुरु बोले कि अक्षर ब्रह्म हैं, कोई पदार्थ जड चेतन अक्षरके बाहर नहीं हैं, अक्षरकी शक्ति मंत्र गायत्री आदिकमें ब्रह्मसमान पूजनीय है और अक्षरके रहित ब्रह्म भी नहीं है और जगत् भी नहीं और माया भी नहीं है। सिवाय अक्षरके और कोई ब्रह्म ऐसा नहीं है जो एकरूपसे सर्व व्यापक हो; वही अक्षरकी शक्ति निराकार ब्रह्म अनुमान होता है। ब्रह्मका अनुभव अक्षर अधीन हैं, किसी भक्तने ब्रह्मका अनुभव पाया होगा तो अक्षरके सामर्थ्यसे पाया होगा नाम अक्षरके आधीन है, जगद्रूपी कागजपर यह सृष्टि

अररूप है। शब्दका नाश है, अक्षरका नाश नहीं है: तत्त्व मसि ओंकार आदिक महावाक्य तथा चारों वेद जो प्रसिद्ध हैं वे भी अक्षर हैं, जो अक्षरको नाशवान् जाने वह मूर्ख है। ब्रह्मका अनुभव सिवाय अक्षरके दूसरे पदार्थमें देखना अज्ञान है। अक्षरका यंत्र पृष्ठ ४९ में है सो देखो, अक्षरका अन्त नहीं ॥

अक्षरदीपिका-चौपाई

कक्का कर्त्ता करम बनाया। खक्खा खं आकाश लगाया॥
गग्ग गुरु उपदेश न भावैं। घघ्घा घोर नरकमें जावैं॥
ङा अक्षर व्यंजन नहिं होवै। ज्ञान होय तो सब कुछ होवै॥
चच्चा चार देवमें पेखो। छच्छा छहों शास्त्रमें देखो॥
जज्जा जगत् एक दरसावै। झझ्झा झाड बीज दो गावै॥
ञा अक्षर ईश्वर पहचानो। ञावां एक एक ब्रह्म अनुमानो॥
टट्टा टेक नकी राखै। ठा ठाकुर अमृत भाखै॥
डड्डा डानि निमाया जावै। ढड्ढा ढोल बजावै गावै॥
णा अक्षर सब रांड बिरादर। जबतक खसम न देवै आदर॥
तत्ता तन मन दुइ मत जानो। थथ्था थाह नहीं दरसानो॥
दद्दा दयामूल है घटमें। धध्धा ध्यान रहै प्रगटहिमें॥
नन्ना नाम सत्य है सत्य। मनअभिलाख है अन्त असत्य॥
पप्पा पाप पुण्य पहचानो। फफ्फा फनपर जगत् बसानो॥
बब्बा ब्रह्म अखंड अलेखा। भभ्भा मूल द्वैत बहु भेखा॥

यंत्र अक्षर

नंबर	षट्अक्षर	अक्षरद्वादश	गरुड १				मार्जारी २					सिंह ३					श्वान ४					सर्प ५					मूषक ६				
			अ	इ	उ	ए	क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज	झ	ञ	ट	ठ	ड	ढ	ण	त	थ	द	ध	न	प	फ	ब	भ	म
			१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
१	अ	अ	अ	इ	[illegible]	ए	क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज	झ	ञ	ट	ठ	ड	ढ	ण	त	थ	द	ध	न	प	फ	ब	भ	म
		आ	आ	इा	उ	एा	का	खा	गा	घा	ङा	चा	छा	जा	झा	ञा	टा	ठा	डा	ढा	णा	ता	था	दा	धा	ना	पा	फा	बा	भा	मा
२	इ	इ	अि	इि	उि	एि	कि	खि	गि	घि	ङि	चि	छि	जि	झि	ञि	टि	ठि	डि	ढि	णि	ति	थि	दि	धि	नि	पि	फि	बि	भि	मि
		ई	अी	इी	उी	एी	की	खी	गी	घी	ङी	ची	छी	जी	झी	ञी	टी	ठी	डी	ढी	णी	ती	थी	दी	धी	नी	पी	फी	बी	भी	मी
३	उ	उ	अु	इु	उु	एु	कु	खु	गु	घु	ङु	चु	छु	जु	झु	ञु	टु	ठु	डु	ढु	णु	तु	थु	दु	धु	नु	पु	फु	बु	भु	मु
		ऊ	अू	इू	उू	एू	कू	खू	गू	घू	ङू	चू	छू	जू	झू	ञू	टू	ठू	डू	ढू	णू	तू	थू	दू	धू	नू	पू	फू	बू	भू	मू
४	ए	ए	अे	इे	उे	एे	के	खे	गे	घे	ङे	चे	छे	जे	झे	ञे	टे	ठे	डे	ढे	णे	ते	थे	दे	धे	ने	पे	फे	बे	भे	मे
		ऐ	अै	इै	उै	एै	कै	खै	गै	घै	ङै	चै	छै	जै	झै	ञै	टै	ठै	डै	ढै	णै	तै	थै	दै	धै	नै	पै	फै	बै	भै	मै
५	ओ	आं	ओ	इो	उो	एो	को	खो	गो	घो	ङो	चो	छो	जो	झो	ञो	टो	ठो	डो	ढो	णो	तो	थो	दो	धो	नो	पा	फा	बो	भा	मो
		औ	औ	इौ	उौ	एौ	कौ	खौ	गौ	घौ	ङौ	चौ	छौ	जौ	झौ	ञौ	टौ	ठौ	डौ	ढा	णा	तौ	थौ	दौ	धौ	नौ	पौ	फौ	बौ	भौ	मा
६	अं	अ	अं	इं	उं	एं	कं	खं	गं	घं	ङं	चं	छं	जं	झं	ञं	टं	ठं	डं	ढं	णं	तं	थं	दं	धं	नं	पं	फं	बं	भं	मं
		अः	अः	इः	उः	एः	कः	खः	गः	घः	ङः	चः	छः	जः	झः	ञः	टः	ठः	डः	ढः	णः	तः	थः	दः	धः	नः	पः	फः	बः	भः	मः

मम्मा मोह मृत्यु निकट रहै। यह अभिलाख देखिके कहैं ॥
यय्या याद एकको राखो। ररा रामनाम नित भाखो ॥
लल्ला लीला करै दिखावै। वव्वा वाह गुरु दर्शावै ॥
सस्सा सूरज चन्द्र प्रधान। शश्शा शंकर है भगवान ॥
षा अक्षर कुछ काम न आवै। विना अर्थ मिथ्या दर्शावै ॥
हहहा हर हर हर हर गावो। संपूरण अभिलाष पुरावो ॥
आ इ उ एक होवे ओंकार। सत्य नाम अभिलाखविचार ॥

मैंने हाथ जोडकर कहा कि, जिसका रूप ह उसका नाश है, अक्षर कारज रूप है कर्ता नहीं,नेह अक्षर भी हो सकता है, एक अक्षरका दूसरे अक्षरका मालिक नहीं हो सकता,यथार्थमें एक अक्षर दूसरे अक्षरसे विरुद्ध है, जैसे- 'ह' औ 'न' और अक्षरका प्रमाण हिन्दीमें छत्तीस और फार्सीमें बत्तीस और अर्बीमें अट्ठाईस और अंग्रेजीमें छब्बीस, हरएक मुल्कमें कम सिवाय है, अक्षर लिखनेवालेके आधीन है और शुद्ध अशुद्धका भी विचार हो सकता है, अक्षर शब्दका भेद है, जैसे-होठसे प,फ, ब,भ, म,इसी तरह तालु जिह्वा दन्तसे है, जो शब्द निकलता है वह अक्षर हो जाता है शिवाय मनुष्यके और योनिमें अक्षरका ज्ञान नहीं है, ब्रह्मका ज्ञान सबको है, आगे ऋषि मुनि व्यास शुकदेव आदिक बहुत विद्वान् थे उन लोगोंने तपके बलसे अक्षर बनाया और सब पदार्थ जो अनाम थे उनको नाम रक्खा, इस अक्षरके

ज्ञानमें ब्रह्मका बोध रत्ती प्रमाण नहीं हो सकता, यह सुन महात्मा गुरु चुप हो रहे ॥

इति अभिलाखसागर गुरु शिष्यसंवाद पांचवें तरंगमें नौवीं लहरी

इति पांचवां तरंग

छठवां तरंग

चैतन्यब्रह्म विचार

चौवीस अवतार ब्रह्म है

श्रीविष्णवे नमः । मैं दूसरे महात्माके पास गया और सब हाल अपना कहा, तब महात्मा गुरु बोले कि, ब्रह्म चौवीस अवतार होकर सबकाल जगत्में रहता है और सगुणरूप साकार विष्णुनाम है जब २ इस पृथ्वीपर दुष्ट दैत्य दुःखदायी होते हैं तब २ वह प्रगट होकर उनका नाश करता है । एक अवतारसे सबकाल जगत्में बना रहता है; जैसा अब कल्की अवतार होनेवाला है जब कलिंजर दैत्य दुःखदायी होगा तब वह रूप प्रगट होगा अभी गुप्त है कुछछन्द और दोहा कविता अवतारोंके देखने योग्य है ।

चौवीस अवतार-दोहा

मीनरूप भगवानसे, चार वेद विस्तार ।
कच्छरूप होइ अवधिमें, चौदह रत्न निकार
शूकर होइ पृथ्वी रचो, हिरण्याक्ष संहार ।
नरहरि हिरणाकुश हन्यो, कर प्रहलाद उबार ॥

वामन होय बलिका छल्यो, तीन पैंड विश्वास ।
परशुराम अवतारसे, सहस बाहुका नाश ॥
रामरूप रावण हन्यो, बाल तज्यो संसार ।
कृष्ण रूप शिशुपाल अरु, दन्तवक्त्रको मार ॥
बुद्धरूपसे मौन है, कियो शुद्ध परसाद ।
निष्कलंक अभिलाख है, दश अवतार अनाद ॥
स्वयंभु मनु अवतार है, आदि पुरुषको जान ।
नारद है भक्ती कियो, दियो जगत्को ज्ञान ॥
विष्णू है पालन कियो, पुर वैकुंठ निवास ।
सनकादिक चारों ऋषी, बरस पांच परकास ॥
रूप मोहनी सिन्धुपर, सुरा दैत्यको पान ।
कपिल रूप है मातको, सांख्य बतायो ज्ञान ॥
व्यास प्रसिद्ध पुराणमें, अष्टादश षट चार ।
दत्तात्रय चौबीस गुरु, ज्ञान किये विस्तार ॥
पृथु पृथ्वीको धेनुकर, सकल औषधी काढ ।
हयग्रीव मधु कैटभहिं, मारो दैत्य पछाड ॥
बद्रिनरायण पर्वतहिं, करत तपस्या शुद्ध ।
प्रश्न उत्तरके वास्ते, भयो हंस परसिद्ध ॥
धन्वंतरि अवतार है, कियो रोगको नाश ।
यज्ञ ऋषभ हुइ जैनमत, कियो जगत परकाश ॥
ये चौबीस अवतार तू, निराकारके जान ।
मुक्त होय अभिलाखसे, करै जो अन्तर ध्यान ॥

दश अवतार-ध्रुपदछन्द

वाह गुरु राम सेवक परणाम तुही पूरण सब काम सुभग सुन्दर अभिराम तुही दिन तुही मीन तुही शंखासुर मार चतुर्वेद निकारा घिरत तुही तेल तुही खेलनमें खेल तुही परबत और शैल तुही झाड तुही बेल तुही राह तुही गैल तुही शूकर अवतार हिरण्याक्ष संहारा ॥ तुही सिद्ध तुही जोग तुही भाव तुही भोग तुही दुःख तुही रोग तुही हर्ष तुही शोक तुही सायत संयोग तुही पाट तुही कच्छप अवतार रतन चौदह सारा । तुही राज तुही पाट तुही राह तुही बाट तुही पूर तुही घाट तुही तख्त तुही खाट तुही मख्मल और टाट तुही नरहर अवतार हिरण्यकश्यप मारा ॥ तुही तात तुही मात तुही पुत्र तुही भ्रात तुही चाकर परजात तुही आवत और जात तुही पांच तुही सात तुही बावन अवतार छल्यो बली अविचारा । तुही ढाल तुही खड्ग तुही भूमि तुही स्वर्ग तुही याज्ञवल्क्य गर्ग तुही जात तुही वरग तुही सिंह तुही मृग तुही भृगपति अवतार सहसबाहुको मारा ॥ तुही शास्त्र तुही वेद तुही भर्म तुही भेद तुही हर्ष तुही खेद तुही शर्म तुही स्वेद तुही औषध अरु वैद्य तुही राम तुही धाम तुही दशरथप्यारा । तुही रंग तुही रूप तुही छांह तुही धूम तुही रंक तुही भूप तुही सिंधु तुही कूप तुही परगट अरु गुप्त तुही सुंदर अनुरूप तुही नन्दके दुलारा ॥ तुही यज्ञ तुही जाप तुही पुण्य तुही पाप तुही मेट तुही थाप तुही मंगल और शाप तुही

पुत्र तुही बाप बुद्ध तुही आप जगन्नाथ सवारा । आदि तुही अन्त तुही साधु तुही सन्त तुही जीव तुही जन्तु तुही जीभ तुही दंत तुही एक लाख तुही पूरण अभिलाख कलंकी प्यारा ॥

कवित्त--मच्छ कच्छ शूकर नरसिंह वामन परशुराम, राम कृष्ण बुद्ध निष्कलंक दश आकार है । स्वयंभु मनु नारद सनकादिकरूप मोहनी विष्णु, कपिलदेव व्यासदेवजी आचार है ॥ दत्ता पृथु बद्री हयग्रीव हंसयज्ञ ऋषभ, चौबीस धन्वंतर अवतार गति अपार है । कारण अभिलाख जान समय पाय प्रकट होत,चौबीस अवतार ब्रह्मरूप निराकार है॥

मैंने हाथ जोडकर कहा कि, चौबीस अवतारका सिद्धान्त एक महात्माने मेरेको उदेपश किया था, वह सम्पूर्ण कहता हूं सुनो--

पहला अवतार मीन हुआ, उसीको मच्छ कहते हैं, चैत्र कृष्ण पंचमीको राजा मनुके कमंडलुसे उत्पन्न होकर शंखासुर दैत्यको मारा, सात लाख पैंतीस हजार वर्ष राज्य किया, चारों वेद जो चोरले गया था वह प्रकट हुआ यह मत्स्यपुराणकी कथा है । उसका सिद्धान्त ऐसा है कि, बीजरूपी ब्रह्म जिसको मीन भी कहते हैं लिंगरूपी मच्छ शरीर धरके शंखरूपी भगको छेदन करता है और श्वास जिसको वेद कहते हैं वह प्रकट होता है । श्वास शरीरमें चार हैं--मुख, नासिका, गुदा, लिंग, यह पहला अवतार हुआ, ये सबके होते हैं ॥

दूसरा अवतार विष्णुकी इच्छासे ज्येष्ठ कृष्ण पंचमीको क्षीरसागरमें कच्छपरूप हुवा और महिषासुर दैत्यको मार-करके तीन लाख तेरह हजार वर्ष राज्य किया और क्षीर-सागरको मथन करके चौदह रत्न उत्पन्न किये।

दोहा—धनु धन्वतरि धेनु हय, कमला शंक गयन्द।
जहर सुरा मणि कल्पतरू, रम्भा अमृत चन्द॥

यह पुराणकी बात है, उसका अर्थ ऐसा है कि, वही बीजरूपी ब्रह्म पेटको मथन करके पिंड हो जाता है कच्छ-पके समान पंच कोशके अन्तरमें रहता है और चौदह इन्द्रिय रतन समान उत्पन्न किया चार अन्तः, पांच ज्ञान, पांच कर्म ये चौदह रत्न हैं, यह दूसरा अवतार हुआ॥

तीसरा अवतार वराह (शूकर) का ब्रह्माकी छींकसे हुआ, चैत्रकृष्ण तेरसको, इक्कीस हजार वर्ष राज्य किया हिरण्याक्ष दैत्यको फाडकरके मारा और पृथ्वीको जो विष्ठाके भीतर छिपाया उसे दांतपर धरकर लाया, ये पुराणकी बाते हैं। उनका अर्थ ऐसा है कि गर्भबन्धनरूपी हिरण्याक्षको फाडकरके वही ब्रह्म शरीररूपी पृथ्वीको मल और मुत्रसे बाहिर लाता है जो स्त्री तथा माताके पेटमें पडा रहता है, गर्भ त्यागरूपी शक्ति वराह मलमुत्रसंगसे शूकर नाम प्रगट हुआ; यह तीसरा अवतार हुआ॥

चौथा अवतार नरसिंह खंभ फाडकर प्रहलादके वास्ते हुआ वैशाख शुक्ल चौदसको प्रगट होकर सत्ताइस हजार वर्ष राज्य किया, और हिरण्यकशिपु दैत्यको फाड करके

रुधिर उसका पान कर लिया, यह पुराणकी बात है उसका अर्थ ऐसा है कि, औरतका जंघारूपी खंभ पांव फाडकर बालक पैदा होता है, बुद्धि सिंहकी रूप नरका शत्रुरूपी माता जो जीवको बांधा उसकी छातीपर चढकर दूधपान करता है, कि यह चौथा अवतार हुआ, इन चारों अवस्थाओंको चार पांव सत्ययुगके कहते हैं, सत्ययुगका प्रमाण सत्रह लाख अठ्ठाइस हजार वर्ष, लाख वर्ष आयु, अस्थिगत प्राण, इक्कीस ताड ऊंचे पुरुष; बीस हजार ग्रहण, कार्तिकशुक्ल नवमी गुरुवार श्रवणनक्षत्र विष्कंभयोग लालग्नमें सत्य युग उत्पन्न हुवा, चारों अवस्थामें पाप पुण्य नहीं है ॥

पांचवा अवतार वामनका हुआ, कश्यप और अदितिसे भादों शुक्ल बारसको, दो लाख अठ्ठाविस हजारवर्ष राज्य किया, राजा बलिसे साढे तीन पग पृथ्वी मांगकर तीनों लोक नाप लिया,उस पांवकी धोवन गंगाजी है ब्रह्माने ब्रह्मलोकमें धोया था, राजा बलीको पाताल भेज दिया,यह पुराणकी बात है, उसका अर्थ ऐसा है कि, लडकपनकी बालचर्याकी अवस्थाको वामन कहते हैं, उसकी बातोंपर बडे २ बलवान् छले जाते हैं, यज्ञोपवीतमें जो मांगता है वह पाता है, बलीका बंधन जनेऊ पहनना एक हैं, ब्रह्मकांसमें कैद हुवा, बडे आदमी बालकके साथ बालक हो जाते हैं, वे पाताल जाते हैं यह पांचवा अवतार हुवा ॥

छठवां अवतार परशुरामका हुआ, जमदग्नि ऋषी व रेणुकासे वैशाख शुक्ल तीजको, सत्ताइस हजार वर्ष राज्य

किया सहस्रबाहु दैत्यको मारा। इक्कीस वार पृथ्वी निःक्षत्रिय कर ब्राह्मणोंको दान कर दिया। पिताकी आज्ञासे माताका शिर काट लिया यह पुराणकी बात है। उसका अर्थ ऐसा था कि, ब्रह्मचर्यकी अवस्थाको परशुराम कहते हैं, भोगरूपी दैत्य जिसके हजारों व्यवहार भोगते हैं उसको सहस्रबाहु कहते हैं ब्रह्मचर्यमें हजारों भोग खंडन करना पडता है। सर्व भोग त्याग करना होता है। और इस अवस्थामें माताका मुख नहीं देखना चाहिये। ब्रह्मचर्य खंडन होजाता है यही अर्थ शिर काटनेका हुआ। और इक्कीस वार पृथ्वीकी परिक्रमा करके पुण्य उसका ब्रह्मको अर्पण करना चाहिये। यह पृथ्वी जीतकर दान देना सिद्ध हुआ यह छठवां अवतार हुआ॥

सातवां--अवतार रामका हुआ, राजा दशरथ और कौसल्या रानीसे चैत सुदी नवमीको, ग्यारह हजार वर्ष राज्य किया, रावण और वालि दैत्योंको मारे, यह पुराणकी बात है, उसका अर्थ ऐसा है कि, गृहस्थ अवस्थामें दश इन्द्रियका भोग है, उसमें सुख उत्पन्न होता है और आराम प्राप्त होता है। उसी आरामको राम कहते हैं और रावणरूपी मद और वालीरूपी क्रोध इस अवस्थामें मारना चाहिये, दीन वृत्तिसे रहना चाहिये, यह सातवां अवतार हुआ। इन तीनों अवस्थाको तीन पांव त्रेताके कहते हैं, त्रेताका परिमाण बारहलाख छियानवेहजार वर्ष, दश हजार वर्ष आयु, मासगत प्राण, चौदह ताड ऊंचाई,

ग्रहण संख्या छत्तीस है; वैशाख शुक्ल तीज सोमवार रोहिणी नक्षत्र शुक्ल योग कर्क लग्नमें त्रेता उत्पन्न हुआ ॥

आठवां—अवतार कृष्णका हुआ वसुदेव और देवकीसे भादों वदी अष्टमीको, कई वर्ष राज किया, शिशु-पाल और दंत्तवक्र और कंसको मारा सोलह हजार गोपी व्रजमें, सोलह हजार गोपी द्वारिकामें और एक सौ आठ पटरानीसे भोग किया, बालब्रह्मचारी अच्युत पदवी बनी रही, यह पुराणकी बात है। उसका अर्थ ऐसा है कि, वह अवस्था वानप्रस्थकी है। इस अवस्थामें स्त्री संग रहती है। विषय करना दोष है। रातको वस्त्रपर अर्द्ध बिछौनेमें तिनका रखना होता है और कामरूपी शिशुपाल, लोभरूपी दन्तवक्र, मोहरूपी कंशको मारना पडता है और सर्व प्रकारकी तपस्या इस आश्रममें करनी चाहिये, यह आठवां अवतार हुआ ॥

नववां—अवतार बुद्धका राजा इन्द्रदमनके वास्ते और पार्वतीका शाप पूर्ण होनेके लिये उडीसामें हुआ; तथा वही पिंड कृष्ण शरीका समुद्रमें बहकर द्वारकासे आया अगहन शुक्ल तीजको हुआ; तीन लाख तेईस हजार वर्ष राज्य किया, रक्तबीज दैत्यको मारा हाथ पांव नहीं है। जा-तिका भेद नहीं मौन धारण किया, यह पुराणकी बात है; उसका अर्थ ऐसा है कि, यह अवतार संन्यास अवस्था है, रक्त और बीज जो शरीरमें है उसको मारना चाहिये, हाथ पांव नहीं होना, निष्कर्म होना एक अर्थ हैं, इन्द्रदमनके वास्ते

उसका अर्थ इन्द्रियको दमन करना चाहिये। सर्वनाश तथा अद्वैतमत संन्यास है यह नवां अवतार हुआ, इन दो अवतारोंको द्वापरके दो पांव कहते हैं, उसका परिमाण आठ लाख चौसठ हजार वर्ष, हजार वर्ष आयु, रुधिरगत प्राण, सात ताड ऊंचाई, ग्रंहणसंख्या छियानवे हजार, माघ कृष्ण अमावास्या शुक्रवार श्रवण नक्षत्र सौभाग्य योग वृष लग्नमें द्वापर उत्पन्न हुआ ॥

दशवां अवतार निष्कलंकी आगे होगा, सम्भलदेश मुरादाबादके पास नैमिषारण्य तीर्थमें वैष्णव ब्राह्मणकी कुँवारी कन्यासे, भादों कृष्ण तेरस रविवार आश्लेषा नक्षत्र व्यतिपात योग मिथुन लग्नमें प्रकट होगा कलिंजर दैत्यको मारेंगे यह पुराणकी बात है, उसका अर्थ ऐसा है कि; जब कलंकरूपी शरीरको छोड देवेगा तब निष्कलंक हो जावेगा. दशवां अवतारका होना बाकी है, इस अवतारको एक पांव कलियुगका कहते हैं सौ वर्षकी आयु, अन्नगत प्राण, एक ताड़ ऊंचाई, चार लाख पचीस हजार वर्ष प्राण युगका है, जराकालको कलिंजर कहते हैं; ये दश अवतार चारों युगोंमें होते हैं अथवा एक जन्ममें दश अवस्था होती है ॥

और चौदह अवतार सूक्ष्म कारण संयोगसे और हुए, उसका भी विस्तार कहता हूं पहला अवतार स्वायम्भूमनु सृष्टिदेखनेके वास्ते ब्रह्माके हुआ वह मन इंद्रिय है, दूसरा अवतार नारदजगत्को भक्तिमार्ग बतानेके वास्ते और फिरनेके

वास्ते ब्रह्माके पुत्र है, वह चित्त इन्द्रिय है, तीसरा अवतार विष्णु संतोषी दृष्टि निराकारसे तथा ब्रह्माके पुत्र वह बुद्धि इन्द्रिय है, चौथा अवतार सनकादिक ब्रह्माके पुत्र सदा पांच वर्षकी अवस्था वह अहंकार इन्द्रिय है। पांचवा अवतार मोहनी दैत्योंसे अमृत लेनेके वास्ते क्षीरसागरसे; वह आँख हैं। छठवां अवतार कपिलजी, कर्दम ऋषि और देवहूतीसे सांख्ययोग प्रगट करनेके वास्ते,वह नाक इन्द्रिय है। सातवां अवतार व्यासजी पराशर ऋषि और मच्छोदरीसे अठारह पुराण बनाने वास्ते, यह जिह्वा है। आठवां अवतार दत्तात्रेय, अत्रि ऋषि और अनुसुया महाराणीसे २४ गुरु करनेके वास्ते, वह कान इंद्रिय है। नवां अवतार राजा पृथु वेनकी जंघासे, पृथ्वीको गौ बनाकर औषधि निकाला वह त्वचा इंद्रिय है। दशवां अवतार हयग्रीव हुआ, मधु कैटभ दैत्य मारनेके वास्ते, गुप्तसे वह हाथ है। ग्यारहवां अवतार बद्रीनारायण धर्म भार्यासे, तप करने वास्ते वह पांव है। बारहवां अवतार हंस सनकादिकके प्रश्नके उत्तर देनेवास्ते, वह लिंग है। तेरहवां अवतार धन्वतरि, क्षीर-सागरसे रोगनाश होने वास्ते, वह गुदा है। चौदहवां अवतार यज्ञऋषभ इन्द्रको कन्यासे यज्ञ करने वास्ते; वह मुख है। ये चौदह अवतार सूक्ष्मता सिद्धान्त हैं। ये चौदह अवतार सूक्ष्म और वे दश अवतार बडे सब चौवीस अवतार के होते हैं। वह व्यासजीका काव्य है तब पुरुषका चौवीस अवतार होता है। चौदह इंद्रिय दश

अवस्था सबकी होती है । यह अवतार ब्रह्मका नहीं हैं। शूकरकी पूजा; मच्छ कच्छकी पूजा कोई नहीं करता। दुष्ट जीव उसको मारकर खाते हैं। ब्रह्मको कौन खा सकता है पुराणिका अर्थ जो संकटमें है, वह सिद्धान्त नहीं है। यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे और हाथ जोडकर सूर्यको कहा मैं ब्रह्मको कि, आजसे यह सिद्धान्त अज्ञानसे मत कहना मैं ब्रह्मको नहीं जानता ॥

श्री रामचन्द्राय नमः ॥ मैं दूसरे महात्माके पास गया और सब हाल अपना कहा, तब महात्मा गुरु बोले कि२४ अवतार ब्रह्म नहीं है, कैवल राम अवतार जो अयोध्यामें हुआ और सब कल्पमें होता है वह ब्रह्म वही राम दूसरा अवतार भी लेता है जब पृथ्वीपर पाप बहुत होता है तब रामका अवतार अनेक रूपसे होता है, जानकी जो जनकपुरमें प्रगट हुई वह माया है, हर कल्पमें ऐसा होता है और अन्तमें सारी अयोध्या वैकुंठको जाती है रावण ऐसा दैत्य जिसने चौसठ चौयुगी राज्य किया—मारा, उसके साथ कुम्भकर्ण मेघनाद खर दूषण और ऐसी सेना जहां अठारह अक्षौहिणी बाजित्र थे सब नाश हुए। वाली ऐसा योधा जिसके कांखमें रावण भी षट मास पडा रहा, वह भी नाश हुआ, ताडका सुबाहु, मारीच जो विश्वामित्रके यज्ञ होने नहीं देते थे, सींकके बाणसे मारे गये, समुद्रमें सेतु

बांधा; गौतमऋषिकी स्त्री जो शिला हो गयी थी, चरण छूते अप्सरा होकर स्वर्गको गई, अठारह पद्म यूथ सेनाको इन्द्रपदभी दिया, वाल्मीकि ऋषि जो पहले व्याधाके समान थे "मरा" कहकर देवता हो गये, महादेवजी अपने इष्ट जानते हैं, वाल्मीकि ऋषिने दश हजार वर्ष पहले उसकी लीला रामाणमें गायी; तीसरा तरंग चौथी लहरीमें जो महात्माने तुमको उपदेश किया वह बहुत सत्य है और सदेह सरयूमें गुप्त हो गये, ऐसी महिमा दूसरे अवतारकी नहीं है, कुछ पद रामचरित्र देखने योग्य है

लावनी-रामचन्द्रकी सम्पूर्ण कथा

रामलच्छमन भरत शत्रुहन चारों भाई लिया जनम। अवधपुरीमें सुवरण बरसे दशरथ कीन्हो धरम अगम ॥ जय और विजय द्वारपालको सनकादिकने दिया शराप। तीन जन्मतक राक्षस होकर फिर वैकुंठ पधारो आप । रामचंद्र जब आप अवतरे तब छूटै तुम्हरे पाप । इस कारणसे गढ लंकामें निशिचरपतिका बढो प्रताप ॥ कुंभकर्णको महाजु निद्रा ब्रह्मदेवने किया करम। राम लच्छमन भरत शत्रुहन चारों भाई लिया जनम ॥ १ ॥

महापाप बाढ़यो पृथ्वीपर मेघनाद अविचार किया। चैत सुदीमें तिथी नवमीकी रामचन्द्र अवतार लिया ॥ यज्ञ राख निशिचरको मारयो ऋषिपत्नी उद्धार किया। सिता स्वयंवर

धनुष तोडकर परशुरामको हरा दिया ॥ तिलक भंग जब भयो अवधमें दशरथ पायो धाम परम। राम लच्छमन० २॥

सिया राम लच्छमन सहित जब तीनों वनको जाते थे पशु और पंछी अवधपुरीमें तडप २ मर जाते थे ॥ पांव पियादे जटा बनाये कन्द मूल फल खाते थे ॥ यक्ष गन्धरव रूप बदलकर दर्शनको सब आते थे ॥ चित्रकूटको पावन करके पंचवटीमें किया शरम। राम लच्छमन० ॥ ३ ॥

शूर्पणखा आयी जब वनमें लछमन उसकी काटी नाक। खर दूषणसे भई लड़ाई चौदह कोटि मिलायो खाक ॥ रावण और मारीच कपट कर सीताको ले गयो अचानक। रामचन्द्र पंपापुर पहुँचे गिद्ध जटायूको कर पाक ॥ वहां वालिका नाश हुआ और अंगदऊपर किया रहम। राम लच्छमन० ॥ ४ ॥

हनूमान लंकामें पहुँचे रावणका वन दियो उजार। नगर जारिके पुत्र मारिके सात समुंदर आयो पार ॥ जनक सुताको धीरज देके रामचन्द्रसे कहा पुकार। भई तयारी पम्पापुरमें वानर भालू चले अपार ॥ सीतापति सुग्रीव केसरी जामवन्त नल नील पदम ॥ राम लच्छमन० ॥ ५ ॥

चली कटक पम्पापुरसे जब सागर ऊपर वास किया। राम लच्छमन तीन दिवसतक सागरसे अर्दास किया ॥ गर्व न टूटा जब जलपतिका तब लछमनने कोप किया। अबै जलाऊं सातों सागर रामचन्द्रने शांत किया ॥ हाथ जोड़कर कहैं बिभीषण इस नादानकी रखो शरम। राम लच्छमन० ॥ ६ ॥

सेतु बांध रामेश्वर थाप्यो लश्कर उतरी एकहि बार। गया बसीठी बालि बांकुरा रावणका कांपा दरबार ॥ प्रथम लडाई मेघनादसे लछमनके भइ शक्ती पार। मूर सजीवन तुरत लिआयो अच्छा कीनो पवनकुमार ॥ भई लडाई कुम्भकरणसे रामबाणने किया खतम। रामलच्छमन ॥७॥

मेघनादको मार्‍यो लछमन रावण छोड़ो जीतकी आश। महिरावण ले गयो रामको वहां पवनसुत कीनो नाश ॥ रावणमरा रामसे लडकर जन्ममरणसे भयो खलास। लंकाराज बिभीषण पायो सब देवनकी पूरी आश ॥ मंदोदरी भई पटरानी निशिचर कुल सब भयो भसम। राम लच्छमन० ॥ ८ ॥

सीता मिली राम लछमनसों अवधपुरीको चल्यो विमान। भरत मिलाप राजाकी शोभा घर २ गावें वेद पुरान ॥ कपि भालू सब बिदा भये वर पायो दुर्लभ भक्ती ज्ञान। जनकसुताको वनमें भेज्यो लव कुश पुत्र भये बलवान ॥ अश्वमेध सम्पूरण करके राम सिधारे निज आश्रम। राम लच्छमन० ॥ ९ ॥

भले लावनी कहै खोपसे दोष न देवे अच्छे लोग ॥ दूजे तीजे फिर जो कहहों उसमें कहहों सब संयोग ॥ इसके सिवा मुकाम धारमें सब दुनियाका लागा रोग। क्या अभिलाष कहै गति अपनी भूल गया सब भक्तीयोग ॥ दशरथनन्दन दयाल होवें छूट जाय भव जाल भरम। राम लच्छमन भरत शत्रुहन चारों भाई लिया जनम ॥१०॥

रामस्तोत्र--कवित्त

चैतके महीनामें नवमी बुध शुद्ध पक्ष, भगवत् अवतार अवध सरजूतीर लेवतहैं। दशरथ कौसल्यासे रामचन्द्र प्रगट भये, कैकयी भर्त नाम लेत पाप खोवत है ॥ लछमन शत्रुहन सुमित्रासे जन्मलियो, चारों सुत अवध बीच देखत छबि जोवत है। गावत वसिष्ठ वाल्मीकि आदि जन्म कथा, सुनिके अभिलाख सहित संचित मल धोवत हैं ॥ १ ॥

विश्वामित्र राजऋषि अरण्यमें यज्ञ करे, ताडका सुबाहु नित यज्ञमें सतावत हैं। भगवत्र अवतार जान दशरथसे मांगन गयो, बालक अज्ञान जान नरपति सँकुचात हैं ॥ विद्या अभ्यासहेतु लायो है राम लखन, निशिचर संहार यज्ञ पूरण करावत हैं। गौतम त्रिया शिलारूप तारचो अभिलाख सहित, ऐसी लीला अपार व्यास आदि गावत हैं ॥ २ ॥

गुरुके दोऊ चरण वंद उठे भोर अवधचन्द्र, सुमनके कारण गये देखन फुलवाई। वहां सिया पिया हेतु पूजन जगदंब अम्ब, सखी एक आतुरसे जायकर जनाई ॥ पूजन कीजिये भोर देखो दशरथ किशोर, आये हैं फूल लेन आज दोऊ भाई। शोभाके सेवन सदन देखन छबि मन्द मदन, मेरी अभिलाख धनुष तोडे है राम माई ॥ ३ ॥

साज्यो स्वयंवर आज जनकराजमिथिलापुर, कहत ऋषि राज चलो तुमहूं देखि आवो। बडे २ राजा महाराज नरेंद्र इन्द्र, रावण सहसबाहु सब देखिवेको आवो ॥ उठै नहिं

शंकरधनु हारे सब वीरजन, राम तुम उठाय धनुष तृण-
सम बहावो । सुरपुरके काम होवे भृगुपति विसराम होवें,
पूरण अभिलाख होवे राम सिया पावो ॥ ४ ॥

क्रोधित परशुराम आज राखैं भगवान लाज, शोचत
मिथिलेश राज काज सब नशायो । पूछन भृगुपति रिसाय
तोड्यो किन धनुष आय, जनक नेक दे बताय मृत्यु
निकट आयो ॥ बोलत कर जोड राज गिरा गोड सहित
नाम, कम्पत है परशुराम धनुष जब चढायो । हरषित अभि-
लाख रहे चिरंजीव दोऊभ्रात, साजके बरात सिया अवधकी
लिवायो ॥ ५ ॥

दशरथने राज तिलक रामको विचार कियो, देवनने भंग
कियो बनको पठायो है । श्रीरघुवीर प्राग चित्रकूट जाय वास
कियो, दरशथको मरण पाय भरत अवध आयो है ॥ लेकर
परिवार जाय रामसे मिलाप कियो, आज्ञा प्रमाण राय
पावडी पुजायो है । तमसाके तीर जाय गुफामें भजन कियो
शत्रुहन अभिलाख सहित प्रजा हित धायो है ॥ ६ ॥

इन्द्रसुत जयन्त चरण चोंच मार भाग्यो जब, रामबाण
तिहूं लोक पीछे दिखरायो है । नारदके मत प्रमाण रामके
शरण गयो, फोर्यो एक नेत्र पासइन्द्रके पठायो है ॥ मार्यो
विराध जाय पंचवटी वासी कियो, लछमनके हाथ नाक
शूर्पनखा कटायो है । मार्यो खरदूषण लंकेश हर्यो
सीताको, पम्पापुर वालि मार सीता सुधि पायो है ॥ ७ ॥

कहत सुग्रीवजी देख हनुमान कपि, वालिके दूत दोय फिरत वन हैं। धार वटरूप सनकार मोहि सैन देत जो यह शैल वन बहुत धन हैं ॥ कहत हनुमान पहचान अवधेश, मुनिनाथ यह शैल सुग्रीव जन है। सहित अभिलाष दोऊ प्रीतिदृढ कीजियो, जानकी हेतु अनुमान तन है ॥ ८ ॥

भेजा कपिराज यूथ बंदरको सीताहेतु, अंगद ऋक्ष पवनपुत्र दक्षिणको धायो है। पंछी सम्पात सिन्धुतीर भेद सर्व कह्यो, तरक्यो हनुमान सिन्धु कूद फांद आयो है ॥ सुरसाको बल दिखाय लंकिनीको त्रास दियो घर २ में सिया हेतु पवनपुत्र धायो है। मंदिर त्रिभीषणको देख्यो अभिलाष सहित, कीन्हो पहँचान तुरत जानकी दिखायो है ॥ ९ ॥

गरजत दशकन्ध पुत्र देखो हनुमानवीर मारुत उनचास आज लंक बीच बहत है। होत है पुकार देत रावणहि गहार गार, करत नहीं अब सहाय लंका शठ जरत है ॥ सुमरत सब अवधनाथ कीजे जल्दी सनाथ, रावण असुझ जान कान सब करते हैं। भाषत अभिलाष वेद शास्तर पुराणशाख नेक पहँचानो बात सुनकर बरत जरत है ॥ १० ॥

सीता सुधि पाय रामचन्द्र चल्यो लंकाको, बानर भालू अपार चहुँदिशिसे आवत हैं। पहुँचे जब सिन्धुतीर आये बिभीषण राज, बांध्यो शिव सेतु कटक लंकामें धावत है ॥ पापी लै पहुँचे जब लंकामें अंगद बली, भागे सब राक्षस जान पवन पुत्र आवत हैं। रावणको डाट देत पांवको न टार सको, आयो भगवान पास युद्धको बढावत है। ॥ ११ ॥

कहत दशकन्ध सुन प्राणप्रिया बावरी, सहित त्रिपुरारी कैलास लाऊं । जीत सब लोक दिकपाल पातालतक, सोन घननाद गढ लंक ठाऊं ॥ भयो दशशीश भुज बीश लंकेशको, भालु कपि मार नर कोटि खाऊं । यहीं अभिलाख संग्राम कर रामसे, तिहूं पुर सुयश निज धाम पाऊं ॥ १२ ॥

कहत मंदोदरी सुनो दशकन्ध पिया, रामको ब्रह्म अवतार जानो । जानकी दीजे विनय बहु कीजे, शरण अवधेश रघु-वंश भानो । जपत त्रिपुरारी दिन रात जेहि राम शठ, ताहि नर कहत को हान मानो । कहत अभिलाख सुन लंकपति बावरे, रामका वैर जनि खैर जानो ॥ १३ ॥

कुंभकरण मेघनाद रावण अहिरावण सब, निशिचर कुल-नाश भयो देवन सुख पायो है । लंका बिभीषणको रावणकी नारि सहित, त्रिजटाको भक्तिदान सीता ले आयो है बंदर सब बिदा भये रामचंद्र राज कियो, सीताको वन पठाय यज्ञको करायो है । लव कुशसे युद्ध भयो आये जब राम-चन्द्र पुत्रनको त्याग सिया भूमिमें समायो है ॥ १४ ॥

कीन्हो अश्वमेध यज्ञ पृथ्वीको भार हर्‌यो, दशरथ वर दान कीन दुष्टनको मार्‌यो है । पुत्रनको राज दियो ब्राह्मण निहाल कियो, सरयूमें गुप्त भयो भक्तनको तार्‌यो है ॥ ऐसो अवतार ब्रह्म निर्गुणमें भेद नांय, गावे त्रिपुरारी शेष गाय,२ हार्‌यो है । मूरख अभिलाख ताहि गावत है आन मान, सूर-जको दीप जाना उपमा उर धार्‌यो है ॥ १५ ॥

मैंने हाथ जोडकर कहा कि, रावण दैत्य होकर ब्रह्म की स्त्रीको चुरा ले गया और हनुमानकी खोजसे पता पाया, लक्ष्मणके शक्तिबाण लगनेमें अज्ञान समान विलाप किया; पवनसुतने धवलागिरि (पहाड) लाकर अच्छा किया । मेघनादकी नागफांसमें गरुडपंछीने प्राण बचाये महिरावणके बलिदानसे हनुमानने प्राण बचाये । सहस-रावणके युद्धमें सीताको माता कहा, तब वह कालीरूप होकर उसको मारा; वेदमें ब्रह्म निराकार सर्व व्यापक है वहां राम रहीमकी चर्चा भी नहीं है; कैकयीके शापसे चौदह वर्ष जंगलमें दुःख पाया । वाल्मीकि ऋषिने जो रामायण बनाया है, वह आत्मज्ञानका सिद्धांत है । उसका सिद्धांत गुप्त अर्थ रामायणयंत्र पृष्ठ ७०, ७१, ७२, ७३, में है, देखो तब बोध हो जावेगा ॥

पारमार्थ सातो कांड रामायण

कैलासब्रह्माण्ड

आकाश वायु पुरुष स्त्रीसे शक्ति उत्पन्न हुई, तेजस संयोग हुआ; दो पुत्र अग्नि और शक्ति प्रगट हुए; जड और पृथ्वी उनको ब्रह्मांड कहते हैं ।

बालकाण्ड

उस ब्रह्मांडको शरीरनाम रक्खा, उसमें आत्मा देव हुआ, दश इन्द्रिय राजा हैं, त्रिगुणीमाया तीनों रानी हैं। चार अन्तःकरण चार पुत्र हुए मन, चित्त, बुद्धि, अहंकार स्वभाव मंत्री विद्या आयी । अविद्या इच्छा भाग नाश–

सिद्धांतगुप्तअर्थरामायण

नं०	प्रकट	गुप्त	खुलासा	नं०	प्रकट	गुप्त	खुलासा
१	हिमाचल	आकाश	कैलास ब्रह्मांड	१२	राम	मन	चैत्रसुदी नौमी-को जन्म हुआ.
२	मइना	वायु		१३	लक्ष्मण	चित्त	
३	शिव	अग्नि		१४	भरत	बुद्धि	
४	पार्वती	शक्ति		१५	शत्रुघ्न	अहंकार	
५	स्वामि कार्तिक	जल		१६	सुमंत	स्वभाव	
६	गणेश	पृथ्वी		१७	विश्वा-मित्र	विद्या	कुवारवदी १२ को रामचंद्र गये
७	अवद	दह	बालकांड प्रारंभ	१८	ताडका	अविद्या	कुवार सुदी १ को मारा
८	वशिष्ठ	आत्मा		१९	गंगानदी	निश्चय	
९	दशर ।	दश इंद्रिय		२०	अहिल्या	प्रीत	
१०	तीनं - गणां	त्रिगुणी माया	रजोगुण सत्वगुण तमोगुण सुमित्रा कैकई कौसल्या	२१	जनक पुर	सत्यदेश	
११	शृंग ऋषी	संयोग		२२	राजा जनक	धरम	

सिद्धांतगुप्तअर्थरामायण. पृष्ठ ६२

नं०	प्रगट	गुप्त	खुलासा	नं०	प्रगट	गुप्त	खुलासा
२३	सुनयना राणी	स्पर्धा		३४	वनयात्रा	भ्रमण	विवाहपीछे बारा वर्ष अवधमें रहे
२४	धनुष्	बंधन		३५	निषाद केवट	धीरज	
२५	परशु-राम संवाद	परीक्षा		३६	गंगा उतारा	भव सागर	
२६	विवाह	विश्वास	पंद्रावर्षपीछे हुआ.	३७	प्रयाग राज	गुरु	
२७	जानकी	शक्ति	चैत्रसुदी ९ को प्रगट हुई चौदाव-र्षमें विवाह हुआ.	३८	भरद्वाज	विवेक	
२८	नारद	भूल	अयोध्याकांड प्रारंभ	३९	वाल्मीक	विचार	
२९	राज तिलक	भोग		४०	चित्र-कूट	एकांत	बारा वर्ष रहे
३०	सरस्वती	होवंत		४१	दशरथ मरण	प्राणा-याम	
३१	मंथरा चेरी	कारण		४२	भरत मिलाप	ममता	
३२	दशरथ कैकयी तमोगुण संवाद	अकर्म		४३	पादुका	वैराग्य	
३३	वरदानदो	फल शुभ अशुभ		४४	जेता इंद्रसुत	चिन्ता	अरण्यकाण्ड प्रारंभ

सिद्धांतगुप्तअर्थ रामायण

नं०	प्रगट	गुप्त	खुलासा	नं०	प्रगट	गुप्त	खुलासा
४५	अत्री ऋषी	योग		५६	लंका		असत्यदेश
४६	अनुसूया	सिद्धि		५७	सिवरी भिल्लणी	भक्ति	
४७	विराध दैत्य	वृद्ध		५८	हनुमान बंदर	दीनता	सुन्दरकाण्ड प्रारंभ
४८	शरभंग ऋषी	शुद्धता		५९	सुग्रीव बंदर	ज्ञान	
४९	सुतीक्ष्ण ऋषी	प्रेम		६०	तारा राणी	असंग	
५०	अगस्त्य ऋषी	आनंद		६१	बालजो-धाबन्दर	अज्ञान	
५१	गृध्र जटायू	दृढता		६२	अंगद बंदर	अभ्यास	
५२	शूर्पण-खा राक्षसी	लोभ		६३	जामवंत रिक्ष	पुरुषार्थ	
५३	खर दूषण राक्षस	काम क्रोध		६४	संपाति गृध्र	प्रकाश	अगहनसुदी नौमी-को हनुमानसे पता पाया
५४	रावण मारीच	मोह मद		६५	सुर्षा नागनी	आशा	किष्किंधाकांण्ड प्रारंभ.
५५	जानकी हरण	शक्ति	फाल्गुन वदी अष्टमीको हरण हुआ	६६	निश्चरी राक्षसी	तृष्णा	

सिद्धांतगुप्तअर्थ रामायण

नं०	प्रगट	गुप्त	खुलासा	नं०	प्रगट	गुप्त	खुलासा
६७	लंकिनी राक्षसी	वासना	अगहनसुदी १२को हनुमान् सीताके पास गये	७८	कुंभकर्ण	गर्भ	
६८	नलनील बंदर	मार्ग	पौषवदी ५कोलंका जलाया पौषवदी ७को रामचंद्रको	७९	मकर-ध्वज	ताप	
६९	समुद्र	हृदय	खबर दी पौ. वदी ८ अष्टमीको फौज रवाना हुई.				वैशाख सुदी २ को राज्य विभीषणको मिला.
७०	सेतु	सत्संग					सुदी ३ को जानकी से मिलाप हुआ. ४को तैयारी अयोध्याकी हुई.
७१	रामेश्वर	सत्गुरु	पौषसुदी १०कोशुरु हुआ १३को तैयार पुल हो गया.	८०	महीरावण	पर-संताप	५मी को भारद्वाज की कुटीपर गये
७२	विभीषण	निर्मल बुद्धि	पौष सुदी १४ को मिलाप हुआ				वैशाख सुदी६ को भरतमिलाप हुआ.
७३	अश्विनी कुमार	अविचार	लंकाकांड प्रारंभ	८१	त्रिजटा	कीर्ति	
७४	कालनेमि	दंभ		८२	मंदोदरी	शांति	
७५	मेघनाद	भ्रम	राघवदी २ लंका पहुँचे माघ सुदी २ से	८३	सर्वसैन्य परिवार	माया परिवार	
७६	सुलोचना	ईर्षा	वैशाख वदी १४ तक लडाई रही	८४	राजगद्दी	निष्काम	उत्तरकांड प्रारंभ वैशाख सुदी ७ को राज्य पाये.
७७	रावण	मोह	वैशाख वदी २० को जलाया	८५	अन्तर्ध्यान	निर्गुण मुक्ति	

–हो गयी निश्चय प्रीति प्राप्त होनेसे, सत्य देश धर्म श्रद्धा मिला, बंधन टूट गया, भविष्यके वास्ते परीक्षा हुई, विश्वास हुआ शक्ति प्राप्त हुई ।

अयोध्याकांड

भूल आया भोगकी इच्छा हुई, होतव्य कारणसे अकर्म हुआ फल पाया, भ्रमना हुई, धीरजसे भवसागर पार हुआ गुरु विवेक विचार प्राप्त हुआ; एकान्तमें प्राणायाम किया; ममता परिवार सम्मती आयी, वै

आरण्यकांड

अशुभ चिन्ताको त्याग दिया, योगसिद्धि प्राप्त हुई विरुद्ध मर गया, शुद्धता प्रेम आनंद मिला, दृढता मिलते समय लोभ, काम, क्रोध, मोह मद पांचों विकार आये, शक्ति जाती रही, असत्य देशको शक्ति प्राप्त

सुन्दरकांड

दीनता ज्ञान असंग शील संतोष जप तप संयम नियम आसन प्रत्याहार ध्यान धारणा समाधि प्राप्त हुई । अज्ञानका नाश हुआ, अभ्यास करनेसे पुरुषार्थ मिला, प्रकाश हुआ ।

किष्किन्धाकांड

आशा तृष्णा वासना दूर किया, मार्ग मिला हृदयमें, सत्संग किया, सद्गुरु मिले, निर्मल बुद्धि प्राप्त हुई ।

लंकाकांड

अविचार, दम्भ, भ्रम, ईर्षा, मोह, गर्व, ताप, परसन्ताप और सब मोहकी सेना मारी गयी, कीर्ति शांति रह गयी ।

उत्तर कांड

निष्काम हुआ, निर्गुण मुक्ति प्राप्त हुई, उसमें कुछ ब्रह्मका अनुभव नहीं है, यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे ॥

इति अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद छठवें
तरंगमें दुसरी लहरी

कृष्णावतार ब्रह्म है

अथ श्रीकृष्णचन्द्राय नमः ॥ मैं दूसरे महात्माके पास गया और सब हाल अपना कहा। तब महात्मा गुरु बोले कि शास्त्र प्रमाण और विचारप्रमाणसे कृष्णका अवतार ब्रह्म है यह अवतार पूर्ण कलासे हुआ, त्रेतायुगमें एक यवन था उसने तप किया उसको वरदान मिला कि,अवतारसे न मारा जावे उसने कंसका रूप पाया, उसके वास्ते पूर्ण अवतार हुआ रामकी कथा रामायणमें है, कृष्णकी कथा अठारह पुराणमें है,रामने रावण और वालीको मारा कृष्णने लाखों दैत्योंको मारा, जरासंधकी लडाईमें इक्कीस अक्षौहिणी दल अठारह वार आया था, सबको मारा कौरव पांडव लडाईमें अठारह

अक्षौहिणी सेना मारी गयी, द्वारकामें छप्पन करोड यदु-वंशी आपसमें लडकर मर गये, सोलह हजार गोपी सोलह हजार राजकन्या एकसौ आठ पटरानीसे भोग विलास किया, परंतु बाल ब्रह्मचारी बने रहे, अर्जुनको गीता सुनाया, समुद्रसे गुरुका मरा हुआ लड़का जीता लाया अर्जुनको समुद्रमें अपना रूप दिखाया, गोवर्धन पर्वत छोटी अँगुलीसे उठाया, बालअवस्थामें हजारों दैत्योंको मारा यमलार्जुन झाडको गन्धर्व बनाया, राजा नृगको गिरगिटयोनिसे छुडाया, रहस्यलीलामें सोलह हजार कृष्ण हो गये, सुवर्णकी द्वारका समुद्रमें बसायी, गज और ग्राहका झगडा मिटाया, द्रौपदीकी लाज रक्खी, कालीनागको नाथ ये सब लक्षण ब्रह्मके हैं, बहुत आचार्योंका मत ऐसा है कि, श्रीकृष्णचन्द्र पूर्णब्रह्म हैं।

कृष्णाष्टक

कवित्त–भादो अँधियार रात मथुरामें जन्म लियो, ले कर वसुदेव तुरत गोकुल पग धार्यो हैं। बेडी और हथकडी पृथिवीमें जाय पडो, फाटक सब खोल दियो सोवत रखवारे हैं॥ काली और मेघ सिंह मारगमें साथ रहो यमुना हरषाय रात कारि अँधियारी है बालक ले पहुँचे वसुदेव जाय नन्दद्वार, सोवत नंदरानीसहित कन्या गरुआरी है॥ १॥

कन्या ले आये जब मथुरामें वसुदेव बेडी और हथकडी पांयनमें डारी है फाटक सब बंद भये पहरो सब जाग उठ्यो

कन्याकी कूक सुनत दौरयो सुरारी है॥ जल्दीसे हाथ पकड चाहो दे मारनको, बिजलीसी चटक कहत सुरपुर पगधारी है। ऐरे मतिमंद मूढ मोहि पट लाभक काह, तेरो तो काल ब्रज जन्मो गिरिधारी है ॥ २ ॥

कन्यामुख वचन सुनत सोचत भये कंसराज, दूती इक ढिग बुलाय गोकुल पठवायो है। स्तन में विष लगाय पहुँची ब्रजनन्द द्वार, वसुधासों हेत जोड़ बालकको धायो है ॥ छातीकी राह प्राण खींच्यो जब नन्दलाल, पहुँची सुर धाम जाय निर्मल गति पायो है। ऐसे बहु दूत कंस भेज्यो ब्रज बार बार; कीन्हो सब नाश पास कंसके पठायो है ॥ ३ ॥

कालीदह फूल लेन भेज्यो है कंसराज, मोहन ब्रजबीच खेल गेंदको मचायो है। मोहन चढ कदम कूदि नाथ्यो है कालीनाग फनपर सवार नाग शापको मिटायो है ॥ भेज्यो जब फूल कंस मनमें भयमान भयो मारेगो मोहन कृष्ण निश्चय ठहरायो है। नारदके मत प्रमाण धनुषयज्ञ प्रगट कियो, भेज्यो अक्रूर आप कालको बुलायो है ॥ ४ ॥

मथुरामें कंस मार पांडवोंको राज दियो, कौरवोंको नाश कियो जरासंध मारयो है। भौमासुर बाणासुर कोटिन यदुवंश असुर, मारयो शिशुपाल दन्तवक्त्रको उधारयो है। गोकुल अस्थान छोड द्वारका वसायो जाय, गोवर्धन पर्वतको चढायके उतारयो है। ब्राह्मण सुदा-माको ऋद्धि सिद्धि पूरण कियो, पायन गजग्राह युद्ध जलमें सिधारयो है ॥ ५ ॥

दानकी गलीमें रोकत वृषभानुलली, कहत ब्रजराज आज दान देके जैहों । चोरी उठ प्रातःकाल बँचत सब ग्वालबाल, सब दिननको दान आज देकरके जैहो ॥ कैसी ठकुराई लडकाई करत नन्दलाल, रोकत पराई नार ब्रज में हँसैहौं । मानो अभिलाख खाओ दही दूध मेवा दाख, छोडो यह टेक दान छाछ नाहिं पैहों ॥ ६ ॥

ब्रजकी हँसाई रह्यो चौदह भुवन छाई, राधाकृष्ण भये कन्हाई अबको कहा हँसै है । कसी ठकुराई बतराई अंधराई तोहि, जानत सब आंख देख आगे और जनै हैं ॥ नन्दकी दुहाई जसुदा मात सौंह खाई कहत, सत्य हौं सुनाई राधा दान दे बनै है । विहँसत ब्रजनार ठाढ रोषत अभिलाख, दोबतकी नन्दलालसो दान ले मनै है॥७॥

गोकुलके बसैया अरु हँसैया व्रज घरघरके, गोपिनमें कन्हैया बलभैया असुरारी को । भक्तनके दयालु और दुष्टनके काल जाल, नन्दके गोपाललाल जसुदा महतारीको योगिनमें योगी महाभोगी है भोगनको, लोगनको मोहन छबि जोहत वनवारीको । कहत है गुलाब फिर प्यारीसे देख आज, कुंजनमें गया कुँवर सांवलि गिरिधारीको ॥ ८ ॥

राधाष्टक.

कवित्त—तीरथके जाये चारों धामके नहायेते, देवको मनाये राग कृष्ण रट लगायेते । गीताको गाये और भागवत सुनायेते, व्रतके कराये औ आसन लगायेते ॥ नेमके

करायें ध्यान धारणा बनायत, संयमके करायें प्राणायामके चढायेते । आठों योगके अभिलाख सो जु पाये, सुरपुरको जायेगा, राधागुण गायेते ॥ १ ॥

मथुरामें जन्म भयो गोकुलमें खेल कियो,नन्दके गोपाल भयो पूतना नशायो है । यमला और अर्जुनके शापको उधार कियो, कालिको नाथ बांह परवतको उठायो है ॥ औरों सब दुष्ट मार मधुवनमें रास कियो, कंसको पछाड उग्रसेनको छुटायो है । ऐसे सब काम कियो पूरण अभि-लाख सहित, राधाके संग रह्यो राधागुण गायो है ॥ २ ॥

गोपिनके नायक सुखदायक यदुनायकको, सुन्दर सब लायक वरदायक विज्ञानीको । काटत है बाधा जो साधनासे साधा, ऐसी वो राधा अनुराधा मन ज्ञानीको ॥ यशोदाकी प्यारी वृषभानु दुलारी, अभिलाख तेरा यारी मनमोहन सुखदानीको । जावत गुणखानी सब हानीको प्राप्त भयो, उपमा नहिं पायो रूप राधा महारानीको ॥ ३ ॥

शिवकी अराधा नारदहू नित साधा करें ऐसी गुण अगाधा सब बाधाकी नाशनी ॥ मोहनकी प्यारीगिरिधारीसों यारी हैं चाहत नँदलाल बाल वृषभानुकामिनी ॥ बंधनको काटैं यमदूतनको काटैं अभिलाख चरण चाटैं ऐसी कृष्ण हरषावनी । व्रजके विहारी वनवारी मुरारी श्याम, ध्यावत जिहि नित्य ऐसी राधा व्रजवासिनी ॥ ४ ॥

सुरज छिप जाय चन्द्र देखत रह जाय और,तारागिरि-

जाय देख रूप वृषभानीको । चम्पा शरमाय कुन्द कालो पडजाय कमल, सम्पुट हो जाय देख मोहन मनमानीको ॥ तारा और कुंती मन्दोदरी द्रौपदी सीता, पंचकन्या रहत हाजर निगहबानीको । बोलत अभिलाख सो तो मोहत है नन्दलाल, जंगलमें दुहत गाय राधा महारानीको ॥ ५ ॥

दिननकी बारी मतवारी शृंगार साज, वनके पनिहारी तट यमुनाके जावत हैं । देखत नरनारी बनवारी बलीहारी करत, मोहत अचारीब्रह्मचारी मरजावत हैं ॥ मुखकी छबी न्यारी लटकारी बदर समान खोलत जब सारी तब सूरज छिपजावत हैं । खोजत गिरधारी अभिलाखसहित प्यारीको, राधा वनवारीकी यारी सब गावत हैं ॥ ६ ॥

मुखकी उजियारी अँधियारीको नाश करे, पांयनकी लाली हरियारी दिखरावत है । जोबन सुपारी बलिहारी मतिवारी रूप प्यारी निज बारीसबजीवोंको भावत है रविकी उजियारी लटकारीसी नाश होत भादोंकी कारी अँधियारी दिखरावत है । राधा राधा सुकुमारी वनबारीसे प्रीति करत, देखत अभिलाख नित परमानंद पावत है ॥ ७ ॥

सकुचत श्रुति शेष और शारद गणेश आदि पावत नहीं पार ध्यान बार २ लावत हैं पूर्ण अवतार कृष्ण सबके करतार भये, गोकुलमें नित्य रासमंडल करवावत हैं ॥ माया महारानी ब्रह्मानी जहां पानी भरे, रम्भा इन्द्राणी सब देखत शरमावत हैं । ऐसी गुणखानी वृषभानी मनमोहनसों, राधा महारानी अभिलाखको पुरावत हैं ॥ ८ ॥

अष्टककी महिमा अभिलाखसे बखान करूं, गावत जो अष्ट काल सोही भगवान हैं। तीन काल गावै सो देवनसे अधिक रहै, भोर सांझ गावै सो पंडित परमान है ॥ एक वार गावै सो जगतमें निहाल रहै; ध्यान जो लगावै सो अष्ट सिद्धिमान है। कबहूं नहिं गावै केवल राधा रट लावै, सो सुरपुरको जावै अभिलाखकी जबान है ॥ ९ ॥

मैंने हाथ जोडकर कहा कि, त्रेतामें राम अवतार हुआ, द्वापरमें कृष्ण अवतार हुआ, पहलेका अवतार ब्रह्म नहीं होगा तो दूसरा अवतार ब्रह्म नहीं हो सकता, वसुदेवजी चोरीसे गोकुल ले गये, माता पिता बंदिखानेमें बहुत काल रहे, जरासंधसे भाग गये, व्रजमें गाय चराया, चोरी करके माखन खाया स्त्रियोंके वस्त्र न्हाते हुये चुराये सत्राजित यादवने मणिकी चोरी लगायी उग्रसेनकी चाकरी किया। सान्दीपनसे विद्या पढी रुक्मिणीको चोरीसे लेकर भागे, राधा जो उनकी मामी थी उसके साथ विषय किया बल रामजीका पुरुषार्थ कुछ कम नहीं था । अन्तमें मल्लाहके लडकेने हिरण जानकर तीर मारा पांवमें लगा उस कारणसे मर गये यह कौन लक्षण ब्रह्मका है ? बडे शरमकी बात है। यह सुनकर महात्मा गुरु चुपहो रहे ॥

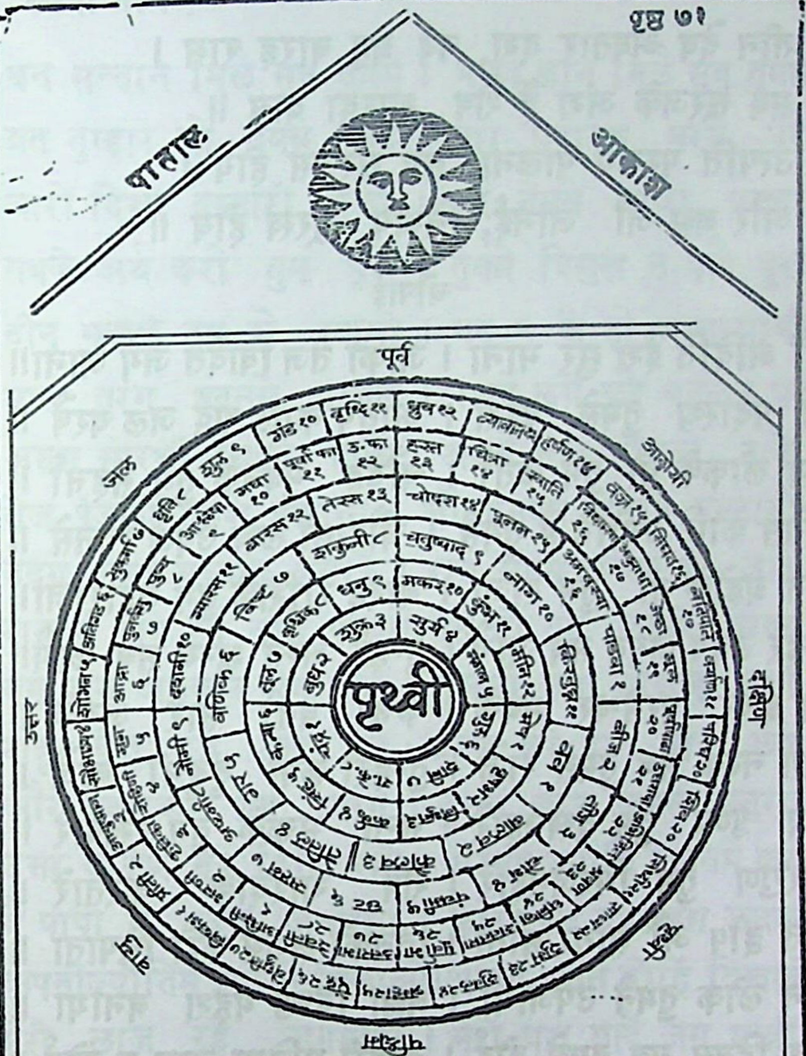
इति अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद छठवें
तरंगमें तीसरी लहरी

सूर्य ब्रह्म है

श्रीसूर्याय नमः ॥ मैं दूसरे महात्माके पास गया और सब हाल अपना कहा, तब महात्मा गुरु बोले कि सूर्य ब्रह्म है जब आदिमें सब ब्रह्मांडमें अंधकार था तब ब्रह्मको ब्रह्मांड बनानेकी इच्छा हुई तब सूर्यरूपी आकार होगया, प्रकाश उसकी माया है, वायु धुआं है उससे जल उत्पन्न हुआ । जलसे पृथ्वी प्रगट हो गयी । उत्पन्न पालन प्रलय तीनों काम सूर्यके हैं, छहों ऋतु सूर्यकी कला है । सूर्य उदय न होवे तो संसार नाशवान् हो जावे चौरासी लाख सृष्टि सूर्यके आधारसे है, सूर्य्यका प्रकाश उपमा योग्य नहीं है, जिसकी उपमा नहीं वही ब्रह्म है चंद्रमा सूर्यकी छाया है, बहुत मुल्कमें सूर्यको ब्रह्म जानते हैं नव ग्रह पृथ्वीसहित सूर्यको परिक्रमा देते हैं जैसे देख रेख सूर्यकी जगत्में प्रत्यक्ष है ऐसी दूसरेकी दृष्टि नहीं आती, सूर्यको ब्रह्म नहीं जानता अन्धज्ञान है पृष्ठ ८३ में सूर्यका यंत्र और इन दोहा चौपाई कवित्तमें देखो--

सूर्य स्तोत्र

दोहा--उदय अस्त जो नित करै, सो सूरज परकाश ।
चौदह भुवन त्रिलोकमें, पूरण ब्रह्म अकाश ॥
तप अपार संसारको नाश करै अविनाश ।
ऐसो सूरज ब्रह्म है, चौदह भुवन प्रकाश ॥



उत्तरायण.						दक्षिणायन.					
शरदकाल				वर्षाकाल				आतपकाल			
शिशिरऋतु		हेमन्तऋतु		शरदृऋतु		वर्षाऋतु		ग्रीष्मऋतु		वसंतऋतु	
फाल्गुन	माघ	पौष	मार्गशीर्ष	कार्तिक	आश्विन	भाद्रपद	श्रावण	आषाढ	ज्येष्ठ	वैशाख	चैत्र

तीन देव अवतार दश, नव ग्रह बारह रास ।
सब सूरजके अंश हैं शेष शारदा दास ॥
उत्पति परलय पालना, सब सूरजसे होय ।
और ब्रह्म जौ जानई, निश्चय मूरख होय ॥

चौपाई

वंदौं अदिति ईश सुर भाना । जाको तेज विदित जग जाना॥
सर्व पदारथ तुमसे दरशै । आतप काल शर्द जल बरषै ॥
तीन लोकके हो तुम कर्ता । चौदह भुवनके तुम संहर्त्ता ॥
तेतिस कोटि ज्योति है तुमसे । चौरासी लख उपजे तिनसे ॥
सात ग्रहोंके हो तुम राजा । बारह राशिके तुम महाराजा॥
तुम्हरे उदय जगत सब जागै । तुम्हरे अस्त शून्य सब लागै॥
तुम ईश्वर परमेश्वर सबके । कर्त्ता धर्ता सारे जगके ॥
स्वर्ग नरक सब तुमसे राजे । तुम्हरी कृपा दुंदुभी बाजे ॥
पाप पुण्य तुम देखनहारे । सन्त भक्तके तुम रखबारे ॥
तिरगुण तुम सिरजनहारे । शेष शारदाके करतारे ॥
सात द्वीप औ सागर सौता । तिनको क्षणमें करो निपाता ॥
तीन लोक तुमने उपजाया । ब्रह्मा विष्णु महेश बनाया ॥
रात दिवस सब तुमसे होई । तुम्हरी महिमा जान न कोई ॥
देव दैत्य सब तुमको ध्यावैं । तुम विन कोई राह न पावैं ॥
तुम्हरे उदय दृष्टि सब होई । हानि लाभके कर्त्ता दोई ॥
चौदह भुवनमें जोत विराजै । तीन लोकमैं कारज साजै ॥
जेते काम जगतमैं होई । कृपा तुम्हारी सुधरै सोई ॥

धन सन्तान मिलै सब तुमसे । भक्ती ज्ञान मिलै सब तुमसे ॥
व्रत तुम्हार जो नेमसे करै । चार पदारथ घरमें धरै ॥
चारों दिशा तुम्हारी पूजा । करै नेमसे राजा परजा ॥
सबके अर्थ करो तुम पूरा । तुमसे विमुख न पावै धूरा ॥
दीन भक्तके तुम हो स्वामी । घट २ कै हो अन्तरयामी ॥
सात तुरंग पवनसे परबल । रथमें लगे करै बहुछल बल॥
अरुण सारथी रथको हाकै । क्षणमें सात द्वीपको डाकै ॥
तेज पुंजकी राशि बखानो । चौदहभुवन ज्योति प्रगटानो ॥
उदय अस्त मध्याह्न बनावै । रात समय अन्तर हो जावै ॥
रात न होय रहैं नहिं परदा। ऐसे हो तुम जगके बरदा ॥
तम अरु अंधकार सब भागै । तुम्हरी कृपा सोवतहु जागै ॥
राहू केतु दुष्ट दुख देवै । ग्रहण करै दान बहु लेवै ॥
और देवताको सब त्यागै । तुम्हरै चरण कमल अनुरागै॥
उत्तर दक्षिण दुइ दिशि रहो । घटबढ ज्योति जगतमें करो॥
मैं पापी हूं बहुत जनमका । काटो फंद दण्ड इस जनका॥
अपनीज्योतिमें ज्योति मिलाओ।अपना दर्शन मोहिं दिखावो॥
मेरी लाज रहै जगमाहीं । मेरो यश गावैं जग माहीं ॥
कर अस्नान अरघ जो देवै । शुद्ध मनोरथ अपनो लेवै ॥
नमस्कार जो करे प्रभाता । चार पदारथ चहुँ दिशि पाता॥
वरत करे अवतार अलोना । सुख सम्पत पावै बहु सोना ॥
सदा अलोना जो जन खावै । सायुजि मुक्ति परम पदपावै ॥
चार प्रहर सन्मुख जो रहै । सुफल मनोरथ अपनो लहै ॥

आठ प्रहर जो ध्यान लगावै । सम्पूरण अभिलाख पुरावै ॥

कवित्त—सूनो संसार अंधकार जान ज्योति रूप, कियो परकाश तेज भानुको जनायो है । स्थावर और जंगम चौरासी लाख योनि भयो, वर्षा और गरम शरद तिरविधि प्रगटायो है ॥ पूरवसे पश्चिमतक उदय अस्त नित्य होत, भोर मध्य सांझ तीन कालको बनायो है । ऐसे परिपूरण ब्रह्म सूरज अखंड उदित, गावत अभिलाखदास निर्मल गति पायो है ॥

मैंने हाथ जोडकर कहा कि, चार प्रहर सूरज रहता है, चार प्रहर नहीं रहता । जो व्यवहार दिनको होता है वही रातको है, राहु केतुका ग्रहण होता है । हनुमान बंदर उत्पन्न समय लील गया । नव ग्रहमें एक ग्रह अशुभ और सात आकाशमें चौथे आकाशका मालिक और सात वारमें एक वारका स्वामी है । सूरजकी कन्या चित्रगुप्तको विवाही गयी । चन्द्रमा अत्रिऋषिका पुत्र है और पुराणमें सूर्य कश्यपऋषिका पुत्र है । पश्चिमके मुल्कमें एक हकीमने कूपमें सूरज बनाया बारह कोसतक नित्य उसका प्रकाश रहता है सूर्यकी संख्या किसीके मतमें बारह है । सूर्यकी अवस्था ६० घडीमें पांच प्रकारकी होती है, ब्रह्म सदाकाल एक अवस्थासे रहता है । यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे ।

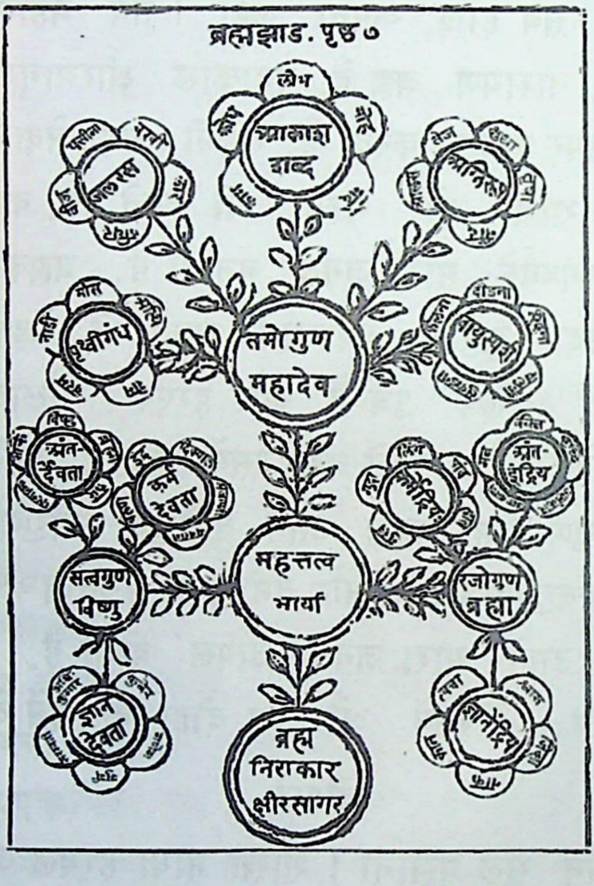
इति अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद
छठवें तरंगमें चौथी लहरी

नारायण क्षीरसागरवासी ब्रह्म हैं

श्रीलक्ष्मीनारायणाय नमः । मैं दूसरे महात्माके पास गया और सब हाल अपना कहा. । तब महात्मा गुरु बोले कि, नारायण ब्रह्म है, सदाकाल क्षीरसागरमें शेष-नागके फणपर शयन करता है, लक्ष्मी सदा सेवामें रहती है उसीको शक्ति और माया भी कहते हैं, वह माया अपनी सामर्थ्यसे सारा जगत् बनाती है, ब्रह्मको खबर नहीं वह सदा सुषुप्ति अवस्थामें रहता है; ब्रह्मा विष्णु महेश उस शक्तिके पुत्र हैं और हरएक औलादमें एक एक गुण विलग है. । पहले ब्रह्मा उसमें रजोगुण, दूसरे विष्णु उसमें सत्वगुण तीसरे महेश उसमें तमोगुण रजोगुणसे १४ इन्द्रिय, सत्वगुणसे १४देव,और तमोगुणसे पंचतत्त्व२५प्रकृति उत्पन्न हुई उससे सारा जगत् उत्पन्न होता है. उसका विस्तार यंत्र ८८ पृष्ठमें और इन दोहा चौपाईमें देखो ॥

चौपाई

ब्रह्म निरंजन मूल बखानो । शाखा माया हरबल जानो ॥
ताते निरगुण उपजे देवा । ब्रह्मा विष्णु महेश अभेवा ॥
रजगुण ब्रह्मा सतगुण हरी । तमगुण शंकर कर्ताकिरी ॥
रजगुणसें इन्द्री पहँचानो । अन्तस कर्म ज्ञान अनुमानो ॥
एक एकमें पांच बनावे । ऐसे सबको नाम बतावे ॥



आकाशमें एक गुण शब्द। वायुमें दो गुण शब्द, स्पर्श। अग्निमें तीन गुण शब्द, स्पर्श, रूप। जलमें चार गुण शब्द, स्पर्श, रूप, रस। पृथ्वीमें ५ गुण शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध।

अन्तःकरण चित्त मन बुद्ध । अहंकार अंतः परसिद्ध ॥
नासा त्वचा श्रवण अरु बानी । चक्षूज्ञान अरु इन्द्री जानी ॥
हाथ पांव मुख लिंग गुदा । कर्म इन्द्री जानो सदा ॥
सतगुणसे सबदेव बनाओ । अंतस देवको नाम लखाओ॥
विष्णु शक्ति ब्रह्मा है ब्रह्म । शिव शंकर अंतरके धर्म ॥
सूर्य कुबेर अश्विनीकुमार । शारद गणेश ज्ञानमें सार ॥
वरुण इन्द्र दिकपाल करम । प्रजापति यमराज धरम ॥
तमगुणसे उपजे संसार । पांच तत्त्व पचीस विकार ॥
नभ वायू पावक जल भूम । पांच तत्त्वकी देखो धूम ॥
काम क्रोध लोभ मद मोह । यह प्रकृतिमें जाना द्रोह ॥
चलन कूद दौडन फैलाव । संकोचन वायू परभाव ॥
तेज आलकस क्षुधा पियास । नींद अग्निमें है परकाश ॥
रुधिर पसीना चर्बी राल । वीर्य आपसे उपजो जाल ॥
अस्थि मांस नाडी चर्म रूम । पांच प्रकृति बनावै भूम ॥
ऐसा झाड ब्रह्मका देखो । सागरमें नारायण पेखो ॥
शेष नागका आसन कहै । शक्ति माया हाजिर रहै ॥
ऐसे ब्रह्मको ध्यान लगावै । सब अपनी अभिलाख पुरावै ॥

दोहा—पयसागरके बीचमें, शेष नागके शीश ।
शयन करै कर्त्ता पुरुष, सत्य नाम जगदीश ॥
शक्ति सेवामें रहै, माया करे पसार ।
तीनों लोक चौदह भुवन, हैं अभिलाख अधार ॥

अजामिल भीलने अपने लडकेको नारायण नामसे पुकारा मुक्ति पाया । वर्तमानमें सत्यनारायणकी कथा चारों वर्णमें होती है, कोई कल्पमें नाभिसे कमल होता है उसमें ब्रह्मा उत्पन्न होता है और वेद पुराणका मत भी ऐसा है कि, नारायण क्षीरसागर वासी हैं, जब देवताओंको संकट हुआ तब क्षीरसागर तीर जाकर पुकार किया, यह सिद्धांत अचल है, मैंने हाथ जोडकर कहा कि, जब पांच तत्त्व तमोगुणसे हुए तो उसके पहले क्षीरसागर क्योंकर हो सकता है और रूपवान् नारायणमें कौन तत्त्व था और माया भी अविनाशी हुई ब्रह्म घट २ व्यापक मिथ्या होगा और जगत्की कर्त्ता माया प्रसिद्ध हुई, ब्रह्म सदा निद्रामें रहता है यह भी कहना उचित नहीं, मैथुन आहार प्रकृति जीवको है, ब्रह्मको नहीं है, नारायण शब्दका अर्थ जलचर प्रसिद्ध होता है और २४ अवतार ब्रह्मके पुरुषरूप हुए, स्त्रीरूप नहीं हुआ लक्ष्मी द्रव्यको कहते हैं, जो नीच ऊंच सबको प्राप्त होती है, यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे ॥

इति अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद छठवें तरंगमें
पांचवी लहरी

आदिज्योति महामाया देवी ब्रह्म है

श्रीदुर्गायै नमः ॥ मैं दूसरे महात्माके पास गया और सब हाल अपना कहा । तब महात्मा गुरु बोले कि, आदि

ज्योति महामाया देवी ब्रह्म है. । शक्तिरूप होकर चराचरमें व्यापक है और बडे २ दैत्योंको पुरुष अवतार होकर मारा जानकीने हनुमानको उपदेश दिया था कि, अयोध्यामें राम अवतार मेरा है, जब रामचन्द्रने सप्तम रावणके युद्धमें सीताको माता कहा तब वह कालीरूप होकर नाश किया. शुंभ निशुंभको ऐसा बरदान था कि, अवतारसे न मारा जावे, उसको अपने असली रूपसे मारा, जब २ देवतोंको संकट पडा तब २ देवीने उपकार किया, कृष्णको काली अवतार कहते हैं, अर्जुनको समुद्रमें जो दर्शन हुआ वह देवी हैं, त्रिपुर दैत्य कालीके बाणसे मारा गया, ीसे पुरुष होता है, पुरुषसे स्त्री होना असंभव है, एक स्तोत्र देवीका: भजन करने योग्य है ।

देवीस्तोत्र—अष्टपदी

ऐ श्रीकालीका कृपा कीजे मोहीं निजशरण राख सुख दीजै ॥ प्रगटे संपदा विपत छीजे । व्याधि मिट जाय हो रहै जै जै ॥ मेरी सब आपदाको हरि लीजे । दास अभिलाखपर कृपा कीजे ॥ १ ॥ तुझको कहते हैं कालिका देवी । तूहो ब्रह्मा महेशकी सेवी ॥ तू सकल जगत्में प्रगट देवी । आदिदेवी अनादि तू देवी ॥ मेरे अपराधको क्षमा कीजे । दास अभिलाखपर कृपा कीजै ॥ २ ॥ ऐ भवानी तू जगत् रानी है । तेरी लीला विकट कहानी है ॥ तूही ब्रह्मा महेश वानी है । तू चतुर वेदमें बखानी है ॥ चित्तको

मेरे शुद्ध कर दीजे । दास अभिलाखपर कृपा कीजे ॥ ३ ॥ तू सकल सृष्टि जगत जाती है तू सकल कामना पुराती है ॥ चौदह लोक तू बनाती है । आदि और अंत तू खिपाती है ॥ कामना मेरी पूर कर दीजे । दास अभिलाखपर कृपा कीजे ॥ ४ ॥ दैत्य भंजन व देवकी माया । हैं तीनों लोकपर तेरी दाया ॥ नरक और स्वर्ग तेरी माया । चौदह लोक हैं तेरी छाया ॥ भर्म भवजालसे जुदा कीजे । दास अभिलाखपर कृपा कीजे ॥ ५ ॥ पंचकन्या तुझे कहैं कोई आदिमाया तुझे कहैं कोई ॥ नवदुर्गा तुझे कहै कोई । सर्व शक्ति तुझे कहैं कोई ॥ वासना मेरी नाश कर दीजे । दास अभिलाखपर कृपा कीजे ॥ ६ ॥ चार युगमें तुही रही परधान । तेरी लीलाका कुछ नहीं परमान ॥ चौवीस अवतार है तेरी संतान । बंदना तेरी करते हैं भगवान ॥ मोह मदको निपात कर दीजे । दास अभिलाख पर कृपा कीजे ॥ ७ ॥ ऐ जगत् मात सृष्टिकी अम्बा । तुझको कहते हैं लोग जगदम्बा । दासकी आस पूर कर अंबा । मैं तेरा पुत्र तू मेरी अंबा ॥ काम और क्रोध शान्त कर दीजे । दास अभिलाखपर कृपा कीजे ॥ ८ ॥

देवीस्तोत्र–चौपाई

श्रीगजवदन गणेश विधाता । ज्ञान बुद्धि भक्तिकी दाता ॥
गुणवाद माताका गाऊँ । सब अपनी अभिलाष पुराऊं ॥
देवी शक्ती मात भवानी । चारों नाम मुक्तिकी दानी ॥
दुर्गारूप आदि कहवावै । जिहकर यश पुराणमें गावै ॥

मात शारदा सबको पालैं । देव दैत्य सबके उर शालै ॥
ज्ञान विचार सरस्वती देवे । मूरखको पंडित कर लेवे ॥
रुक्मिणि दर्शनकर फलपावै । मात अंबिका कृष्ण मिलावै॥
कमलाका जो नाम उचारे । सुख पावैं वैकुंठ सिधारे ॥
चंडी दुष्ट दैत्यको मारै । भक्तनकी अभिलाख सुधारै॥
ध्यान महाकालीका करै । संचित पाप दुःख सब हरै ॥
करै कालिका जो परसिद्धी । देवे ऋद्धि सिद्धि नौ निद्धी॥
कालिको पूजै दिनराता । चार पदारथ आवै हाता ॥
आदि अनादी जगत बनावै । चौरासी लखको उपजावै ॥
हिंगलाजको ध्यान लगावै । मुक्तिसहित परम पद पावै ॥
कृपाकरै कामाक्षी माता । ऋद्धिसिद्धिसबहीकी दाता ॥
पाटन उत्तर देश विराजे । ड्योढी सदा बधाई बाजे ॥
भैरो सहित भैरवीं गाऊं । जन्म २ का पास नशाऊं ॥
ब्रह्मचारिणी करै अचारा । तीन लोकमें करे सहारा ॥
शैलपुत्रिरी शीलनिधाना । जाके वश शंकर भगवाना ॥
उमका झुमका दोनों बहन । दुष्ट दैत्यको करती दहन ॥
सिद्धि हर सिद्धिको भजे । सब शृंगार सहजमें सजे ॥
चामुन्डाकी स्तुति करो । त्रिविध तापको तनसे हरो ॥
ज्वालामुखी तेज दर्शावै । संतनकी अभिलाख पुरावै ॥
विमला विमल करे सब ज्ञाना । पंडित होय मूढ अज्ञाना ॥
विन्ध्येश्वरी रहै विन्ध्याचल। दर्शन करें सो होवे निर्मल ॥
परमेश्वरी लगावै पारा । जो पूजे सोलह परकारा ॥

बाला सबमें बाला राखे । सर्व पदारथका सुख चाखे ॥
महा सुंदरी सुंदर करै । नेम प्रेमसे पूजन करै ॥
अन्नपूर्णा पूरण रहे । ऋद्धि सिद्धि सब घरमें लहे॥
जगदंबा जग पावन माता । मुक्ति भुक्ती वैकुंठकी दाता ॥
कुशमांडिका रहै किरपाल । छूट जाय सब मायाजाल ॥
गौरी सहित गणेश मनाऊं । स्वामीकार्तिक ध्यान लगाऊं॥
महालक्ष्मी संपत देवे । अपनी सेवा पूजा लेवे ॥
मात कराली परसन रहे । काल कालसे निर्मल रहे ॥
चन्द्र घंटिका घंटा साजे । सेवक सदन दुदुंभी बाजे ॥
बगलामुखी देय संतान । बुद्धिमती लक्ष्मी परधान ॥
मात विजाशनपूरै आशा । दुष्ट दैत्यको होवे नाशा ॥
मात शीतला शीतल करै । दुष्ट दैत्यको भजन करै ॥
महा ज्योतिका रहै उजाला। ध्यान करै जो तीनों काला ॥
भीमा देवी द्वापरवाली । चौदह भुवननको रखवाली ॥

लावणी

महाज्योति अद्भुत सरूप विकराल रूप जय जयमाता । संसार छोड सब मोह तोडहू हाथ जोड तुझको ध्याता ॥ ब्रह्मा विष्णुमहेश आदि सब देव तुहीको ध्याते हैं । सती लक्ष्मी ब्रह्माणी अर्धंग नारि सब पाते हैं । रामकृष्ण परशुराम आदि तेरी आज्ञा सब आते हैं । और देव तेतीसकोटि शरणागत तेरी जाते हैं ॥ चार आठ सोला चौसठ भुजसे भी है कालकी तू दाता । महाज्यो० ॥ १ ॥ शुंभ निशुंभ दैत्य भजन तू

रक्तबीचको नाश किया । महाबली त्रिपुरदानवको एकबाणसे फांस लिया ॥ आदिशक्ति संसार हेतु तू घट घट अंतर वास किया ॥ आदि अनादि युगादि जगतमें चौरासी परकाश किया ॥ सहस्र भुजा और कोटि शस्त्रसे पापमोचनी सुखदाता । महा० ॥ २ ॥ विन्ध्यावासिनी दुष्टनाशिनी वज्रासनी तू ज्वाला । खड्ग कृपाण बाण गले सोहैं दुष्टनकी मुंडनमाला ॥ रंग विरंग रूप दिखलावे तरुण वृद्ध सुंदरबाला । आदि ज्योति जगदंब अंब ब्रह्मांड अंधकी उजियाला ॥ कल्पवृक्ष अरु कामधेनु नव निद्धि सिद्धि की तू दाता ॥ महा० ॥ ३ ॥ देव असुर संग्राम जीतिकै दैत्यों को संहार किया । सुर नर मुनि गंधर्व आदिको संकटमें उपकार किया ॥ हिंगलाज कामरू कामाक्षी जगतहेतु प्रचार किया । जय काली कलकत्तेवाली सुत्राको अधिकार दिया ॥ मान मथो औरंगजेबको टका दुकान अभय पाता ॥ महा० ॥ ४ ॥ शारद रूप बैठ महियरमें आलाय को वरदान दिया ॥ श्रीचंद चामुण्डा पूज्यो उनको पद निर्वाण दिया॥ भैरो भूत भवानी डाकिन सबको तू अस्थान दिया । दुर्गा काली यक्ष मतंगी सबको घर घर मान दिया ॥ देवमात और दैत्यमात और जगत मात त्रिभुवन माता ॥ महा० ॥ ५ ॥ हिंदू मुसलमान ईसाई सब तेरेको ध्यावत हैं । धर्म मोक्ष और अर्थ लाभ तेरी किरपा सब पावत है ॥ तेरी सेवा भक्तीमें अपनी अभिलाख पुरावत हैं । सहत आस अभिलाखदास शरणागत तेरी आवत हैं ॥ जनम

मरण वैकुंठ मुक्त सुरलोक आदिकी तू दाता ॥ महा०
॥ ६ ॥ इति देवीकी लावणी ॥

दोहा—रावणगृह मंदोदरी, लंकाकी पटरान ।
मेघनाद बलवान सुत, जीतो सकल जहान ॥
अनुसूयाका योगबल, जानत सकल जहान ।
दत्तपुत्र जाके भये, चंद्र पूत बलवान ॥
नारि अहिल्या ऋषिकी, पति आज्ञा पाषाण ।
रामचरणकी धूलसे, पायो गति प्रधान ॥
कुंती पांडव पति कियो, पांचपुत्र बलवान ।
देवनसे उत्पन्न कियो, वऱ्यो द्रौपदी रान ॥
तारा बाल सुग्रीव संग, पंपापूर पहाड ।
राज्य करे अभिलाखसे, पावे पद निर्वान ॥
सीता सती जानकी, जनकसुता परधान ।
ध्यान करे अभिलाखसे, पावे पद निर्वान ॥
राधा रुक्मिणी कृष्ण सँग, मधुवन करे बहार ।
नाम लेत पातक हरै, मिले पदारथ चार ॥
शक्तीरूप अनादि है, वरण सके नहिं शेष ॥
ब्रह्मा विष्णू पुत्र हैं, सेवा करे महेश ।
आदि ज्योति अद्भुत चमक, चिनगारी शिशुभान ।
उत्पति पालन प्रलय सब, शक्ती रची जहान ॥

जब महामायाने दुष्टों को मारा, रुधिर मांस उनका खान पान कर लिया और अबतक वही नैवेद्य देवीके पूज-

नमें चलता है, शुंभ दैत्य सूअर योनि हुआ, निशुंभ बकरा हुआ, महिषासुर भैंसा हुआ, रक्तबीज मछली हुआ, रुधिर सुरा होकर चौदह रत्नोंमें प्रगट हुआ, इस नैवेद्यसे एक कन्यारूपी शक्तिको जो रजस्वला और भोगसे निष्कलंक हो पंच मकारसे तृप्त करके विधिसंयुक्त उसका पूजन करे वह आद्यज्योति मनोरथ सिद्ध करेगी. । जबसे पंच मकारी पूजन बंद हुआ तबसे ब्राह्मण साधूकी शक्ति जाती रही. । शक्तिमत अनादि है; ब्रह्मा, विष्णु, महेश देवीके पुत्र हैं, मैंने हाथ जोडकर कहा कि, वेदमें ब्रह्म पुरुष लिखा है और शक्तिरूप आधीन है, जिसके रूप नहीं उसके शक्ति नहीं और देवी दुर्गाका भजन क्यों करते हैं ? हनुमानजीने पातालमें पांवसे दबाया था महिरावणके यहां और रक्तबी-जके संग्राममें जब देवीका क्रोध शांत नहीं हुआ तब शिव-जीने मुर्दारूप होकर लिंगपर उठा लिया था उस वक्त देवीने विष्णुका स्मरण किया, तब चक्र सुदर्शनसे काटकर द्वादश लिंग प्रसिद्ध किये. । मद्य मांसका नैवेद्य राक्षसी है, बाबा श्रीचंदने भक्तगिर गुसाईंको हिंगलादेवीका दर्शन गुरुद्वारसे झाडू देते कराया, तब वह गुसाईंसे उदासी हो गये, पूर्वमें उनका भेष बहुत है इस कारण देवीको ब्रह्म कहना मूर्खपना है, करोड़ों देवी भगवान्की आज्ञामें हैं यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे ॥

इति अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद छठवें तरंगमें छठी लहरी

शिव महादेव पूर्ण ब्रह्म हैं

श्रीशिवाय नमः ॥ मैं दूसरे महात्माके पास गया और सब हाल अपना कहा. । तब महात्मा गुरु बोले कि, शिव महादेव पूर्ण ब्रह्म हैं. शक्ति शंकरकी अर्धांगी है, लिंगरूपी शरीर जिसमें सत्रह पदार्थ प्रसिद्ध हैं वह शिव है. अहंकार रूप चराचरमें व्यापक है, सगुणरूपसे भी कैलासपर्वतपर विराजमान है, छत्तिस करोड़ देवता अठ्ठासी हजार ऋषि सब शंकरके हुकुममें हैं, उसकी इच्छासे उत्पत्ति पालन प्रलय होते हैं, ब्रह्माविष्णु उसके पुत्र हैं और सब अवतार उसको पूजते हैं. उसके वरदानसे एकएक दैत्य ब्रह्म समान हो गये, कैलासपर्वत उत्तर हिमालय पर्वतके पास है. उसपर्वतकी शोभा कोई वर्णन नहीं कर सकता. केदारकल्पकी विधि प्रमाण महात्मा लोग जानते हैं. बारह वर्ष ललितापुरीमें अवघड यह मंत्र साधन करे "ॐ फट् स्वाहा" इस साधनसे वज्र अंग होगा, अपने पांवपर चावल पकावेगा, तब केदारनाथ महादेव गुप्त राह जो हिमालय पर्वतसे गया है वह बता देवेंगे, उस राहसे महात्मालोग जाते हैं और जावेंगे. मार्गमें देवलोक इंद्रलोक सूर्य-चंद्रलोक नागसिद्धलोक सत्यलोक मिलेंगे. उस लोकवाले जानेमें विघ्न करते हैं, अनेक प्रकारकी माया और सुख सन्मुख लाते हैं जिसपर शंकरकी कृपा विशेष होती है वह उस सुखको देखता नहीं सीधा कैलासको चला जाता है, उस पर्वतपर

पहुँचकर चतुर्भुज रूप हो जाता है और एक शक्ति देवकन्या उसको मिलती है, सक्तिसहित अमर होकर सदा काल चौदह भुवनमें इच्छाप्रमाण भोगविलास कर सकता है, इस कलियुगमें लाखों महात्मा सदेह कैलासको जावेंगे, और सिवाय अवघड मन्त्र षडक्षरीके और कोई दूसरा मंत्र जीवके कल्याणका नहीं है, कदाचित् महादेव ब्रह्म न होते तो उनके लिंगकी पूजा कोई करता मूलस्थ लिंगपुराण शिवपुराण देखो, वेदमें शिव भगवान् शब्द प्रमाण है शिवस्तोत्र देखो ॥

शिवस्तोत्र--प्रभाती

गाइये त्रिकाल काल महाकाल शिवदयाल, गिरिजा अर्धंग संग सोहत शिर गंगा । ओङ्कार आद्य ज्योति विश्वनाथ मुक्ति देत राम नाथ निर्गुण पद बदरी दुख भंगा॥ शंकर शिव त्रिपुरारी कामदेव दहनहार, गावत हैं वेद चार गगन जटिल अंगा । नंदीपर है सवार अगड बंबकी पुकार, स्वामी कार्तिक कुमार गणपति सुत संगा ॥ १ ॥ डमरूकी घोर ताल तांडवकी रागमाल, शिंगी मृदंग ताल बाजत मुरचंगा । केहरकर मृगछाल सोह गिरि नागमाल जटाजूट पटलजाल कारी बहु रंगा ॥ जटा भसममुंडमाल तीन नेत्र कर कपाल, चन्द्रा सोहै ललाट दैत्य भूत संगा जिनके हैं शिव अधार तिनकी महिमा अपार, गावत अभि- लाखदास काशीतट गंगा ॥ गाइये त्रिकाल काल महाकाल शिवदयाल, गिरजा अर्धंग संग सोहत सिर गंगा ॥ २ ॥

शिवचालीसी चौपाई

शिव कहत होत आनंदा । शिवशिव भाषत परमानंदा ॥
शिवशिव कहत पदारथ पावे । शिवशिव कहत मुक्त होजावे॥
शिव शिव कहत होत कल्याणा। शिवशिव कहत संपदा नाना॥
शिव शिव कहत ज्ञान सब पावे।शिव शिव कहत स्वर्ग पुरजावे॥
शिव शिव कहत पाप सब जावे। शिवशिव तीनलोक दर्शावे॥
महादेव हैं सबके स्वामी । घट घट के हैं अंतर्यामी ॥
शंकर शिव त्रिपुरारी भोला । गौरा भांग खिलाये गोला ॥
गांजा निशदिन चिलम चढ़ावे। पलक उघाडे और हरजावे ॥
थूवर आक धतूर संखिया । भूतपिशाच असंख्य पंखिया ॥
सबका भोग गणेश लगावे । स्वामी कार्तिक हाथ धुवाये ॥
गौरी पांव दबावे निशि दिन। भैरौं झाड बिछावे आसन ॥
शक्ती शाप ब्रह्माको लाग्यो । विष्णू भस्म भयो शिव जाग्यो॥
शक्तीको अर्धांग बनायो । ब्रह्मा विष्णु तुरत जिवायो ॥
हरनाकुश ऐसो बर पायो । विष्णूको नरसिंह बनायो ॥
रावण कुम्भकरण वर पाता । राम रूप होय उसे निपाता ॥
ऐसे बहुत दैत्य बर पायो । विष्णू होय अवतार नशायो॥
शम्भु बस सर्वज्ञ बतावे । सर्गुणको कैलास दिखावें ॥
सीता भेष सती जो लीना । तेहि कारण उनको तज दीना॥
मृगछाल बाघंबर गजचर्म । नाग भसम मसानपर आश्रम॥
कर कपाल शिर खप्पर सोहै। डमरू हाथ मदन छबि मोहै॥
शृंगी पुंगी भूत बजावे । तांडव राग गंधर्वहि गावें ॥

नंदीकी छबि अधिक विराजे । जिसकी पीठ महाप्रभु राजे ॥
सींगपूंछखरकानकि शोभा । मनोछबिदेखिमदनमनलोभा ॥
चौदह भुवनका भार उठावे । क्षणमें प्रदक्षिणा कर जावे ॥
माथे पूरण चंद्र विराजे । शीश जटामें गंगा राजे ॥
कर त्रिशूल वरदा असवारा । भूत प्रेत दैत्यके धारा ॥
गरुड श्वास चूहा सँग रहें । गणपति आदिक उसपर चढें ॥
साठ हजार बरस पर्वतपर । पार्वती तप कियो बराबर ॥
दक्ष प्रजापति गर्व बढ़ाया । जग विध्वंस शीश कटवाया ॥
रामनाथ दक्षिणमें राजे । बद्री नारायण उत्तर गाजे ॥
काशीविश्वनाथको ध्यावें । ओंकार नर्मदा चितावें ॥
बेल पान और फूल सुपारी । घिरत मिष्टान्न कनकभर झारी ॥
मर्घट राख लगावे अंगा । शिव अर्पण करे गांजा भंगा ॥
केशर और कस्तुरी लावे । दूध अबीर गुलाल चढावे ॥
फल धतूरका डाडो लावे । आकफूल बेलअधिक चढावे ॥
घृत कपूरको दीप जलावे । अगर तगर पंचांग मिलावे ॥
वस्त्र भेंट शिव आगे धरे । मन कर्म वचनसे पूजा करे ॥
सायंकाल प्रात मध्याना । तीन काल पूजे भगवाना ॥
चार पदारथ सहजमें पावे । अंतकाल वैकुण्ठकुं जावे ॥
अष्ट प्रहर जो शिव शिव गावें । संपूरण अभिलाख पुरावें ॥

मैंने हाथ जोडकर कहा कि, लाखों दैत्य महादेवके वरदानी विष्णुके हाथसे मारे गये । बहुत ठिकाने दैत्य और विष्णुके युद्धमें महादेव दैत्यके सहायक हुए, परंतु पीछे हार

मानकर स्तुति किया और सती परम प्रियाको जानकीरूप होनेसे त्याग दिया। भस्मासुरके आशीर्वादमें विष्णुके उपकारसे प्राण बचा महादेव सत्य करके ब्रह्माके पुत्र हैं। निराकार हेतु अट्ठाशी हजार वर्षकी समाधि करते हैं, रामनामका इष्ट है और शिवकी आयुष्य सौ वर्ष देवका प्रमाण है, रामाश्वमेध यज्ञमें हनुमान् बंदरने महादेवको बहुत मारा गाली दिया. शिवनिर्माल्य खाना उचित नहीं काम उनका शत्रु है भगवान्के मोहिनीरूपपर कामातुर होकर दौडे, जड नहीं पहुँच सके तब लिंग बढाया; पीछे चक्र सुदर्शनसे काटा गया, द्वादश लिंग हुए और तमोगुणरूप अहंकार स्वरूप है; जगत्का नाश करता है, ये कौन लक्षण ब्रह्मके हैं ? यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे ॥

इति अभिलाखसागर गुरु शिष्यसंवाद छठवें
तरंगमें सातवीं लहरी

पंचदेव ब्रह्म है

श्रीपंचदेवाय नमः ॥ मैं दूसरे महात्माके पास गया और सब हाल अपना कहा. तब महात्मा गुरु बोले कि पंचदेवताको ब्रह्म कहते हैं, वे ही पांचो पंचतत्त्वके स्वामी हैं, पहिले विष्णू आकाशका स्वामी श्वेतवर्ण फीका रस सर्व त्याग क्रिया दूसरा शक्ति वायुका स्वामी हरा रंग खट्टा रस सर्व साक्षी क्रिया। तीसरा रुद्र अग्निरूप तथा स्वामी कृष्ण रंग चर्परा रस प्रलय क्रिया। चौथा ब्रह्म जलका

स्वामी रक्त वर्ण खारा रस पालन क्रिया । पांचवा गणेश पृथिवीका स्वामी पीतवर्ण मधुर रस उत्पत्ति क्रिया । सिवाय इन पांच देवोंके और कोई देव निराकार साकार नहीं हैं, इन पांचों देवोंका अवतार भी होता है, पीछे संसारमें पंच-तत्त्वका विस्तार सबको प्रसिद्ध है, सर्व जगतमें पंचदेवकी उपासना है, जिसका निश्चय जिसपर है वह उनको पूजता है । इसका विस्तार पंचदेवयंत्र पृष्ठ १०४ में है सो देखो और इन दोहा चौपाईमें भी देखो ।

चौपाई

पंच देव जगके करता । पंच देव हैं ब्रह्म अकरता ॥
पंच देव तिरगुणके करता । पंच देव सरगुणके करता ॥
पंच देव बिन कुछ नहिं होई । पंच देव जो करें सो होई ॥
पंच देव ब्रह्मांडके नायक । जगतपूज्य जनके लायक ॥
पंच देव चौरासी करे । पंच देव अविनाशी करे ॥

दोहा--पंच देव ब्रह्मांडमें, ब्रह्म रूप परधान ।
स्वर्ग आदि वैकुण्ठ सब, पंच देव अस्थान ॥
पंच देवके ब्रह्मको, करै जु अंतर्ध्यान ।
पुरे हुए अभिलाख सब, रहे बुद्धि अरु ज्ञान ॥

मैंने हाथ जोड़कर कहा कि, आपके ज्ञानसे पांच ब्रह्म हैं यह सिद्धांत श्रवणयोग्य नहीं है । अद्वैतमें द्वैत था । अब पंचा-यतनका झगडा उत्पन्न हुआ । इसमें प्रमाण छत्तीस कोटि देवता हैं, अपने अपने-काममें राहु केतुकी भी पूजा होती है

यंत्र पंचदेव.

नं०	नामदेव	विष्णु	शक्ति	रुद्र	ब्रह्मा	गणेश
१	तत्त्व	आकाश	वायु	अग्नि	जल	पृथ्वी
२	वर्ण	श्वेत	नील	कृष्ण	रक्त	पीत
३	स्वाद	फीका	खट्टा	चर्परा	खारा	मधुर
४	क्रिया	त्याग	साक्षी	प्रलय	पालन	उत्पत्ति
५	अहंकार	निरहम्	स्वाहम्	सोहम्	कोहम्	अहम्
६	मुक्ति	निर्गुणमुक्ति	सायुज्यमुक्ति	सारूप्यमुक्ति	सामीप्यमुक्ति	सालोक्यमुक्ति
७	आनंद	ब्रह्मानंद	परमानंद	अद्वैतानंद	योगानंद	विषयानंद
८	शरीर	केवल	महाकारण	कारण	सूक्ष्म	स्थूल
९	गुण	निर्गुण	सगुण	तमोगुण	सत्त्वगुण	रजोगुण
१०	अवस्था	उन्मनी	तुर्या	सुषुप्ति	स्वप्न	जाग्रत्
११	स्थान	ब्रह्मरंध्र	भ्रमरगुफा	गुल्लाट	श्रीहाट	त्रिकूट
१२	स्वरूप	कर्ता	महत्तत्त्व	स्वयंज्योति	हिरण्यगर्भ	वैराट्
१३	वाहन	गरुड	सिंह	वृषभ	हंस	हस्ती
१४	चाल	शेष	मीन	कपि	विहंगम	पिपीलिका
१५	लोक	लोकालोक	सत्यलोक	कैलासलोक	वैकुंठलोक	मृत्युलोक
१६	प्रमाण	बिन्दु	अर्धचन्द्र	कुंडल	दंडक	ताडक

वेद प्रमाण ब्रह्म एक है, पांच तत्त्व एक है, सबकी उत्पत्ति आकाशसे है और महाप्रलयमें देव दानव सर्व सृष्टिका नाश है, ब्रह्म अविनाशी है, विष्णुको ब्रह्माने बनाया, शक्ति निराकारकी इच्छा है, महादेवको ब्रह्माने बनाया, ब्रह्मा कमलके फूलसे हुआ, गणेशको पार्वतीने अपने अंगके मैलसे बनाया: ये कौन लक्षण ब्रह्मके हैं; ? यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे ॥

इति अभिलाखसागर गुरुशिष्य संवाद छठवें तरंगमें आठवीं लहरी

लोकालोकवासी ब्रह्म है

श्रीसत्यलोकाय नमः ॥ मैं दूसरे महात्माके पास गया और अपना सब हाल कहा; तब महात्मा गुरु बोले कि, कर्ता ब्रह्म ब्रह्मलोकमें हैं, वह लोकालोकवासी चौदह लोकोंका धनी है, सात ऊपर सात नीचे बीचमें पन्द्रहवां मृत्युलोक है, ब्रह्मलोक तक जो जावे वह ब्रह्मको पावे वहां कोई जा नहीं सकता, कदाचित् जन्मजन्मांतर भक्ति करे तो उस लोकको प्राप्त होवे, चौदह लोकोंके नाम ये हैं--१ सत्य लोक। २ वैकुण्ठलोक, ३ शिवलोक, ४ सूर्यलोक, ५ देव-लोक। ६ पितृलोक, ७ सिद्धलोक, १ मायालोक, २ यम-लोक। ३ गंधर्वलोक, ४ यक्षलोक, ५ किन्नरलोक ६ नाग-लोक। ७ दैत्यलोक, यह मृत्युलोक पंद्रहवां बीचमें जेल-खाना तथा बन्दीखाना है, चौदह लोकके मायारूपी जीव जो कर्मपाप संबंध करते हैं उसका फल या दण्ड मृत्यु

लोकमें पाते हैं और लोकमें दंड नहीं हो सकता पांच प्रकारके अकर्म हैं-काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद उसका दंड होनेके वास्ते पांच मकान बनाये गये, अंडज पिंडज ऊष्मज, स्थावर देव या बादल ब्रह्मा विष्णु महेश देवता बन्दीखानेके अधिकारी हैं। चार वेद, छः शास्त्र, अठारह पुराण ये अठ्ठाईस ग्रन्थ इस बन्दीखानेके शास्त्र हैं उनका भी नाम संपूर्ण वर्णन करता हूं--पहिले वेदका नाम १ ऋग्वेद--पूर्व दिशामें प्रगट हुआ उसमें ज्ञान और उपा-सना कर्म प्रधान हैं। २ यजुर्वेद-दक्षिणके देशमें प्रगट हुआ उसमें ब्रह्म अकर्ता कर्म कर्ता अहं ब्रह्म कार्यरूप प्रधान हैं ३ सामवेद-पश्चिम देशमें प्रगट हुआ उसमें तत्वमसि-शब्द ब्रह्मवाक्य निर्गुण प्रधान है, ४ अथर्वण वेद-उत्तरके देशमें प्रगट हुआ, उसमें आत्मा परमात्मा ब्रह्म प्रधान है ये चारों वेद चार लाख श्लोक प्रमाण है, अब छः शास्त्रका भेद कहता हूं पहिले मीमांसा-जैमिनि ऋषिने बनाया उसमें कर्म प्रधान है, दूसरा पातंजल-पतंजल ऋषिने बनाया उसमें ब्रह्म समाधि प्रधान है, तीसरा न्याय शास्त्र-गौतम ऋषिने बनाया, उसमें संयोग प्रधान है चौथा सांख्यशास्त्र--कपिलदेवने बनाया; उसमें आत्मा प्रधान है, पांचवां वैदिक--वैशेषिक ऋषिने बनाया, उसमें काल घडी प्रधान हैं, छठवां वेदांतशास्त्र--व्यासजीने बनाया, उसमे अद्वैत ब्रह्म प्रधान है; इसके

सिवाय ज्योतिःशास्त्र, धर्मशास्त्र, जैनशास्त्र, नास्तिकशास्त्र कई शास्त्र और हैं, अब अठारह पुराणका भेद कहता हूँ. विचार करो, १ मत्स्यपुराण १४ हजार, २-(कच्छ) कूर्म पुराण १७ हजार; ३-वामनपुराण १० हजार, ४-ब्रह्मांडपुराण १२ हजार, ५-गरुडपुराण १९ हजार, ६-शिवपुराण २४ हजार, ७-भागवतपुराण १८ हजार, ८-वराहपुराण २४ हजार, ९-अग्निपुराण १५ हजार ४ सौ, १०-लिंगपुराण ११ हजार, ११-पद्मपुराण ५५ हजार १२-ब्रह्मवैवर्तपुराण १८ हजार, १३-भविष्योत्तरपुराण १४ हजार ५ सौ, १४-विष्णुपुराण २३ हजार, १५-स्कन्दपुराण ८१ हजार १ सौ, १६-नारदपुराण २५ हजार, १७-मार्कंडेयपुराण ९ हजार, १८-ब्रह्मपुराण दश हजार, ये अठारह पुराण सब चार लाख श्लोक बराबर हैं वेदके तथा उसके ऊपर जो चलता है वह अपना दंड भोगकर अपने लोकको चला जाता है और जो उसके प्रतिकूल चलता है वह चौरासीलक्ष योनि भोगता है और जो सदा भजन स्मरण करता है वह ऊंचे लोकको जाता है और ब्रह्मकी प्राप्ति होती है, उसका पाप नष्ट होकर मुक्त हो जाता है और सृष्टिकी उत्पत्ति अनेक प्रकारसे आचार्योंने लिखी है. विराटपुराणमें चौरासी लाखका विस्तार ऐसा है सत्रजखान इक्कीस लाख, उसमें तारा नव लाख, मेघ चार लाख पहाड़ आठ लाख, अयुज्यखान इक्कीस लाख. उसमें नाग नव लाख, जलचर चार लाख पक्षी आठ लाख जरायुजखान इक्कीस लाख उसमें दोपदा

नव लाख, चौपदा चार लाख कीडी आठ लाख, उर्दर-जवीर्यखान इक्कीस लाख, उसमें निगंध नव लाख, सुगंध चार लाख, कंदमूल आठ लाख, ये सब चौरासी लाख हुए कोई सूक्षम पेसा कहता है, रजो गुणसे ३२ लाख सत्त्वगुणसे १६ लाख तमोगुणसे ३६ लाख ये सब चौरासी लाख हुए गुसांई तुलसीदासने भी दोहा कहा है,

दोहा—नव लख जलको जंतु हैं दस लख पंछी जान।
एकादश कट भृंग हैं स्थावर बीस बखान॥
तीस लाख पशुयोनि हैं चतुर्लक्ष नर होय।
इनमें जो रामै भजे तुलसी धन है सोय॥

यह चौरासीका विस्तार है, मृत्युलोकमें ब्रह्मकी प्राप्ति नहीं हो सकती भजनके प्रतापसे जब ब्रह्मलोककी प्राप्ति होगी तब ब्रह्मका दर्शन हो सकता है चौदह लोकके यंत्र पृष्ठ-१०९ में देखो और इन चौपाई कवित्तमें देखो

चौपाई

ब्रह्मलोकमें ब्रह्म विराजे। लोकालोक दुदुंभी बाजे॥
चौदह भुवन राजहै उसका। नीचे सात सात ऊपरका॥
मृत्युलोक पंद्रहवां गावे। चौदा लोकके बन्दी आवे॥
पांच विकार जीवमें सोहै। काम क्रोध लोभ मद मोहै॥
पांच योनि उपजे संसारा। चौदा भुवनके जीव अपारा॥
कामविकार मेघदल सोहै। इच्छारूपी जलमें मोहै॥
क्रोध योनि अण्डजमें आवै। अधर पवनमें पंख डुलावै॥

यंत्र लोकद्वीप.

नं०	नाम	पृथ्वी	जल	अग्नि	वायु	आकाश	बीज	शक्ति
१	आकाश लोक	सत्य लोक	तपोलोक	जनलोक	निजलोक	इन्द्रलोक	भुवर्लोक	महर्लोक
२	पाताल लोक	अतल लोक	वितल लोक	सुतल लोक	भीमानल लोक	तलातल लोक	रसातल लोक	पाताल लोक
३	ऊपर लोक	ब्रह्म लोक	वैकुंठ लोक	शिव लोक	सुर्यलोक	देवलोक	पितृलोक	सिद्धलोक
४	नीचे लोक	माया लोक	यमलोक	गंधर्व लोक	यक्षलोक	किन्नरलोक	नागलोक	दैत्यलोक
५	शरीरमेंनि-राकारलोक	सत्रहवीं कला	भ्रमर गुहा	ब्रह्म रंध्र	उलट पलट	गुल्हाट	श्रीहाट	त्रिकूट
६	शरीरमेंसा कारलो.ऊ.	ब्रह्मांड	नेत्र	कान	नाक	मुहँ	कंठ	हृदय
७	शरीरमें नीचलोक	हाथ	पेट	पीठ	पाँव	लिंग	गुदा	नाभि
८	सप्त समुद्र	नीर समुद्र	क्षीर समुद्र	दधि समुद्र	क्षीर समुद्र	रत्नाकर समुद्र	मधु समुद्र	घृत समुद्र
९	द्वीप लोक	जंबूद्वीप	शाकद्वीप	कुशद्वीप	क्रौंच द्वीप	शाल्मली द्वीप	श्वेत द्वीप	पुष्कर द्वीप
१०	शरीर द्वीप लोक	मेदा	अस्थि	सुरा	रक्त	मांस	त्वचा	रोम
११	तारा लोक	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनैश्चर
१२	सप्त ऋषि	पुलह	पुलस्ति	भरद्वाज	वशिष्ठ	अंगिरा	भृगु	मरीचि
१३	सप्तपुरी	अयोध्या	मथुरा	काशी	हरिद्वार तथा माया	नाशिक तथा कांची	उज्जन तथा अवंती	द्वारका
१४	सप्त देश	रूस	चीन	रूम	तुर्कस्थान	हिंदुस्थान	लवलख	खुराशान
१५	सप्त खान	सोना	चांदी	लोहा	जस्ता	कलई	तांबा	शीसा
१६	[illegible]	१ भारतखंड पूर्व	२ परवखंड आग्नेय	३ निराकार रामखं. द.	४ दक्षपाल नखंड नैऋत्य	५ केतपाल खंड पश्चिम	६ हरिखंड वायव्य	७ पृथुखंड उत्तर
		मनिखंड ईशान ८	सुवर्ण खंड मध्य ९	काशी खंड १०				

ऊष्मज योनि लोभसे आवे । उतपति परले छिन होजावे ॥
अस्थावर है मोह विकारा । चार योनिका प्राण अधारा ॥
पिंडज योनिविकारसे पावे । शूकर कूकर होइ उपजावे ॥
दंडप्रमाण भोग चौरासी । अपने लोक जाय सुखरासी ॥
अवध बीच कुछ अकर्म होवे। ताको दंड अधिक दुख होवे॥
अवध बीच कुछ सुकर्म होवे। ऊंचे लोक जाय सुख होवे ॥
कर्म करत चौदा घर जावे । ताको ब्रह्मा दर्शनमें आवै ॥
ब्रह्मरूप सत गुरु उपदेशा । तब अभिलाख मिटे अंदेशा ॥

कवित्त—वेद ४

पूरब ऋगवेद कहें ज्ञान और उपासना, कर्मको प्रधान करे ब्रह्म एक गायो है । दक्षिण यजुर्वेद शुद्ध अहं ब्रह्म कार्य रूप । ब्रह्मको अकर्ता कर्म कर्ता ठहरायो है । पश्चिममें सामवेद अहं ब्रह्म तवमसि, निर्गुण प्रधान ब्रह्म शब्दमें समायो है । उत्तरमें अथर्वण अहं आत्मा परमात्मा; निर्गुण अभिलाख चार लाख सब बतायो है ॥

कवित्त--शास्त्र ६

मीमांसामें जैमनि ऋषी कर्मको प्रधान करें, पातंजल प्रधान ब्रह्म खोजत सब अचारमें । गौतम संयोग न्यायशास्त्रमें प्रमाण करे; कपिल देव सांख्यशास्त्र आत्मके विचारमें ॥ वैदिक विशेषक काल घडीको प्रसिद्धि करे, अद्वैत वेदान्त कहे व्यासदेव सारमें । ऐसे षटशास्त्र विचारत अभिलाख लाख, पावत नहीं सार कछु अचारमें विचारमें ॥

कवित्त–पुराण १८,

मच्छ कच्छ वामन ब्रह्मांड गरुड शिव पुराण, भागवत बाराह लिंग अग्नि गायो है। ब्रह्म भूत भविष्य उत्तर विष्णुपुराण सबसे स्कंद अधिक व्यासने बनायो है ॥ नारद मारकण्डयो ब्रह्मको पुराण भयो, अष्टादश चार लाख सत्रासो गायो हैं। ऐसे प्रगट पुराण गावत सब ज्ञानवान, भाषत अभिलाख पार कोई नहिं पायो है ॥

मैंने हाथ जोडकर कहा की, कोई ब्रह्मज्ञानी चौदह लोकोंका विस्तार शरीरमें बताता है । ब्रह्मांड आंख, कान, नाक, मुख, कंठ, हृदय, हाथ, पेट, पीठ, पांव लिंग, गुदा-नाभि दूसरा लोक कोई नहीं है। चौवीस अवतार ब्रह्मके मृत्युलोकमें हुए वह बंदीखानेमें कैसे आया और ब्रह्म लोकवासी साकार है या (निराकार है । अट्ठाईस ग्रंथ जो प्रमाणके आपने उपदेश किये उनमें ब्रह्म घट घटव्यापक है । चौदह लोकोंसे इस बंदीखानेमें आना कुछ प्रमाण नहीं है, मैं पहिले किस लोकमें था यहां कबतक रहूंगा और पीछे कहां जाऊंगा और किस अपराधसे यहां आना हुआ ? इस सिद्धांतका निश्चय जबतक न हो तबतक आपका सिद्धांत बोधयोग्य नहीं है भक्तमाल देखो हजारों साधु-ओंको भगवान् प्राप्त हुए। पंचतत्त्वके सिवाय आत्माका अनुभव नहीं हो सकता । पृथ्वी शरीर है । जल जीव है, अग्नि ज्ञान है, वायु श्वास है आकाश शब्द है, आपका सिद्धांत अट्ठाईस ग्रंथके प्रतिकूल है, चौदह लोकोंकी

संख्या प्रसिद्ध नहीं है । लाखों आकाश पाताल कोई कहता है, कोई सर्वसृष्टिको ब्रह्म जानता है, उसको विराट् कहते हैं, यह सुनकर महात्मागुरु चुप हो रहे ॥

इति अभिलाखसागर गुरुशिष्य संवाद छठवें तरंगमें नवीं लहरी

इति छठवां तरंग

सातवां तरंग

निराकार ब्रह्मविचार

ज्ञान ब्रह्म है

श्रीकेशवाय नमः ॥ मैं दूसरे महात्माके पास गया और सब हाल अपना कहा । तब महात्मा गुरु बोले कि, ब्रह्म निराकार है उसका ज्ञानसे अनुभव होता है । अथवा ज्ञान ब्रह्म है ज्ञानको आंखसे देखा जाता है । जिसको ज्ञान नहीं है उसको करोडों ब्रह्म नाशवान् हैं । चौदह भुवन ब्रह्मके जो प्रसिद्ध हैं, वे ये हैं—विवेक १, विचार २, संतोष ३, सत्य ४, वैराग्य ५, प्रेम ६, भक्ति ७, योग ८, धर्म ९, दया १०, निश्चय ११, प्राणायाम १२, उदास १३, आनंद १४, ज्ञानदृष्टिसे अनुभव होता है और यह जगत् तथा सुख दुःख अज्ञानसे भासता है, ज्ञानीको अद्वैत दर्शाता है, ज्ञान प्राप्त होना—जीवन्मुक्त होना एक अर्थ है, जिस पदार्थका ज्ञान नहीं है उसका सुख दुःख व्यापक नहीं

होता जो भाषा अपनेको नहीं आती उस भाषामें कोई गाली देवे अथवा प्रशंसा करे उसका हर्ष शोक नहीं होता. सबका कर्त्ता ज्ञान है, ब्रह्म और माया और जगत् तीनोंका भेद ज्ञान है, एक झगडा कर्म ज्ञानका इस सिद्धांतमें ब्रह्मसमान है.

झगडा ज्ञान कर्म--चौपाई

वाह गुरूको माथ नमाऊं । जेहि सुमिरे निर्मल मत पाऊं ॥
सो मत पाय कहानी गाऊं । ज्ञान करम संवाद सुनाऊं ॥
देहनगर एक देश कहावे । तामें राज सत्यको छावे ॥
ताकी नारी शांता रानी । भगिनी तासु कीरती जानी ॥
पिता नाम निष्काम बखानो। माता मुक्ति पांचवीं जानो ॥
सत्य शांति भोग जब करे । ज्ञान कर्म दो सुत अवतरे ॥
पहिले कर्म भयो संसारा । पीछे ज्ञान लीन अवतारा ॥
जबतक सत्य राजपर रह्यो । कर्म ज्ञान दोउ बालक रह्यो ॥
कुछ दिन गये सत्य जब मरई। कर्म ज्ञानमें झगडा परई ॥
कर्म कहे मैं कुछ नहिं दीहों । ज्ञान कहे मैं आधा लीहों ॥
कर्म कहे मैं बडा सयाना । ज्ञान कहे मैं चतुर सुजाना ॥
कर्म कहे मैं तीरथ करूं । ज्ञान कहे मैं सूंघ बताऊं ॥
कर्म कहे मैं कहूं पुराण । ज्ञान कहे मैं सुनूँ बखान ॥
कर्म कहे मैं सब कुछ करू । ज्ञान कहे मैं समुझत रहूं ॥

कर्म कहे मैं सब उपजाऊं । ज्ञान कहे मैं षट्रस खाऊं ॥
कर्म कहे मैं ज्ञान बताऊं । ज्ञान कहे मैं कर्म सिखाऊं ॥
विग्रह बढी शांति सब गई । आपुसमें पंचायत भई ॥
पांचों प्राण पंच कहवावे । मन अरु बुद्धि गवाही जावे ॥
कामक्रोध आदिक पँच भैया। ये सब बैठे खेल दिखैया ॥
खोजत खोजन रह्यो भुलानू । कर्म ज्ञानका अंत न जानू ॥
कर्म रामकी उपमा लावे । ज्ञान कृष्णका नाम बतावे ॥
विषय पांचसे पूछा गया । उन दोनोंको एकी किया ॥
मंत्री एक बिचार सत्यका । बूढा बडा रहा मुद्दतका ॥
वो दोनोंको पास बुलावे । बहुत प्रेमसे न्याय चुकावे ॥
सुनो कर्म हम तुमें बतावें । बाप तुम्हारे सत्य कहावें ॥
उनके घरमें जो धन आया । सो सब हमने हाथ गमाया ॥
तिनके पुत्र भयो तुम दोई । इनमें छोट बडो नहिं कोई ॥
चार पदारथ तुमरे घरमें । दो छोडो दो राखो वशमें ॥
मैं चारोंको प्रगट बताऊं । विलग विलग सबके गुण गाऊं॥
अर्थ काम दो तुमको ध्यावे । धर्म मोक्ष दो ज्ञानको भावे ॥
कर्म कहे मैं चारों लीहों । ज्ञान कहे मैं कुछ नहिं दीहों॥
तब विचार देख्यो मनमाहीं । कर्मज्ञान दोउ समझत नाहीं॥
फिर दो भाग चार करि लावे। पुरुषारथ निष्कर्म दिखावे ॥
कर्म कहे पुरुषारथ भावे । ज्ञान कहे निष्कर्म दिखावे ॥
ये विध भाग राजको कियो । कर्म ज्ञान दोउ राजी भयो ॥
कुछ दिन गये कर्म मर गयो । एक ज्ञान बाकी रह गयो ॥

राज अखंड सत्यको किया। अजर अमर होय जगमें रह्यो॥
ज्ञानी तात विचार बखाने। जो सपनो अभिलाख न जाने॥
कार्तिकमासपक्ष उजियारा। अडतिस संवत् चंद्र पसारा॥

मैंने हाथ जोडकर कहा कि इस चौदह स्थानके सिवाय लाखों स्थान हैं उनमें कौन रहता है प्रेम ज्ञान पशुको है, अनंद भय सब जीवोंको और जब वह निराकार है तब ज्ञानसे भी देखा नहीं जावेगा। पंच ज्ञान इंद्रियनको रूपका अनुभव है, अरूपका नहीं ज्ञानका अर्थ निर्मल बुद्धि, वह अंतर इंद्रिय है, शबरी, गणिका, अजामिल, रोहिदास, कुबरी, धना, पीपा, सैन आदिक बडे विद्वान् नहीं थे पीछे ब्रह्म मिलनेसे सर्वगुणके मूल होगये ध्रुवको छोटी उमरमें जब ज्ञान नहीं था, तब ब्रह्म मिला ज्ञान अज्ञान वृत्ती है वह कुछ पदार्थ है, ज्ञान जगत् का कर्ता नहीं हो सकता और निराकारका अनुभव कोई प्रकारसे नहीं होगा, कदाचित् ब्रह्म कुछ पदार्थ होवे तब ज्ञानसे देखा जावे, यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे।

इति अभिलाखसागर गुरुशिष्य संवाद सातवें
तरंगमें प्रथम लहरी

निश्चय ब्रह्म है

श्रीपरमेश्वराय नमः॥ मैं दूसरे महात्माके पास गया और सब हाल अपना कहा तब महात्मा गुरु बोले कि, ब्रह्म

निराकार है, परंतु निश्चय अनुभवमें आता है अथवा निश्चय ब्रह्म है, जिसकी जिसपर निश्चय है उनका वह ब्रह्म है, मुसलमान खुदाकी, ईसाई ईसाकी, हिंदू रामकृष्णकी, जैनी आर्रहन्त निश्चय करते हैं, सबका मनोरथ सिद्ध होता है, कदाचित् मनोरथकी सिद्धि न होती तो निश्चय जाती रहती, निश्चय होनेसे रज्जूमें सर्प, मसानमें भूतका अनुभव होता है निश्चय धना जाटको पत्थर सरूपमान हो गया, जब भ्रमका नाश होजाता है तब ब्रह्मपद निश्चय होता है, मृत्तिकाकी मूर्ति निश्चय करनेसे ब्रह्म समान प्रदान है, कोई पूजा ध्यान भजनविना निश्चय निरर्थक है, मेरे ज्ञानमें निश्चय आप ब्रह्म है जो कोई किसी देवपर निश्चय करेगा जरूर फल पावेगा चौपाई दोहा देखो—

चौपाई

पहिले प्रीति गुरूसे कीजे । प्रेम डगरमें पग तब दीजै ॥
जहँ देखो तहँ रूप हैं न्यारा । कारण कारज करता सारा ॥
शून्य स्वरूप अकाश बतावे । तेजरूप पावक दरशावे ॥
सूक्ष्म रूप वायुमें जानो । आपरूप जलमें पहिचानो ॥
रूप विराट पृथ्वी देखो । चारों तत्व हरीहर पेखो ॥
आदि अन्त अरु मध्य दिखावे। उत्तम मध्यम नष्ट कहावे ॥
अंडज पिंडज ऊमष्ज मांही । स्थावर जड चेतनके माहीं ॥
तम प्रकाश दोनोंमें देखो । स्वर्ग पताल भूमिमें पेखो ॥
चारों दिशा वोहि दरशावे । चारों कोन वोहि कहवावे ॥

तीनों लोक रूप है उसका । धरा अकाश होता है सबका॥
कफ पित बात रोग सब वोहै। हर्ष उदास शोक सब वो है ॥
ज्ञान वैराग्य योग सब वो है । राजा रंक भोग सब वो है ॥
आगे पीछे नीचे वो है । दहिने बायें तिरछे वो है ॥
जाग्रत स्वप्न सुषोपत वो है । चार अवस्था तुरिया वो है ॥
सूक्ष्म रूप विराट वोही है । कारण महाकारण भी वो है ॥
देव दैत्य मानुष सब उसमें । विष अमृत परास सब उसमें॥
तन्त्र मन्त्र यन्त्रनके मांही । वेद पुराण शासतर मांहीं ॥
सूरज चन्द्र नव ग्रह माहीं । बारा राशि नछत्तर माहीं ॥
योग कारण तिथि लग्न वही है । भरणी भद्रा ग्रहण वही है ॥
मूरत और प्रतिमा वो है । चेतन जीव आतमा वो है ॥
इन्द्रिय प्राण प्रकृती वो है । गुण स्वभाव स्मृति ही वो है॥
ब्राह्मण वैश्य क्षत्री शूदर । चार एक उसके है सुंदर ॥
शक्ती शिव अरु वैष्णव वो है । सर्व भेषमें भक्ती वो है ॥
प्रगट गुह्य अवतार वही है । जङ्गल नदी गांव वोही है ॥
स्त्री पुरुष नपुंसक वो है । अक्षर एक मात्रा भी वो है ॥
तीर्थ गया प्रयाग वोही है । सरिता कूप तडाग वोही है ॥
पुरी धाम पुर धाम वही है । कारण कारज काम वही है ॥
शक्ति भूत अरु प्रेत निरंतर । जिन्न मोकल उसके अंकर ॥
राग रागिनी सुर सब वो है । तबला ढोल पखावज वो है ॥
नाच नकल नट विद्या वो है। नजर बंद हठविद्या वो है ॥
भोग विलास अमीरी उसकी। भूख प्यास फकीरी उसकी ॥

आदर भाव निरादर वो है । कादर सूर बहादुर वो है ॥
औषध कल्प किमिया वो है । गुटका कज्जल अञ्जन वो है॥
लोभ काम मद मोह वही है । तृष्णा मोह वासना वो है ॥
सत सन्तोष शांतिही है । तेज प्रकाश कांति भी वो है॥
तेतिस कोटि देव मैं देख्यो । लख चौरासी जीव मैं पेख्यो॥
सात अकाश पताल वही है । उत्पति जीवन काल वही है॥
अकर्म कर्म धर्ममें वो है । निश्चय प्रेम भरममें वो है ॥
ओहं कोहं सोर हं माहीं । मैं तैं मोर तोर सब मांहीं ॥
हां नहीं दोनोंमें वो है । जहँ देखो तहँ परगटे वो है॥

दोहा—अलख लखै अल आंखस, गुरु पूरे अभिलाख ।
लाख प्रकार सकार हैं, वेद रु शास्तर साख ॥
वेदहि शास्तर ज्ञान है, कही बडोनी रीत ।
उस प्रमाणसे जो चले, सोई ज्ञान अतीत ॥
आदि अनादि युगादिसे, देखी सुनी जु बात ।
कहे दास अभिलाख हट, सबमें अलख लखात ॥
कोई मत ऐसा कहे, ब्रह्म नहीं कुछ सार ।
हां नाहींके बीचमें, साहिब अगम अपार ॥
अहै बडाई ब्रह्मकी, हां में हां हो जाय ।
नाहींमें नाहीं रहे, ज्योंका त्यों दरशाय ॥
अलख शब्दका अर्थ है, जाय लखे नहिं कोय ।
तथा दूसरा अर्थ है, अधिक लाखसे होय ॥
अर्थ तीसरा अलखका, लखनेके नहिं योग्य ।

चौथा अर्थ अकार जो, लखे अलखके योग्य ॥
अर्थ पाँचवां अलखका, जो अभिलाख सुहात ।
जैसे सूरज तपतका, चिन्ह नहीं दरशात ॥
जब लाई पच्चीसमें, अष्टादशकी साल ।
अधिक सतासी ईसवी, जग आयो कलिकाल ॥

मैंने हाथ जोड़कर कहा कि निश्चय और भ्रम जगतमें सबको है जैसे ज्ञान अज्ञान न ये बुद्धिके भेद हैं मैं आपको विष देता हूँ, आप उसको अमृत निश्चय करके खा जावो मेरेको दोष नहीं लगना चाहिये और आपको भी विषका दुःख नहीं होकर अमृत फल प्राप्त होना चाहिये, निश्चयसे रात्रि दिवस नहीं होगी; जो पदार्थ आदिसे जैसा है उसी प्रमाण रहेगा रज्जुके सर्पमें विष नहीं है, झूठी निश्चय फलदायक नहीं है, ब्रह्म निराकारपर निश्चय होना समझमें नहीं आता, मेरे ज्ञानमें निराकारका अर्थ मिथ्या जिसको ज्ञान होगा वह इस सिद्धांतको जानेगा, निश्चय वृत्ति पदार्थ विना नहीं होता और निश्चयसे हाथी कीडी। नहीं होगी, निश्चयको ब्रह्म कहना अथवा केवल निश्चयसे ब्रह्मका अनुभव होना मिथ्या है, यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे ।

इति अभिलाखसागर गुरुशिष्य संवाद सातवें
तरंगमें दूसरी लहरी

प्रेम ब्रह्म है

श्रीगोविंदाय नमः ॥ मैं दूसरे महात्माके पास गया और सब हाल अपना कहा. तब महात्मा गुरु बोले कि, ब्रह्म निराकार है, परंतु प्रेमसे अनुभव होता है अथवा प्रेम आप ब्रह्म है आजतक जहां वह प्रगट हुआ प्रेमसे हुआ. जैसे लकडी और पत्थरके अग्नि विना उपाय या कारण प्रगट नहीं हो सकती उसी प्रमाण ब्रह्म विना प्रेम प्रगट नहीं होगा जिसको प्रेम नहीं है उसको ब्रह्मप्राप्तिका आसरा करना आकाशका फल चाहना है, गोपियोंके प्रेममें सोलह हजार कृष्ण होगये, शबरीके प्रेममें जूठे बेर खाया, कुबरीने प्रेमसे अपना पति बनाया, करमाबाईके घर खिचडी खाया, सुदामाके कारण रुक्मिणीपर क्रोध किया, विदुरके घर शाक भात खाया. जिसको मिलेगा प्रेमसे मिलेगा, प्रेम भक्तिको कहते हैं, भक्ति नव प्रकारकी है-श्रवण, कीर्तन, स्मरण, उदार, आचरण, वंदन, दास्य; हर्ष उदास. यश सुनना १, यशगाना २, सेवा करना ३, आज्ञा पालना ४, याद रखना ५ बडा जानना ६, सबमें जानना ७, एक जानना ८, आपमें जानना ९, ब्रह्मके मिलनेका प्रेम रास्ता है, जैसा तुमने बारह बरस भजन किया था, कदाचित् प्रेम करते तो मनोरथ सिद्ध हो जाता. अब भी प्रेम करके देखो और इस प्रेम चालीसेको पढो, जो इसके साथ है-

दोहा—जनकप्रेम अद्भुत अगम, सीताप्रेम अगाध ॥
प्रेम कियो प्रहलादने, मान्यो दैत्य असाध ॥ १ ॥
प्रेम धनाको जब भयो, पत्थर रूप बनाय ॥
मित्रभावसे कछुक दिन, ते घर गाय चराय ॥ २ ॥
प्रेम भयो व्रजनारको, सोलह सहस सरूप ।
रासमंडलमें नाचकर, पीछे होगयो गूप ॥ ३ ॥
प्रेम रुक्मिणीको भयो, भाग्यो रथ बैठाय ।
रुकमैयाको बांधकर, डाढी मूंछ मुँडाय ॥ ४ ॥
प्रेम विदुरको देखिके, खायो तंदुल साग ।
दुर्योधन घर ना गयो, रचो जहां बहु पाग ॥ ५ ॥
प्रेम बिभीषणको भयो, पायो लंकाराज ।
वालि मार सुग्रीवको, अंगदको युवराज ॥ ६ ॥
प्रेम सुदामाको भयो, पायो धन संतान ।
दास मलुकके प्रेमसे, शिरपर ढोये धान ॥ ७ ॥
प्रेम भयो गजराजको, फँस्यो ग्राहके फंद ।
पांव पयादे धाय कर, काट्यो ताके बंद ॥ ८ ॥
पीपाजीके प्रेमसे, रच्यो द्वारिका छाप ।
छीपा छान छवाइके, बांद उठावे आप ॥ ९ ॥
सैन भक्तके प्रेमको, अंत लख्यो नहिं जाय ।
राजाकी सेवा करै, ताको रूप बनाय ॥ १० ॥
प्रेम जटायूको भयो, पायो पद निर्वाण ।
केवट जात अजातको, भेटयो श्रीभगवान ॥ ११ ॥

प्रेम अजामिलको भयो, अंत मिल्यो भगवान ।
गणिका कीर पढाय कर, पायो पद निर्वाण ॥ १२ ॥
प्रेम यशोदाको भयो, गोद खिलायो राम ।
राधा प्रेम अगाध है, मोहनको विश्राम ॥ १३ ॥
प्रेम अहिल्याको भयो, शिला गई सुरलोक ।
हनूमानके प्रेमकूं; जानत तीनों लोक ॥ १४ ॥
तुकारामजी प्रेमसे; गये सदेह आकाश ।
रामदासके प्रेमसे; दासबोध परकाश ॥ १५ ॥
नरसी प्रेम अगाध है; हूंडी दियो सिकार ।
माधवदासके प्रेमसे, मले धाव करतार ॥ १६ ॥
पलटू प्रेम प्रकाश है, शुद्ध भयो परवार ।
सात महल सिद्धी रही, विदित जगत् संसार ॥ १७॥
नीच जात रोहिदासको, प्रेम प्रगट संसार ।
काशी मध्य समाजमें, ब्राह्मण रूप हजार ॥१८॥
सजन कसायी प्रेमसे, पूजे शालिग्राम ।
सन्तनके ढिग ना रह्यो, पलट गये उस ग्राम ॥१९॥
सूरदासके प्रेमसे, लकडी पकड्यो राम ।
सवा लाखमें अधिक पद, सूर कियो है श्याम ॥२०॥
प्रेम कबीर बहुत कियो, जलमें गयो समाय ।
गोरखके संवादमें, दियो सिद्ध दर्शाय ॥२१॥
दादू प्रेम अपार है, जेहि घर सुन्दर दास ।
सर्व सिद्धिके रूप है, दूजे निश्चलदास ॥२२॥

कर्मा बाई प्रेमसे, करे खीचडी भोर
मथुरा गोकुल छोडकर, आवत नंदकिशोर ॥ २३ ॥
दशरथ कौशल्या कियो, प्रेम राम समपूत ।
रावण कुंभकर्ण हने, मेघनाद अवधूत ॥ २४ ॥
दंतवक्र शिशुपाल असुर, जरासंध अरु कंस ।
गुप्त प्रेम सबको रह्यो, ताते कियो विध्वंस ॥ २५ ॥
पांडव प्रेम अपार है, कौरव गर्व कपार ।
अष्टादश दिन बीचमें, हऱ्यो भूमिका भार ॥ २६ ॥
प्रेम भर्तरी अगम है, गोपीचंद अखंड ।
अंबरीषके प्रेममें, दुर्वासाको दंड ॥ २७ ॥
प्रेम द्रौपदीने कियो, मध्य सभाके बीच ।
सारी बढी अगाध जब, हार दुशासन खींच ॥ २८ ॥
प्रेम कूबरीको भयो, पायो कृष्ण मुरार ।
प्रेमजु शबरीको भयो, जूठे बेर अहार ॥ २९ ॥
गिरिधर भट्टुर नरहरी, पद्माकर कवि गंग ।
सबको प्रेम प्रकाश है, विदित जगत रसरंग ॥ ३० ॥
शंकरस्वामी अंतमें, प्रेम कियो भरपूर ।
जैनी मतखंडन कियो, वेद शास्त्रसे दूर ॥ ३१ ॥
रामानंदके प्रेममें; वैष्णवमत परकाश ।
वामन द्वारा चार घर, जगत विदित आकाश ॥ ३२ ॥
मीरा बाई प्रेममें, विष पीयो भर जाम ।
हरिकृपा अमृत भयो; गिरिधरजीके काम ॥ ३३ ॥

त्रियलोचनके प्रेमसे, सेवक होय भगवान ।
ताकी सेवा नित्य करै, ऐसो प्रेम प्रधान ॥ ३४ ॥
अग्रदाससे प्रेमसे, नाभा भये सपूत ।
भक्तमाल रचना कियो, कही कथा अद्भूत ॥ ३५ ॥
प्रेम देवकीको भयो, पुत्र भये भगवान ।
मथुरासे गोकुल गये, वासु देव परधान ॥ ३६ ॥
जामवंत नल नील कपि, तारा प्रेम अदार ।
सबको निर्मल गति दियो, राम भक्त अधिकार॥ ३७॥
जगजीवनके प्रेमको, दूलन दास प्रसिद्ध ।
तुलसिदासके प्रेमको, वरणसके नहिं सिद्ध ॥ ३८ ॥
गुरु नानकके प्रेमको, मूरख करे बखान ।
बाला मरदाना सहित, गये जहां भगवान ॥ ३९ ॥
श्रीचंदके प्रेमसे, विदित भगत भगवान ।
माधवदासके प्रेमसे, ये अभिलाख प्रदान ॥ ४० ॥

मैंने हाथ जोडकर कहा कि जब ब्रह्म निराकार है तो नवधा भक्ति किस रूपकी करे ? ये नव व्यवहार आकार ब्रह्ममें हो सकते हैं, सबमें जो है उसका प्रेम असंभव है और जब एक है तो प्रेम अनुचित और जब अपनेमें है, तब प्रेम निरर्थक है; आप अपना प्रेम किस प्रकार करे ? जब कुछ रूप दर्शावे तब प्रेम होवै, चकोर चन्द्रका प्रेम है, जो दृष्टांत भक्तोंका आने आपने कहा वह अवतारोंका प्रेम है । राम, कृष्ण, परशुराम, वामन आदिक उनको प्रसन्न

हुए, उनका मनोरथ सिद्ध हुआ, ऐसा मानुषशरीरवालेका प्रेम जिसका अब कहीं हो सकता है ? निराकारका प्रेम ज्ञानमें नहीं आता. पहिले निश्चय होना, चाहिये पीछे प्रेमका उपदेश स्वार्थ होगा; यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे ॥

इति अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद सातवें
तरंगमें तीसरी लहरी

मंत्र आप ब्रह्म है

श्रीभगवते नमः ॥ मैं दूसरे महात्माके पास गया और सब हाल अपना कहा, तब महात्मा गुरु बोले कि, ब्रह्म निराकार है मंत्रके आधीन है अथवा मंत्र आप ब्रह्म है जिस काल विधिपूर्वक मंत्र उच्चारण होवे ब्रह्मका दर्शन तथा अनुभव निश्चय करके हो, तुम्हारा ज्ञान ऐसा है कि, निराकार तथा अदृष्टका अनुभव नहीं हो सकता. यह ज्ञान मिथ्या हो सकता है. सुनो—पहला अपनी आंखमें कज्जल अदृष्ट है परंतु सत्य है काचमें अनुभव हो सकता है अदृ-ष्टका कारण अति निकट है १, दूसरे—आकाशमें जो कबूतर चला जाता है वह अदृष्ट हो जाता है परंतु ऊपर रहता है कुछ कालपीछे जब नीचे आवेगा तब अनुभव होगा, अदृष्टका कारण अति दूर है २, तीसरे-अणु सर्व आकाशमें भरे हैं अदृष्ट हैं, परंतु कोई छिद्रमें सूर्यका प्रकाश होवे तब अनुभव हो

सकता है, अदृष्टका कारण अति सूक्ष्म है, ३ चौथे-जलमें जल मिला हुआ विलग अदृष्ट है परंतु उसमें है, पात्रमें पहिले कम था, पीछे विशेष हुआ, इस प्रकारसे अनुभव हो सकता है, अदृष्ट होनेका कारण मिश्रित है४, पांचवें-संमुख पदार्थ रक्खा था कोई ले गया, अदृष्ट है,परंतु सत्यकरके ले गया, खोजनेसे अनुभव हो जावेगा, अदृष्ट होनेका कारण ध्यान नहीं रहा ५, छठवें दिनको तारा नहीं दर्शाता, अदृष्ट है परंतु वह स्थिर है, जब सूर्यका प्रकाश कम होगा तब अनुभव होगा; अदृष्टका कारण तेजरहित होगया ६. सातवें दीवार या पहाड आदिकके ओटमें जो पदार्थ है वह अदृष्ट होनेका कारण नीचमें परदा है ७, आठवें-आंखके अंधेको सब अदृष्ट है, परंतु जगत् सत्य है; स्पर्श आदिकसे अनुभव होता है, अदृष्ट होनेका कारण अज्ञान दृष्ट है ८, ये आठ दृष्टांत ब्रह्म मंत्रसे देखनेके हैं, जैसे ये उपाय अदृष्टके हैं इसी प्रमाण ब्रह्म मंत्रसे देखा जाता है अनुभव होना, ज्ञानमें आना देखना सब बराबर है, मंत्रका जप करना बहुत कठिन है, सांप बिच्छूका जहर मंत्रसे प्रत्यक्ष उतरता है। मोहन, वशीकरण, आकर्षण, स्तंभन, विद्वेषण, शांति, उच्चाटन, मारण, सब मंत्रके आधीन हैं; सर्वसाधनमें मंत्र प्रधान है, गुरु-उपदेशको भी मंत्र कहते हैं चालीस मंत्र नित्यकर्मके देखो-

मंत्र जाग्रतका

आदि पुरुष अनादि माया । जाग्रत स्वप्नसुषुप्ति बनाया ॥
प्रकाश रूप त्रिलोकी नाथ । दैत्यभंजन भक्तके साथ ॥
सोहं प्रकाश अदिती देव । ब्रह्मा विष्णु न जाने भेव ॥
पंच तत्त्वको करै नमस्कार । जिसकी माया अपरंपार ॥
जाग्रत होय गायत्री पढे । सहत अभिलाख ज्ञानबुध बढे॥ १॥

मंत्र पात्रका

खाक पाकसे पात्र बना । कमंडलु तुंबा किस्ति बहुगुणा॥
पहिला कमंडलु मनुने बनाया । मत्स्य रूप तामें दर्शाया ॥
पात्र विचार ज्ञान जल । भ्रमको नाश संतोष अस्थल ॥
उस पात्रमें अमृत भरा । नवनाथ चौरासीसिद्धिके आगे धरा॥
ऐसा कर पात्र अभिलाखराखे । निर्गुणमुक्तप्रेमरस चाखे ॥२॥

मंत्र मलमूत्रका

सत्यकी माया असत्यकी काया । दस इंद्रीका भोग बनाया ॥
निर्मल धरति देवको वास । चन्द्र सूरज करै प्रकाश ॥
प्राण अपान गुदामें फिरे । मलमूत्रकी क्रिया करे ॥
सब देवकी विनती करे । सहत मर्याद मलमूत्र करे ॥
प्रथम अभिलाख गायत्री पढे। पीछे एकांत मलमूत्र करे॥ ३॥

मंत्र मुखारीका

राख मुखरी मंजन । नित्य प्रात मुख धोवे निरञ्जन ॥
अंकुर मृत्तिका जो कुछ पावे । मुख धोवे और दांत मजावे॥
औघड ज्ञान अर्ध अस्नान । पंच देवका लावे ध्यान ॥

मुख धोवे गायत्री पढे। ज्ञान बुद्धि पुरुषार्थ बढे ॥
मस्तक बीच लगावे राख। सुखसम्पतपावे अभिलाख॥४॥

मन्त्र स्नानका

सागर विचार ज्ञान जल। निश्चय धाम विवेक अस्थल ॥
गंगा यमुना त्रिवेणी घाट। दत्त दिगंबर लावे थाट ॥
शील लंगोटी धर्म जनेऊ। मंजन करे सुजाने भेऊ ॥
कर अस्नान गायत्री पढे। तिलक छाप और भस्मी चढे ॥
ऐसा स्नान अभिलाखसे होवे। पापकी मैल हृदयसे धोवे ॥

मन्त्र जनेऊका

ज्ञानकी रुई विज्ञानकी कपास। सूत कातय दत्त अविनाश॥
उस सूतका जनेऊ बनाया। ब्रह्म गांठ ब्रह्माने लगाया ॥
छानवे चौवा नाप प्रमाण। जनेऊ पहारे आप भगवान ॥
चारों वर्णको जानेऊ दिया। यज्ञ उपवीतकरके शुद्ध किया॥
जनेऊ पहरे सहत अभिलाख। वेदपुराणशास्तर शाख ॥६॥

मन्त्र लंगोटीका

कुशकालंगोटमूंजकीकरधन। लकडधातऊनकुशपटसन ॥
धोती अचला विभुतचढावे। वज्रलंगोट हनुमानपहिरावे ॥
लक्ष्मणजती भीष्म महादेव। दत्तगणेशसनकादिक शुकदेव॥
करधनलंगोटकोशुद्धकिया।अठयासी हजारऋषिआज्ञा दिया ॥
करधनलंगोटकीगायत्री पढे। सहतअभिलाख सुरलोक चढे॥

मन्त्र कंठीमालाका

तुलसीमलयागरहलदीकमलाक्ष। सुवर्णमूंगामोतीरुद्राक्ष ॥

कंठीमाला सुमिरन बनाया । ब्रह्मा विष्णु महेशके मनभाया॥
घटमें सोहं सुमिरण जाप । जपे निरंजन आपे आप ॥
मणिका विचार ज्ञानमाला । दत्त दिगंबर बैठ मृगछाला॥
अजपा जपैनित्यप्रतिलाख। निर्गुणमुक्ति लहै अभिलाख॥८॥

मंत्र रुद्राक्षका

ब्रह्म निराकारकी माया । गौरी शंकर वृक्ष लगाया ॥
उस वृक्षका नाम रुद्राक्ष धरा । उसमें पंचमुखी फल फरा ॥
उसको महादेवपर चढाया । चारमुखी चारों दिशाको भेजाया
एकमुखी माला जपे निर्वाण । एक सो आट आयु प्रमाण ॥
ओहं सोहं सहत अभिलाख । मुक्त पावे जपे जब लाख९॥

मंत्र जटाका

जटा लटूरी भूरे केश । गोरखनाथ बनावे भेष ॥
पांच केशको राख मुँडावे । सत्यनामको दोनों भावे ॥
कंगा करे लगावे तेल । डाढी भसम बनावै सेल ॥
जटा जडाव मुकुट बनावे । सनकादिककी आज्ञा पावे ॥
ऐसी जटा करे अभिलाख । वेद पुराण शास्तर साख१०॥

मंत्र तिलकका

केशर कस्तूरी कपूर गोरोचन । कृष्णागरुचंदन वंशलोचन ॥
अगर तगर और देवदार । कुंकु सिंदूर द्वादश प्रकार ॥
द्वादश तिलक देवें त्रिपुरार । तिलकी अलक झलकै संसार॥
आडा खडा गोल त्रिभाग । प्रेमसे लगावे सहत अनुराग॥
सोहं तिलक सर्व आकार। जपे अभिलाख नाम निराकार११॥

मंत्र भस्मीका १२.

सुरा गायका गोबर आया । अग्निमें जलाकर भस्मी बनाया
वो भस्मी श्मशानसे आवे । नवनाथ चौरासी सिद्ध चढावे॥
भस्मंती सर्व योगकी माता । ऋद्धिसिद्धि नवनिधिकी दाता
भस्मी लगाया तीरथ बनाया । चार पदार्थ परमपद पाया ॥
भस्मीसबकी अभिलाखपुरावै । भस्मी अलखनिरंजन दर्शावै॥

मंत्र चोलाका १३.

कुरता बंडी बारतनी । अँगरखा और कफनी ॥
अलफी चादर पाटंबर । सबको पहिरे दत्त दिगंबर ॥
गोरख पहिरे गोपीचंद । हटक पटन जंजीर अबंद ॥
उलटा सीधा पहिरे परदा । आज्ञा देवे शेष शारदा ॥
ऐसा चोला अभिलाख चढावे । जन्ममरणका ज्ञान भुलावे ॥

मंत्र पांवडीका १४.

अक्कल चरम रूप पोलाद । करें पाँवडी पहिरे आद ॥
पौला खूँटो दार सपाट । महादेवका लगे कपट ॥
तीन लोकमें विचरत डोलै । गोरख दत्त दिगंबर बोलै ॥
पहर पांवडी आवे जाय । शुद्ध अशुद्धको देउ बचाय॥
ऐसी पांवडी अभिलाख राखै । विमल पवित्र शुद्ध सतभाखै॥

मंत्र भगवांका

भगसे उपज्यो भगवांका रंग । शिव भगवान पार्वती संग ॥
भगसे तीन लोक उपजाया । आदिपुरुष अरु लिंग बनाया॥
भगवांपहिरे ब्रह्मा विष्णु महेश। नारद सनकादिक आदि गणेश॥

भगवां रंग अनादि जुगाद । सोहं शब्द अनाहत नाद ॥
मुक्त अनेक वैकुण्ड लाख। भगवां पहिरे सहत अभिलाख १५॥

मंत्र धूनीका

ज्ञान अग्नि भ्रम लक्कड । धूनी ताप दत्त दिगंबर ॥
उस धूनीमें जरै ज्वाला । चन्द्र सूरज करै उजियाला ॥
धुवांकी धूम ब्रह्मांडमें रह्यो । ज्योति सरूप प्रगट भयो ॥
भ्रमको जलावै ज्ञान पावै । ऐसी धूनी निराकारको भावै ॥
उस धूनीको निर्मल राख । निर्गुण मुक्त होवै अभिलाख १६॥

मंत्र चिमटेका

कठिन धातु लोहकी जात । पोलाद खेडि और असपात ॥
सोला अंगुल सबसे छोटा । अस्सी अंगुल सबसे मोटा ॥
दृढ होई पकडे गुरुमुखबात । मोह काम दोनों जरजात ॥
नारद गोरख सूर कबीर । चिमटाके टल राखै धीर ॥
अभिलाखवृत्तीपांहन समान । चिमटासे होवे विज्ञान ॥१७॥

मंत्र आसनका

आसन बैठे सिद्ध अवधूत । दत्त दिगंबर अत्रिके पूत ॥
आसनचौराशीचौराशी सिद्ध । ऋद्धि सिद्धि पूरणनवनिद्ध॥
आसन सिद्ध मनोरथ करै । दृढ आसन हृदयमें धरै ॥
सोहं ध्यान आतम उदास । आतम अनुभव होय प्रकाश ॥
पूरण अभिलाख आसन शांत। निर्गुण मत विचार वेदांत १८॥

मंत्र आसनका दूसरा

मृग केशरी और गज चरम । उनका पटकुश रेशम नरम॥

स्वाक पाक सब अष्ट प्रकार । आसन कियो शुद्ध कर्तार ॥
ऐसा आसन बैठे योगी । भोगी बैठे होवे रोगी ॥
आसन ऊपर ध्यान लगावे । निर्गुण मुक्त परमपद पावे ॥
ऐसा आसन अभिलाख बिछावे । षटचक्र आतम दर्शावे१९॥

मंत्र विघ्ननिवारणका

भूल चूक अक्षरको फेर । उलटा सीधा देर सवेर ॥
लोभ अनुलोभ अजपाजाप । विघ्न निवारण छूटे पाप ॥
दिशा भूम आसन संवाद । सायत घडी वार मरयाद ॥
गिरा गणेश सरस्वती शेष । सिद्ध मनोरथ होवे हमेश ॥
ऐसा विघ्न अभिलाख निवारै । सर्व प्रकारका ध्यान धारै२०॥

मंत्र शरीररक्षाका

तीन ताप और पांच विकार । गिरा दि‌शाको करे उद्धार॥
देव दैत्य देवी वेताल । जिन मोक्कल काल दुकाल ॥
जादू मंतर तुटका मूठो । शत्रु मित्र करे सब छूटी ॥
गोरख भैरव पाँचों पंडा । हनूमानका शिरपर दंडा ॥
ऐसी रक्षा अभिलाख करे । कलुवा महंदाकी चौकी फिरे२१॥

मन्त्र चित्त एकाग्र करनेका

पांच प्राणको घटमें राखे । दृष्टि नासा ऊपर नाखे ॥
मन और चित्तको एक बनावे । सर्व सृष्टिको भूल मिलावे॥
सहज शिशुपन मूर्छत तुरया । परम हंसकी राखे क्रिया ॥
गौरी गणपत शंकर दत्त । ध्यान करे होवे चित्त सत्त ॥
चित्त एकाग्र करे ये भांत । कह अभिलाख विचार शांत२२॥

मन्त्र ध्यानका

जैसे चन्द्र चकोरका ध्यान । बालामृत शशिदेख लुभान ॥
पपैया बून्द स्वाती चाहै । कछुवा अंडकि प्रीति निबाहै॥
क्षुधा प्रगट भोजनका ध्यान । काम प्रगट कामिनीका ज्ञान॥
गुरुमुख ब्रह्मकी ध्यान लगावे । सहज सहज सुषुपत गत हो जावे
ऐसा ध्यान करे अभिलाख । वेद पुराण शास्तर साख२३॥

मन्त्र आवाहनका

ग्राहसे गजको जाय बचावे । रुक्मिणिकी चोरी ले जावे॥
जूंठे बेरका भोग लगाया । धन्नाके घर गाय चराया ॥
सन भक्तकी सेवा करे । दीन वचन सुन कृपा करे ॥
दीन वचन और निरछल सेवा । कमाके घर खिचडी मेवा ॥
दीन वचन अभिलाख पुकारे । निराकारका मन्त्र उचारे२४॥

मन्त्र नमस्कारका

नमो नमो निर्गुण कर्तार । नमो निरंजन अलख अपार॥
नमो नमो त्रिगुणके भेवा । नमो नमो परमेश्वर देवा ॥
नमस्कार है सत्य नामको । नमो सर्व शिव कृष्णरामको॥
नमस्कार मेरी सुन लीजे । जयजयकार हमारी कीजे ॥
नमस्कार अभिलाख पुरावे। नमस्कार निरमल गत पावे२५॥

मन्त्र देवसम्मानका

हृदयासनमें करा निवास । काम क्रोधका होवे नाश ॥
चरण धोय चरणोदक पावे । भागीरथी क्षीर अन्हवावे ॥
फूल पान अगरजा सुपारी । शक्कर घृत सहत दधि चारी॥

वस्त्र भेंट सब आगे धरे । निराकारके अर्पण करे ॥
ऐसी पूजा देवकी करे । चार पदारथ अभिलाख धरे॥२६॥

मन्त्र भोजन नवेदका

छत्तिस व्यंजन छपन प्रकार । छःरस चाखे आप निराकार
शक्ति बनाया देव खाया । राम कृष्णको भोग लगाया॥
अग्नि मुख खावे जलमुख नहावे । गुरु आज्ञासे भोग लगावे ॥
घृत मिष्टान्न वासुदेवको चढावे। पहिलाकान अग्निको खिलावे॥
इस प्रकारसे भोजन करे । अपनी अभिलाख संपूरण भरे२७॥

मन्त्र धूपका

अगर तगर चंपन कृष्णागर । ऊद पंचांग कस्तूरी केशन ॥
अग्नि देवके मुखमें देवे । उसकी वास निरंजन लेवे ॥
काल पाय शक्कर घृत शुद्ध । ज्ञान पुरुषार्थ निर्मल बुद्ध ॥
सर्व प्रकारकी धूप सुहावे । प्रेम नेमसे अगनि जलावे ॥
ऐसी धूप अभिलाख जलावे । पांचदेवकी आज्ञा पावे॥२८॥

मन्त्र स्तुतिका

दीनानाथ दीनके स्वामी । भक्त सहायक अंतर्यामी ॥
घट घटकी पीरा तुम जानो । दुष्ट भक्त तुम सब पहिचानो॥
मेरे नेत्र सुफल तुम करो । हृदय भीतर आसन करो ॥
संचित प्रारब्ध त्रियताप । नाश होय सब मेरे पाप ॥
अपनो ज्योतिमें मोहि मिलावो।ये मेरी अभिलाख पुरावो२९॥

मन्त्र दीपका

घृत कपूर कपासकी बात । तीन पांच सारो नव सात ॥

धातुपात्रमें दीप जलावे । जोतीसरूपको जोत दिखावे ॥
प्रेम आरती देव उतारे । व्यास वेदकी ऋचा उचारे ॥
ब्रह्मा विष्णु महेष भवानी । अगम अगोचर प्रभु निर्वानी ॥
पढे मन्त्र आरती उतारे । सहत अभिलाख सुरलोक सिधारे ३०॥

मन्त्र विसर्जनका

मंगल ध्यान विसर्जनदेवा । हृदयवास करो तज भेवा ॥
स्वर्ग लोक कैलास स्थान । गोलोक सागर परधान ॥
ब्रह्मलोक इन्द्रासन नाम । साती पुरी और चारों धाम ॥
पूरण आस दासको करो । अपने गृहवास सब करो ॥
वेद पुराण शास्तर साख । पूरण होय दास अभिलाख ॥ ३१॥

मन्त्र निद्राका

चार प्रहर जाग्रतमें फिरै । निद्रा शयन रातमें करै ॥
स्वप्न सुषुपति तुरैया लहै । सूक्ष्मरूप जाग्रत रहे ॥
सोवे शरीर सोई अज्ञान । योगी जाने आत्मज्ञान ॥
पढ गायत्री निद्रा करे । ऋद्धि सिद्धि नवनिद्धि घर धरे ॥
तालकी शब्द काल भागे । सहत अभिलाख सोव जागे॥ ३२॥

मन्त्र अमलका

अमलसे आमिल अमलसे एमाल । अमलसे कामिल अमले॥
कमाल ॥ सांप कैअरी बंदरकी प्यारी । एकका कोढा एक
असवारी ॥ राजा प्रजा योगी सब पावे । महाकालिका ध्यान
लगावे ॥ सूके कुसुंभामदक प्रधान । पोस्तीपरमपदारथ जान॥
ऐसी अमल अभिलाखसे खावे । मुरों चारोंपदारथपावे॥ ३३॥

मन्त्र गांजाका

इक्कीस लाख फूल फल पान । सबसे गांजा है परधान ॥
षट दर्शन सब गांजा पीवे । गांजाके बल योगी जीवे ॥
गांजा तमाखु प्रेमसे मिलावे । दम खींचे ज्योतिरूप दरशावे॥
मनको अधार बुद्धिको अंजन।पीये अभिलाख देखे निरंजन ३४॥

मन्त्र भांगका

जंगलकी पत्ती शंकरका ध्यान । ब्रह्मका जीवन विष्णुका ज्ञान ॥
घोंटकालभैरवश्यामकार्तिकगणेश । छानेपार्वतीपीवेमहेश ॥
चारों वर्ण चारों आश्रम । चारों वेदका पूरा धरम ॥
विजया माता जगत विख्याता । पंचानंद मुक्तिकी दाता ॥
प्रेमकीविजयाअभिलाख पावे।चौदा भुवन मिथ्या दर्शावे॥ ३५॥

मंत्र सुराका

धन्वंतरने बनाया वर्णको प्याया । चौदह रतन क्षीरसागरमें पाया ॥
सुरा वारुणी तीरथ मद । योगी पीवे राखे हद ॥
देवी भैरव सिद्ध पुरंदर । शुद्ध किया सब नलका यंतर ॥
गुड महुआ मेवा स्थावर । सबकी दारु कनक बराबर ॥
सुरमा ताको देवे साख । तीर्थपान करे अभिलाख ॥३६॥

मंत्र विषयका

आदि निराकार निर्गुण आकार जिनकी महिमा न पावें त्रिपुरार
भगसे भक्ति रती प्रसंग । कामकी शोभा कामी उमंग ॥
पुरुष प्रकृति परमार्थ भोग । जगतकी वृद्धी अनादि योग ॥
भगसे लिंग लिंगसे भग । जगसे ईश्वर ईश्वरसे जग ॥
गुप्त विचार अभिलाख भाखे।पढ गायत्रीविषयरस चाखे३७॥

मंत्र मांस मछलीका

जलचर नभचर भूचर नाना । पशू मच्छ पक्षी परमाणा ॥
आत्मद्रोही जो न भरमावे । उनकी नाश करत फल पावे ॥
ऐसी बहुत योनिमें आवे । प्राण जाय तब दूजे पावे ॥
गोरख दत्त मछिंदर खाया । देवी भैरव भोग लगाया ॥
राम कृष्णने देखा चाख । ऐसी मांस खावे अभिलाख३८॥

मंत्र झोलीका

झोली रामकृष्णको भावे । ब्रह्मा विष्णु महेश सुहावे ॥
झोली बांधे दत्त दिगंबर । गोरख गोपीचंद जलंदर ॥
झोली हनूमानको भावे । झोलीसे शिव अलख जगावे ॥
झोली अंदर चौदा रतन । झोली भीतर चौदा भुवन ॥
ऐसी झोली अभिलाख बतावे।चारोंकोनमें गांठ लगावे॥ ३८॥

ब्रह्मप्राप्तिका मंत्र ग्रंथमें मत लिखो उसको चालीस रोज एकांतमें जाप करो, ब्रह्मका अनुभव होगा । मैं नब महात्मा गुरुकी आज्ञा प्रमाण विधिपूर्वक वह मंत्र जाप किया कुछ अनुभव प्रत्यक्ष नहीं हुआ तब महात्मा गुरुसे हाथ जोडकर कहा कि, मंत्र अक्षरसे बनाया गया । अक्षरका सिद्धांत पहिले प्रकट हो चुका । सांप बिच्छूका जहर मंत्रसे नहीं उतरता, हजारों मर जाते हैं । गुरुका मंत्र सबको आता है, कोई सिद्ध अमर नहीं हो गया । बाजीगर हाथसे खेल करता है, सबको झूठा मंत्र सुनाता है, इंद्रजाल ग्रंथ संसारमें सबके पास है, चार आनेमें है, हजारों मंत्र उसमें लिखे हैं

कोई सिद्ध नहीं हुआ, लंडनकी विलायतमें अठरा सलतनत हैं उस मुलुकमें कोई मंत्र नहीं जानता। विचारकी बात है कि, मंत्र मुखसे पढा जाता है, वह आकाशमें नाश हो जाता है, वह एक शब्द है, ऋषि लोगोंने संसार बनाने वास्ते और भक्तिमार्ग चलानेके कारण जातिका धर्म निर्वाह होने निमित्त लाखों प्रकारके मंत्र बनाये उसी प्रमाण आपने भी ये चालीस मंत्र बनाये उसमें कुछ सार नहीं। शब्दके भेद अनंत हैं, कोई कह नहीं सकता; यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे ॥

इति अभिलाखसागर गुरु शिष्यसंवाद सातवें तरंगमें चौथी लहरी

मानसिक ध्यान ब्रह्म है

श्री ब्रह्मदेवाय नमः ॥ मैं दूसरे महात्माके पास गया और सब हाल अपना कहा। तब महात्मा गुरु बोले कि; ब्रह्म निराकार है। मानसिक पूजनसे अनुभव होता है, तथा मानसिक ध्यान करने वाला मन आप ब्रह्म है, इस पूजाके-वास्ते जगह बहुत एकांत होना चाहिये, कोई शब्द कानमें न आवे, उसको शुद्ध पवित्र करके अर्धरात्र मध्याह्नके समय तथा दो प्रहर दिनको नित्यकर्म करके मानसिक पूजा करे। पद्मासन लगावे, अगोचरी मुद्रा धारण करे, श्वासमें सोई जाप रक्खे, चित्त एकाग्र करे, पीछे गुरुपदेशप्रमाण हृदयमें आसन बनावे, उस परब्रह्मकी मूर्ति विराजमान करे। गंगाजल दूध आदिकसे स्नान करावे चन्दन केशर कस्तू-

रोका तिलक लगावे, वस्त्र पहिरावे सुगन्ध लगावे, धूप कर्पूर जलावे नैवेद्य भेट आदिक जो प्रगट पूजामें चढाया जाता है सब चढावे, पीछे उस रूपको अपने ध्यानमें दृढ करे अपनेको भूल जावे । उसके उपरांत आंख खोलकर देखे सन्मुख दर्शन होजावेगा, प्रश्नका उत्तर देवेगा और सब मनोरथ सिद्ध करेगा, यह ध्यान सबको नहीं मालूम है अच्छे अच्छे परमहंस सदा इस ध्यानमें आनंदित रहते हैं। मनका यंत्र पृष्ठ १४० में देखने योग्य है ।

मैं तीन महीने महात्मा गुरुकी आज्ञाप्रमाण बडे प्रेमसे इस साधनको किया, यथार्थमें ऐसा अनुभव हुआ कि, जैसा रूप अपने हृदयमें दृढ़ करता वैसा प्रत्यक्ष सन्मुख दर्शाता । कारण अपना ध्यान उस रूपमें ले रहता था, जब ध्यान जाता रहे तब रूप भी जाता रहे; कुछ दिन ये तमाशा इंद्रजालका देखा कुछ सामर्थ्य प्राप्त नहीं हुआ । जैसे स्वप्नमें अनेकवार्ता देखे जाग्रत्‌में उसका कुछ स्वाद नहीं है मनकी संकल्पसे वह रूप ध्यानमें दृढ हो जावे । वही काम-रूपी चर्मचक्षूसे भी कुछ घडी दरशावें, ऐसा सिद्धांत निरर्थक देख कर छोड दिया और महात्मा गुरुसे हाथ जोडकर कहा कि, यह रूप ब्रह्म नहीं, है भ्रम है, मेरेको अच्छी तरह ध्यानमें ब्रह्म आया, कुछ फल प्राप्त नहीं हुआ, यह सुन कर महात्मा गुरु चुप हो रहे ।

इति अभिलाखसागर गुरु शिष्य संवाद सातवें
तरंगमें पांचवीं लहरी

यंत्र मनरूपी ब्रह्मके दो स्त्री हैं उसका परिवार.

१	२	३	४	५	६	७	८	नाम
मोह	काम	क्रोध	लोभ	दंभ	गर्व	मद	अधर्म	ये आठ लडके
मिथ्या	रति	हिंसा	तृष्णा	आशा	निंदा	ईर्षा	अशुद्धता	ये आठ स्त्री
अहंकार	लालच	अविचार	ताप	पाखंड	अपयश	विरुद्ध	अकर्म	ये आठ पोते
ममता	कल्पना	भूल	चिंता	अविद्या	अपकीर्ति	असूधा	अशक्त	ये आठ स्त्री

वासना लडकी अज्ञानकी अदयापुत्रसे विवाह हुआ सोला लडका सोला लडकी हुई.

संशय	आलस्य	अनित्य	भय	रज	तम	कपट	कर्म	ये सोला लडके
असनजन्म	जंत्र	मंत्र	नाटक	प्रपंच	विषम	विक्षेप	भगर	
कलह	चाह	कुटिलता	विपता	दाह	कृपणता	व्याकुलता	कुमत	ये सोला लडकियां
कामना	कुचेष्टा	दुष्ट	क्रूर	अर्जु	सरोना	क्रिया	भ्रष्टता	

निवृत्ति.

								नाम
विवेक	विचार	धैय	संतोष	भजन	शील	धर्म	वैराग्य	ये आठ लडके
विद्या	निश्चय	क्षमा	तृप्त	सिद्धि	लज्ज	श्रद्धा	उदासीन	ये आठ स्त्री
ज्ञान	प्रीत	दीनता	आनंद	निष्कण्ट	सुयश	प्रकाश	अभ्यास	ये आठ पोते
मोक्ष	प्राप्ति	मुदना	करुणा	पूजा	कीर्ति	शुद्धता	दृढत	ये आठ स्त्री
संयम	नेम	आसन	प्राणायाम	प्रत्याहार	ध्यान	धारणा	समाधी	येआंठलडकेअभ्यासदृढतासेहुए
अनुमा	मनुमा	लघुमा	कर्मा	प्राप्त	पराकामी	इस्तु	वस्तु	ये आठ स्त्री हैं.

भक्ति लडकी प्रेमकी दयापुत्रसे विवाह हुआ नौ लडके पैदा हुए.

श्रवण	कीर्तन	स्मरण	उदार	अर्चन	वंदन	दास्य	हर्ष	उदास
जससुनना	जस गाना	हृदयमें स्मरण करना	पांव दाबना	मानसीपूजा	तनमनसे पांवपडे	हुक्म माने.	एक जानना	आपमें जानना

समाधि ब्रह्म है

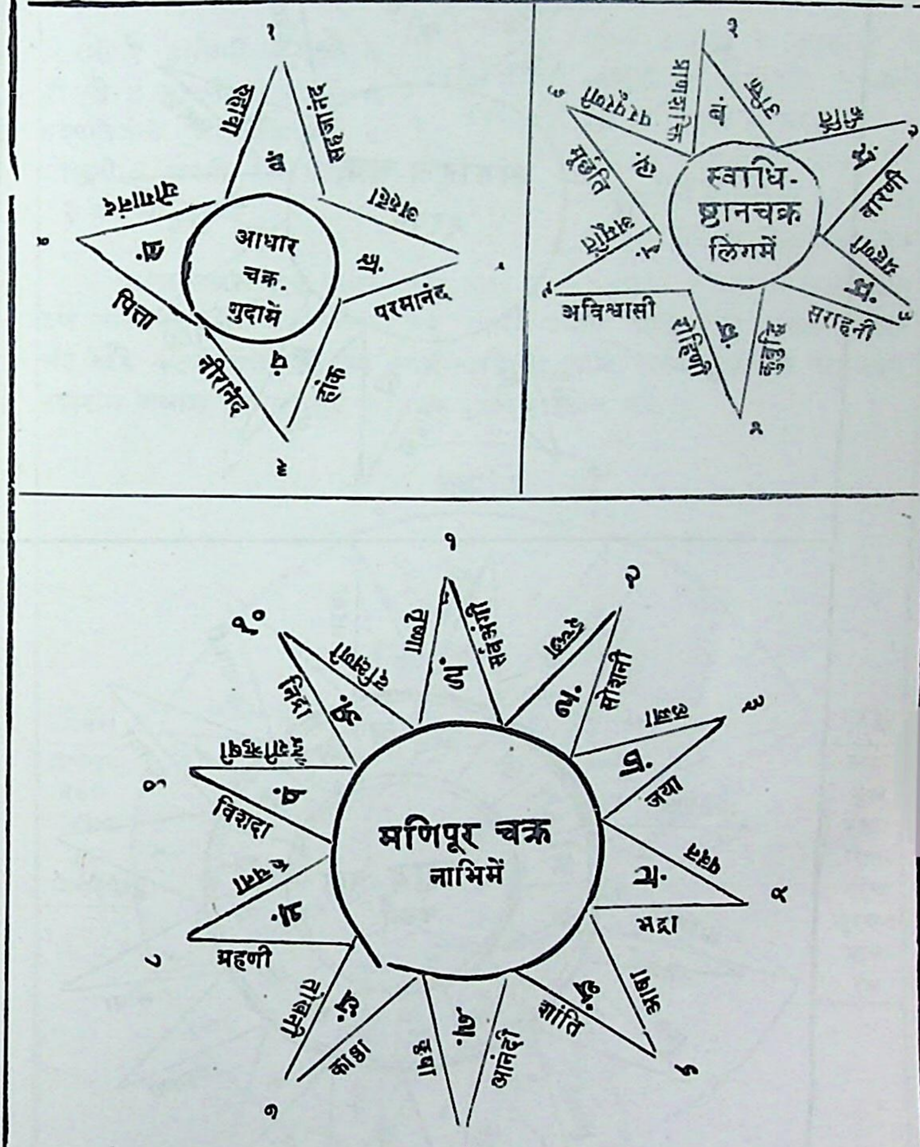
श्रीवासुदेवाय नमः ॥ मैं दूसरे महात्माके पास गया और सब हाल अपना कहा । तब महात्मा गुरु बोले कि, ब्रह्म निराकार है । अष्टांग योग समाधिमें अनुभव होता है अथवा समाधि आप ब्रह्मरूप है, सर्व साधनमें समाधि प्रधान प्रसिद्ध है, नारद सनकादिक महादेव सब समाधि लगाते हैं । समाधिवाले पुराने साधु अबतक पहाड खोदे जानेसे अब दुनियामें मिलते हैं; उनका शरीर महाप्रलयतक रह सकता है और चौदह भुवनको देख सकते हैं, कालका भय छूट जाता है । पहिले शरीरको जल आहार निद्रा प्रमाणसे शोधन करना चाहिये, पीछे आसन मुद्रा ध्यान धारणा करनी चाहिये । पीछे इडा-पिंगला-सुषुम्णा-नाडीका भेद कुंभक पूरक रेचकका भेद जानना चाहिये, तत्त्वसमाधि तालुमें जिह्वाका उलट पलट ब्रह्मांडका विचार करना चाहिये, षट्चक्र द्वादश कमल सोलह कला सूर्य चंद्रका गुण सब जानना चाहिये, इस विचारके उपरांत आत्मा ब्रह्मांडमें जब स्थिर हो जाता है तब वह पुरुष जीवन्मुक्त हो जाता है । अष्टांग योगके नाम ये हैं-१संयम, २ नेम अथवा यम, ३ आसन, ४ व्रत अथवा प्राणायाम; ५ प्रत्याहार, ६धारणा ७ ध्यान, ८समाधि उनके सिद्ध होनेमें आठ सिद्धियां प्राप्त होती हैं। उसके नाम ये हैं-अणिमा, महिमा, लघिमा,गरिमा, प्राप्त, प्राकाम्य, ईशित्व वशित्व ये अष्ट सिद्धि हनुमान्‌को

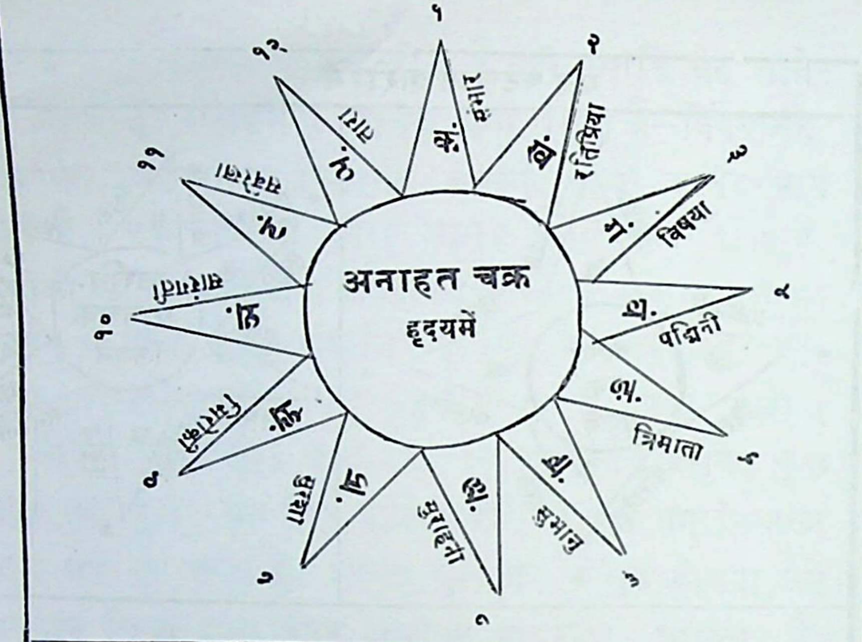
थीं। क्षणमात्र भोगमें जो सुख होता है वही समाधि चढ जाने-पर आत्माको अखंडसदा आनंद, बना रहता है—विषयानंद, योगानंद, अद्वैतानंद, इच्छानंद; ब्रह्मानंद पांचो आनंद प्राप्त होते हैं। एक आनंदसे दूसरा आनंद हजार गुण विशेष है, उसीको मुक्ति कहते हैं। सालोक्य सामीप्य सारूप सायुज्य स्वयंभु ये पांचों मुक्ति समाधिमें हैं और विस्तार यंत्र षट्-चक्र शरीरमेंसे मुद्रातक पृष्ठ १४३ से १५३ तक देखो।

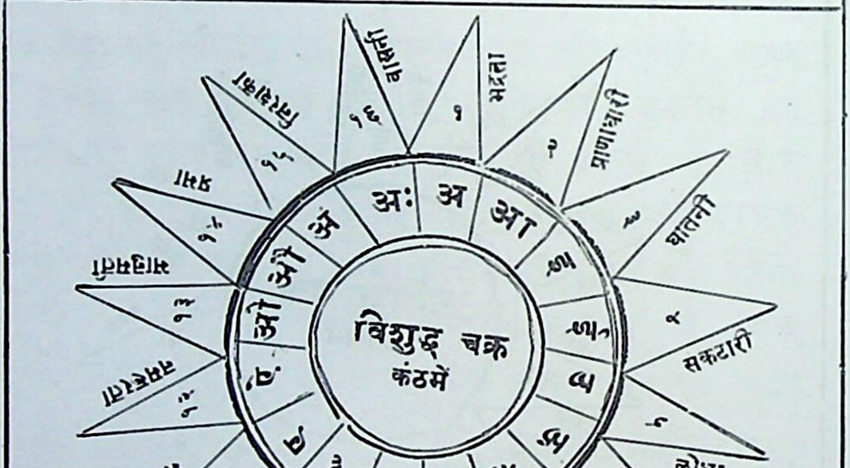
मैंने हाथ जोडकर कहा कि, इस सिद्धांतमें ब्रह्मका कुछ बोध नहीं हुआ, समाधिमें बडी सामर्थ्य है वही समाधिवाला आप ब्रह्म हो जाता है, आनंद मुक्तिका भोक्ता होगया, जैसे मद्यपान किया हुआ पुरुष अपनेको बादशाह जानता है, अनेक महात्मा समाधि वाले देखते मर गये, कोई अमर नहीं हुआ, श्वास प्राणका मार्ग है, उसके बंद करनेसे वह घबडाता है, अभ्यास करते स्थिर हो जाता है, ज्ञान पदार्थ जो मुक्तिका दाता है वह नहीं रहता, कितने साधक शरीरशुद्धिमें मर जाते हैं, मुरदा होकर महाप्रलय तक बैठना निरर्थक है, भांड नकल करनेमें समाधि लगाता है, एक भांडका प्राण समाधिमें चढ गया, एक साल ज्योंका त्यों बैठा रहा, पीछे जब प्राण उतरा तब उठकर कहने लगा कि, लाओ घाडा जोडा श्वासका रोकना समाधि है। मेरे ज्ञानमें खेल तमाशा दर्शाता है, जैसे नटविद्याका साधन कठिन है, यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे।

इति अभिलाखसागर गुरुशिष्य संवाद सातवें तरंगमें छठी लहरी

यंत्र षट्चक्र शरीरमें




अनाहत चक्र
हृदयमें
रतिप्रिया
विषया
पद्मिनी
त्रिमाता


विशुद्ध चक्र
कंठमें
अ
आ
अः
प्राणधारी
घातनी
सकटारी
लोधा
ब्रह्माणी
माली
नि:संगी
सुदिशा

सूर्यकला.

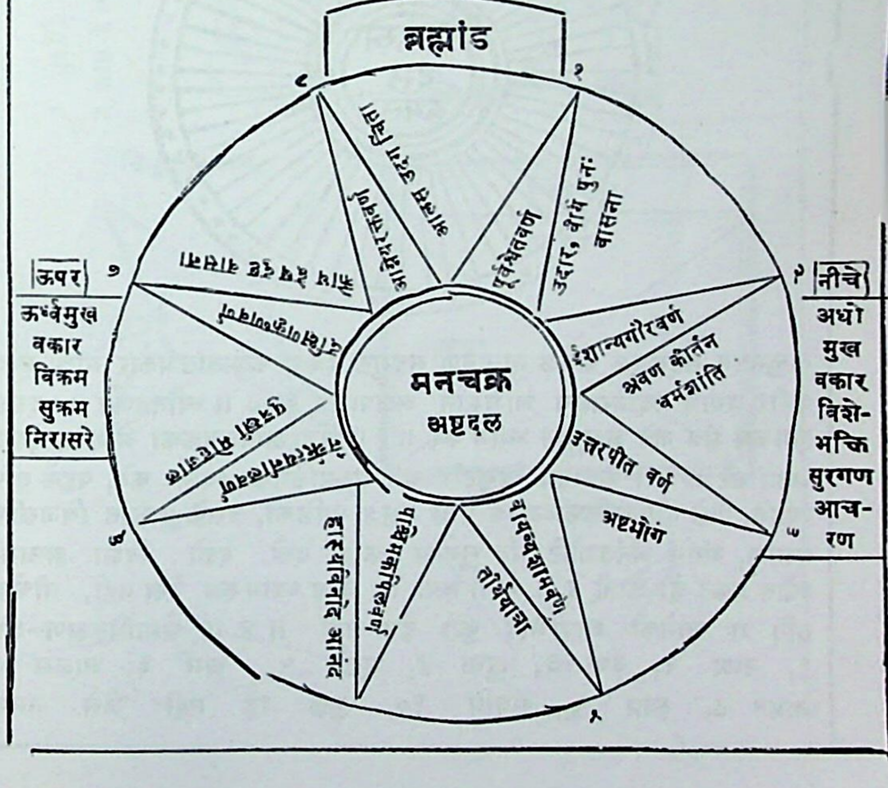
किरनी १ द्वालिनी २ दहनी ३ दीपनी ४ जोतनी ५ तेजनी ६ इदपतिजंती ७ शशिप्रभा ८ सोसनी ९ तापनी १० लोहकी ११ दाहकी १२



चंद्रकला.

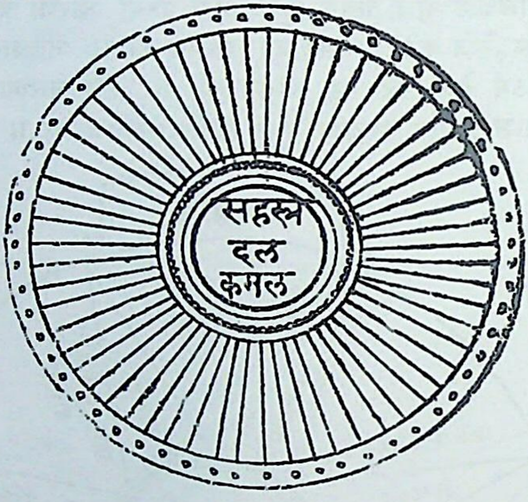
पूर्वनी १ भद्रा २ अलहादी ३ सुनेरवी ४ कगोदनी ५ असो दनी ६ मोहनी ७ करसुदनी ८ चिदा ९ कामनी १० लक्ष्मी ११ व्यापिनी १२ पद्मिनी १३ मतनी १४ बकाशी १५ उदाकी १६

धारणालक्षण पांच तत्वके जुदा जुदा पृथ्वी धारणा चौकोर व अक्षर पीत वर्ण जलमंडल तेज करे प्राणको वह स्तंभन करे ।। जलधारणा बकार अक्षर चंद्र खंड कंठमें तेज करे वह स्तंभन करे ।। अग्नि धारणा त्रिकोण फा अक्षर पद्मराग अभाश इंद्रगूप तालुका मध्य रुद्रनिवास तेज करे ।।



ब्रह्मांड स्थान.

तेज वर्ण सोमनाथ देवता आदिशक्ति नारद ऋषि आदि कला रकार मात्रा हरण गर्भ शरीर अजपाजाप अधोमुखगति वायु धारणा. भैरव मघजा अक्षर षट्कोन मेघ वर्ण ईश्वर निवास खेचरी मुद्रा धारण करी सिद्धि पावे ॥ आकाश धारणा ब्रह्मरंध्र अकार विष्णु निवास हा अक्षर परम मुक्तिदाता ॥ धारणाके नाम ॥ वहतनी पृथ्वी ॥ दाउन्नी जल ॥ दहनी आग्न ॥ शोषिणी वायु ॥ भ्रामणी आकाश ॥
१ २ ३ ४ ५

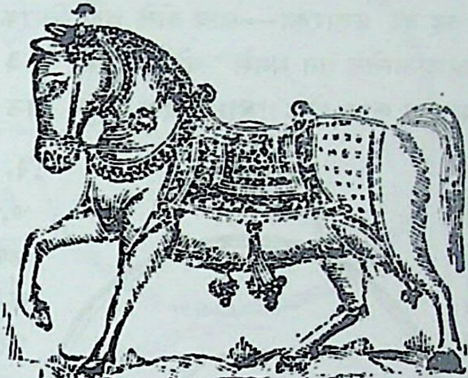


तालुस्थान सहस्रदल कमल नानावर्ण सद्गुरु देवता कलातीत प्रकार मात्रा माय। शरीर यथार्थ वेदनिरामय अभिमान अजपाजप १०० ॥ ध्यानवर्णन ॥ पदरक्षा कुंभकमें मंत्र जपे अक्षरका ध्यान करे ॥ १ ॥ पिंडरक्षाषट्चक्रका और सद्गुरुका ध्यान करे ॥ २ ॥ रूपरक्षा त्रिकुटीमध्यमें सूक्ष्मलिंगका ध्यान करे, पहले दपिज्योति, पीछे दीपमालिका उसके पीछे नक्षत्र मालिका, उसके उपरांत बिजलीका प्रकाश, अंतमें अनंतकोटि चंद्र सूर्यका प्रकाश देखै. दशो दिशा झलामल ज्योत प्रकट हो जाती है ॥ ३ ॥ रूपा ति शून्य ध्यान रूप रेख नहीं, नीचेकी गति ग जानेकी आपीआप कुछ द्वैत नहीं ॥ ४ ॥ समाधिलक्षण—शीत १, उष्ण २, वर्षा ३, क्षुधा ४, मूर्छा ५, भ्रम ६, आलस ७, जाग्रत ८, स्वप्न ९, सुषुप्ति १०, कुछ रहे नहीं जैसे नमक,

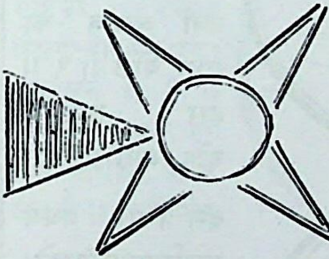
दूध पानीमें मिल जाता है, उसी प्रमाण भिन्नभाव रहे नहीं. हर्ष शोक दुःख सुख मान अपमान ज्ञान अज्ञान जाति कुल वर्ण आश्रम जीव ब्रह्मका भेद जाता रहे अखंड अद्वैत एक हो जाता है.

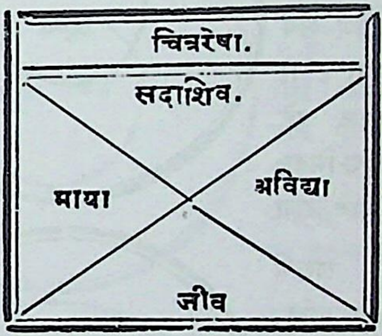
सत्रहवीं कला
घोडा.

भवरगुंजन १ शंखधुन २ मृदंग ३ ताल ४
घटा ५ मुरली ६ भेर ७ दुंदुभी ८
सिंधुगर्जे ९ घुंघरूं १०

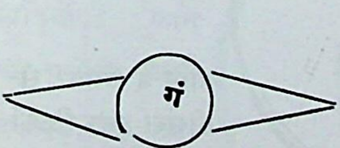


त्रिकुटीस्थान.

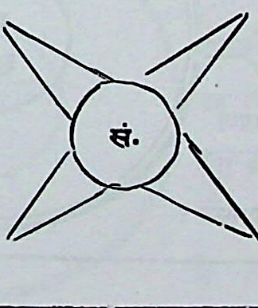




गोल्लाट



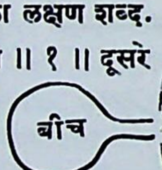
श्रीहाट



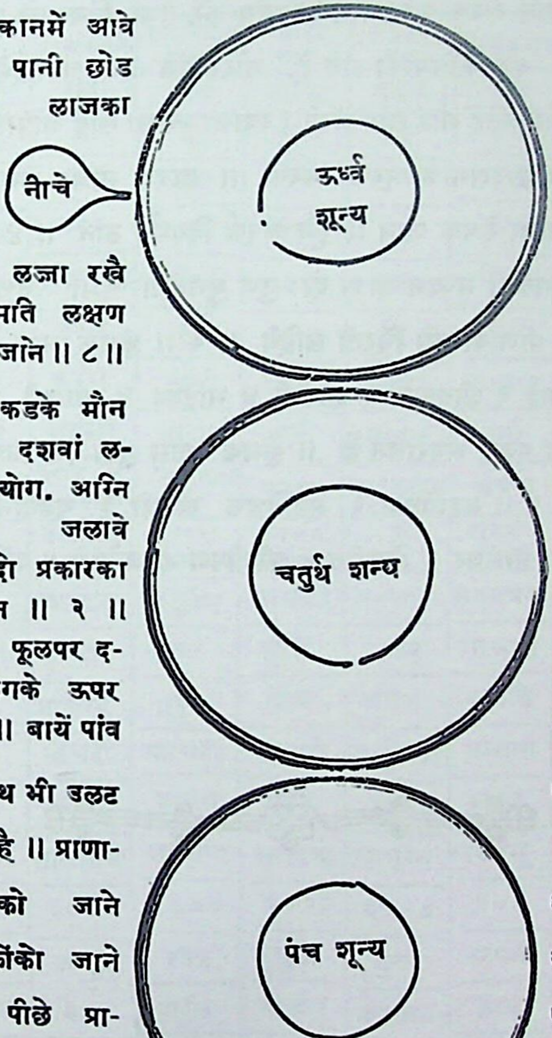
॥ यम दश प्रकार ॥ १ ॥ नियम दश प्रकार ॥ २ ॥ आसन दो प्रकार ॥ ३ ॥ व्रत प्रत्याहार ॥४॥ प्राणायाम ॥५॥ धारणा ॥६॥ ध्यान ॥७॥ समाधि ॥८॥ यमके लक्षण दस हैं । प्रथम अहिंसा मन वचन कर्मसे किसीको दुःख न करे ॥ १॥ दूसरा लक्षण सत्य वह दो प्रकारका—सत्य बोले ब्रह्म निराकारको सत्य जाने ॥ २ ॥ तीसरा लक्षण अस्तेय तन मनसे चोरी न करे ॥ ३ ॥ चौथा लक्षण ब्रह्मचर्य. आठ प्रकारका काम रोके ॥४॥ पांचवां मैथुन आठ प्रकारका-स्मरण १, श्रवण २, दृष्टि ३, भाषण ४, प्रेम ५, स्पर्श ६, हास ७, रति ८ को त्याग करे ॥ ५ ॥ छठवां लक्षण क्षमाको दुखकी मार गारी कटुक वचन सहे ॥६॥ सातवां धृति का लक्षण कालसे न डरे सदा काल धैर्य राखे ॥७॥ आठवां दयाका लक्षण- सब जीवोंको अपने समान जाने ॥ ८ ॥ नवां आर्जव का लक्षण-कोमल रहे मधुर बोले ॥ ९ ॥ दसवां लक्षण-मिताहार सात्विक अन्न शुद्ध पावे, राग दोष त्यागे ॥१०॥

नियमका लक्षण दस प्रकार. प्रथम तपका लक्षण शब्द. स्पर्शरूपरसगंधको त्यागे ॥ १ ॥ दूसरे संतोष का लक्षण जो प्रारब्धप्रमाण प्राप्ति है उसपर संतोष रखै ॥ २ ॥ तीसरा आसक्तिकों लक्षण वेदगुरुशास्त्र बचनको माने॥३॥





चौथा दानका लक्षण दोप्रकारका—अन्न वस्त्र जलसे पोषण करे ॥ १ ॥ ज्ञान उपदेश करे ॥ २ ॥ ४ ॥ पांचवां लक्षण पूजा सालो प्रकारसे पूजन करे प्रीति निष्काम रहे ॥ ५ ॥ छठवां लक्षण श्रवणका-जो शब्द



अपने कानमें आवे उसको सुने हंसके प्रमाण पानी छोड कर दूध पीवे ॥६॥ सातवां लाजका लक्षण-गुरु संत घटकी लज्जा रखै ॥ ७ ॥ आठवां दृढ मति लक्षण मान अपमान को समान जाने ॥ ८ ॥ नवां लक्षण जापका पवन पकडके मौन हो करके जप करे ॥ ९ ॥ दशवां लक्षण होमका ब्रह्म अग्नि योग. अग्नि को प्रकट करके मोहको जलावे ॥ १० ॥ आसन लक्षण-दो प्रकारका सिद्धा आसन ॥ १॥ पद्मासन ॥ २ ॥ बायें पांवकी ऐंडी गुदाके फूलपर दबावे और दहना पांव लिंगके ऊपर दबावे यह सिद्धासन है ॥ बायें पांव पर दहना पांव रखे और हाथ भी उलट करके रखे यह पद्मासन है ॥ प्राणायामलक्षण—तीनों नाडियोंको जाने दश वायुओंको जाने षट् चक्रोंको जाने यह विस्तार सम्पूर्ण देखनेके पीछे प्राणायाम करे । इडा नाडी वामसे पूरक करे, श्वासको रोकै उसको कुंभक कहते हैं पिंगला नाडी

दाक्षणसे रेचक करे, बीजमंत्र संयुक्त षोडश पूरक करे, चौसठ कुंभक करे, द्वात्रिंशत रेचक करे, पीछे विपर्यय करे तथा पिंगलासे पूरक करे, इडासे रेचक करे, यह ऋषियोंका मत है. गोरखमत छः चोपाईमें ऐसा है सोहं सोहं सोहं हंसो।।सोहं सोहं सोहं अंसो १ स्वासा स्वासा सोहं जापं।।सोहं सोहं आपै आपं ।। २ ।। द्वादशमात्रा पूरक भरना ।। द्वादश मात्रा कुंभक करना ।। ३ ।। द्वादश मात्रा रेचक जानं ।। पूर्ण अपूर्ण विपर्यय ठानं ।। ४ ।। अधम मात्रा द्वादश जुगतं ।। मध्यम मात्रा दो गुण युगतं ।। ५ ।। उत्तम मात्रा त्रिगुण कहिये ।। प्राणायामसो विरती लहिये ।। ६ ।। कुंभक आठ प्रकारका सूरजभेदन १ उजाई २ शीतकार ३ शीतली ४ भद्रिका ५ भ्रामरी ६ मूर्छा ७ केवल ८ यह आठ पवन अवरोधन हैं ।। कुंभक नाम मुद्रा दस प्रकारकी है शून्य महामुद्रा ।। १ ।। महावेधक २ महावेधक खेचरी ३ वड्यानवेदक ४ मूलवेदक ५ बन्ध जालंधर ६ विपरीत ७ ऋीणीपण ८ जनोली ९ शक्ति १० ।।

यंत्र षट्चक्र योग समाधि

नं०	नाम	आधारचक्र	स्वाधिष्ठान चक्र	मनीपुर चक्र	अनुहात चक्र	विशुद्धचक्र	अग्निचक्र
१	स्थान	गुदा	लिंग	नाभि	हृदय	कंठ	नेत्र
२	प्रमाणदल कमल	४	६	१०	१२	१६	२
३	वर्ण	पीत	रक्त	नील	कृष्ण	श्वेत	श्याम
४	देवता	गणेश	ब्रह्मा	विष्णु	रुद्र	जीव	परमहंस
५	शक्ति	सुद्धिबुद्धि	सावित्री	कमला	उमा	विद्या	इडा पिंगला सुषुम्ना
६	ऋषि	ईश्वर	सूर्य	पवन	इंद्र	अग्नि	हंस
७	कला	कुरंभ	उरमे	जोती	घुमरा	ज्वाला	सतरावें
८	मात्रा	आकार	हरिष	दीर्घ	पुलना	अर्ध	अनुराच
९	शरीर	विराट् था अस्थूल	लिंग तथा सूक्ष्म	कारन	महाकारन	कवल	ज्ञान
१०	वाक्य	वैखरीजिह्वामें	मध्यमा कंठमें	पश्यात हृदयमें	परा नाभीमें	परमपरा लिंगमें	अनुराच
११	वेद	ऋग्वेद	यजुर्वेद	सामवेद	अर्थवणवेद	सूक्ष्मवेद	आकाश वाणी
१२	तत्वधारणा	पृथ्वी	जल	अग्नि	वायु	आकाश	शून्य
१३	लिंग	आचार्य	गुरु	शिव	जंगम	ज्योति	सिद्ध
१४	मुद्रा	खेचरी	चाचरी	भोचरी	अगोचरी	उन्मनी	श्यामभवी
१५	पवन	अपान	समान	प्राण	उदान	व्यान	मन
१६	मुक्ति	सालोक्य	सामीप्य	सारूप्य	सायुज्य	स्वयंभू	निर्गुण
१७	जाप	६०००	६०००	६०००	६०००	१००	२०००
१८	अवस्था	जागृत	स्वप्न	सुषुप्ति	तुर्या	उन्मनी	उत्पत्तिस्थिति प्रलय
१९	अभिमान	विश्व	शरीर	राजस	आत्मा	ज्ञान	नीर अभिमान
२०	आनंद	विश्वानंद	योगानंद	अद्वैतानंद	परमानंद	ब्रह्मानंद	नित्यानंद
२१	आसन	पद्मासन	सिद्ध आसन	वज्रासन	कुर्मासन	धनुष आसन	सिंहासन

यंत्र षट्चक्र अक्षरनामगुणसहित. पृष्ठ १२६

आधारचक्र गुदामें. १

अक्षर	नाम	गुण
वं १	सहजानद	रुहावा
शं २	परमानंद	अरुहा
षं ३	वीरानंद	हांक
सं ४	जोगानंद	पित्तां

स्वाधिष्ठानचक्र लिंगमें. २

अक्षर	नाम	गुण
बं १	उगती	प्राणशाक्ति
भं २	बारणी	कीर्ती
मं ३	संराहणी	गमंति
यं ४	रोहणी	कुबुद्धि
रं ५	अमृर्ती	अविश्वासी
लं ६	परमूर्ती	मुछर्ती

माणिपूरचक्र नाभिमें. ३

अक्षर	नाम	गुण
डं १	सर्वांगी	तृषा
ढं २	शोषणी	इच्छा
णं ३	जया	लज्जा
तं ४	भद्रा	पवन
थं ५	शांति	आशा
दं ६	कृपया	अनादि
ध ७	तोखनी	काष्ठा
नं ८	रुचना	ग्रहणी
पं ९	द्रईशीऋषी	विपदा
फ १०	दक्षिणा	निद्रा

अनाहतचक्र हृदयमें. ४

अक्षर	नाम	गुण
कं १	संमार	०
खं २	रतिप्रिया	०
गं ३	विषया	०
घं ४	पदमनी	०
ङं ५	प्रमाता	०
चं ६	सुभानु	०
छं ७	सुराहणी	०
जं ८	सुरेशी	०
झ ९	गिरोकी	०
ञं १०	सारांगिणी	०
टं ११	सर्वरेखा	०
ठं १२	तारा	०

विशुद्धिचक्र कंठमें. ५

अक्षर	नाम	गुण
अ १	भद्रता	०
आ २	प्राणधारी	०
इ ३	घातिनी	०
ई ४	संकटारी	०
उ ५	लोथा	०
ऊ ६	ब्रह्माणी	०
ऋ ७	भागी	०
ॠ ८	निसंगी	०
ऌ ९	मुदसा	०
ॡ १०	उन्मनी	०
ए ११	निमर्ता	०
ऐ १२	नमरूरंता	०
ओ १३	भानुमती	०
औ १४	परभा	०
अं १५	निरसंका	०
अः १६	वासनी	०

अग्निचक्र नेत्रमें.

अक्षर	नाम
क्षं १	किरनी १ द्रालना२दहनी३ दीपनी४ जोतनी ५ तेजनी ६ हृदयतेजनी ७ शशिप्रभा ८ सोसनी ९ तापनी १० लोहकी ११ दाहकी १२
हं २	चंद्रकला १६

पूर्वनी भद्रा २अह्लादि३सुनेखी ४कमोदिनी ५ अमुदनी ६ मोहनी ७कृतदनी८चिदा ९कामनी १० लक्ष्मी ११ व्यापिनी १२ पद्मा १३ मतनी १४ वकाशी १५ उदाकी १६

यंत्रमुद्रा.

नम्बर	नाम	खेचरी	भोचरी	चाचरी	अगोचरी	उन्मनी
१	मुकाम	जिह्वा	नाक	आँख	कान	काम
२	स्वाद	षड्रस	गंध	रूप	पाद	इंद्रिय
३	चाल	मीन	भ्रमर	वेग	मृग	गज
४	मुक्ति	सालोक	सामीप	सारूप	सायुज	स्वयंभू
५	शून्य	ऊर्ध्व	मध्य	अधो	च्चुथा	निरालंब
६	गुण	रजोगुण	सत्त्वगुण	तमोगुण	शुद्ध सत्त्वगुण	परब्रह्म गुण
७	कला	८	२	१२	१४	१६
८	वायु	अपान	समान	प्राण	उदान	व्यान
९	संयुक्त	बुध	मन	चित्त	नाद	अनहद

शांति ब्रह्म है

श्रीसत्यनारायणाय नमः ॥ मैं दूसरे महात्माके पास गया और सब हाल अपना कहा । तब महात्मा गुरु बोले कि, शांतिपद ब्रह्मपद एक हैं, सर्व व्यवहार सुखके कारण हैं, वह सुख शांतिमें है. शांति प्राप्तिमें है, प्रीति प्रीतिमें है, प्रीति निश्चयमें निश्चय ज्ञान है, ज्ञान सत्संगमें है, सत्संग संयोगाधीन है, संयोग प्रारब्धाधीन है, जिसके पास शांति नहीं है उसको करोडों ब्रह्मके मिलनेमें सुख नहीं हो सकता । जैसे—आंखवाला पुरुष सूर्यका प्रकाश सर्व पदार्थमें देखता है उसी प्रमाण शांति प्राप्त होनेसे सर्व पदार्थमें सुखरूपी ब्रह्मदर्शाता है; किसीके दर्शनकी तथा भजन कीर्तनकी चाहना नहीं रहती, दुःख चिंता कोई प्रकारका नहीं रहता, यह शरीर और जीव मरने उपरांत पंचतत्त्वमें मिल जाता है, गुप्त प्रगट होना वायुका कारण है, मरनेके पीछे सिवाय नेकनामी और बदनामीके कुछ नहीं रह जाता, परमात्मा घट घट व्यापक है, घट पंचतत्त्वका है, पंचत्त्व अनादि हैं । जैहे—किसी वनमें एक नदी रही उसमें एक नाव पडी थी उनका स्वभाव इधर आना उधर जाना। उसपर मुसाफिर बटोही उतर जाते थे । एक दिन कोई राहगीर उस नावपर सबके साथ सवार था । सबने विचार किया कि यह वन किसका है, नदी कहांसे आई, नाव किसने बनवाई, उसका उत्तर कौन देवे ! सब बटोही दो घडीके आये हुए थे,

इस प्रमाण ब्रह्म, ब्रह्मांडको वन पंचतत्त्वकी नदी, शरीरको नाव जीवको बटोही सिद्ध करो और इस दृष्टांतको अच्छी तरह जब गुरुमुखसे सुनोगे तब भेद प्रकट होगा, मेरे ज्ञानमें जो शांति है वह ब्रह्म है, जो भ्रममें है वह नरकमें है; शान्तवाणी देखो—

शान्तवाणी-चौपाई

गुरु नानकको टेकूं माथ। श्रीचंदेको जोडूं हाथ ॥
सतगुरुको अभिलाख प्यारा। सत्यनामको भेष हमारा॥१॥
कर्ता पुरुष सत्य है नाम। निर्भय निर्विकार निष्काम ॥
सूरत सत्य काल नहीं व्यापे। जो न भंग गुरुमुखको जापे२॥
आदि अनादि सत्य सब सत्य। है युगादि होगा भी सत्य ॥
सत्य सत्य सब खेल बनाया। रात दिवस सबको दर्शाया३॥
वेद पुराण शास्तर कथा। इनमें खोज रहे सब यथा ॥
चार वर्ण षटदर्शन देखे। चार आश्रम वन वन पेखे४॥
अगम निगम भेद नहिं पाया। ब्रह्मा विष्णु महेश बनाया ॥
पंडित ज्ञानी साधक संत। सोचे सोचे न पावे अंत॥५॥
निर्गुण सगुण ब्रह्म विचार। त्रयगुणमें भूला संसार ॥
जनमे मरे रहे कुछ काल। मिथ्या बीते तीनों काल॥६॥
पूजा पाठ कीर्तन भजन। तीरथ व्रत दास स्मरण ॥
माता पिता मरे सब जाने। अपनी मौत हृदय नहिं आने७॥
भाई बहिन पुत्र सब मरे। अपनी मौत याद नहिं करे ॥

बालक तरुण वृद्ध हो गये । मिथ्या तीनों वृथा गये ॥८॥
रूप शृंगार शक्ति सब गई । मोह रूप तृष्णा नहिं गई ॥
पाके केश नेत्र नहिं सूझे । दांत गिरे तबहूं नहिं बूझे॥९॥
तोर मोरमें जनम ग़माया । तोर मोरका भेद न पाया ॥
मैं मैं करत अर्थ नहिं जानत।अजयाशब्दलाजनहिं मानत१०॥
हं कोहं सोहं नहिं जाने । आतम ब्रह्म नहीं पहिचाने ॥
हं कोहं सोहं जो जानो।अहंकारकी गति पहिचानो११॥
शब्द स्पर्श रूप रस गंध । ऐसे पंच विषय मत मंद ॥
तीन स्वभाव शब्दमें जानो ।भय रोचक विश्वास बखानो१२॥
कोई गूंगा मैं मैं करै । कोई बहिरा श्रवण न करै ॥
जो अपने मन मैं मैं कहे । गूंगा बहिरा जैसी रहे ॥१३॥
बालक बोली मैं नहिं कहे । परमहंस ऐसी गति रहे ॥
पढत कवित्त विवेक न जाने। सर्वरूपको एकी माने ॥१४॥
यह विवेक ज्ञान जब आवे । सत्संगतमें कोई पावे ॥
राम वसिष्ठ ज्ञानसे लीजे । पुरुषारथपर निश्चय कीजे१५॥
अष्टावक्र एक सब जाने । दुःख सुखमें भेद न जाने ॥
जैमिनिऋषीको कर्म प्रधान। गौतमकाल घडीको ज्ञान १६॥
ऐसे बहुत ऋषी कह गये । नाम प्रकाश जगत् कर गये ॥
वर्तमानमें लाखों गावे । भेद नहीं कुछ उसका पावे१७॥
कोई कहे समूंदर वासी । कोई गावे रमा निवासी ॥
कोई पुर वैकुंठ बतावे । कोई शेष नागपर गावे ॥१८॥
कोई पीपल पात लखावे । हिरण गर्भ ताको दिखलावे ॥

कोई ब्रह्म उत्पन्न करता । कोई विष्णू पालन करता १९॥
कोई शंकरको बतलावे । कोई आदि गणेश बतावे ॥
कोई कहै भवानी माता । कोई पंचतत्त्वका ज्ञाता ॥२०॥
कोई दश अवतार बनावे । चौबिस रूप निरंतर गावे ॥
कोई कहे झूठ सब जानो ।जगतयुगादिअनादि बखानो २१॥
पंच तत्त्वका गुण दरशावे । उपजे विनशे आवे जावे ॥
कोई कहे स्वप्न सब जानो । निद्रारूप देह अनुमानो॥२२॥
ऐसी कोटी रूपको धावे । एकरूप विन मुक्त न पावे ॥
एक रूपको खोजो कहां । वेद पुराण शास्तर जहां॥२३॥
रूप न रंग न रेख बखाने । निराकार निर्गुण करजाने ॥
कोई खुदा महंमद जाने । कोई ईशाको पहिचाने॥२४॥
ऐसे भरम बहुत जगमाहीं । अंत समय सबके कुछ नाहीं॥
कोई कहे ब्रह्म सब करे । कोई कहे भलाई करे ॥२५॥
कोई कहे नहीं कुछ करे । कर्म प्रधान जगतमें रहे ॥
कोई व्रत करे फलाहार । कोइ मदिरा मांस अहार २६॥
कोई हिंसा नरक पग धारे । बलिदेव वैकुंठ सिधारे ॥
मलमूत्र कोई नहिं खावे । पंचगव्यसे पातक जावे॥२७॥
रोम चरमसे करे विचार । कंबल बाघांबर आधार ॥
मारे गौ नाश हो जायी ।दिन दिन दूना होय कसाई २८॥
जेते दुःख शास्तरमें गावे । चारों युगमें शूद्र बसावे ॥
ब्रह्मदेव मानुष सब हने । ताको दुःख नहीं कोउ गिने २९॥

समरथको नहिं दोष गुसाईं । रवि सुरसरिपावककी नाईं ॥
गुण अवगुणको भेद न जाने।कुलकी रीति जगत पहिचाने ३० ॥
सत्यनामको सच्चा जाने । तीन लोक उसको पहिचाने॥
रहे उदास नामको जाने । मोहरूप मिथ्या करिमाने ३१ ॥
कर्म गुमान करे जो कोई । सपन्यो अर्थ लाभ नहिं होई॥
कर्म करे मिथ्या करि जाने ।शुभ अशुभ झूट सब जाने ३२॥
सत्य नाम राखे आधार । देह कर्मका कुछ नहिं सार ॥
देह कर्म पावे जब देह । विना देह पावे नहिं देह ३३॥
जीव कर्म सब जीको होई । शांत रूप पावे फल सोई ॥
ऐसी रीति रहे सुख पावे । विन संतोष काम नशावे ३४॥
हम मिथ्या निश्चय करि जानो। देह नहीं अपनी कर मानो ॥
बालक तरुण वृद्ध हो जावे।हम मिथ्या कुछ खबर न पावे ३५॥
नींद क्षुधा मैथुन सब आवे । हम मिथ्या कुछ पता न पावे॥
हर्ष शोक बीमारी आवे ।हम मिथ्या कुछ जाने न पावे ३६॥
ऐसी वस्तु विगानी होवे । उसको कैसी अपनी करावे ॥
मरे जिये कुछ काबू नाहीं ।ताको मूरख कोई लिपटाहीं ३७॥
श्वास आवे जावे तनमें । बंद होय जब उसके मनमें ॥
अपने किये नहीं कुछ होवे ।कर्ता करे सो अनुभव होवे ३८॥
शांतरूप वैराग्य बढावे । त्याग विना निष्काम न पावे ॥
जगत पदारथ मिथ्या जाने। अपनो देहअनित्यहि माने ३९॥
सत्य नामसे ध्यान लगावे । सत्य रूप सच्चा हो जावे ॥

जीवन्मुक्त उसीको कहिये । कर्म करे फिर न्यारा रहिये४०
कर्ता धर्ता आप न माने । आपन रूप साक्षी जाने ॥
देह कर्म सब देखा करे । अपने मनमें आनन्द करे ४१॥
अंतःकरण शुद्ध जब होवे । आतम अनुभव सच्चा होवे ॥
आत्मज्ञान प्राप्ति होवे । जरा मरणसे छूटे सोवे ॥४२॥
नाम अधारी जीवे लाख । जीवन्मुक्त होवे अभिलाख ॥
संवत उन्नीससे चवालिस ।फालगुन शुदीमिती अग्यारस४३॥
बुधवार मास फरवरी । सन् सत्याशी है शरवरी ॥
मुल्क बराड हैदराबादी । खांमगांव ओछी आबादी॥४४॥

मैंने हाथ जोडकर कहा कि, जड सृष्टिको भ्रमना नहीं दर्शाते, सर्व प्रकारसे शांत दर्शाते हैं और जिस मनोरथकी सिद्धि नहीं प्राप्त होती उसकी अंतमें शांति हो जाती है। शांति और श्रम सब जीवोंको है, जिसको ज्ञान है उसकी यह वृत्ति बदल भी जाती है, जैसे-शांतिमें श्रम उत्पन्न हो जाता है, जो अशक्त हो जाता वह शांत होता है शांतिमें एक शब्द है, जिसमें पांच अक्षर हैं, निद्रा मैथुन आहारकी शांति जीव मात्रको नहीं है, चौरासी लाख सृष्टि अनंतप्रकारकी रचना शांतिसे नहीं होती, शांतिसरूपको है, जैसे कोई कहता है कि, मेरेको शांति हुई उसको ब्रह्म कहना आपका काम, यह ज्ञान चौदह भुवनके प्रतिकूल होगा, हजारों भक्त निष्कपट और प्रेमीको वर्तमानमें दर्शन होता है, अठारह पुराणमें भगवान्‌की लीला ऐसी अद्भुत अपार व्यासजीने

गायी है जो सुनकर भी प्राप्त होता, वसिष्ठजीने रामचंद्रको उपदेश दिया है कि, पुरुषार्थ करो। शांतिसे अथवा देवके भरोसेपर कुछ भला नहीं होगा, कर्म प्रधान है, यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे ॥

इति अभिलाखसागर गुरु शिष्य संवाद सातवें
तरंगमें सातवीं लहरी

निष्काम पद ब्रह्म है

श्रीनरसिंहाय नमः ॥ मैं दूसरे महात्माके पास गया और सब हाल अपना कहा। तब महात्मा गुरु बोले कि, निष्काम पद ब्रह्म है, शांतिपद निराश होने पर भी प्राप्त हो सकता है, जिसको काम है, उसको जन्म मरण है, सर्वसृष्टि कामनासे है, वह माया है, ब्रह्मको जब मायारूपी कामना होती है तो जगत् उत्पन्न होता है। तीस नाम ब्रह्मके 'अ' अक्षरपर श्रवण करने योग्य हैं-अनाम १, अरूप २, अकाम३, अकर्ता ४, अजन्मा ५, अगम ६, अभोग ७, अशोग ८, अरोग ९, अशोक १०, अवर्ण ११, अलेख १२, अलख१३, अभेष१४, अयोनि१५, अजाति१६, अदेश१७, अनादि १८, अकाल १९, अकलंक २०, अकाश २१, अनाश २२, अकर्म २३, अमान २४, अशंक २५, असंग२६, अटल२७, अगाध२८, अलंघ्य२९, अनंत३०, हजारों ग्रंथका प्रमाण है कि, सृष्टि ब्रह्मकी कामना है। जब निष्काम होता है वह जगत् उसमें लय हो जाता है जो

जीव निष्काम होता है शरीर उसका पंचतत्त्वमें लय हो जाता है, जीव अकाम अरूप हो जाता है, निष्कामका रूप निर्गुण है, निरंजन है, निरामय है, निराकार, है, निर्भय है, निर्वैर है इस कारण उसका वर्णन नहीं हो सकता । जो स्वतः सामर्थ्यवान् होगा वह निष्काम, शांतिपद लाचारीपद है, निष्कामपद श्रीमंतपद है, जो किसीके आश्रित न हो स्वतःस्वतंत्र सब काम उसका चल जावे वह ब्रह्म समान है; निष्कामपदार्थ किसोके आश्रित नहीं, सर्व उपमा ब्रह्मकी निष्कामको शोभा देती है तोन अष्टपदी देखने योग्य हैं-

पहिली अटपदी-ब्रह्म निराकार

कवित्त-शंकरको पूजें और शक्तिको ध्यान धरें, देवीको सेवें और गणेशको मनावत हैं। ईश्वर नाराय ण परमेश्वर भगवान राम, कृष्णकी कहानी सब घर घरमें गावत हैं ॥ सूरज औ चन्द्र बुध मंगल गुरु शुक्र शनि, राहु और केतु ग्रह घर घर पुजवावत हैं । ऐसे नहिं पाये पार बैठे सब हार हार, मूर्ख अभिलाख ताहि ढूँढे कब पावत हैं ॥ १ ॥ वाल्मीकि भारद्वाज गौतम वसिष्ठ ऋषि, अंगिरा व्यास पुलह भेद नहीं पावत हैं। विश्वामित्र च्यवन ऋषि अष्टावक्र शुकाचार्य, उद्दालक मुनि वासुदेव अष्टकाल ध्यावत हैं ॥ लोमश दुर्वासा ऋषि दत्त जडभरत ऋषि; कर्दम रोहिण्यऋषि निशिदिन गुण गावत हैं। ऐसे नहिं

पावे पार बैठे हार हार, मूर्ख अभिलाख ताहि ढूंढे कब पावत है ॥ २ ॥ जोगी अरु जंगम संन्यासी वनवासी आदि, ब्रह्मचर्य बालचर्य निशिदिन गुण गावत हैं । वान प्रस्थ परमहंस सुथरा शरभंगी नाथ, भर्तरि अघोर सत नामी सब ध्यावत हैं ॥ कूका और अकाली निर्मल गुलाब पंथी, सेवडा अनुरागी वैरागी दुख पावत हैं । ऐसे नहिं पावे पार बैठे सब हार हार, मूर्ख अभिलाख ताहि ढूँढे कब पावत हैं ॥ ३ ॥ जमदगन पुलस्त्य ऋषि नाचिकेत शांडिल्य ऋषि, ऐसे सब और ऋषि मनमें गोहरावत हैं । कश्यप दाल्भ्य ऋषि श्रवण मारीच ऋषिभदेव वासुदेव अष्ट प्रहर ध्यावत हैं ॥ भृगुऋषि जनक ऋष गर्ग ऋषि पराशर ऋषि, भीषमपितामह ऋषि रणमें दुख पावत हैं । ऐसे नहिं पावे पार बैठे सब हार हार, मूर्ख अभिलाख ताहि ढूँढे कब पावत हैं ॥ ४ ॥ धना और नामदेव पीपा रोहिदास दास, सदना कसायी विदुर ढूँढे नाहिं पावत हैं नरसीजी शबरी गणिका करमा द्रौपदी, और तारा अहल्या सब ध्यावत हैं ॥ रामदास युगुलदास संतदास माधवदास, पलटुदास मोहदास नित्य ध्यान लावत हैं । ऐसे नहिं पावे पार बैठे सब हार हार, मूर्ख अभिलाख ताहि ढूँढे कब पावत हैं ॥ ५ ॥ शृंगी ऋषि भृंगी ऋषि याज्ञवल्कय रोमऋषि, धौम्य ऋषि विमलऋषि, निशि दिन गुण गावत हैं । पाक ऋषि कपिल ऋषि अत्रि ऋषि बादशाहन, ऋषभमुनि अगस्त्य-

मुनि अनंतर सब ध्यावत हैं ॥ शुकदेव नामदेव देवमुनि वसिष्ठमुनि, मित्री सज्जन शरभंग ध्यान लावत हैं । ऐसे नहिपावे पार बैठे सब हार हार, मूर्ख अभिलाख ताहि ढूंढे कब पावत हैं ॥ ६ ॥ शारद और नारदमुनि सूत सनकादिक, सब, इन्द्र और उपेन्द्र सब ध्यानको लगावत हैं । गंगा और यमुना त्रिवेणी सरस्वती, सरयू मंदाकिनी शोणभद्र धावत हैं ॥ जगन्नाथ बद्रीनाथ रामनाथ द्वारकानाथ, मथुरा उज्जैन अवध काशी सब जावत हैं । ऐसे नहिं पावे पार बैठे सब हारहार; मूर्ख अभिलाख ताहि ढूँढे कब पावत है॥७॥ दादू कबीर सूर तुलसी गुरु नानकशाह, स्वामी परिणामी नित्य नया मत चलावत हैं । गोरख मछिंदर जलंदर और गोपीचंद प्रेमनाथ नेमनाथ जैनमें कहावत हैं ॥ रामानन्द रामानुज बिंद्रावन रामसनेही, विठ्ठलजी तुकाराम दक्षिणमें पुजावत हैं । ऐसे नहिं पावें पार बैठे सब हार हार । मूर्ख अभिलाख ताहि ढूँढे कब पावत हैं ॥ ८ ॥

दूसरी–अष्टपदी

कवित्त–अनाय है अकाम है अकर्म है अधर्म है, अदख है अलख है अनादि है अपार है अरूप है अनूप है अभंग है असंग है, अछूत है अभूत है अकार है नकार है ॥ अरोग है अशोक है अभोग है अयोग है. अदेश है अभेद है वकार है मकार है । अनन्त है असंख्य है असीख है अभख है । अखाद है अजाद है असत्य है असार है ॥१॥ न नाम है

न काम है न कर्म है न धर्म है, न रेख है न देख न वार न पार है। न रूप है न रंग है न भूत न अंग है, न छूत है न संग है न मिष्ट है न खार है ॥ न रोग है न शोक है न भोग है न योग है, न रोग है न द्वेष है न कार है न बार है। न आदि है न अंत है न साधु है न संत है न जीवन है न जंतु है न सत्य है न सार है ॥२॥शून्य है अकाश है अखंड है प्रकाश है अभेद है अभाव है अनाश है विनाश है भूंख है प्यास है पचीस है पचास है, अदेश है अदास है अवास है सुवास है ॥ वर्त उपास है, वियोग है सपाश है नकाश है बकाश है उसांस है हवास है। भूत है पिशाच है हुलास है, विलास है सुदास है उदास है समास है, मसास है ॥ ३ ॥ न एक है न दोन है तीन है न पचास है, न वीस है न तीस है न पास है न चार है। न रक्त है न श्वेत है कृष्ण है न पीत है न श्याम है न नील है न रंग है, न सार है ॥ न है न मंत्र यंत्र हैं सुक्ख है न दुक्ख है, न रात है न दिवस है न लग्न है न वार है। न देव है न दैत है न भूत है न प्रेत है, न लेत है न देत है न जीत है न हार है ॥४॥ हमेश है गणेश है महेश है मुनेश है सुरेश है विशेष है अदेश है अमान है। सुदेश है विदेश है दुरेश है अक्लेश है सुभेष है कुभेष है सुनाम है कुनाम है॥ लाल है गुलाल है जमाल है विशाल है कठोर है कराल है सरूप है सुनाम है। काम है अकाम है कयाम है मुकाम है, कलाम है सलाम है हलाल है हराम है ॥५॥ न मच्छ है

न कच्छ है न वाम है न दक्ष है, न सूर है न प्रत्थ है न बुद्ध है न व्यास है। न कृष्ण है न पृश्नि है न वैद्य है न धन्वंतर है, न व्याल है न बाल है न दत्त है न दास है। न नरहरी न बद्री न शिवुमुनि न, हंस है न बाल ऋषि न अश्व है न आस है। न यज्ञऋषभ न धर्म है न मोहिनी न बाउली, न परशुराम राम है कलंक सर्व नाश है ॥ ६ ॥ ज्ञान है विचार है अजान है अचार है, अरूप है अनूप है अगूप है स्वभाव है। शब्द है स्पर्श है सुगंध सरूप है, स्वास है अलक्ष है आनंद है चुवाव है ॥ हान है गिलान है प्राण है अपान है समान है वयान है उदान है उदाव है। लोक है सलोक है सरूप सायुज्य है समीप है स्वयंभु है अहं है अभाव है ॥ ७ ॥ न जीव है न जगत है न देव है न शक्त है न श्वेत है न रक्त है न कारो है न लाल है। न ज्ञान है न भक्त है न योग है न युक्त है न बंध है न मुक्त है न कर्म है न काल है न ब्रह्म है न ईश है न भाल है न केशव है, न पाँव है न शीश है रोम है न बाल है। न हांमें है न हीमें है कहामें है कहीमें है, वहांमें है वहीमें है जहांमें है जमालमें है ॥ ८ ॥

तीसरी अष्टपदी–सवैया

रूप न रंग न रेख न भेख न नाम न गांव न जात न धर्मा।
बाप ऊ पूत न बंधू न मित्र न शत्रु न काल न कर्म्मा ॥
एक न दोय न बास न बोय मिष्ट न खार शीत न गर्मा।

ब्रह्म न क्षत्रिन वैश्य न शूद्र न ज्ञान ध्यान न शांत न भर्मा ॥
ब्रह्म न रुद्र न शक्र न विष्णु न शेष गणेश न राम रहीमा ।
कृष्ण न नंद न काव्य न छंद न देव न दैत्य न काल करीमा ॥
आदि न अंत न साधु न संत न जीव न जंतु न अर्जुन भीमा ॥
रक्त न पीत न हर्ष न भीत न हार न जीत न वाद न बीमा २॥
अंड न पिंड न थावर जंगम कीट पतंग न योनि न बरणा ।
शून्यअकाश न अंधप्रकाश न देह न स्वास शीश न चरणा ।
भूत न प्रेत न वैर नप्रीति न कृष्ण न स्वेत न शिष्य न शरणा ।
साहु न चोर न सर्प न मोर न सांझ न भोर न जन्म न मरणा ॥
योग न भोग न रोग न शोक न सत्य असत्य न प्रीति न प्रेमा ।
राग न रंग न त्याग न संग न कूप न गंग न लोह न हेमा ॥
दर्व न सर्व न अर्व न खर्व न संयम नेम न आसन नेमा ।
मुक्त न भक्त न ज्ञान न जक्त न बुद्ध न उक्त न धीरज क्षेमा ॥
तेज कहे तो सुमेर नहीं अरु आप कहै तो न आपहै कर्ता ।
:ब्द कहे तो स्पर्श नहीं रस रूप कहे तो न गंध है कर्ता ॥
सूक्ष्म स्थूलका मूल नहीं अरु कारण कर्म न धर्म है कर्ता ।
ईश न जीव न देह न गेह न नेह न मेह न खेद है कर्ता ५॥
कोई कहे वे शेष विराजे कोई कहे वो सागरवासी ।
कोई कहे वो घट २ व्यापक कोई कहे सुरलोक निवासी ॥
कोई कहे वो घटमें राजे कोई कहे कि रहे अविनाशी ।
कोई कहे वो शून्यमें व्यापक कोई कहे वो मिलो चौराशी ६॥
कोई कहे शिव श्रेष्ठ उपावे कोई कहे कि गणेश है कर्ता ।
कोई कहे रवि चंद्र हैं मालिक कोई कहे चतुरानन कर्ता ॥

कोई कहे सब शक्तका खेल है कोई कहे कि अनाम है कर्ता
कोई कहे जग अगादि युगादि है कोई कहै सत नामहै कर्ता ७॥
बीजसे झाडके झाडसे बीजके पूतसे बापके बापसे पूता ।
दिवससे रातके रातसे दिवसके सूत कपास कपासके सूता ॥
कर्मसे जीवके जीवसे कर्मके भूतसे भर्मसे भर्मसे भूता ।
ज्ञानसे भक्तके भक्तसे ज्ञानके भूतसे देहके देहसे भूता ॥८॥

मैंने हाथ जोडकर कहा कि· जो पुरुष निष्काम, निष्क्रोध, निर्लोभ निर्मोह निर्मद हो गया वह कौन है ? शरीरमें पांच विकार होते हैं—काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, कदाचित् काम जाता रहा तो चार विकार शरीरमें रहेंगे, जडसृष्टिमें कामना नहीं है, कामना निष्काम बृत्तिको कहते हैं, जब ब्रह्मका ज्ञान होगा तब निष्काम होगा; ब्रह्मके चौबीस अवतार होते हैं, और भक्तोंको दर्शन देता है, दिन रात कहता है, चौरासी लाख योनि उसका भजन करते हैं, जिसको ब्रह्म प्राप्ति होगी, उसको शांति और निष्काम पद प्राप्त होगा, दूसरे को नहीं होगा, यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे ॥

इति अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद सातवें तरंगमें आठवीं लहरी

बड़ाई ब्रह्म है

श्रीपरशुरामाय नमः ॥ मैं दूसरे महात्माके पास गया और सब हाल अपना कहा, तब महात्मा, गुरु बोले कि; ब्रह्म निराकार है, संसारमें जिसको बडाई प्राप्त हुई

उसको ब्रह्मपदवी प्राप्त होती है और चारों वर्ण चारों आश्रम बडाईको चाहते हैं, व्यास वाल्मीकि आदिक ऋषि और सब ऋषि मुनि बडाईसे पूजे जाते हैं और उनके ग्रन्थ पूजनीय हुए और जिस कविने उलटे सीधे हो चार पद बनाये अमर हो गया, बडाई वैकुंठ है, बडाई मुक्ति है, बडाई ब्रह्म है, जो कुछ कहो वह बडाई है. कलियुग वर्तमानमें तुलसीदास, सूरदास, कबीरदास, रामदास, तुकाराम, पलटुदास, जग जीवनदास ऐसे हजारों साधु महात्मा गुरु ग्रंथकी बडाईसे अमरपदवीको प्राप्त हो गये और जबतक वह ग्रंथ जगत्में रहेगा तबतक अमर रहेंगे, जैसे-ग्रंथ मंगलभवनके बनानेसे तू अमर रहेगा, या देवतासमान जन्म पावेगा,जैसे वाल्मीकि ऋषि तुलसीदास गुसांई हुए, जिसकी कीर्ति जगत्में विदित है, उनको वैकुंठ और मुक्ति प्राप्त है, मैंने हाथ जोडकर कहा कि, पशुयोनिमें जडयोनिमें बड़ाईकी चाहना नहीं है, उनका संबंध ब्रह्मसे रहेगा या नहीं ? बालक अज्ञान बावला आदमी बडाई नहीं चाहता उनको ब्रह्मका बोध कैसे होगा और जिसकी बडाई गानेसे सब अमर हो जाते हैं वह कौन है, जन्म मरणका दुःख जिसकी बडाई गानेमें जाता है उसके दर्शनमें कुछ प्राप्त नहीं होगा यह असंभव है॥

ग्रन्थ मंगलभवन

दोहा—गिरा कहत सकुचात जहँ बुद्धिज्ञान लवलेश ।
महिमा अमित अपार है, पूजत आदि गणेश ॥१॥

गुरुपद पद्म प्रयागकी, महिमा कही न जाय ।
मो सम क्रूर कपूतको, दीनो नाम सुनाय ॥ २ ॥
वेद न पावत पार जहँ, शेष कहत सकुचाय ।
सुर माया बलवानको, मंगल भवन सुहाय ॥ ३ ॥
भजन भरोसे रामके, चार दिशा चौकोन ।
त्रिभुवनमें अभिलाखको, सब विध मंगल भौन ॥४॥
गिरजापति त्रिपुरारि शिव, सब देवनके देव ।
प्रिय सहित अभिलाख हिय,वास करो तज भेव॥५॥
संत शिरोमणि सुभग शठ, कलियुग साधु फकीर ।
मंगल भवन सराहिये, तुलसी सूर कबीर ॥ ६ ॥
जाहि न भावत मुक्त फल, जाहि न भावत ज्ञान ।
मंगल भवन न भावई भावत नरक निदान ॥ ७ ॥

मंगल-बत्तसी

कवित्त-माते श्रीभवानी तीनों लोकमें बखानी, महामाया महारानी ध्वजा स्वर्ग फहरात है । पूजत हमेश तोहिं ब्रह्म और महेश, दूर होत सब कलेश शेष वर्णत दिन रात है ॥ मुक्तीकी दाता विधाता संसारकी, माता ऋद्धि सिद्धि तोहिं पूजत मिल जात हैं । कहत अभिलाख राख ध्यान चरण-कमल बीच, बूडत हूं अथाह थाह तूही एक दिखात है ॥१॥ काहूको अधार राजकाज परिवार धन, काहूको अधार नौबत निशान सुलतानी है । काहूको अधार यार दोस्त नात बात है, काहूको अधार बल पौरुष जवानी है ॥ काहूको अधार स्थान देश जन्म भूमी है, काहूको

अधार नौकर चाकर सब खानी है। कहत अभिलाख सबके सब कुछ अधार, मेरे तो अधार जगदंबा महारानी है ॥२॥ मोहि तो पुकार करत आरत विलंब भई, तोहि तो उबारत मात देर नहीं लागत है। दीननकी माता विधाता संसारकी, पूजत तव चरणकमल कोटन अघ भागत है ॥ मोसम अधीन छीन तनमलीन दीन, देख्यो भर नैन तिहूं लोकमें तू छाजत है। चरणमें ध्यान रहे शरणमें मान रहे, माता अभिलाखकी विधाता मुक्त मांगत है ॥३॥ दशरथके बारे भयेनंदके दुलारे आप आपि भये रामचंद्र आपी घनश्याम है। आपी करत अवधराज आपी भये व्रजराज, अवधपुरी वृन्दावन दोनों सुरधाम है ॥ आपी भये गोवर्धन तोड़ो आप शंकरधनु, आपी भये राधा कृष्ण आपी सिया राम है। दुष्टनके दहनहार संतनके प्राणअधार, शोभित अभिलाख हृदय सुंदर दो नाम है ॥४॥ कोटन ब्रह्मांड रोमरोममें विराजत है कोटन, वैकुंठ नरक कोटन सुरधाम है। कोटन, कैलास ब्रह्म लोक गोलोक, कोटन आकाश पाताल पुरी धाम है ॥ कोटन रवि चंद्र इंद्र नारद सनकादिक कोटन, कोटन महादेव कोटन, दशरथ नंदग्राम है। कहत अभिलाख वेद शास्तर पुराण कोटन कोटन अवतार एक दूसरो न राम है ॥ ५ ॥ शारद लजाय शेष शरमित भये गाय वेद, खोजत बनाय शास्त्र शोधत है जाहिको। गावत गणेश जाय रटत है महेश, ध्यान लावत मुनीश ब्रह्मा ढूँढत हैं जाहिको ॥ ज्ञानी विज्ञानी

महादानी गुणखानी आदि, नारद सनकादि भेद पावत नहीं जाहिको।जाके नहीं आदि अंत पावत नहीं साधु संत, घामड अभिलाख मूढ खोजत है ताहिको ॥ ६ ॥ उदरमें सम्हर्‍यो जलबून्दसे सरूप सुभग, गोदमें खिलावत मात पिता सुख पावत है। आई तरुणाई सुखदाई अनेक भांत, कोटन विलास ऋद्धि सिद्धि दरसावत है ॥ चौथे पण आय सब भुलान्यो व्यवहार भोग, दारा सुत बन्धु आदि जलको तरसावत है। सोचत अभिलाष काह रीति ये पुरानी है मिथ्या पछितात तोहे आवागमन भावत है ॥ ७ ॥ काहूको अधार राजकाज परिवार धन, काहूको उपास नित्य काहूको वासी है। काहूको योग यज्ञ जप तप स्नान ध्यान, काहूको लोभ मोह काहू विषयवासी है ॥ काहूको मुक्ति भक्त पूरण वैकुंठ धाम, काहूको शोकदंड काहू नरकवासी है । काहू अनुकूल होत काहू प्रतिकूल होत, वाकी अभिलाख ताहि पठवत चौरासी है ॥८॥ योगी अतीत परप हंस जटाधारी, दंड अखंड ध्यान रात दिन लगावे। ध्रुव प्रहलाद आदि याज्ञवल्क्य भरद्वाज वालमीकि विश्वामित्र तेरी गति न पावे ॥ शारद गणेश शेष रटत है महेश जाहि, नारद सनकादि आदि खोजत रहजावे। देख्यो अभिलाख सहत प्रेमवश गुपाल लाल, व्रजकी गवार ताहि, गलिनमें नचावे ॥ ९ ॥ यमला और अर्जुनके शापके मिटायवेको बांधतनंदरानी हाथ ओखलमें गुपालके। धन्य वो माटी जो चाटी है राधारमण, धन्य वो साटी जो मारी व्रजलालके ॥

धन्य वो ग्राम जहां करते विश्राम श्याम. धन्य व्रत धाम धन्य ग्वाल और बालके । कहत अभिलाख तिहूँ लोकमें धन्य है, रटत दिन राजा जो नाम नंदलालके॥ १०॥रावणको मारिके बिभीषणको राज दियो, कंसको निपात उग्रसेनको बढायो है। वालिको मार सुग्रीव राजकाज दियो, कौरवोंको नशाय पांडव सुतनको बसायो है ॥ निशिचर संहार सकल मुनिनको उबार कियो, हरिनाकुश मार प्रहलादको बचायो है । कहत अभिलाख ये कौन बान करुणानिधान, एकको बिगाड और एकको बनायो है ॥११॥ गिधको तार्‍यो दश-कंधर संग लड़िबेमें, शबरीको तार्‍यो जूठे बेरके खियायेते । विदुरको तार्‍यो तनक साग भातके खिलायबेमें,सुदामा को तार्‍यो मूठी तंदुलके चबायते ॥ गोपिनको तार्‍यो प्रेम प्रीतको लगा-यबेमें, कुबरीको तार्‍यो तनक चन्दन चर्चायेते। कहते अभि-लाख ऐसे चतुर हो करुणा निधान, तार्‍यो तो सबको परंतु कुछ न कुछ पायेते ॥१२॥ पालनको मात पिता भोजनको देत सुधा, शोभा अनेक भांत कोटन अराम है। नोकर अरु चाकर हितकारी व्योहारी अनेकन, स्त्री परिवार पुत्र राज-काज धाम है॥बाजी गजराज साज अभिमत विस्तार सहित; और अनेक भांत पूरण सब काम हैं । अंदर अभिलाख तो हैं सूझत नहीं सेतधाम, ऐसो प्रतिपालपर न जानत कौन राम है ॥ १३ ॥ बालरूप खेलत गमायो लडकाईमें तरुणाई कमाई हेतु अंध होय बितायो । कौडी हेतु लवडी हुए पालन परिवार कियो चोरी और चमारीपर आध सब

उठायो ॥ अन्तके समय जब प्राणत्याग होने लगे, देख्यो भर नैन कोई काममें न आयो।रही अभिलाख भगवतके भजनकी सोचत पछतात जन्म मिथ्यामें गमायो ॥ १४ ॥ आदर न होय संसार निरादर हो, मंदिर न होय विविध भांतिसे दुखारी हो । भूषण न होय और वस्त्रसे न वस्त्र होय; भोजन न होय रोगशोकको वेआरी हो ॥ पालक न होय बालककी कौन कहे, स्त्री न होय मित्र शत्रु हित कारी हो । एते असंयमपर भजनकी अभिलाख नहीं, संयमपर कौन भांति रामभक्त प्यारी हो ॥१५॥रोगते शरीर ग्रसित कफवातसे ओषधिको देत वैद्य दही भात बासी है । कंठ बीच फोडा पीडा अधिक होत ऊपरसे, बार बार आवत छींक अरु खांसी है॥ निर्धन निरूप निर्वंशके गिरंध्र है, नाना अपराध नित्यनंग अरु दासी है । एते दुख जीव अभिलाखसे भोग करत, जपत एक राम नाम होत मनो फांसी है॥१६॥ योगी भोगी कर्मनाशी शिवशक्तिके उपासी, जटाधारी संन्यासी महाज्ञानी गुणरासी है । चारोंधामके निवासी तीर्थराजके प्रवासी, अवधवासी ब्रजवासी सेवत कल्प कल्प कासी है ॥ साठों दण्डके उपासी आठों यामके विलासी, ऋद्धि सिद्धि आदि दासी अघनाशी उदासी है एते कर्मके उपासी अभिलाख नरक वासी, राम कहत फांसी होत अंत भरमत चौरासी है ॥१७॥सागरको थाह आये पुरी सातों भूमि आये, तीर्थराजहू नहाये भर्म आये चार धामको । जटा योजनभर बढाये भस्मसे तन लगाये शंख, रातों दिन बजाये नहीं बराये

सेतधामको ॥ ब्राह्मणको जिमाय दान कोटन नित लुटाये, गीता भागवत सुनाये पूज्य आये सुर विरामको ॥ एते दुःख सब उठाये कोऊ काम नहि आये एक नाम जो न गाये अभिलाख सियारामको ॥ १८ ॥ हाथको बढाय दान पुण्य यथाशक्ति कियो, पांवको बढाय धूम आयो सब धामको। पेटको बढाय कियो कोटन पकवान भोग, नाकको बढाय श्वास खींचो सुरधामको॥ कानको बढाय सुनु अनहदकी शब्द तान, आंखको बढाय कियो दरशन अभिरामको। एते सब बढाय भयो पूरण अभिलाख नहीं, जीभको बढाय नहीं रटो सिया रामको ॥ १९ ॥ सागर अथाहसे उबार्यो तोय दीनानाथ, घाटपर लगायो तोय अवघट सुहात है शूकर अरु कूकरके जोग जन्म तेरो भयो मानुष न दीन ताय पूछत नहीं बात है॥ मेवाकपन भोगबिविध भांति पूरण सब आंधर असोज झूठ विष्ठा क्यों खात है। सोचत अभिलाख हानि लाभको विचार नहीं, मूतसे सपूत फिर कपूत होय जात है ॥२०॥ साहिबके हजूर जब विचारेंगे कसूर दण्ड पावेंगे जरूर पाप शाहद बनि आवेंगे। देवेंगे गवाहि पकड मारेंगे सिपाहि तहां आवेगी तबाहि सजा कामिल फरमावेंगे ॥ हाथी घोडा निशान स्त्री परिवार द्रव्य, यमके इजलासमें न कोऊ काम आवेंगे। घामड अभिलाख चेत सीता राम याद राख, माटीके भव अंत माटी मिल जावेंग॥ २१ ॥ काहूको भरोसो तीर्थ व्रतकी कमाईमें, काहूको भरोसो दान पुण्य अरु स्नानका। काहूको भरोसो सेवा शृंगार प्रेम भावमें, काहूको भरोसो

सतसंग ब्रह्म ज्ञानका ॥ काहूको भरोसो रामनामके रटनमें काहूको भरोसा योगदंड निर्वाणका । कहत अभिलाख यह भरोसो मोह कोऊ नहीं, मोह तो भरोसो एक केवल भगवानका ॥ २२ ॥ गजकी पुकारमें अवार तनक लायो नहीं, द्रौपदीकी लाज राख्यो सभामें सुनत हैं । भरतमें बचायो अंड पंची गजघंट तरे, उदरमें बचायो प्राण प्रीछतको कहत हैं ॥ व्रजको बचायो उठाय गोर्वधन पहाड; भक्तनहित आप विविध रूप धरत रहत हैं। कहत अभिलाख मोहे आवत प्रतीत नहीं, मेरे तो लाज प्राण दोऊ जान चहत हैं ॥२३॥ रावणको तार्‍यो महिरावणको उबार्‍यो, तार्‍यो कुंभकर्ण सहसबाहुके तरैया हो । कंसको तार्‍यो जरासंधको उबार्‍यो, तार्‍यो शिशुपाल दंतवक्त्रके तरैया हो ॥ कौरोंको तार्‍यो पांडो सुतनको उबार्‍यो, तार्‍यो हरिणाक्ष हिरणकश्यपके तरैया हो । एते दुष्ट तार्‍यो अभिलाखको न तार्‍यो, तारो ए दुष्टको तो जाने हम तरैया हो ॥ २४ ॥ संतहित मीन कमठ नरसिंह वराह भयो, मार्‍यो सब दुष्ट सुयश त्रिभुवनमें छायो है । संतनहित राजकाज अवधकी समाज छोड, लीनों वनवास जाय लंकपर नशायो है ॥ संतनहित नंद लाल गोपिनसों खेल कियो, संतनहित नागनाथ पर्वतको उठायो है संतनहित विविध भांति पूरण अवतार लियो पापी अभिलाखको असंत क्यों बनायो है॥ २५ ॥ परशत रज चरणकमल गौतम त्रिय गई धाम, धोवत निषादके विषाद रह गयो नहीं । तोर्‍यो धनु महाघोर त्रिभुवनमें भयो

शोर, देखत परशुरामके क्रोध कुछ भयो नहीं ॥ पालत सुग्रीव प्राण वालि काल कमलापति, मार्‍यो लंकेश दुःख मुनेशके रह्यो नहीं । है हो दयालु करत सबको सब विधि निहाल, तरसत अभिलाख ताय अबतक कुछ कह्यो नहीं ॥ २६ ॥ परीक्षितको बचायो माताके उदर बीच, व्रजको बचायो उठाय गोवर्धन पहाडीको । गजकी पुकार अवार तनक लायो नहीं, जरत विषमज्वालाते बचायो बालक मजारीको ॥ ऐसे महाराज बीच सभा राख लियो लाज, खीच दुशासन हार्‍यो द्रौपदीकी सारीको । कहत अभिलाख ऐसे कोमल चित्त होकर दयालु, सुनत कहीं कौन भांति आरतये दुखारीको ॥ २७ ॥ पूजत रैदास भयो सधन भयो पवनपरम, जातको जुलाह्यो ताहे पदवी कबीरकी । जेते कपि भालु हते रावण संग्राम बीच, तेते सब लियो अमर पदवीशुनासीरकी ॥ विषयका अहारी निषाद भयो त्रिपुरारि, गणिका कार सहत तारी बडाई भई अहीरकी । बिनीत अभिलाख हाथ जोडकर सुनो करुणानिधि, कोजे सनाथ मोहे बारी है फकीरकी ॥ २८ ॥ अवधिमें न रैहों काशी पुरी छोड दीहों तीर्थराजहूं न जैहों मथुरा स्वपनमें न रहि हो ॥ जहां तक अस्थान देव देवनके जगत् बीच, तहां तक जान प्रतिबिंबको बचै हो ॥ जेंत योगी अतीत परमहंस जटाधारी, औरौ अनेक भेष दर्शनको न जै हो। कारि हो नहीं कोई काम एक नाम सीता राम, पूरण अभिलाख सहत घरहीमे कहि हो ॥ २९ ॥ वेदके पढ़ैयाको अढ़ैया भर अन्न नहीं, अलहके

गवैयाको रुपैया रोज आवत हैं । साधु और संत मरत क्षुधावंत भूखनसे वेश्याके हेतु विविध व्यंजन बनवावत हैं ॥ जननी और जनक दोऊ सेवक भये कुटुम्बके, ब्राह्मण अरु कामधेनु देखत दूरि आवत हैं । भारतकी कहानी कहत ज्ञानी होय सूर कूर, देखो अभिलाख राज कलियुगके आवत हैं ॥ ३० ॥ नामकी बड़ा रत शारद सकुचाई गिरा, बापुरी लजाई शेष वर्णत अष्ट याम है । निगम नीति कहे सुनाई वेद चार भांति गाई, ब्रह्म ढुंढन सरमाई नहीं पाये ठौर ठाम है ॥ अद्भुत अपार अमितसूक्ष्म विस्तार आदि, अंत वे विचार सगुण निर्गुण बहुनाम है । भाषत अभिलाख वेद शास्तर पुराण साख, नाम तो अनंत राम नाम परम नाम है॥ ३१॥ वेदके पढानेमें बुढाने ब्रह्म अनेक, शास्तर समझानेमें लजाने अहिराज हैं । देखत पुराण भये पुरातन पंडित प्रवीण; ज्योतिषके गिरा दिशा भाखत बेकाज हैं ॥ गीता और भक्तमाल वालमीक तुलसीकृत वैद्यक और कोकसार देखत कविराज हैं । भाषत अभिलाख बलिहारी दो अक्षरकी, रकार जो राजा तो मकार महाराजा है॥ ३२॥

अष्टपदी

रामका नाम निष्काम होय रटनकर दया और धर्मसे काम राखो । विषयकी वास संतोषसे नाशकर, सहितपरिवारसप्रेम चाखो ॥ साधु अरु विप्रको देख दंडवतकर, यथासेशक्ति तक मान राखो, सहित परिवार ये भांतहरनामभज, भ्रमछूट जाय

अभिलाख भाखो ॥१॥ सहित परिवार घर बैठ हरनाम भज गुरुके चरणमें राख ध्यानो । विषयसे भाग रहो धर्मसे ध्यान रहो, बैठ सतसंग कुछ शीख ज्ञानो ॥ साधु अरु विप्रको देख दंडवतकर, वेदकी राहकर कारखानो । कहत अभिलाख ये भांति परिवारमें, भ्रम भवजाल सब झूठ जानो॥२॥ ज्ञानका देश विज्ञानको राज दे, भजनकी सभा तब जीव-जागे । नाम अखंडकी कटक तैयार कर, सहित परिवार मद मोद(ह) भागे ॥ दया अरु धर्मको सांचसरदार कर, काम औ क्रोध तब संग त्यागे । कहत अभिलाख प्रारब्ध अनुकूल विन, रामका नाम यश जहर लागे ॥३॥पुरीमें वास कर धामकी आश कर, दूर हो जाय सब पापतनका । बाटपर जायकर गंगमें न्हायकर, प्रेमसे दर्श कर साधु जनका ॥ संतकी सभामें बैठ सतसंग कर, झूठ सब जान व्यवहार धनका । ध्यान अखड कर दूर पाखण्ड कर, छोड मद मोह अभिलाख मनका ॥ ४ ॥ झूठ संसार व्यवहार सब झूठ है, परिवार धन धाम झूठा ॥ झूठ आचार वीचार सब झूठ है, झूठ सब कर्म सब काम झूठा ॥ झूठ आकाश पाताल सब झूठ है, झूठ दिन रात युग याम झूठा । कहत अभिलाख एक राम तो सत्य है, और सब काम सब नाम झूठा ॥ ५ ॥ भजनके जोरसे रचत प्रपञ्च विधि, भजनके जोर शिव भये दाता । भजनके जोर रवि चन्द्रमें तेज है, भजनके जोरसे होत ज्ञाता । भजनके जोर अहिराज गज-राज है, भजनके जोरसे काल खाता ॥ भजनके जोरसे मुक्ति

मिल जात है, भजनके जोर अभिलाख माता ॥६॥ ज्ञानसे होत वैराग्य अनुराग सब, ज्ञानसे होत है मौनधारी। ज्ञानसे होत जप योग आचार सब, ज्ञानसे होत है ब्रह्मचारी ॥ ज्ञानसे जीवको होत कल्याण है ज्ञानसे होत है वर्णधारी । चेत अभिलाख अज्ञान क्यों होत है, ज्ञानको सीख नहिं वाट-पारी॥७॥रामके नामसे काम रख बावरे, और व्यवहार नहिं काम अइये। राज परिवार धन धाम गजवाजि सब, जीवके संग नहिं कोउ जइये ॥ काम अरु क्रोध मद लोभ अहं-कारको, मित्र मत जान नहिं दुःख पइये। रटत अभिलाख दिन रात हरनाम जो, मुक्त गत सहित निज धाम पइये॥८॥

दोहा—रामनाम महिमा अमित, को कर सकै बखान।
शारद शेष महेश विधि, करत निरंतर गान ॥१॥
अवधपुरी सरयू नदी, सगद्वार सुघाट ।
राजा राम नरेश, सब विधि पूरण घाट ॥ २ ॥
तहाँ बास अभिलाखको, गढ उज्जैन मुकाम ।
कार्तिक मास एकादशी, देव उठानी नाम ॥ ३ ॥
संवत छत्तिस मध्यमें, सोम दिवसके अन्त ।
संपूर्ण मंगल भवन, पाहि पाहि भगवन्त ॥ ४ ॥
मंगल भवन बनाय कर, विनवत हूं करजोर ।
होय प्रसन्न वर दीजिये, श्रुतिसिद्धान्त निचोर॥५॥

कदाचित् ब्रह्म कुछ न होता और किसीको दर्शन न देता तो ऐसी बडाई कौन गाता लाखों भक्तका उपकार ब्रह्म

प्रत्यक्ष कर चुका और करता है, सांदीपनगुरुका मरा हुआ पुत्र जीता करके दिया, सुदामाजी दरिद्रीको चार पदार्थ दिये, गजको ग्राहसे छुडाया, शबरीका बेर जूंठा खाया, विदुरका साग भात खाया, नंद यशोदाको माता पिता बनाया, अजामीलको मुक्ति दिया, छीपाकी छांय छवाया, सनेबद्दल सेवा किया, धना जाटकी गाय चराया, खेत जमाया, मलूकदासका माल ढोया, अहल्याको अप्सरा बनाया, द्रौपदीकी लाज रखना ऐसी ब्रह्मकी महिमा भूलकर बडाई आदिकको ब्रह्म कहना अज्ञान और मूर्खपना है, यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे ॥

इति अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद सातवें तरंगमें नवीं लहरी

इति सातवां तरंग

अठवां तरंग प्रारंभ

मिथ्या ब्रह्मविचार

मिथ्या ब्रह्म है

श्रीनारदाय नमः ॥ मैं दूसरे महात्माके पास गया और सब हाल अपना कहा. तब महात्मा गुरु बोले कि, अज्ञानके सत्संगसे तुमको ऐसा निरर्थक परिश्रम हुआ और पैंतीस महात्माकी सेवा करना पडा. ब्रह्मका अर्थ भ्रम है, जिस पदार्थका निश्चय नहीं होता वह भ्रम है. सृष्टिका कर्ता आजतक किसीके निश्चयमें नहीं आया, इस कारण उसपर सबको भ्रम है. ये संसार सर्व सृष्टि और पंचतत्त्व अनादि हैं,

इसका सिद्धांत वेद नहीं कह सकता । सृष्टिका प्रमाण तथा विस्तार शास्त्र पुराण कोई नहीं कह सकता । अनंत द्वीप तथा खंड जो संसारमें हैं कोई नहीं जानता । जितने द्वीप और खंड हैं सबमें दूसरे मत दूसरी विद्या दूसरा ब्रह्म दूसरा वेद है । हिंदुस्थान जिसको प्रसिद्ध कहते हैं वह चार धामके भीतर है । इस द्वीपमें पहिले राजा हिंदू थे सूर्यवंशी चंद्र-वंशी क्षत्री राज्य करते रहे । इनके राज्यके पहिले सब मनु-ष्य पशुसमान रहते थे । विद्याका व्यवहार नहीं था । बहुत काल पीछे जिसकी संख्या कहना निरर्थक है । कोई पुरु-षको अपने सत्संगसे वैराग्य हुआ सर्व संपदाको छोडकर एकांत रहने लगा । एकांत रहनेसे कुछ विवेक विचार ज्ञान उत्पन्न हुआ और शरीरमें जो श्वास प्रधान है उसका भेद देखा तो समाधिका ज्ञान हुआ, पिंडके ज्ञानसे ब्रह्मांडका अनुभव हुआ उत्पत्तिका गुण दो संपूर्ण ज्ञानमें आगया, संसारी मूर्खोंको बहुत कुछ चमत्कार दिखाया, हजारों आ-दमी चेला हो गये, कुछ अक्षर शब्द उन लोगोंने बनाया छंद चौपाई दोहा श्लोक मंत्र गायत्री कवित्त कुंडली सब बनाया, उसका देववाणी नाम रक्खा, बुद्धिसे और युक्तिसे संसारी लोगोंको करामात और चमत्कार दिखाया, जब वे लोग अज्ञानमें चलने लगे तब उनको जुदा जुदा कर्म बताया चार वर्ण—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य शूद्र बनाया । राम कृष्ण जो उस वक्त राजा रहे उनको अवतार बनाया,

अपनी सेवा पूजा सबमें प्रधान रक्खा, अपना गुरुनाम रक्खा उनको शिष्यपदवी दिया कोई शिष्य ब्रह्माको पूंछा तो इसको निर्गुण निराकार निरंजन बताया, जिसमें वह सब उमर ढूँढकर मरजावे पता न पावे, ब्रह्मकी प्रशंसा अपनी सेवामें प्रकट किया । संसारके दिखलाने वास्ते जलशयन, चौराशी धूनी, शूलशय्या, झूला उर्ध्वबाहु, ठाढेसरी, मौनी फलाहारी अनेक तपस्या किया, अठारह पुराणोंमें रामकृष्णको ब्रह्म गाया, उनके बनाये हुए स्थान देवलको पुरी धाम बताया, साधु ब्राह्मण गौको पूजनीय बनाया, जैसा चाहा वैसा किया । जब राजा उनकी सेवा करता था तब सब जगत् उनकी सेवा पूजा करता था उस वक्त और जो शास्त्र वे बनाये थे उसपर राजा प्रजा सब चलते थे । उस वक्त मुसलमान अंग्रेजी इस द्वीपमें नहीं था । समुद्रपार कोई नहीं जाता था, अग्निबोट—जहाज नहीं था, अब प्रगट हुए । जो लोग मांसा हारी थे उनको शाक्तमत बनाया, जो नहीं थे उनको विष्णु शिव बनाया, सर्व व्यवहारका मंत्रशास्त्र बना दिया, मलमूत्रका मंत्र बनाया, सर्व संसारको अपने शास्त्रमें कैद किया, गुप्त इंद्रजाल अपना संसारी लोगोंसे छिपाया, जैसे नाच जगत्का नचाया सबने नाचा, लाखों पुरुष ब्रह्म निराकारकी खोजनामें राजपरिवार स्त्री धन आदिक छोडकर वन अरण्यमें मर गये, जो महात्मा विद्यमान थे अपना मत चलाया ब्रह्मचर्य, वान प्रस्थ, संन्यास परमहंस, गुसांई, वैरागी, नाथ, सेवडा, जंगम हजारों नाम

उस भेषका रक्खा, पीछे विद्याका ऐसा अधिकार हुआ कि, लाखों ग्रंथ आचार्योंके बनाये हुए मौजूद हैं, वह कहां तक इसका विस्तार किया जावे जिसको कुछ भी ज्ञान होगा वह इस सिद्धांतको जान लेवेगा और ब्रह्मका भ्रम स्वप्नमें भी नहीं करेगा, जगत् व्यवहार अनादि जानकर शांतहो जावेगा, गौ मारना भगवानका हुकुम नहीं है, सर्व द्वीपमें मुसलमान अंग्रेज खाते हैं। चोर, डाकू, कसाई परद्रव्य-परस्त्री ग्रहण करनेवाले चारों युगोंमें रहते हैं, कुछ बुरा नहीं होता जबसे मुसलमान अंग्रेज इस टापूमें आये तबसे आचार्योंका पाखंड प्रगट होता जाता है, तीर्थयात्रा, मूर्तिपूजन व यावत हठयोग करना कम हो गया, हिंदू लोग ताजिआदारी कबरपूजा उरस सब करने लगे, लाखों क्रिस्तान होगये लाखों धर्म छोड़कर दूसरे द्वीपको चले गये, साधु सर्व भेषके गृहस्थ हो गये. लाखों दादूपंथी नोकरी करते हैं, नाथ गुसांई खेती मजूरी करके पेट भरते हैं, वैरागी देन लेन दुकानदारी करते हैं, चारों वर्ण अपना धर्म छोडकर अंग्रेजी फारशी पढते हैं, रेल जहाजपर रोटी खाते हैं कोई झाड वनस्पती बीज बिन उत्पन्न नहीं होता; कोई जीव मैथुन विना पैदा नहीं होता यावत् व्यवहार सृष्टिका जो होता है सबका कारण जुदा दरशाता है । मेंडुककी कुट्टी पानीमें डाले तो बहुत हो जावे संसारका कारज मच्छ ब्रह्मके संबंध नहीं है, गंगा बारह बरसमें नदी हो जावेगी, देवका पत्थर सेर पंसेरीके काम आवेगा,

अठारह पुराणोंमें पसारी पुडियां बाधेंगे जो काम पहिले परमार्थ रहा अब स्वार्थ हो गया । गुरु शिष्य धनवान् ढूंढते हैं, ज्ञानवान्से कुछ प्रयोजन नहीं, ब्राह्मण क्षत्री वैश्य चोरी चमारी करते हैं । चमडा शराब हड्डीकी दुकान रखते हैं, तेलमें गौकी चरबी डालते हैं । मुसलमान सूअरका गोस्त पकाते हैं । अस्पताल सर्वजात एकपात्रमें शराब पीते हैं नमक शक्करमें हड्डी खाते हैं । चरबीका दीपादान कुठारके पास होता है, छापेके ग्रंथकी पूजा होती है । अब कौन धर्म हिंदूका बाकी रहा । जो कुछ झूठा सच्चा दर्शाता है सो थोडे कालमें सब जाता रहेगा।दिल्लीके आलमगीर औरंगजेब बाद-शाहने सब देवताओंको फोड डाला।मालवा मारवाडमें हजा-रोंको मुसलमान कर डाला । पीछे वे हिंदू हो गये । कोई देवने उसको दंड नहीं दिया । अंग्रेज सरकार जो मेला यात्रा चाहता है बंद कर देता है, कोई देव दंड नहीं देता । मुस-लमानोंके मतमें बाबा आदमको सात हजार बरस हुआ मोहम्मदको तेरह सौ नव बरस हुआ, इसके पहिले कुछ नहीं था, अंग्रेजके मतमें ईसाको अठारह सौ इक्यानवे बरस हुआ पहिले कुछ नहीं था । हिंदूके यहां त्रेतालिस लाख बीसहजार बरसका चारों युग होता है, ऐसे हजार चौयुगी जब व्यतीत होता है तब ब्रह्माका एक दिन होता है । ये सब व्यासकी बनावट है । सात हजार बरसके पहिलेका कुछ अनुभव जग-त्में नहीं है । पुराणका मत जगत्के प्रमाणमें ऐसा है कि

साठ पलकी एक घडी होती है और साठ घडीका एक दिन होता है और तीस दिनको मास कहते हैं, बारह मासको साल कहते हैं इस सालके प्रमाणसे चार लाख बत्तीस हजार बरसका कलियुग, उसका दूना आठ लाख चौसठ हजार बरसका द्वापर,, उसका त्रिगुण बारह लाख छानवे हजार बरसका त्रेता, उसका चौगुण सत्रहलाख अट्ठाईसहजार बरसका सत्ययुग, ये सब चारों युग त्रेतालीस लाख वीसहजार बरस हुआ; इसको एक कल्प कहते हैं. ऐसे नौसौ चौर्यानवे कल्पका एक दिन ब्रह्माका होता है, उसमें चौदह मन्वंतर होते हैं; चार अरब उनतीस करोड चालीस लाख अस्सी हजार बरसका दिन होता है, आठ अरब अट्ठावन करोड इक्यासी लाख साठ हजार बरसका दिन रात हुआ दो खरब सत्तावन अरब चौसठ करोड अडतालीस लाख बरसका मास हुआ, तेईस खरब इक्यानवे अरब त्र्यहत्तर करोड छहत्तर लाख बरसका साल होता है, इस हिसाबसे ब्रह्माकी आयुष्य सौ बरसकी है. उसका प्रमाण तीस नील इक्यानवे खरब त्र्यहत्तर अरब छहत्तर करोड बरस ब्रह्मा जीता है, पीछे मर जाता है. इसी प्रमाण शून्य रहता है, पीछे दूसरा ब्रह्मा पैदा होता है वह सारा जगत् बनाता है और नित्य प्रलय जब ब्रह्मा सोता है तब होती है. प्रातःजब ज़ागता है तब दूसरा बनाता है, ब्रह्माकी आयुष्य पचास बरसकी हो चुकी इक्यावन बरसमें पहिला दिन है तेरह घडीदिन चढा उसमें छः मन्वंतर हो गये, सातवां व्यतीत होता है, तीस करोड

सतसठ लाख बीस हजार बरसका एक मन्वंतर होता. है, वैवस्वत नाम मन्वंतर सातवां व्यतीत होता. सब मन्वंतरके नाम ये हैं—१स्वायंभुव, २ स्वारोचिष, ३ उत्तम, ४ तामस, ५ रैवत्, ६ चाक्षुष, ७ वैवस्वत, ८ सावर्णि, ९ दक्षसावर्णि, १० ब्रह्मसावर्णि, ११ धर्मसावर्णि, १२ रुद्रसावर्णि, १३ देवसावर्णि, १४ इंद्रसावर्णि. साल हालतक बारह करोड पांच लाख बत्तीस हजार नौ सो नवासीबरस वैवस्वत मन्वं-तरमें हुआ अठारह करोड एकसठ लाख सत्ताईस हजार ग्यारह बरस बाकी हैं और नित्यप्रलयमें एक अरब छयानवे करोड आठ लाख बावन हजार नौ सौ नवासी बरस हुआ, बाकी जो नित्यप्रलयमें है उसका प्रमाण दो अरब तेतीस करोड बत्तीस लाख सत्ताईस हजार ग्यारह बरस रहा. एक मन्वंतर इकत्तर चौयुगीका होता है, उसमें एक इंद्र राज्य करके नष्ट हो जाता है. भविष्यमें राजा नल इंद्र होंगे और हनुमानजी ब्रह्मा होवेंगे, विष्णु महादेवके दिनका प्रमाण इससे बहुत ज्यादा है और ब्रह्माका दिन इससे भी जादा है यह पुराणोंका मत है विचार करके देखो तो कुछ ज्ञान ध्यानमें नहीं आता, जो पाप पमेश्वरकी आज्ञासे नहीं होता वह करनेवाला झाड मूलसे नष्ट हो जाना चाहिये सो कुछ नहीं होता, धर्मात्माके अवलाद नहीं होती, कसाईके आठ आठ लडका होता है, जो पुण्यकर्ता है वह सन्निपातमें बहुत काल दुःखी रहता है, जो पाप करता है सो सौ

बरस जीता रहकर हँसते बोलते शरीर छोड देता है । गौ विष्ठा खाती है चमार, भंगी भागवत पढ़ते हैं; धर्मशास्त्र शरा आईन कानून सबका अर्थ एक है, आजतक किसीको ब्रह्म मिला नहीं कदाचित् मिलता तो नाश न होता । और चोरके मुकामका पता मिल जाता है । ब्रह्मका स्थान क्यों प्रगट नहीं होता ? ये सब भ्रम हैं जीवत्पर्यंत आत्मा शरीरका संबंध है, मरने उपरांत दोनों मिथ्या हैं, जैसे चिराग और उसकी प्रकाश शुभाशुभ दोनों कर्म निरर्थक हैं विचार करो, चालीस कुंडलियाँ ब्रह्म मिथ्याकी देखो—

(४०) कुंडलियाँ—मिथ्या ब्रह्म

निराकार निर्गुण अलख, व्यापक ज्ञानस्वरूप । रजोगुण तमोगुण सत्त्वगुण, अद्भुत अगम अनूप । निरंतर निशि दिन ध्याऊं । कारण कारज कर्म तिहूँको माथ नमाऊं ॥ कहे दास अभिलाख आपको कर्ता मानो । निर्गुण अलख अनादि ब्रह्मको मिथ्या जानो ॥१॥ नभ भीतर वायु रहे तामें पावक होय । ताते जाल पृथ्वी भयो पांचतत्त्व इक होय ॥ पांचतत्त्व इक होय ताहेकी देह बतावे । पांचों पांच सुभाव शुभाशुभ कर्म करावे ॥ कहे दास अभिलाख पांचवें पांच समाना । निर्गुण अलख अनादि ब्रह्मको मिथ्या जानो ॥२॥ मायाके स्पर्शसे उपजे पंच ज्ञान । त्वचा घ्राण श्रवण गिरा चक्षु पंच प्रमाण ॥ चक्षु पंच प्रमाण पंचको पंच बतावे । हाथ पांव मुख लिंग गुदा ये करम कहावे ॥ कहै दास अभिलास

चार अंतस पहचानो । निर्गुण अलख अनादि ब्रह्मको मिथ्या जानो ॥ ३ ॥ शब्द स्पर्श रूपसे उपजे रस और गंध । काम क्रोध मद लोभको मोह बतावत अंध ॥ मोह बतावत अंध बूझ सपन्यो नहिं आवे । निद्रा मैथुन क्षुधा चराचर सबको भावे ॥ कहे दास अभिलाख प्राण पांचोंको जानो । निर्गुण अलख अनादि ब्रह्मको मिथ्या जानो ॥ ४ ॥ कारण कारज कर्मको कर्ता कहिये मूल । मिट्टी घडा कुम्हारमें चाक भयो अस्थूल ॥ चाक भयो अस्थूल सदा चक्करमें रहहीं । आगे करे विचार कर्मको कर्ता कहहीं॥कहे दास अभिलाख आपसे जुदा न जानो । निर्गुण अलख अनादि ब्रह्मको मिथ्या जानो ॥ ५ ॥ एक तत्त्वके पांच गुण पांचों पांच पचीस । जीव अविनाशी एक है ताहे कहत जगदीश ॥ ताहे कहत जगदीश तिसके संग विराजे । घटे बढे नहीं मरे सदा आनंदमें राजे॥ कहे दास अभिलाख उसीको भरम समानो॥ निर्गुण अलख अनादिब्रह्मको मिथ्या जानो॥६॥ राजासे प्रजा भये प्रजासे भयेराज । बाल तरुण वृद्धपर भये तीनही काज॥ भयेतीनही काज रोग सब एकी देखा । निद्रा मैथुन क्षुधा हर्ष भये एकी लेखा॥कहे दास अभिलाख ज्ञान विन कर्म कमानो । निर्गुण अलख अनादि ब्रह्मको मिथ्या जानो ॥ ७ ॥ बीज-रूप भगवान्‌ने लिंगरूप धर मीन । शंखरूप भगमर्दकर श्वासा परगट कीन ॥ श्वासा परगट कीन चार अंतस अनु-मानो । साम यजुःऋगवेद अथर्वण चार प्रधानो ॥ कहे दास

अभिलाख प्रथम अवतार बखानो । निर्गुण अलख अनादि ब्रह्मको मिथ्या जानो ॥ ८ ॥ कच्छरूप भगवान्‌ने धऱ्यो पिंडका रूप । चौदा इंद्री प्रगट भई ताको रतन अनूप ॥ ताको रतन अनूप उदरको सागर कहहीं । इन्द्री रतन बनाय शुभाशुभ कारज करहीं ॥ कहे दास अभिलाख द्वितीय अवतार बखानो । निर्गुण अलख ब्रह्मको मिथ्या जानो ॥ ९ ॥ देह रूप भगवान्‌ने फाड गर्भको देत । हिरिण्याक्षते कहत है मल मूत्रके खेत ॥ मल मूत्रके खेत देहको बाहर लावे ताहि कहत वाराह रूप भगवतको गावे ॥ कहे दास अभिलाख तृतीय अवतार बखानो । निर्गुण अलख अनादि ब्रह्मको मिथ्या जानो ॥ १० ॥ शिशू रूप भगवा-नने धऱ्यो सिंह नर रूप । जंत्र फोड भयो प्रगट सुंदर परम अनूप ॥ सुन्दर परम अनूप मात हरिणाकुश जाने । चढ छातीपर दूध पिये शंका नहिं माने ॥ कहे दास अभिलाख जीव प्रहलाद बखानो । निर्गुण अलख अनादि ब्रह्मको मिथ्या जानो ॥११॥ बालकरूपी ब्रह्मको वामन रूप बखान । अपने मीठे वचनसे छलते बडे बलवान॥छलत बडे बलवान वोही राजा बलि गावें । हर पैठो पाताल बुद्ध बालक लै जावे ॥ कहे दास अभिलाख पंचम अवतार बखानो ॥ निर्गुण अलख अनादि ब्रह्मको मिथ्या जानो॥१२॥ब्रह्मचर्यकी देहको परशु-राम तू जान । भोगरूप संसारको सहसबाहु पहिचान ॥ सहसबाहु पहिचान हजारों कर्म छुडावे । माताका सँग त्याग

पितासँग विद्या पावे ॥ कहे दास अभिलाख छठा अवतार बखानो । निर्गुण अलख अनादि ब्रह्मको मिथ्या जानो॥ १३॥ गृहस्थावस्था देहको ताय कहत है राम । दश इंद्रीके भोगसे दशरथसुत भये नाम ॥ दशरथसुत भये नाम वालि रावणको मार्‍यो । मद और क्रोधको मार सियासँग वनपग धार्‍यो ॥ कहे दास अभिलाख अवधको अवध बखानो निर्गुण अलख अनादि ब्रह्मको मिथ्या जानो ॥१४॥ वान-प्रस्थ शरीरको, कहे कृष्ण अवतार । दंतवक्त्र शिशुपालको छिनमें डार्‍यो मार ॥ छिनमें डार्‍यो मार काम अरु क्रोध नशावे । मोह रूप है कंश ताहेको मार गिरावे ॥ कहे दास अभिलाख भोगमें जोग कमानो । निर्गुण अलख अनादि ब्रह्मको मिथ्या जानो ॥ १५ ॥ संन्यासीके रूपको कहे बुद्ध अवतार । हाथपांवसे रहित हो धर्‍यो मौतनको धार ॥ धर्‍यो मौतनको धार जातिको धरम नशायो । सबी जाति एक जाति भात घर घरको खायो ॥ कहे दास अभिलाख नवां अव-तार बखानो । निर्गुण अलख अनादि ब्रह्मको मिथ्या जानो ॥ १६ ॥ अंत अवस्थाके मिले निष्कलंक होय जात । अक लंकी इस देहको त्याग मुक्ति मिल जात॥ त्याग मुक्ति मिल जात राज कुलको आयो ॥ देह भस्म हो जात ताहे प्रलय कहवायो ॥ कहे दास अभिलाख दशम अवतार बखानो निर्गुण अलख अनादि ब्रह्मको मिथ्या जानो ॥ १७ ॥ चार अवस्था आदिके सतयुग है परधान । तीन अवस्था पादके त्रेता ताहि बखान ॥ त्रेता ताहि बखान द्वापर दोपद गावें ॥

अंत अवस्था एक ताहि कलियुग कहवावें ॥ कहे दास अभिलाख यही चारों युग मानो । निर्गुण अलख अनादिब्रह्मको मिथ्या जानो ॥१८॥ शैव वैष्णवशाक्त तीनों मत परमान । स्वर्ग नरक अपवर्गको चाहत सकल जहान ॥ चाहत सकल जहान अनेकन जात बनावे । ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्रहो करम कमावे ॥ कहे दास अभिलाख भेष सब उद्यम मानो । निर्गुण अलख अनादि ब्रह्मको मिथ्या जानो ॥ १९ ॥ चार वेद षटशास्त्र और अठारह पुरान । पढ पढ सब पंडित भयो आयो एक न ज्ञान ॥ आयो एक न ज्ञान यज्ञ तर्पण सब करहीं । ब्रह्म भोज कुल श्राद्ध गया सब कर कर मरहीं ॥ कहै दास अभिलाख देव पितर सनमानो । निर्गुण अलख अनादि ब्रह्मको मिथ्या जानो ॥२० सुत दारा भाइ बहिन मात पिता परवार । फूफा मामा भानजा छूट जाय ससुरार ॥ छूट जाय ससुरार गुरूको बाप बनावे । आपन पुरखा छोड औरका शिष्य कहावे ॥ कहे दास अभिलाख नहीं कुछ हान गिलानो । निर्गुण अलख अनादि ब्रह्मको मिथ्या जानो ॥२१॥ रामनाथ दरशन करे बद्रीनाथको जाय । जगन्नाथके भातको शरभंगी हो जाय । शरभंगी हो जाय द्वारिका छाप लगावे । पितृकर्मसे जाय यज्ञके काम न आवे ॥ कहे दास अभिलाख धान चारोंसे छानो । निर्गुण अलख अनादि ब्रह्मको मिथ्या जानो ॥२२॥ माया मथुरा कांची अवध द्वारिका जाय । काशी करवट ले मरें गढ उज्जैन नहाय ॥ गढ उज्जैन नहाय पुरीसातोंमें वासे । छोड्यो

राजसमाज धर्म कुलके सब नासे ॥ कहे दास अभिलाख अंतमें वही ठिकानो॥निरगुण अलख अनादि ब्रह्मको मिथ्या जानो ॥२३॥ नाथ गुसाईं सेवडा योगि जंगमदास । वैरागी रागी जती वन वन फिरे उदास ॥ वन वन फिरे उदास रात दिन ध्यान लगावें । सारी उमर गवांय अंत योंही मर जावें॥ कहे दास अभिलाख जगत सब भरम भुलानो । निर्गुण अलख अनादि ब्रह्मको मिथ्या जानो ॥ २४ ॥ भगवां वस्त्र रंगके कंठी तिलक लगाय । भसम जटा कुन्डल कडा जरे द्वारिका जाय ॥ जरे द्वारिका जाय जनेऊ फूकके तापे । घर घर मांगे भीख एक छिन चित्त न धापे॥कहे दास अभिलाख जातको धर्म नसानो । निर्गुण अलख अनादि ब्रह्मको मिथ्या जानो ॥ २५ ॥ भूत भवानी देवता भैरों पवनकुमार, काली दुर्गा यक्षिणि कर्ण पिशाची चार॥कर्ण पिशाची चार मौक्कल जिन्न बुलावें । अंतकालमें जाय मौत कुत्तेकी पावें॥ कहे दास अभिलाख जगतको ठगत सयानो । निर्गुण अलख अनादि ब्रह्मको मिथ्या जानो ॥२६॥ ज्योतिष विद्या देखिके कहे गुप्तका हाल । लगन मुहूरत वार तिथि योग नक्षत्र संभाल ॥ योग नक्षत्र संभाल ग्रहोंको भाव बतावें । सुता रांड हो जाय ज्योतिषी नाम धरांवे ॥ कहे दास अभिलाख करमगति कोइ न जानो । निर्गुण अलख अनादि ब्रह्मको मिथ्या जानो ॥ २७ ॥ कल्प कीमियां धातु रस गुटका कज्जल वंग । बुटी जडी जहांनकी राखत अपने संग ॥ राखत अपने संग धातुको नित्य जानवें । घर घर मांगे भीख

अत चोरी कर जावें ॥ कहे दास अभिलाख धातुको भेद न जानों । निर्गुण अलख अनादि ब्रह्मको मिथ्या जानो॥२८॥ इडा पिंगला सुषुमना नाडी जानों तीन । पांच तत्त्वको साध-कर काम करत परवीन ॥ काम करत परवीन चंद्रको अचर बतावें । सूरजको चर कहैं ज्ञान बिन नाक दबावें ॥ कहे दास अभिलाख मूर्ख होवत बखानों निर्गुण अलख अनादि ब्रह्मको मिथ्या जानो ॥ २९ ॥ आसा सारंग गूजरी मारू फाग मलार । कल्याणी अरु भैरवी दीपक राग केदार ॥ दीपक राग केदार नादको आदि बतावें । कसबी और कवाल भांड घर घर सब गावें ॥ कहे दास अभिलाख आदि सनकादिन जानो । निर्गुण अलख अनादि ब्रह्मको मिथ्या जानो॥३०॥ नाडी देखें हाथकी कहैं अंगके रोग । गर्मी सर्दी वात पित्त ताते भयो वियोग ॥ ताते भयो वियोग अनेकों दवा बतावे काढा गोली तिला तेल मात्रा बनवावें ॥ कहे दास अभि-लाख मौतकी दवा न जानो । निर्गुण अलख अनादि ब्रह्म-को मिथ्या जानो ॥ ३१ ॥ मुसलमान रोजा रहें सुन्नत करें नमाज । गौ मार कलमा पढै बुतसे करें लिहाज ॥ बुतसे करें लिहाज ताहेको काफर गावें । हसन हुसेनका रूप सालमें सदा बनावें ॥ कहै दास अभिलाख गौरका तौर न जानो । निर्गुण अलख अनादि ब्रह्मको मिथ्या जानो॥३२॥ ईसाई सब कहत हैं ईसा बडे प्रधान । बाप नहीं फांसी मिली गाय सूरको खान ॥ गाय सूरको खान हगें फिर

गुदा न धोवें । सबी जात इक जात साथ कुत्तके सोवें ॥ कहे दास अभिलाख धरमको नाम न जातो । निर्गुण अलख अनादि ब्रह्मको मिथ्या जानो ॥ ३३ ॥ जन्म भयो संसारमें प्रगटयो पुत्र सुजान । नाच रंग आनंद सब दान देत यजमान ॥ दान देत यजमान चहूं दिशि मंगल छावे । राजा रंक अमीर अंतकी खबर न पावे ॥ कहे दास अभिलाख मृत्युके हाथ बिकानो । निर्गुण अलख अनादि ब्रह्मको मिथ्या जानो ॥ ३४ ॥ राम रामके कहेते मरा मरा होय जाय । मरा मराके कहेते राम राम होय जाय ॥ राम राम होय जाय उलटके अर्थ लगावें । घामड सब संसार ताहि जपजप मरजावें ॥ कहै दास अभिलाख रामको मरा बखानो । निर्गुण अलख अनादि ब्रह्मको मिथ्या जानो ॥३५॥ वेद कहे सर्वज्ञ है भक्त कहे वो एक । दर्शन होय करतारको जो हठ राखे टेक ॥ हठ राखे टेक धनाको गाय चरावे । ब्रह्मा विष्णु महेश ताहिको अंत न पावे ॥ कहे दास अभिलाख झूंठ दोनोंको मानो । निर्गुण अलख अनादि ब्रह्मको मिथ्या जानो ॥३६॥ जाती सेवडा धौंडिया मुँह बांधे दिनरात। नागदेव बनायिके जूंठा घर घर खात॥ जूठा घरघर खात कभी अस्नान न करहीं । पालें चीलर जुवां काम भंगीका करहीं ॥ कहे दास अभिलाख जतीको जाल बखानो । निर्गुण अलख अनादि ब्रह्मको मिथ्या जानो ॥ ३७ ॥ मत अघोर सबसे अधिक सबसे ऊपर मान । मल मूत्र

भोजन करे मुर्दा जिन्दा खान ॥ मुर्दा जिन्दा खान ज्ञान सपन्यों नहीं आवे । निशि दिन पियें शराब अढ़ंगा घर घर लावे ॥ कहे दास अभिलाख नरकका कीडा जानो । निर्गुण अलख अनादि ब्रह्मको मिथ्या जानो॥३८॥नाक दबावे ज्ञान विन श्वास लेय चढाय । धोती पोती गजकर्ण नौली कर्म कराय । नौली कर्म कराय पांचमुद्राको देखें । आसन पद्म लगाय छैउ चक्करको सोधें ॥ कहे दास अभिलाख समाधी समुचित जानो । निर्गुण अलख अनादि ब्रह्मको मिथ्या जानो ॥ ३९ ॥ ज्ञान योग वैराग्य सब भक्ती प्रेम विचार । दया धर्म जप तप क्रिया पूजा बरत अचार ॥ पूजा बरत अचार करें सब ध्यान लगावें । निद्रा मैथुन क्षुधा हर्ष भय नित्य सतावें ॥ कहे दास अभिलाख करम सब मिथ्या जानो । निर्गुण अलख अनादि ब्रह्मको मिथ्या जानो ॥४०॥ कुंडलियां चालीस कह्यो मिथ्या ब्रह्म बनाय । नास्तिक मत जानकर मत कोई रिसियाय ॥ मत कोई रिसियाय कथाको अर्थ कहानी । गावें सुनें गवाँर ताहिको सच्चा जानो ॥ कहे दास अभिलाख झूंठ सब जगत बखानो । निर्गुण अलख अनादि ब्रह्मको मिथ्या जानो ॥४१॥ जगत अनादि युगादि है कर्ता है संयोग।ब्रह्म निरंजन शून्य हैं निद्रा मैथुन भोग ॥ निद्रा मैथुन भोग सदा जन्में मरि जावे । पूरा नहीं अभिलाख श्वान होय घर घर खावे ॥ कहे दास अभिलाख करम सब मिथ्या मानो । निर्गुण अलख अनादि ब्रह्मको मिथ्या जानो ॥ ४२ ॥

मैंने हाथ जोडकर कहा कि, आपका ज्ञान नास्तिक मत है, परन्तु मैं तब कबूल करूंगा जब सब शंका बोध हो जावे. पहिले इन चालीस प्रश्नोंका उत्तर होना चाहिये इसका विस्तार यह है देखो—

प्रश्न चालीस

१—कर्ता जगत्‌का कोई है या नहीं, अगर है तो कहां और क्या नाम और क्या स्वरूप, प्रत्यक्ष होना चाहिये ?

२—जगत् संसार दुनियां ब्रह्मांड किसको कहते हैं, इसकी हद्द है या नहीं, किसने बनाया और कब बनाया क्यों कर बनाया ?

३—आकाश कुछ पदार्थ है, कहां तक है इसकी हद्द पर क्या है

४—वायु क्या पदार्थ है, कहांसे आती है, कहां जाती है, सदा कहां रहती है ?

५—अग्नि किससे पैदा हुई, ऐसा तेज उसमें क्योंकर हुआ, पत्थर लकडीमें क्यों हुई ?

६—जल क्योंकर बना, पृथ्वीके ऊपर है या नीचे, सदा कम होता है या जादा, वर्षा समुद्र नदी कुएमें है ?

७—पृथ्वी किसने बनाई, हद्द है या नहीं, किसके ऊपर है,

८—सूर्य क्या चीज है, चर है या स्थिर, जड है या चेतन, रातको क्यों नहीं दरसाता ?

९—चंद्रमा क्या तत्त्व है, कम सिवाय क्यों होता है; चर है या स्थिर, जड है या चेतन ?

१०—तारा मंडल छोटे बडे क्यों हैं कितने हैं, चर हैं या स्थिर, ध्रुव क्यों नहीं चलता ?

११—बिजलीमें चमक गर्ज तडप जलदी क्या है, जमीन-पर क्या गिरता है, मुकाम कहां है ?

१२—धनुष पांच रंगका वर्षा ऋतुमें सदा ही निकलता है, क्या है, संपूर्ण भेदका विस्तार होना चाहिये ?

१३—ग्रहण सूर्य चंद्रमें क्या है, जोतिषमें क्यों प्रगट हो जाता है, अमावस पूनमको क्यों होता है ?

१४—मंडल जो सूर्य चंद्रमें होता है क्या है, सदा क्यों नहीं दरसाता ?

१५—आकाशमें मार्ग जो दरसाता है वह क्या है, बहुत करिके दो रास्ता दरसाते हैं ?

१६—प्रातःसंध्याको लाल बदल या अरुण सूर्य क्यों

१७—मेघ क्या काम करते हैं उनकी उत्पत्ति स्थिति नाश क्यों कर होती है ?

१८—ओस रातको कहांसे पडती है, ठण्डेमें जादा क्यों पडती है ?

१९—कोहरा प्रातको ठंढमें क्यों पडता है वर्षामें भी पड़ता है ?

२०—वर्षाऋतुमें अनेक जानवर पडते हैं बीरबहूटी मेंडक मछली छोटे जानवर बहुत ?

२१–गार या पत्थर है, कहांसे पडता है, कौन गिराता है ?

२२–तारा रातको टूटता है, वह क्या है ?

२३–गर्मी सर्दी बरसात होनेका कारण क्या है ?

२४–दिन रात क्यों होता है, कौन करता है ?

२५–भूकंप जो कभी होता है कौन करता है ?

२६–नीद क्यों आती है, चेतन कहां जाता है स्वप्न देखना किसका धर्म है ?

२७–क्षुधा तृषा क्यों होती है, शांति किसको होती है ?

२८–मैथुन कर्मकी संपूर्ण सामर्थ्य कहांसे आती है और बीज कहां रहता है ?

२९–ज्ञान बुद्धि किसको कहते हैं ?

३०–जन्म मरण किसको होता है, जीव क्या पदार्थ है ?

३१–पाप पुण्य किस प्रकार लगता है, कशाई चोर डाकू विषयी सदा रहते हैं ?

३२–भाग्य अभाग्य क्या चीज है कर्म आधीन है या लक्ष अधीन है ?

३३–जादू करामात यंत्र मन्त्र प्रयोग आदिक जो होते हैं सच्चे हैं या झूठे हैं ?

३४–अक्षर क्या पदार्थ है, किसने बनाया, किस आधार पर ?

३५–गुप्त भेद नाम अर्थ आदिक हो सकता है या नहीं ?

३६–चौरासी लाख प्रमाण क्यों सिद्ध हुआ, किस ग्रंथमें संपूर्ण विस्तार है ?

३७–दैत्य भूत प्रेत जिन्द राक्षस चुडैल डाकिनी यक्षिणी परी पिशाच आदिक सच्चे हैं या झूठे हैं ?

३८–हनुमान भैरों पंढरीनाथ महादेव गणेश देवी आदिक सत्य है, कहां रहते हैं ?

३९–जातिका धर्म सच्चा है या झूठा, ब्राह्मण चमारमें क्या फरक है ?

४०–शरीर और जीव और हम तीनोंका प्रत्यक्ष ज्ञान होना चाहिये ?

चारवेद छःशास्त्र अठारह पुराण जो व्यास भगवानने कहे उनका संपूर्ण पढनेवाला और समझनेवाला अब कोई नहीं है, संस्कृत विद्या देववाणी है, हिंदुस्तान तुर्कस्तान लंडन तीनों मुल्कमें ये बोली नहीं है, जगन्नाथ धाममे जातिका धर्म क्यों छोडते हैं, ? कामरू कामाख्यामें देवी तीन रोज रजस्वला रहती हैं, हिंगलाजके ब्रह्मयोनिसे पानी निकलता है, ज्वालामुखीमें लौ निकलती है, आलमगीर बादशाहने उसपर लोहेका तवा जड़ाया था फोडकर निकलती रही- भर्तरी गोपीचन्द और बुखारेका बादशाह और अनेक राजा महाराजा धनपरिवारका सुख छोडकर जंगलमें चले गये, कदाचित् उन सबको कुछ अनुभव प्राप्त न होता तो घरको पलट आते, रामचन्द्रने समुद्रमें सेतु बांधा, श्रीकृष्णने गोवर्धन पर्वतको उठाया, हिन्दुस्थानमें इस प्रकारसे भ्रम हुआ दूसरे द्वीपमें किस प्रकारसे भ्रम हुआ ? वह भी कहना चाहिये, ज्योतिषविद्यावाले सबका भविष्य कह देते हैं, बंगालेमें

सांपका मन्त्र ऐसा प्रसिद्ध है कि, बहुत दिन पीछे मुर्दा जिलाते हैं, जादूसे आदमी जानवर हो जाता है, चौरासी लाख सृष्टिका मैं ही ऐसा कहना मूर्खपना है, जिसके एक नाम है वह झूंठा नहीं हो सकता, ब्रह्मके असंख्य नाम हैं वह क्यों कर झूंठा होगा; यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे ॥

इति अभिलाखसागर गुरुशिष्य संवाद आठवें तरंगमें पहली लहरी

इति आठवां तरंग

नववां तरंग प्रारंभ

नेत्र ब्रह्म विचार

नेत्र ब्रह्म है

श्रीव्यासदेवाय नमः ॥ मैं दूसरे महात्माके पास गया और सब हाल अपना कहा । तब महात्मा गुरु बोले कि ब्रह्म नेत्रमें रहता है, पूतली छोटी मूर्तिको कहते हैं मूर्ति सब शरीरकी नकल है और दृष्टिसे पुरुष प्रकृति उत्पन्न हुई । पुरुष प्रकृतिसे सृष्टि उत्पन्न हुई, ऐसे सिद्धांत अनेक महा-त्माओंके हैं । वर्तमानमें बहुत महात्मा नेत्रसे ज्योतिका दर्शन करते हैं, उनको अपना इष्ट देव जानते हैं, दर्शन करनेकी क्रिया गुरु उपदेश प्रमाण बहुत हैं, चारों द्वार जो ब्रह्मांडमें हैं उनको इस रीतिसे बंद करे—दोनों अंगुष्ठ दोनों कानमें दोनों तर्जनी दोनों नेत्रोंमें, दोनों मध्यमा दोनों नाकमें, दोनों अनामिका ऊपरके ओंठपर, दोनों कनिष्ठिका नीचेके ओंठ-पर ऐसा दबावे कि कानसे शब्द सुने नहीं, आंखसे रूप

देखे नहीं, नाक मुँहसे श्वास निकले नहीं, पहिले श्वास पूरक कर लेवे, उस समय पांच प्रकारका रंग झिल मिल देख पडता है पीछे ज्योति दीख पडती है, वह ज्योति स्वरूपके दर्शन समान है, इसके सिवाय जिसके नेत्र नहीं; उसको किसीका दर्शन नहीं हो सकता । तीनोंलोक चौदह भुवन उसको मिथ्या है, सर्व प्रकारका साधन जो साधक ज्ञानी करते हैं उसका फल नेत्रसे प्राप्त होता है । विद्या मंत्र आदिक नेत्रके अधीन हैं, शरीरमध्य अनंत पदार्थ हैं, परंतु नेत्रकी बराबरी कोई नहीं कर सकता । विवेक विचार प्राणायाम समाधि मानसीपूजा ध्यान लय चेतन आदिक जो ज्ञानके घर हैं वे सब नेत्रके आधीन हैं, सूरदास भगवान्‌का दर्शन पाकर अंधे हो गये और अपने ब्रह्मको पूर्ण ब्रह्ममें मिला दिया, कौवा पक्षी एक रंग होता है, विष्ठा व्यंजनको एक जानता है अद्वैत मत है मौतसे नहीं मरता, इस कारण उसके एक आंख तथा एक पूतली है और सर्व जीवोंको दो पूतली हैं, जिसके एक नेत्र है वह दोनों नेत्रवालेके बराबर देख सकता है, यह आश्चर्यकी बात है, ज्योतिःस्वरूप साकार प्रत्यक्ष नेत्रमें है, जो चैतन्य करके ढूंढेगा सो पावेगा, मैंने हाथ जोडकर कहा कि, नेत्र ज्ञानेन्द्रिय है रूप विषयसे पैदा हुई, विषय तत्त्वसे प्रगट है, पंचतत्त्वकी शरीर पहिले होना चाहिये, पीछे नेत्र हो सकता है, जिसके शरीर नहीं उसके नेत्र नहीं, जो जीव अंधा होता है उसमें भी ब्रह्मका अनुभव होता है, जड

जीवमें नेत्र नहीं हैं। उसमें भी परमेश्वरका अंश है, शरीरमें नेत्र प्रधान जरूर है, परन्तु ब्रह्म उसको कहना उचित नहीं होता, कदाचित् नेत्रमें ब्रह्म होता तो चारो धाम सातों पुरी और तीर्थ गयामें कोई नहीं जाता, जंगल पहाडमें कंद मूल फल फूल खाकर कोई भजन न करता चौरासी प्रकारकी तपस्या हठयोग कोई न करता। नेत्र ज्ञानइंद्रिय है; उसमें ब्रह्म देखना लडकोंका समझना है, यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे।

इति अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद नौवें
तरंगमें पहली लहरी

अहं ब्रह्मविचार

मन ब्रह्म है

श्रीचन्द्राय नमः॥ मैं दूसरे महात्माके पास गया और सब हाल अपना कहा। तब महात्मा गुरु बोले कि, अहं ब्रह्म है अहंका रूप मन है, सर्वशरीरका धनी है जैसा वह चाहता है वैसा शरीर करता है शरीरका यावत् व्यवहार मनके आधीन है और मन चालिस पदार्थसे संयुक्त होता, तथा चालीस सेर आठ पंसेरीका मन होता है, पांच तत्त्व, पांच कर्म इंद्रिय, पांच अवस्था, पांच पंसेरी पांच सेरको कहते हैं। जैसे ब्रह्म सृष्टिकी रचना करता है वैसे मन स्वप्न अवस्थामें सर्व रचना करके देखता है, यह दृष्टांत एकदेशी नहीं है,

सर्व देशी है और मन शरीरमें राजा समान है, उसके दो स्त्रियें हैं, औलाद बहुत है, उसका मंत्र मानसीपूजनकी लहरीमें मौजूद है, देखो, बहुत आचार्योंका मत ऐसा है कि मनरूपी ब्रह्मको ब्रह्मरूपी निद्रा होनेसे जगत् भासता है, जब भ्रम-रूपी निद्रा जाती रही तब स्वप्नरूपी जगत् अदृष्ट हो जावे।

"मनके हारे हार है; मनके जीते जीत।
परब्रह्मको जानिये, मनहीकी परतीत॥"

सर्व व्यवहार पाप-पुण्यका मनके आधीन है, कदाचित् मन शुद्ध हो जावे, तो शरीर शुद्ध होजावे। जो मन अशुद्ध रहेगा तो शरीर भी अशुद्ध रहेगी। शरीर जड है उसको मान नहीं है, मान अपमान मनको है। सत्संग आदिकसे जो मन स्थिर हो जाता है, वह जीवन्मुक्तहो जाता है, ज्ञान ध्यान पूजा पाठ भक्ति प्रेम सब मनके आधीन हैं। स्वप्नमें स्त्री बनाकर भोग करता है, क्षणमात्रमें चौदह भुवन बनाता है। मैंने हाथ जोडकर कहा कि, अन्तःकरणमें पांच इंद्रिय हैं, उनमें एक मन है, चित्त, बुद्धि, अहंकार मन समान है, स्वप्नमें जो रचना होती है वह जाग्रत्का अधिष्ठान है, सुषुप्तिमें पांचो अन्तःकरण नाश हो जाते हैं, पंच ज्ञान इंद्रिय मार्ग जो जीवको ज्ञान रहता है वही स्वप्नमें भासता है, अच्छे अच्छे ज्ञानी मनको मारते हैं। दुःख सुखको मूल मन

---

१ यह यन्त्र १५० पेजमें है

है, ब्रह्मकी औलाद जो प्रवृत्तिसे उत्पन्न हुई पापरूप दुःख-दाई है, ब्रह्मकी औलाद पापी नहीं होनी चाहिये, ब्रह्मके शरीर नहीं है तो दो स्त्री होना असंभव है। मन शुभ अशुभ दोनोंमें रहता है। ब्रह्म विषय नहीं करता और अद्वैत है मन अनंत है यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे।

इति अभिलाखसागर गुरुशिष्य संवाद नौवें तरंगमें दूसरी लहरी

लिंग भग ब्रह्म हैं

श्रीरुद्राय नमः ॥ मैं दूसरे महात्माके पास गया और सब हाल अपना कहा। तब महात्मा गुरु बोले कि, लिंग-ब्रह्म, अहं ब्रह्म है, चौरासी लाख जीव लिंगसे उपत्पन्न होते हैं और अनादिसे लिंग-भगकी पूजा प्रधान है, उसको संस्कृतमें शिव-शक्ति कहते हैं। लिंगपुराण जो जो व्यासने बनाया वह देखो, शिव भी लिंग है लिंगकी महिमा ब्रह्मने नहीं पाया, कोई पुरुषलिंग है, कोई स्त्रीलिंग है, सारा जगत् लिंग दर्शाता है, गुजरात काठेवाडमें संन्यासी परमहंसका लिंग अब-तक पूजा जाता है। लिंगकी पूजा चौवीस अवतारने किया फिर उसको ब्रह्म होनेमें क्या संशय? रामकृष्ण परशुराम जिसको पूजा करें उसको ब्रह्म नहीं कहना मूर्खका काम है। लिंग ब्रह्म, भग माया; उसपर वह मोहित रहता है। जब दोनोंका संयोग हुआ सृष्टि उत्पन्न हुई। मैंने हाथ जोडकर कहा कि, लिंग शब्द स्वतः नहीं है। पहिले शरीरका अनु-

मान होगा तब लिंगका अनुमान होगा, जब शरीर नहीं तब लिंग नहीं. वेदशास्त्रमें जो लिंग प्रधान हैं वह लिंग शिवका है. शिव भगवान सामर्थ्यवान् थे उनके लिंगकी पूजा जगतमें प्रसिद्ध है और लिंगपुराणमें शिवके लिंगकी महिमा व्यासने गाई है, हिजडाके लिंग नहीं होता, गुजरातमें महात्माका लिंग पूजा जाता है सबका नहीं बडे बडे राजा महाराजा संसार छोडकर वन (अरण्य) में कंद मूल खाकर भजन करते हैं, सारी उमरमें भूखे रहते हैं, लिंगको गरम राखसे नाश कर देते हैं, कोई लोहेका कडा उसमें छिद्र कर पहिनाता है और हजारों लिंग भगके औलाद नहीं हैं इसका क्या कारण ? शरीरमें पांच कर्मइंद्रियें हैं, उसमें लिंग भी है और सृष्टिकी उत्पत्ति लिंग भगसे नहीं है, बीजसे है जिसकी धातु नष्ट हो जाती है उसके औलाद नहीं होती, लिंगको ब्रह्म कहना मूर्खका काम है; यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे ॥

इति अभिलाखसागर गुरुशिष्य संवाद नौवें
तरंगमें तीसरी लहरी

अण्ड ब्रह्म है

श्रीशंकराय नमः ॥ मैं दूसरे महात्माके पास गया और सब हाल अपना कहा. तब महात्मा गुरु बोले कि, अंड

ब्रह्म है, रति माया है, संस्कृत विद्यामें उसको विष्णु लक्ष्मी कहते हैं; जिस महात्माने लिंग ब्रह्म कहा वह चूक है। देखो जानवरका अन्ड संसारीलोग निकाल डालते हैं, वह जानवर नपुसंक हो जाता है, उसका लिंग बना रहता है परंतु कुछ काम नहीं आता और जिस स्त्रीका ऋतु बंद हो जाता है, वह बांझ हो जाती है भगमें कुछ सामर्थ्य नहीं है; इस जगत्‌को ब्रह्मांड कहते हैं अथवा ब्रह्मका अंड है, उस प्रमाण मूर्त्ति शालिग्रामकी बनाया, विष्णु लक्ष्मी-देवतानाम प्रगट किय।, शरीरमें थोडी चोट अंडपर लगे तो प्राण निकल जाता है, पुराणमें ऐसा लिखा है कि, गोला-कार शक्तिपर शेषजी है उसपर जगत् है, उसका अर्थ ऐसा है कि, अंडके ऊपर लिंग उसपर शरीर है, मेरे ज्ञानमें अंड ब्रह्म जरूर है मैंने हाथ जोडकर कहा कि, शरीरमें अनेक अंग हैं. उसमें अंड भी है; जबतक शरीर नहीं तबतक अंडका अनुभव नहीं हो सकता ? जानवरका अंड आदमी खाता है, जनाना बाइला आदमी अंड और लिंग सब कट-वाता है, मरता नहीं, जीता रहता है, अंड सबके पास है ब्रह्म सबके पास नहीं है; अंडके रूप है ब्रह्म अरूप है, अंड शरीरके अधीन है, ब्रह्म स्वतः है, ब्रह्मांडका अर्थ वह अंड है, जिसमें पक्षी पशु बच्चा देते हैं आजतक कोई अधिकारी ने लिंग तथा अंडकी पूजा नहीं किया और भजन भी अंडका कोई नहीं गाता ऐसा कैसा ब्रह्म है ? जिसको लोग

धोतीके नीचे छिपाते हैं प्रगट हो जानेमें शरमाते हैं; यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे ॥

इति अभिलाखसागर गुरु शिष्य संवाद नौवें तरंगमें चौथी लहरी

मैथुन ब्रह्म है

श्री हरिहराय नमः ॥ मैं दूसरे महात्माके पास गया और सब हाल अपना कहा। तब महात्मा गुरु बोले कि, मैथुन ब्रह्म है आदिमें ब्रह्म निराकार अपनी इच्छासे एक स्त्री बनाया और अपना रूप पुरुष बनाकर उसके संग भोग किया, जब मैथुनका स्वाद पाया तब उस स्त्रीको चौरासी लाखरूप बनाया और आप उसके समान पुरुष बना मैथुन किया, वह औलाद चौरासी लाख जगत्में हैं और संपूर्ण सृष्टि मैथुनसे उत्पन्न हुई और अब भी सब जगत् मैथुनसे पैदा होता है, सृष्टिके सिवाय और जो पदार्थ जगत्में हैं सब सिद्ध महात्माओंने बनाया; जैसे वर्तमानमें रेल, तार; आगपेटी, अंजन, कल, बाजा आदिक प्रगट हुए हैं। वेदमें ऐसा प्रमाण है कि, यह जगत् मैथुन सृष्टि है और सृष्टिका कर्ता होगा वह ब्रह्म होगा; यह सिद्धांत अचल है मैंने हाथ जोडकर कहा कि, अब वह ब्रह्म कहां है और पांच तत्त्वको मैथुनसृष्टि कहना अज्ञानका काम है। सूर्य चंद्रमा तारा बिजली बादल आदिक किस विद्वान्ने बनाया ? ब्रह्मका जन्म

मरण नहीं होता, सृष्टि उसकी औलाद होकर क्यों मर जाती है, बापकी सम्पूर्ण प्रकृति औलादमें होती है चौरासीलाख ब्रह्मपुत्र हैं तो नरकमें कौन जाता है! ऊष्मयोनि जो इक्कीस लाख प्रसिद्ध है मैथुन सृष्टि नहीं हैं; जैसे गूलर फलका कीडा और साधु संत महात्मा मैथुनवृत्तिको त्याग देते हैं शास्त्रमें मैथुन कर्म राक्षसी कर्म है, यतिकर्मसे वैकुंड मिलता है, मैथुन करके अच्छे विचारवान् स्नान कर डालते हैं, मैथुन ब्रह्म कहना विष्ठा खाना बराबर है; यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे ॥

इति अभिलाखसागर गुरु शिष्य संवाद नौवें तरंगमें पांचवीं लहरी

बीज ब्रह्म है

श्रीपार्वतीपतये नमः ॥ मैं दूसरे महात्माके पास गया और सब हाल अपना कहा । तब महात्मा गुरु बोले कि, बीज ब्रह्म है, शरीर झाड है, बीजरूपी ब्रह्म जब एकसे अनेक होता है जगत् हो जाता है, जब अनेकसे एक हो जाता है तब बीज हो जाता है और जो जो गुण ब्रह्ममें है वही गुण बीजमें बीजमें संपूर्ण दरसाते हैं । देखो पहले–सबमें है, है किसीमें नहीं है १. दूसरे–सबसे बडा और सबसे छोटा २. तीसरे–अवस्था और प्रकृति नहीं ३. चौथे–अनंत नाम और अनंत गुण ४. पांचवें–इच्छारूपी और दूसरेकी इच्छासे प्रगट होता है ५. छठवें–निराकार व निष्काम है ६. सातवें

घटपट व्यापक ७. आठवे आनंदस्वरूप ८. ये आठ गुण ब्रह्म और बीज दोनोंमें समान हैं और बीज शब्दको उलटा करके देखो तो जीव होता है और जीवआत्माको परमात्मा कहते हैं। वेदमें ब्रह्म बीजरूपी लिखा है। और सृष्टिका कर्ता बीज दर्शाता है। मैंने हाथ जोड़कर कहा कि, एक बीजमें एक झाड़ होता है, एक झाड़में करोडों बीज होते हैं और साल दरसाल होता है, इस सिद्धांतमें झाड बीजसे बडा हुआ,अन्त दोनोंका कोई नहीं कह सकता। जो बीज उत्पन्न होता है उसका नाश हो जाता है, जगत्के उत्पन्न होनेसे ब्रह्मका नाश नहीं होता और बीजरूपी ब्रह्मका पूजा भजन ध्यान किसी गुरुने उपदेश नहीं किया और कोई अधिकारी पूजता हुआ नहीं दर्शाया और किसीको आजतक कुछ फल प्राप्त नहीं हुआ,प्रत्यक्ष इनका स्वरूप मल मूत्र समान है, स्वप्न अवस्थामें कदाचित् गिर जाता है तो जिज्ञासु उसी समय स्नान कर डालते हैं, तुमको कुछ अनुभव हुआ हो तो उपदेश कीजिये, मैं साधन करूंगा, प्रत्यक्ष अनुभव होना चाहिये, बीजको ब्रह्म कहना अनर्थ है; यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे।

इति अभिलाखसागर गुरु शिष्य संवाद नौवें तरंगमें छठीं लहरी

विषयानन्द ब्रह्म है

महादेवाय नमः ॥ मैं दूसरे महात्माके पास गया और सब हाल अपना कहा तब महात्मा गुरु बोले कि, विषया-

नंद ब्रह्मका नाम है, जो विषके आनंदको भोगता है वह ब्रह्म है जो साधन करिके उस आनंदका अनुभव लेवेगा वह ब्रह्मानंदको पावेगा, इस सिद्धांतके अनुभव देखनेमें पचीस रुपैया खर्च हो तो प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त हो, मैंने उसी वक्त पच्चीस रुपैया महात्मा गुरु के हाथपर रख दिया, तब महात्मा गुरु बोले कि, आज शामतक व्रत निर्जल रहना, चिराग जलने पीछे स्नान वगैरह करके हमारे पास आना, यहां सब सामान अनुभव देखनेका तैयार रहेगा, मैं महात्मा गुरुकी आज्ञानुसार विधिपूर्वक व्रत रह कर शामको पहुँचा, वहांका तमाशा यह दरसाया, कुछ स्त्री कुछ पुरुष जवान रंगीले रसीले बैठे हैं, एक कलश मृत्तिकाका कोठरीमें मध्य सभाके बीच पांच बत्तीका रक्खा था और होम भी अनेक साकुल्लका आरंभ हो चुका था, नैवेद्यके वास्ते कई शीशी वारुणी, कई सेर सिद्धि और मुक्ति पूडी कचौरी भजिया आदिक परातोंमें रखी थीं और सामान पूजाका धूप कपूर सेंदूर आदिक रक्खा था, सब स्त्री पुरुष हवनमें आहुति छोडते थे और महात्मा गुरु एक माला मूंगोंकी हाथ लेकर कुछ मंत्र पढते थे और स्वाहा बोलते थे, मेरेको भी आहुति छोडनेकी आज्ञा हुई, सबके बरोबर मैं भी छोडने लगा, दोपहर उपरांत महात्मा गुरुका मंत्र पूरा हुआ उस समय एक ज्योति नई बहुत प्रकाशमान एक आरतीमें प्रगट हो गयी, तब महात्मागुरु बोले कि सब कोई खडे होकर आरती पढो और सब

साकुछ हवनमें छोड दो और वह सब नैवेद्य उस ज्योतिके सम्मुख रख दिया और सोलह बत्तीकी आरती उस ज्योतिको करके परिक्रमा दिया और साष्टांग दण्डवत् किया, तब वह ज्योति अंतर्धान हो गई; सब लोग बहुत आनंदित हुए. जैसे ब्रह्मका दर्शन पाया पीछे वह सब नैवेद्य एक थालीमें खाने लगे और वारुणी भी एक पात्रमें पान करने लगे, मुझको भी खान पानकी आज्ञा हुई, मैंने हाथ जोडकर पूछा कि, ब्रह्मका अनुभव कब होगा तब महात्मा गुरु बोले कि, एक प्रहर पीछे अनुभव होगा, मैं बैठा रहा थोडी देरमें जब नशा हुआ तब एक औरत एक मर्द आपसमें विषय करने लगे, जो सबसे अच्छी थी, महात्मा गुरुके संगमें रही; मैं अपना मुँह छुपाकर वहांसे भागा, अपने आसनपर आया, दिनरात भूखा रहा, पचीस रुपैयोंका नुकसान हुआ, यह ब्रह्मका अनुभव पाया, महात्मा गुरु डरसे भाग गये ।

इति अभिलाखसागर गुरु शिष्य संवाद नौवें तरंगमें सातवीं लहरी

शरीर ब्रह्म है

श्रीभैरवाय नमः ॥ मैं दूसरे महात्माके पास गया और सब हाल अपना कहा. तब महात्मा गुरु बोले कि, शरीर ब्रह्म है, जिसको शरीर-ज्ञान होगा उसको ब्रह्मका ज्ञान होगा सर्व संसार शरीरके संयोगसे कुछ झूंठा सच्चा पदार्थ है कदाचित् शरीर न होवे तो उसका कुछ अनुमान नहीं हो

सकता. पंचतत्त्वका शरीर सबको प्रगट है; उसमें जो भेद गुप्त है वह जानना बहुत, कठिन है, पहिले पंचकोशका हाड होना चाहिये, जैसे जलके कोई जीवपर शंख आदिक ज्ञान होते हैं, उस प्रमाण अपना शरीर है उसके ऊपर पंच कोश हैं. अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय, आनंदमय, ये पांचों कोशके नाम हैं. रोम, चर्म, मांस, रुधिर, अस्थि सहित जो शरीर है उसको अन्नमय कोश कहते हैं. उसके भीतर पंचप्राण व्यान–समान उदान अपान ये प्राणमय कोश हैं. उसके आधारसे पंच ज्ञानेन्द्रिय द्वारा पंच विषय जानकर पंच कर्मेन्द्रियसे क्रिया करना और मनके भीतर अनेक विचार करना उसको मनोमय कोश कहते हैं और मनोमयरूपी ज्ञानवृत्तिसे ऐसा विचार करना कि, मैं कौन हूं, तथा मैं कर्ता हूं, उसको विज्ञानमय कोश कहते हैं और विज्ञानमयकोश धारण होनेसे चारों कोशकी भावना रहनेकी नहीं. मैं साकार कैवल्य पंच महाभूतका पुतला हूं. पंच प्राणके आधारसे ज्ञान हो जाता है, ऐसी भावना होनेसे विस्मृति होती है, उसको आनंदमय कोश कहते हैं, ये पंच कोश शरीरमें प्रधान हैं. शरीरको सब ज्ञान है. अन्नमयकोशमें पञ्च महाभूतके पच्चीस भाग हैं, जिसको प्रकृति कहते हैं. विस्तार उसका ग्रंथमें बहुत जगह है. प्राणमयकोशमें पंच प्राण हैं सर्व शरीरमें जो वायु है उसको व्यान कहते हैं, नाभिमें जो वायु है उसको समान कहते हैं कंठमें जो वायु है उसको उदान कहते हैं

हृदयमें जो वायु है उसको प्राण कहते हैं, गुदामें जो वायु है उसको अपान कहते हैं, ये पंचप्राणके आधारसे श्वास चलता है । पंच प्राणरूपी कोथलीमें प्राण है, वह अन्नमय-कोशके भीतर है; प्राणमय कोशके आधारसे स्वप्न आदिक तथा कल्पित सृष्टिकी रचना होती है, प्राणमयकोशके भीतर मनोमयकोश है, पंच ज्ञानेन्द्रियसे पंच विषयभोगने-वाला पंच कर्मेन्द्रियसे क्रिया करनेवाला पंच अंतःकरण-रूप मनोमय कोशसे होता है। प्राणमयकोशके अंतर जो वायु व्यापक है वही मनोमय कोश है, उसको ब्रह्मज्ञानी ब्रह्म. आत्मज्ञानी आत्मा कहते हैं । जबतक शरीर है तबतक ब्रह्म माया जगत् है, शरीरका उत्पन्न होना पंच तत्वका संयोग है, ये सर्व पृथिवी जल सहित सब हाली है । उसके हालनेसे पवन जो शरीरके बाहिर और भीतर है । परदेके ऊपर प्राण-मयकोशमें धक्का लगता है. उस प्राणमयकोशमें जो मनो-मयकोश वायु व्यापक है वह अनुभव लेवे है, वही परली अपरली मानते हैं, ताते सुखदुःखका अनुभव होता है, इसकी रीति ऐसी है कि, मनोमयको स्पर्श होनेवाली वस्तु कदा-चित् कोमल और शीतल है तो परली लागत है और कदा-चित् वह ही वस्तु कठिन गरम है तो अपरली लागत है । परली अपरली सब शरीरको होता है, जीव आत्मा शरीरकी शक्ति है; ऐसा मनोमयका स्वभाव है शरीरके भीतर रक्त उसमें प्राणकी बस्ती है, जब अन्नमयकोशको धक्का पवनके

स्पर्शसे प्राणमयकोशमें लगता है तब मनोमयकोशके जान-
नेमें आता है । नेत्रइंद्रियमें रूपविषयका ज्ञान है, जिह्वा-
इंद्रियमें शब्दविषयका ज्ञान है, नासिका इंद्रियमें गंधविष-
यका ज्ञान है; त्वचाइंद्रियमें स्पर्शविषयका ज्ञान है, कान-
इंद्रियमें रास विषयका ज्ञान है, पंच विषयको ज्ञानेन्द्रियें
जानती हैं । उन पंच ज्ञानेन्द्रियसे मनोमय कोश तदाकार है
इस कारण पंचइंद्रियका ज्ञान अन्तःकरणपंचको होता है ।
अन्तःकरणपंचक मनोमयकोशमें है कदाचित् इस पांच
ज्ञानइंद्रियमें कोई नष्ट हो जावे तो उस विषयका ज्ञान अन्तः
करणको नहीं होगा, यह सर्वव्यवहार पंचप्राणके आधारसे
मनोमयकोषमें जो अन्तःकरण है उसको होते हैं । अन्तःकरण
भी पंचतत्त्वका ज्ञान है । प्राणमय कोषके आधारसे मनोमय
कोषको भावना होती है, अर्थात् पंचप्राणके आधारसे अन्तः
करणपंचको ज्ञान होता है कि, मैं कौन हूं या वह हूँ उसको
विज्ञानमयकोश कहते हैं । कदाचित् इन तीनों कोश विना
भावना करे, कि मैं शरीर ब्रह्म हूं तो होवे नहीं।कारण सूक्ष्म
वायु हिलाने विना भावना होती नहीं प्राणमयके आधारसे
मनोमयको भावना होती है । प्राणमय जड़ है, मनोमय चैतन्य
विज्ञानमय अनुभव पावे है । उस अनुभवसे आनंद होता है
उसको आनंदमयकोष कहते हैं, यह पंचतत्त्वका शरीर
प्राणमय है उसमें पंचप्राण प्राणमय, उसमें अन्तःकरणपंच
मनोमय, उसमें ज्ञान विज्ञानमय, उसमें आनंद आनंदमय

कोश है. अन्नमय पृथ्वी, प्राणमय जल, मनोमय अग्नि विज्ञानमय वायु, आनंदमद आकाश, ये पांच कोश पंचतत्त्वका आधार है. ब्रह्म कदाचित् निराकार सिद्ध होवे तो झूंठा जानों और साकार सिद्ध होवे तो शरीर जानों पंचतत्त्वका शरीर होगा, शरीर रहित पदार्थ मिथ्या प्रसिद्ध है. जिसके शरीर नहीं वह कर्ता नहीं शुभ अशुभ कर्म शरीरसे होता है और सर्व शरीर चौरासी लाख सृष्टिकी एक है जैसे मृत्तिकाका पात्र छोटे बड़े अनेक रंगके हैं. शरीर जब शक्ति रहित हो जाता है तब नाशवान् हो जाता है. पहिले स्थूलका नाश होता है, पीछे सूक्ष्मका नाश होता है. स्वरूपवान् पदार्थ कुछ काल झाड़ बनकर मर जाता है. जैसे वर्षाऋतुकी वनस्पति उत्पन्न होकर नाश हो जाती है. अब शरीरका लक्षण कहता हूं कि, शरीर पांच प्रकारका है, स्थूल सूक्ष्म, कारण, महाकारण उन्मनी तथा केवल ये पांच शरीर हैं. स्थूल शरीर पंचमहाभूतात्मक ही है. आकाश-वायु अग्नि जल पृथ्वी उसमें पांचों तत्त्वके पांच पांच भाग हैं जिसको प्रकृति कहते हैं आकाशके भाग काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद. वायुके पांच भाग-चलना, दौड़ना कूदना फैलना सुकडना अग्निके पांच भाग तेज, क्षुधा, तृषा, नींद, आलसके. जलके पांच भाग-बीज, रुधिर, चरबी, पसीना, लार पृथिवीके पांचभाग रोम, चर्म, नाडी, मांस, अस्थि, ये पांचतत्त्व और पच्चीस प्रकृतिको स्थूल शरीर कहते हैं. अब सूक्ष्मशरीरका प्रमाण कहता हूं कि, इस शरीरमें तत्त्व

नहीं है प्रकृति है. आकाशके पांच भाग अंतःकरण, मन, चित्त, बुद्धि, अहंकार अंतरिंद्रिय. वायूके पांच भाग व्यान समान-प्राण उदान अपान पंच प्राण. अग्निके पांच भाग आंख नाक कान जीव त्वचा ज्ञानइंद्रिय. जलके पांच भाग हाथ पांव मुख लिंग गुदा कर्म इंद्रिय पृथ्वीके पांच भाग शब्द स्पर्श रूप रस गंध पंच विषय. इसको सुक्ष्म शरीर तथा लिंग शरीर कहते हैं. सर्व व्यवहार लिंगशरीरसे होता है, इसका प्रमाण विचार करके सुनो, आकाशका पहिला भाग अंतःकरण व्यानवायुके आधारसे कान ज्ञान इंद्रिय मार्ग शब्द विषय जानकर मुख कर्म इंद्रियसे बोलता है. आकाशका दूसरा भाग मन समान वायुके आधारसे त्वचा इंद्रिय ज्ञान मार्ग स्पर्श विषयको जानकर हाथ किर्मेन्द्रियसे लेता देता है। आकाशका तीसरा भाग चित्त उदान वायुके आधारसे नेत्र ज्ञानइन्द्रियमार्ग रूपविषय जानकर पांव कर्मइन्द्रियसे चलता है.। आकाशका चौथा भाग बुद्धि प्राण वायुके आधारसे जिह्वा ज्ञानइन्द्रियमार्ग रसविषयको जान कर लिंग कर्मइन्द्रियसे बीच मूत्र त्यागता है ! आकाशका पांचवा भाग अहंकार अपना वायुके आधारसे नासिका ज्ञान इंद्रियमार्ग गंधविषयको जानकर गुदा कर्मइन्द्रियसे मल त्यगता है । इस प्रमाण आकाशके पांचों भाग अंतःकरण पंचप्राणके आधारसे पंच ज्ञान इंद्रियमार्ग पंच विषयोंको जानकर पंच कर्म इंद्रियसे किया करते हैं। सर्व जगत्का व्यव-

हार लिंगशरीरसे होता है । यह शरीर अंगुष्ठप्रमाण शास्त्रमें कहता है । अब कारणशरीरका प्रमाण कहता हूं कि, स्थूल शरीरमें तत्त्व प्रकृति दोनों हैं और सूक्ष्ममें तत्त्व नहीं है। प्रकृति है। कारण शरीरमें बीज है। स्थूल सूक्ष्मका साक्षी है। अपनेको नहीं जानता है कि, मैं कौन हूं यथार्थमें वह शरीर अज्ञानरूप है। उसका जन्म मरण होता है। यह कारणशरीर लिंग शरीरका बीज है। लिंगशरीर स्थूलशरीरका बीज है। और स्थूलशरीर पंचतत्त्वका बीज है। पंचत्त्व अनादि हैं। कारणशरीर नाश हो जानेपर अंतःकरण पंचक भुने हुए बीजके समान होजाता है। फिर उसका पुनर जन्म नहीं होता जैसे भुना हुआ बीज पृथ्वीमें नहीं उगता उसी प्रमाण कारणशरीरका नाश होने उपरांत शरीरका पुनर्जन्म नहीं होता पंचत्त्वमें यह शरीर मिल जाता है तब ज्ञानरूपी केवल शरीर निर्विकार हो जाता है। इसीको लिंगभंग शरीर कहते हैं कारणशरीर अग्निका अंश है । स्थूलशरीर स्वरूप है, सूक्ष्मशरीर शक्ति है, कारणशरीर ज्ञान है, अब महाकारण शरीरका लक्षण कहता हूं कि, तेरेको ऐसा निश्चय है कि, मैं ब्रह्म हूं परंतु यह खबर नहीं कि ब्रह्म कौन है और कहां रहता है और क्या पदार्थ है ? जो जिसको जानता है वह उससे न्यारा है। तीनों शरीरके आधारको यह निश्चय होता है कि, मैं ब्रह्म हूं। कदाचित् तीनोंका अधार छोड देवे तो

निश्चय नहीं, होवे । अकेले अंतःकरण आकाशरूपी पोलसे संकल्प होता नहीं, निश्चल शांतरूप मैं हूं, यह भी भावना प्राणवायुके आधीन है, कल्पनामात्र प्राणवायुके आधारसे होती है, महाकारणशरीरको शिवोऽहं अहंकार व्यापक है और सर्ववस्तुकी साक्षी है, कर्ता है, यह शरीर सब शरीरनकी पुंजी है इसका नाश होने उपरांत चारों शरीरका स्मरण भी नहीं रहता, शरीरको सर्वज्ञान है, ब्रह्मका ज्ञान इस कारण नहीं है कि, वह आप ब्रह्म है, अपना ज्ञान अपनेको नहीं होता, स्थूल शरीर सबको दर्शाता है, सूक्ष्म शरीर प्रकृति है, कारण शरीर बीज है महाकारणशरीर भास है, कैवल्यशरीरज्ञान है, उस शरीरका नाश नहीं होता उन पांचों शरीरकी पांच अवस्था हैं उनका लक्षण कहता हूं जाग्रत् स्वप्न, सुषुप्ति तुरीया, उन्मनी । उसका भेद यह पहिले जाग्रतका लक्षण सुनो, अंतः करणपंचक पंच प्राणवायुके आधारसे पृथिवीरूपी बोझा शरीरका उठाकर चलता फिरता है और पंच विषयका भोगी होकर पंचज्ञान इंद्रिय द्वारा सर्व व्यवहार जानकर पंचकर्मेंद्रियसे क्रिया करता है, पांचों तत्त्व अपने काममें चैतन्य ज्ञानवान रहते हैं, अर्थात अंतःकरण पांचों तत्त्वमें है लय रहता है, उसको जाग्रत अवस्था कहते हैं, स्वप्नका लक्षण यह है कि, वह ही अंतःकरणपंचक पृथिवीरूपी बोझा छोडकर जलतत्त्वमें लय हो जाता है; तथा अंतःकरण पृथिवीसे विलग हो जाता है

अथवा पृथिवीकी प्रलय हो जाती है तथा नाश होकर जल हो जाती है। उस समय कल्पितसृष्टिकी रचना होती है, जैसे स्वप्नमें सृष्टिबिना पृथ्वीतत्वके बन जाती है। दश इंद्रियोंका व्यवहार नहीं होता सर्व व्यवहार कल्पनासे होता है, उसको स्वप्न अवस्था कहते हैं, सुषुप्तिका लक्षण सुनो जब पृथिवी और जलका नाश हो जाता है तब अंतःकरण पृथिवीका भारी बोझा, जलका हलका बोझा दोनोंको छोड़कर अग्नितत्वमें लय हो जाता है, अर्थात अन्तःकरण पृथिवी और जलसे जुदा होकर तेजतत्वमें रह जाता है, यहां अद्वैतरूप संकल्प रहित हो जाता है, जैसे बोझा शिरसे उतर जानेमें हमाल सुख पाता है उसी तरह अन्तःकरण पृथिवी जलका बोझा उतर जानेसे परम आनंदको प्राप्त होता है, न ब्रह्मका खोजना, न मायाका व्यवहार, न जगत्का पता न अपनी खबर ऐसी अवस्था सुषुप्तिमें हो जाती है। केवल श्वासवायु रहता है। संकल्प विकल्प जो दुःखका मूल है सो नाश हो जाता है, तीन अवस्थाका ज्ञान रहता नहीं, उसको सुषुप्ति अवस्था कहते हैं, तुरीया अवस्थाका लक्षण सुनों कि, तीनों तत्व पृथिवी जल अग्नि नाश होकर वायुमें लय हो जाते हैं, अथवा तीनोंका नाश हो जाता है, अन्तःकरणपंचक केवल वायुमें रह जाता है, सुषुप्ति अज्ञान है; तुरीयाको ज्ञान है कोई तुरीया समाधिको कहता है, कोई अर्ध निद्रा अर्ध जाग्रत्को कहता है; कोई मृतक शरीरको तुरीया कहता है यह शुद्ध

नहीं । तुरीया उसको कहते हैं जैसे कोई पुरुष सब विद्या और सत्संगको प्राप्त होवे उसका अर्थ पायकर उस ज्ञानमें विदेह हो जावे, सर्व आकाशमें प्रकाशमान सर्व जगह सहज स्वरूप भरपूर है । सर्व वस्तुकी साक्षी है; उसका नाम तुरीया अवस्था कहते हैं, अब उन्मनी अवस्था पांचवीं का लक्षण कहता हूं कि, चारो अवस्थासे विस्मृति हो जाना, आकाशरूप निर्मल निराकार शांतरूप हो जाना; सर्व भावनाका अभाव हो जाना तथा कल्पना छोडकर जैसाका तैसा हो जाना अथवा कुछ न जानना उसको उन्मनी अवस्था कहते हैं । यह अवस्था मुक्तिसमान है, अब अन्तःकरणपंचकका लक्षण कहता हूं कि, निराकार शक्ति जो घटाकाशमें व्यापक है सो प्रथम शरीरको साक्षी होकर तदाकार होता है । हम तथा मैं ज्ञान दृढ हो जाता है, पञ्च ज्ञानेन्द्रियका अनुभव जिसको होता है, उसको अन्तःकरण कहते हैं । उसके पीछे संकल्प, विकल्प, मान, अपमान, बाधा, मोक्ष, सुख, दुःख मोह; वैराग्य, शांत, भ्रम, सच्चा, झूठ; विद्या अविद्या, लो, अपरलो, जिसको होता है । ज्ञानकरके सर्व वस्तुको मानता है उसको मत कहते हैं । पीछे संकल्प कीहुई पदार्थपर चिंतवन करना अथवा गुप्तपदार्थपर ध्यान करना, उसकी चिंता करना उसको चित्त कहते हैं । जिसका चित्त शुद्ध नहीं उसका शरीर अशुद्ध है, पीछे चिंतवन की हुई पदार्थपर विवेक करना अथवा यह काम करूं, या न करूं

अच्छा होगा या बुरा होगा? यह विचार करना बुद्धिका काम है पीछे विवेक हुए पदार्थपर दृढ होकर क्रिया करना अथवा यह कार्य निश्चय करूंगा उसको अहंकार करते हैं. । यह सर्व व्यवहार अंतःकरणपञ्चकका है. ।जीवे जहांतक अच्छी तरह रहना, मरनेकी चिंता करना, सुखकी इच्छा रखना; दुखका त्रास मानना, मरे पीछे कैसे होगा ? यह सब भावना अंतः-करणको हैं.।अंतःकरण सर्व वस्तूका जानकार है और शरीर मध्ये अंतरिंद्रिय प्रधान है ।पञ्च शरीर १, पञ्च अवस्था५, पञ्च अन्तरिंद्रिय ३, पञ्चज्ञानेंद्रिय ४, पञ्च कर्मेंद्रिय ५, पञ्च विषय ६, पञ्च तत्त्व ७, पञ्चप्राण ८, यह सब विस्तार शरीरका है. जन्म मरण शरीरका होता है।जीवनभी शरीर का होता है । यह शरीर पंचतत्त्वमें मिल जाता है, पंचत तत्त्वसे उत्पन्न होता है वह ज्ञान गुप्त प्रगटका है । नाशमान नहीं होता, चौरासी लाख सृष्टिमें शरीर एक है । सबमें पंच-तत्त्वकी रचना है, पंचतत्त्व अनादि है उसको ज्ञान होता नहीं है। जब शरीर उत्पन्न होता है तब ज्ञान होता है । शरीर ब्रह्म जीव निराकार शक्ति है, जो शरीर अशक्त हो जाता है तब पंचतत्त्वमें मिलकर दूसरा शरीर उत्पन्न होता है मैंने हाथ जोडकर कहा कि, शरीरका ज्ञान बहुत उत्तम है परंतु ब्रह्मका बोध कुछ नहीं हुआ । कदाचित् यह शरीर नाशवान् न होता और आत्मा छोडकर चला न जाता तो मैं कुछबोध करता मरजानेसे कुछ उत्तम पदार्थ निराकार चैतन्यका शरीरसे

निकल जाना प्रत्यक्ष दर्शाता है. जब वह शक्ति निकल जाती है तब शरीर भयंकररूप हो जाता है, कुछ काम नहीं आता अशुद्ध नाशमान हो जाता है, नाश हुआ वह कुछ नहीं रहा, उसको ब्रह्म कहना मूर्खका ज्ञान है । जिसका शरीर नाशमान न हो, वह इस ज्ञानको प्रधान माने मेरे ज्ञानमें जो चैतन्य शरीरसे निकल जाता है वह कुछ पदार्थ होगा । उसके चले जानेसे परिवारके प्राणी शरीरको फूक देते हैं यह शरीर ब्रह्म कहना दोष और अनुचित है. कदाचित् शरीर ब्रह्म हैं तो रोग, व्याधि, चोट, चिंता, ग्लानि वृद्धपन अधेड, मूक अपंग शरीरको क्यों होता है ? धाम पुरीजाना भजन करना, पुण्यपापका विचार नहीं होना चाहिये । यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे ॥

इति अभिलाखसागर गुरु शिष्य संवाद नौवें तरंगमें आठवीं लहरी

अहं ब्रह्म विचार

आत्मा ब्रह्म है

श्रीनिराकाराय नमः ॥ मैं दूसरे महात्माके पास गया और सब हाल अपना कहा । तब महात्मागुरु बोले कि, शरीर नाशवान् है उसको ब्रह्म कहना उचित नहीं है आत्मा जो शरीरसे जुदा है घटघट व्यापक है और सर्वज्ञ है वह ब्रह्म है । क्यों कि जो ज्ञान शरीरका महात्मा

गुरुने बताया उसका संपूर्ण जाननेवाला आत्मा निज वस्तु निराला है, सांख्यशास्त्र वेदांतशास्त्र प्रमाण आत्मा ब्रह्म है, कलियुगमें अनेक ग्रंथ महात्माओंने बनाये, सबमें आत्माको ब्रह्म कहा है, जीवात्मा परमात्मा शब्दमें कुछ भेद नहीं है, अज्ञान दूर होनेसे जीवात्मा परमात्मा हो जाता है और इसके सिवाय कुछ सूक्ष्म आत्मज्ञान सर्व वेदांतका मूल कहता हूं, विचार करके सुनो बोध हो जायेगा, जो जाग्रत तेरे देखने में आता है पंचभूतरूपी विलास है, तू जहां तहां स्थिर है और शांत है, जहां तहां अन्तराल भासे है, उस पोलारमें पंचमहाभूतकी आकृति विलग विलग निराकार साकार शुभरूप तू है, तेरे प्रकाशसे तू आप आनन्द है, तेरे रूपकी कुछ उपमा नहीं, तेरी आत्मास्वरूप में चन्द्र सूर्य तारागण तीनों लोक चौदह भुवन कल्पना करनेसे भासते हैं, परस्परकी आकर्षणसे तेरे रूपके बीचमें फिरती है, और पृथिवी चंद्र सूर्य सब अन्डेके आकार हैं तथा अनेक गोल निराकारमें भासते हैं उसको अनंत ब्रह्मांड कहते हैं, उसके ऊपर सबका ठिकाना है उसपर जीवोंकी वस्ती है, सो ब्रह्मांड तथा रूपके भीतर अथवा बाहिर जो पोलाण है उस ठिकाने सम प्रकाश निर्मल वस्तु तू है, और तेरे स्वरूपके भीतर भूगोल आदिक सर्व गोल प्रकट है, उसके ऊपर सर्व जीव रमण हो रहे हैं, इस वास्ते उसे निराकार रमण करनेवाले जीवात्माको राम कहते हैं; जो सर्व जगह भरपूर और शिव आत्माके विश्रामकी जगह है, मनके भीतर बोलनेवाला सर्व इंद्रिय तू रहित

आत्मा कारणशरीर है और पंचमहाभूत तेरे आत्मारूपका क्षेत्र है । शरीर भीतर तथा बाहिर जो आकाश भर रहा है उसको अपनी जानी जगह जानता है सोही प्रकाश ज्ञानरूपी आत्मा है ऐसा स्थितरूप आकाश सोही आत्मा है, शरीरके भीतर जो आकाश व्यापक है, उसके भीतर पंचप्राणके आधारसे निराकार आत्मा रहता है, अपने इंद्रियोंसे मालुम नहीं होता, उसके लिये आकाशरूपी पोलाण भासता है बोलनेको आकाशवाणी कहते हैं तेरे स्वरूपमें माथेके भीतर दोनों नेत्रोंके बिंदुमें जो काली पीली धोली नीली लाल रंगकी कपितसृष्टि देखनेमें आती है सोही देखनेवाला ज्ञानरूपी आत्मा है, तेरे निराकाररूप आत्माको जगतकी खबर नहीं है जैसे सुषुप्ति अवस्थामें तेरी तेरेको खबर रहती नहीं और देश तथा द्वैतसे तेरा रूप न्यारा है पंच विषय और दश इंद्रिय पंच प्राण अंतःकरण पंचकको छोडकर निराकार अपने स्वरूपके ऊपर विश्राम लेनेसे निराकार स्वरूपका बोध होता है निमिषमात्र अपने निराकार रूपका चिंतवन करनेवाला आत्मज्ञानका सुख पाता है जैसे पात्रमें जल आनेसे सूर्यका प्रतिबिंब दिखाई देता है, तैसे शरीररूपी पात्रमें पंचप्राणरूपी जल आनेसे ज्ञानरूपी आत्माका अनुभव होता है और इसका ज्ञान प्राप्त होनेसे आत्मा सरीरका विवेक शुद्ध होता है, अज्ञानसे इस पंचमहाभूतके साथ तू ज्ञानरूपी आत्मा तदाकार होकर साक्षीपनेका

ज्ञान छोडकर सुख दुःख भोक्ता हो गया, तुझको ऐसा देख-नेमें आता कि, मैं सर्व कर्मका करता हूं और मैं सुख दुःखका भोक्ता हूं परन्तु विचारसे देखे तो तू पंच महाभूतके साथ साक्षी है। तू पच्चीस प्रकृतिका जानने वाला आत्मा शरीरसे न्यारा है तू जिसको जानता है वही कैसे होगा, तेरा स्वरूप इंद्रिय आदिकके देखने और विचारनेमें नहीं आता, कारण-सब विचार तेरे आत्माको है जब तू अपने स्वरूपका विचार करके निराकारमें लक्ष्य लगावेगा तब अंतः करण आदिक लय हो जावेंगे उस वक्त तुझको निर्विकल्प स्थिति प्राप्त होगी और तू नहीं रहेगा केवल निराकार आत्मा बहुत सुखी होगा शरीरके हाथ पांव टूटनेसे तू नहीं टूटेगा, जैसे खड्ग म्यानसे न्यारा है पंच विषय आदिक जगत्को जानना तथा इंद्रियोंको जानना अथवा पंचप्राण या अंतःकरणपं-चकको जानना सबको छोडकर मन स्थिर करके अपने भीतरको देखने लगेगा तो तू कौन ? वायुके जोरसे समुद्र जैसे खलबलाता है उसी प्रमाण देखनेमें आवेगा, तेरे स्वरू-पमें अनेक गोल और समुद्र हैं; जो तेरे शरीरका जाननेवाला ज्ञानरूपी आत्मा उसको खबर पडे है, उसके अथाह पानीका जमाव तथा जीवसृष्टि भासती है परन्तु वह सब निराकार तेरे स्वरूपमें केवल कल्पनामात्र बारीकप्रमाण तद्वत् हैं और तू ऐसा है कि तुझको किसीका संग नहीं, तू आप अपने स्वरूपमें शांत है, तेरे स्वरूपको पाप पुण्य पुनर्जन्म स्वर्ग नरकमें डालनेवाला अज्ञान करके मैं मैं ऐसी मनमें कल्पना

करनेवाला जो अभिमान सो मिथ्या है तेरे निराकार स्वरूपको कुछ पीडा नहीं कर सकता तू गुण दोषमें लेपायमान नहीं होगा सुषुप्ति अवस्था अज्ञानरूप है,तू ज्ञानरूप है, जैसे जलके ऊपर कुमुदिनी दूर होनेसे निर्मल जल देखनेमें आता है,उसी प्रमाण अज्ञानरूपी कुमुदिनी दूर होनेसे निर्मलज्ञानरूपी जल देखनेमें आता है उसी ज्ञानको मैं निराकार शांत रूप आत्मा हूं ऐसी स्थिति प्राप्त होती है, उसको तुरीया अवस्था कहते हैं; तू ज्ञानरूपी आत्मा निर्विकल्प है, तेरे निराकार रूपमें पंचमहाभूतकी सृष्टि मृगजलसमान भासती है, तेरे निराकाररूप विना कोई जगह ब्रह्मांडमें नहीं है जैसे जलमें प्रतिबिंब हिलनेसे आदमी हिलता हुआ देख पडता है तैसे तू निराकार शांतरूप आत्मा इंद्रिय प्राण मन की कल्पनाको भ्रम होनेसे अपनी कल्पना जानता है और अपने निराकाररूपको भूलकर पंच महाभूतके पिंजरोंको अपना रूप जानता है, साक्षीपनेका ज्ञान छोड़कर तदाकार साक्षीपनेका ज्ञान दृढ होवे तो पंच विषय दश इंद्रिय पंच प्राण पंच अंतःकरणकी बाधा होवे नहीं, जैसे कोई मारा जाता है तो उसके साक्षीको चोट नहीं लगती, साक्षीसे तदाकार हो जाना यही माया भूल अज्ञान का मूल है उसका मूल मोह है और मोह आकाशकी प्रकृति है शरीर पात्र है उसमें पंच प्राण जल है और पंच विषय लहर है, उसके भीतर पंच ज्ञान इंद्रियकी शक्तितदा-

कार है इस कारण अंतःकरणपंचकको अपना प्रतिबिंब दिखाई देता है, ज्ञानरूपी आतमाको अनुभव होता है, उस अनुभवसे अज्ञान होकर अपना रूप जानकर प्रतिबिंबको पकड लेता है, अपने शुद्ध निराकारको भूल जाता है, इस कारण सुख दुःख होता है, शरीरके संग नानासंकट सहता है, यह भूल चैतन्यको है, जब चैतन्य अज्ञान होजावे तो ज्ञान कहांसे आवे ? इस कारण आत्मा अशक्त हो गया और जीवपदवी पाया और वासना दृढ होनेसे जन्म मरण भी होता है चौरासी भोगना पडता है, वही अज्ञानरूपी प्रतिबिंब संसारीमोहको नहीं छोडता. इस कारण जीवपदवी बनी रहती है। आत्माज्ञान प्राप्त हो जानेपर जन्म मरण नहीं होता, शरीरका नाश हो जाता है। जैसे जलसे भरा हुआ पात्र फूट जानेमें सूर्य नाश नहीं होता इसी तरह आत्माका जन्म मरण नहीं होता, अंतःकरणके सुखदुःखसे तुझको कुछ वास्ता नहीं जैसे प्रतिबिंब जुदा है, सुषुप्ति अवस्थामें अंतःकरण पंचक वायुशरीरमें लय हो जाता है, इस कारण सुखदुःख रहता नहीं,जाग्रत स्वप्नमें अंतःकरणपंचकको सब सुख दुःख होता है, निराकार आत्मा कदाचित् तदा कार शरीरकान हो जावे, केवल साक्षीका ज्ञान दृढ़ रक्खे तो उसको सुख दुःख न होवे, मूर्च्छाकालमें अंतःकरण लय हो जाता है उसको मुक्ति कोई नहीं कहेगा, जीवन्मुक्तिका स्वरूप ऐसा है की, स्थूल सूक्ष्म सरीरसे सर्व व्यवहार जगत्‌का करता है और अन्तः करणमें अपने निराकाररूप आत्माको

जुदा जाने और अहंरूपी अहंकारको झूठा समझे, रोमसे अस्थितक जो शरीर है उसमें अहंपदार्थ कुछ नहीं है। कदाचित् ऐसा ज्ञान हो कि,मैं आत्मा शरीरका धनी हूं तो विचारकी बात है कि, उत्पन्न अवस्थासे मृतक अवस्थातक यावत् व्यवहार शरीरका अपने आधीन नहीं है, बाल वृद्ध तरुण होना, रोग आदिक होना, निद्रा मैथुन क्षुधा तृषा मल मूत्र करना, सर्व प्रकृति शरीरकी मैं मैंके आधीन नहीं है, हम चाहते हैं कि, क्षुधा तृषा जाती रहे परंतु नित्य होती है। इस सिद्धांतमें हम शरीरके धनी नहीं हुए। शरीरको अपना मानना मूर्खपना है ऐसी वस्तुको अपना रूप जानना विना अर्थ उसके सुख दुःखमें आप सुखी दुःखी होना कैसी बडी मूर्खता है, ऐसे मूर्खको ज्ञान होना असंभव है, आत्मा सर्व जगत्का एक है, इसका बोध अनेक मतसे है और प्रत्यक्ष भी निद्रा मैथुन आहार हर्ष भय ये ही पांचों प्रकृती सर्वजीव मात्राको है, आत्मज्ञानी को देखनेमें सब आता है, आत्मज्ञानीको अपने आत्माकी और सर्व आत्माकी खबर रहती है और सर्व आत्माको अपना आत्मा जानता है और सर्वजगह सम भरपूर है और रजोगुण सत्त्वगुण तमो गुण सर्व आत्मामें एक रूपसे दर्शाता है, शरीर तथा प्रकृति दोनोंको छोडकर जब अपने रूपको देखता है तब वृत्तिका नाश हो जाता है कोई भी संकल्प तथा भावना रहती नहीं। उसी निराकार आत्माको बडी शांति प्राप्त होती है, वह सुख मुखसे कहनेमें

आता नहीं और तू मुक्त है तथा बंधमें है; ये दोनों निराकार आत्मामें नहीं है। अपने रूपकी पहिचान बहुत कठिन है, परंतु विचारसे कुछ कठिन नहीं है, जैसे कोई आदमी हठ करके कहता है कि "चाहे हमारा प्राण जावे, परंतु यह काम नहीं करेंगे" इस बातसे सिद्ध होता है कि, अपना रूप प्राणसे जुदा है अपना रूप क्या है ? यह ज्ञान नहीं है, प्राण जाने पीछे कैसे रहूंगा ? इस इस अंधकारका नाश होनेके वास्ते सिवाय गुरुकृपाके कोई यत्न नहीं। आत्मज्ञानीको अद्वैतरूप जगत दरसाता है और प्रत्यक्ष जगत्का मूल पंचतत्त्वसे है और पचतत्त्व एकतत्त्वसे है उत्पन्न पालन संहार पानीका बुदबुदा तथा लहरीके समान है। आत्माकी एकता सर्व जगतमें प्रसिद्ध है। जैसे-परमात्मा सर्व जगत्की जड चैतन्यमें एकरूपसे व्यापक है। उसी प्रमाण आत्मा शरीरमें व्यापक है, पिंड ब्रह्मांडमें एकता है, जिसको शरीरमें आत्माका अनुभव होवे उसको ब्रह्मांडमें परमात्माका अनुभव हठ करके होवे, घटउपाधिसे अनेक दरसाता है, और एक दूसरेसे वैर रखता है, किसीको अपना किसीको पराया जानता है, अपनेसे प्रीति पराये से वैर। अपने लडकेका मलमूत्र राजा प्रजा सब उठाता है दूसरेके उठावे भंगी कहलावे, अपना साला या साली गाली देते हैं तो अंतःकरणको सुख प्राप्त होता है दूसरा देवे तो दुःख होवे, यह अज्ञान छूट जावे, सर्व आत्मा एक दरसावे आत्मज्ञानीको वैर प्रीति नहीं होना चाहिये, आत्मज्ञानी विदेह पदवीको प्राप्त हो सकता है, विदेह उसको

कहते हैं जिसको देहका भान न होवे, आत्मा सुषुप्तिरूप है पापसंबन्ध कर्म ज्ञानसे होता है, ज्ञानका अर्थ जो बुद्धि में आवे आत्माको ज्ञान, बुद्धि कुछ नहीं है, अंतःकरण आत्माका सूक्ष्म अभ्यास है उस अभ्याससे अंतःकरण चैतन्य है। सर्व व्यवहार शरीरका अंतःकरणसे होता है, पंचविकारके सत्संगसे निराकाररूपका ज्ञान भूल कर विषयानंदज्ञानमें लिपायमान होकर इच्छानन्दके वास्ते नाना प्रकारका दुःख उठाता है, कोई योगानन्दमें ब्रह्मानन्दको ध्याता है परन्तु आत्मज्ञान प्राप्त हुए बिना परमानंद नहीं होता, शरीरसे आत्मा जुदा होकर कुछ करे या सुख दुःख पावे इसका अनुभव सबको नहीं है, जानना चाहिये कि, स्वप्न अवस्थामें जो सर्वव्यवहार जाग्रत् समान होता है आत्मासे होता है शरीरसे कुछ कार्य नहीं, आत्मा निराकार है, परन्तु परमात्माके समान साकार भी है, यह पंचमहाभूतका पूतला जो मूत्रका स्वरूप है क्षणमात्रमें संयोग पाकर नाश हो जाता है अपने देखते लाखों नित्य नाशवान् होते हैं, सौ बरसके भीतर कोई समय संयोगाधीन अपना पूतला निश्चय करके नष्ट होगा, इसमें कुछ भ्रम करने या अमर होनेका आसरा करना मूर्खका काम है और पुतला नष्ट होने पीछे जो शरीरका व्यवहार होता है सबको प्रगट है, जैसे घटमें जल भरा है और सूर्यका प्रकाश उसमें दरसाता है संयोग पाकर घट फूट गया, प्रकाश लोप हो गया; ऐसे पूतलेकी प्रीतिमें नाना प्रकारका दुःख उठाना

मोह भ्रमका कारण है; कोई पुराणका ऐसा मत है कि, प्रीति दृढ होनेसे पुनर्जन्म होता है और वैराग्य धारण होनेसे तू आत्मा सर्ववायुमें मिलकर परमात्मास्वरूप हो जावेगा, राजा जनकके गुरु करनेके वास्ते जब सभा किया था, तब सब ऋषिमुनि आये, सबके पीछे अष्टवक्र ऋषि आये; उनको आठ अंगसे टेढा देखकर सारी सभा हँसी,उनको क्रोध आया सबको चमार कह दिया; विश्वामित्रजीने चमार कहनेका कारण पूछा, अष्टावक्रने हँसनेका कारण पूछा, विश्वामित्रने उत्तर दिया कि तुम्हारे स्वरूपसे हास्य रस आप उत्पन्न होता है, अष्टावक्रने कहा कि, हमारा रूप सबके समान है हमारा चमडा टेढा है, तुम सबने हमको नहीं पहिचाना, चमडा पहि-चानना तो चमारका कर्म है,सब कोई चुप हो रहे,कपिल भग-वान्‌ने देवहूतिको यही ज्ञान दिया,श्रीकृष्ण भगवान्‌ने अर्जुन को गीतामें यही ज्ञान दिया, वसिष्ठजीने रामचंद्रको यही ज्ञान दिया यह ज्ञान प्राप्त होना भाग्यके आधीन है इसका सुख कहने योग्य नहीं है, आत्मज्ञानी जाने जबतक शरीरका संबंध है तबतक उसको आत्मा कहना चाहिये पीछे इसके त्यागमें परमात्मा प्रसिद्ध है, जो दृष्टांत दासबोधमें कहा गया है देखो। आत्मा ब्रह्म ऐसा सबका मत है व्यास भगवानने वेदांतमें आत्माको ब्रह्म कहा, तुमको भी उसे प्रमाण मानना चाहिये और शांति करना चाहिये,भ्रम करना निरर्थक दुःख है, मैंने हाथ जोडकर कहा कि, आपका आत्मज्ञान वेदांतका मूल है कोई आचार्य कवि पंडितने

ऐसा निर्मूल नहीं कहा, मेरेको आत्माका ज्ञान संपूर्ण हो गया, परन्तु ब्रह्मकी प्राप्ति नहीं हुई, जो शंका मेरे मनमें है वह कहता हूं--इस सिद्धांतमें आत्माका लक्षण पांच दरसाया प्रथम घटघटव्यापक है, उसमें यह शंका है कि, अपने घटकी उत्पत्तिका भेद जो संपूर्ण देखनेमें आया तो आत्माका पता न पाया, जीव और शरीर दोनों प्रधान हैं, दोनोंकी उत्पत्तिका भेद यह है कि, अनादि सृष्टिप्रमाण स्त्री पुरुषका संयोग होकर मैथुन होता है उस मैथुनमें रज वीर्य दोनों वायुके साथ सर्व शरीरसे निकलता है स्त्रीके गर्भस्थान में दोनों वायुके जोरसे टकराता है और एक होकर चक्कर खाता है वे दोनों वायु एक होकर उस रज वीर्यके गोलमें बंद हो जाती है, वायुका जीव रज वीर्यका शरीर उत्पन्न होता है, स्त्रीका बल विशेष होनेसे पुत्री, पुरुषका बल विशेष होनेसे पुत्र, दोनों समान होनेसे नपुंसक पैदा होता है, नवमासमें जो ऋतुका रुधिर निकलता है उसका शरीर बनता है वही वायु सर्व शरीरमें व्यापक हो जाता है स्त्री पुरुषकी वायु बलवान् होकर संपूर्ण बंद हो जावे तो बच्चेकी आयु सौ बरसकी होवेगी, कदाचित् कम रहेगी तो कमी प्रमाण जीता रहेगा, घडी और सायत स्त्री पुरुषका चित्त अच्छा होगा, जिसके ऊपर ध्यान रहेगा वैसी सूरत शकल होगी; यह सिद्धांत शरीर और जीवका है उसके सिवाय आत्मा कौन पदार्थ है जो ब्रह्म

समान होकर प्रगट नहीं होता । घट उत्पत्तिके पहिले आत्मा का कुछ अनुभव नहीं और घटनाश होने उपरांत भी कुछ पता नहीं, आत्मा कदाचित् कुछ होता तो घटसे जुदा भी कुछ अनुभव होता, दूसरे अद्वैत है उसमें यह शंका है कि, राम कृष्ण परशुराम आदिक अवतारोंने दैत्योंको मारा सिंह आदिक अनेक जानवर नित्य जीवका आहार करते हैं एक रोता है, एक हँसता है, एक पूजनीय है, एक म्लेच्छ है एक नरकमें जाता है, एक सुर लोकमें जाता है, धर्मराज यमराज दो नाम क्यों हुए ! एक गुरु है एक चेला है अद्वैत का ज्ञान नहीं हो सकता, अद्वैत कहनेवाला या समझने, वाला अद्वैतसे न्यारा होगा, आत्मा परमात्मा जब दो होवे तब सर्वव्यवहार शुद्ध होवे, स्त्री मातामें द्वैतका विचार सिद्ध होगा, विष्ठा व्यंजन एक नहीं हो सकता । गौ ब्राह्मण बकरा मेंढा एक जानना पाप है तीसरे सर्वत्र है, उसमें यह शंका है कि, जहांतक दृष्टि जाती है उसके उपरांत आत्माको कुछ ज्ञान नहीं होता । घरमें चोरी हो जाती है जानवर आदमी भाग जाता है आत्माको जान नहीं पडता, कि, वह वस्तु कहां है और नरक स्वर्ग पाप पुण्यमें एक पदार्थ नहीं होगा सर्वज्ञ उसको कहना चाहिये, जिसको तीनों लोक चौदह भुवन घर समान दरसावे, स्त्री अर्धांगी है उसका भी हाल आ-त्माको नहीं मालूम होता, चौथे ज्ञानरूपी, उसमें यह शंका है कि, आत्माको अपना हाल नहीं मालूम होता कि, मैं

कौन कहांसे आया,कहां जाऊंगा? इडा पिंगला सुषुम्नानाडी अपने शरीरमें बदलती है आत्माको नहीं मालूम होता। पलक अपने आंखकी खुलती बन्द होती है, आत्माको नहीं मालूम होता, सृष्टिमें चौरासी लाख योनी हैं। सिवाय मनुष्य योनिके और सब अज्ञान दरसाते हैं, मनुष्ययोनिमें भी लाखोंमें कोई ज्ञानी दरसाता हैं, वह भी ज्ञान इंद्रियके अनुभव प्रमाण जानता है बुद्धिज्ञान एक अर्थ है, पांचवे अविनाशी है; उसमें यह शंका है कि, जिस शरीरका नाश हो जाता है उसका आत्मा पीछे अनुभवमें नहीं आता, कोई शरीर अविनाशी नहीं है, शरीरसे रहित निराकार पदार्थ अनुमान न होगा और निराकारपदार्थ झूंठापद बराबर है, जिसके आकार नहीं उसका आत्मा कहां रहेगा निर्गुण है तो चार वेद छः शास्त्र अठारह पुराणमें किसका गुण गाया है। निराकार है तो चौबीस अवतार किसके हुए, लाखों भक्तोंको दर्शन कौन देता है। जाति धर्म तीर्थयात्रा,ब्रह्मभोज, ज्ञान, यज्ञ, पाप, पुण्य, गया काशी, शादी, क्रिया कर्म इस ज्ञानमें सब मिथ्या होता है। देवता ऋषिमुनि साधु सिद्ध सब निरर्थक हो जावेंगे, आत्मा ब्रह्म होता तो शरीरका मालिक वही है; अकर्म कोई न करता, सबको शांतपद प्राप्त होता सब स्वर्गमें जाते, जान बूझकर नरकमें कोई न जाता, ऐसी अनेक शंका आत्मा ब्रह्म होनेमें उत्पन्न होती हैं विद्वान् जान लेवेंगे, सिवाय हिंदुस्थानके दुनियामें बहुत

मुल्क हैं उनका मत देखो तो आत्माका नामभी कोई नहीं जानता और पुनर्जन्मभी जीवका नहीं होता, मनसूरने 'अन लहक्क' कहा उसको शूलीपर चढाया, अपना आत्मा ब्रह्म है तो दिन रात कौन करता है ? और पानी पत्थर कौन बर-साता है ? आत्माके शुभ अशुभ कर्मका फल कौन देता है और अपना आत्मा अनादि नहीं है उसको किसने बनाया और चारमहीने वर्षा और चार महीने गरम और चार मही-ने सरद किसके हुकुमसे होता है ? मेरे ज्ञानमें आत्मा पर-मात्मा एक नहीं है, कदाचित् कोई अज्ञानी एक कहे तो परमात्मा कहनेवाला कौन है ? यह सुनकर महात्मा गुरु बोले कि, आजतक सब ग्रंथकर्ताका मत ऐसा रहा कि, आत्मा ब्रह्म है, मैं उस प्रमाण तुमको उपदेश किया; अब तुम्हारे ज्ञानमें नहीं आता तो विचार करो, मेरेको इसके सिवाय विशेष ज्ञान नहीं है कि, मैं तुम्हारा बोध करूं ॥

इति अभिलाखसागर गुरु शिष्य संवाद नौवें तरंगमें नववीं लहरी

इति नौवां तरंग ॥ ९ ॥

दशवां तरंग प्रारंभ.

नाम–ब्रह्म विचार

नाम ब्रह्म है

श्रीनिरंजनाय नमः ॥ मैं आत्मा खडन हो जानेमें बहुत बहुत सोचमान हुआ, ब्रह्मप्राप्तिकी आस निरास हो गई अब

उदास होकर एक पर्वतपर चला गया जिसको वहांके रहनेवाले कैलास कहते थे, उसपर जाकर क्या चमत्कार देखा कि एक बडका झाड बहुत बडा है, उसके नीचे देखा चौतरा श्वेत पाषाणका बना हुवा है, उसपर एक महात्मा सदाशिव शंकर महादेव समान विराजमान हैं, अनेक चेला अधिकारी अपने अपने काममें लगे हैं, धूनी अखंड होमके समान जल रही है, गांजा चरसके धुएंकी धूम हो रही है, भांगकी कुंढी सोंटा खटक रहा है; व्याघ्रांबर मृग छालापर बहुत संत महात्मा बैठे सत्संग कर रहे हैं, मैं उनको सदाशिव समझा परंतु महादेव वह नहीं थे, उनके ऊपर संपूर्ण कृपा शंकरकी रही, मैं उनके दर्शन पाकर बहुत आनंदी हुआ और अष्टांग दंडवत् करके उनके पास गया और सब हाल अपना कहा। तब महात्मा गुरु हँसकर बोले कि, बडे आश्चर्यकी बात है कि, दत्तात्रेयने चौबीस गुरु करके अपना बोध कर लिया; परंतु तुमको पैंतालीस गुरुसे बोध न हुवा। सब महात्मा गुरु मूर्ख नहीं थे जिसने जो सिद्धांत कहा सो सत्य कहा, तुम्हारी मूर्खता अज्ञानता सिद्ध होती है, अब मैं तुमको सच्चा ब्रह्म जो महात्माओंने गुप्त रक्खा है उपदेश करूंगा और सर्वशंका और भ्रमणा तुम्हारी नाश कर देऊंगा, पीछे जब रत्तीप्रमाण शंका न रहे और संपूर्ण पंच ज्ञानेन्द्रियसे निश्चय हो जावे तब बोध करना। ब्रह्म निर्गुण निराकार निरंजन निरामय निर्भय निर्वैर नाम है, शरीर जगत् है, आत्मा

माया है, ब्रह्मांडमें जगत माया ब्रह्म तीन पदार्थ प्रधान हैं। पिंडमें शरीर आत्मानाम जो पिण्डमें वह ब्रह्मांडमें यह सबका मत है, यह पिंड ब्रह्मांडके आकार है। जिसने पिंडका ज्ञान पाया ब्रह्मांडका निश्चय करके पाया और ब्रह्मशब्द भी नाम कोई पदार्थ ब्रह्मांडमें नाम रहित नहीं है, रूपका नाश हो जाता है। नामका नहीं होता।ब्रह्मका ज्ञान बहुत दुर्लभ और कठिन है। इस प्रकारका विचार ब्रह्मका आजतक नहीं हुआ पहिलेके आचार्य ऋषि मुनि पंडितने जो ग्रंथ बनाया, दूसरे ग्रंथके आधारसे बनाया, अनुभव करके नहीं बनाया, इस कारण ब्रह्मका निश्चय आजतक प्रगट नहीं हुआ। अब तुमने इस झगडेका अंत किया।इस कारण ब्रह्मकाभी अंत हो गया। नामके ऊपर कोई पदार्थ बडा नहीं है, पंचतत्त्वसे शरीर की उत्पत्ति है, और पंचतत्त्व निराकारकी शक्तिसे जीवकी उत्पत्ति है, और पंचतत्त्वके मूलसे नामकी उत्पत्ति है, पंच तत्त्वका मूल शून्य आकार सिद्ध होता है। शरीरको जगत् इस सिद्धांतसे कहना चाहिये कि, नाशवान् है।जीवको माया इस कारण कहना चाहिये कि,पुनर्जन्म होता है। नामको ब्रह्म इस सिद्धांतसे कहना चाहिये कि, शरीर और जीव नाश होते उपरांत वह जैसाका तैसा बना रहता है। जैसे जगत्का नाश होने उपरात ब्रह्म बना रहता है उसी तरह नामभी बना रहता है। विचारसे जगत् और मायाका धनी ब्रह्म अनुमान होता है वैसे शरीर और जीवका धनी नाम प्रत्यक्ष दर्शाता है। ज्योतिष आदिक गुप्त विद्या जाननेवाले नामके

ऊपरसे शरीर जीवका भूत भविष्य वर्तमान कह देते हैं, पुरश्चरण योग अनुष्ठान सब नामके ऊपर होता है, विवाह आदिकमें नाम प्रधान है, शरीर और जीवका भेद नहीं देखा जाता, बडे बडे राजा प्रजा बादशाह महाजन शूर वीर ऋषि मुनि महात्मा देवता दैत्य नामकी बडाई चाहते हैं, इसकी शांति जीवक्षत्रको नहीं है नामके वास्ते शरीर जीव दोनों नष्ट कर देते हैं, बडा छोटा चारों वर्ण नामको डरता है, दान पुण्य विवाह मरौनी सब नामके वास्ते हैं, बाग बावडी कुँवा तालाब स्थान धर्मशाला देवल सब नामके वास्ते हैं हाथी घोडा फौज खजाना मुल्क राज परिवार धन सब नामके वास्ते हैं, मेरे ज्ञानमें निद्रा मैथुन आहार तीन प्रकृतिके सिवाय और व्यवहार जो संसारमें हैं सब नामके वास्ते हैं, नामके प्रशंसासे शरीर प्रसन्न होता है । निंदासे मलीन होता है; यावत् व्यवहार जगत्का यह शरीरका नामके आधारसे होता है, और भजन कीर्तन स्मरण सबमें नाम प्रधान है, मंत्र स्तोत्र गायत्री संध्या पूजा सब नामका आधार है, तुलसीदासकी चौपाईका पद ऐसे हैं-"राम न सकें नाम गुण गाई" उसके सिवाय गुरु नानकशाह साहबने सत्यनामका ब्रह्म जाना और उसीको सत्य माना । अनेक आचार्य वेदांत ग्रन्थवाले कलियुगमें हुए सबन नाम प्रधान किया और शास्त्रका मत ऐसा भी है कि, कलियुगमें सिवाय नामके

और अनेक प्रकारकी तपस्या निरर्थक है, केवल नाम मुक्ति दाता है और जो कोई तीनों कालमें कुछ पाया, नामसे पाया चोर शरीरसे चोरी करता है ग्रंथमें उसका नाम प्रगट होता है । आठ प्रकारका तंत्र मंत्र यंत्र सब नामपर होता है, विचारसे देखो तो पदार्थका मूल नाम अनुमान होता है, नाममें दो अक्षर 'ना' और 'म' जिसका अर्थ-मैं नहीं, वही उत्पत्ति नाश संसारका काम है । कभी है कभी नहीं अनुलोम करनेसे मान होता है मान नामका है, शरीर जीवका मान नहीं है; यह प्रत्यक्ष ज्ञात है । और बहुत सिद्धांत से ब्रह्मका स्वरूप नाम सिद्ध होता है आगेके महात्मा और ऋषियोंने इस सिद्धांतको प्रगट नहीं किया । कारण भक्ति-मार्ग जगत्से कम हो जावेगा ।तथा संपूर्ण जाता रहेगा निर्गुण निरञ्जन निराकार शब्द संसारमें नाम है । कदाचित् ऐसी शंका कोई करे कि, पदार्थ प्रथम होता है, नाम पीछे होता है यह ज्ञान मूर्खका है । कोई पदार्थ नवा उत्पन्न नहीं होता चौरासी लाखयोनिके सिवाय नई एक कीडी भी उत्पन्न नहीं होती। सर्व नाम आदिको है, नाम मनुष्ययोनिमें है और किसी योनिमें नहीं; वह भी पंडित लोग नक्षत्र प्रमाण रख देते हैं।शेषजी दो हजार जिह्वामे सदा नाम लेते हैं, अंत नहीं पाया । नाम अधीन शरीर प्रत्यक्ष दरशाता है कोई जान-वरका नाम रक्खो तो वह बुलानेसे आता है, अनाम उसको कहते हैं । नाम सबको है, नामके नाम नहीं है, विचार करके

देखो नामकी महिमा ऐसी अगम अपार है कि, कोई नहीं कह सकता, नामका जपना भक्तिमार्ग है, नामका अनुभव लेना ज्ञानमार्ग है। भक्तिमार्ग सहज है,और सबको सुगम है, नामका अनुभव होना कठिन है इस अनुभवके वास्ते गुरु ऐसा होना चाहिये कि, जो सर्वज्ञ ज्ञानको जानता हो और अनुभव पाया हो। शिष्यभी अधिकारी होना चाहिये, गुरु-सेवक हो ऐसा संयोग प्रारब्धयोग जब होवे मनोरथ सिद्ध हो जावे। मैंने हाथ जोडकर कहा कि, आपका ज्ञान ब्रह्म-प्राप्तिकी खान है, ऐसा निर्मल शुद्ध विचार नाम ब्रह्मका कोई नहीं जानता। जैसे गुरुकी खोजना आपने उपदेश किया वैसे तथा उससे हजार गुण जादा आप हैं और जैसे शिष्यकी खोजना उपदेश हुआ उससे कुछ जादा दास भी है, यह संयोग प्रारब्धके योगसे बहुत अच्छा मिला है और जो आप विचार करेंगे वह जरूर होगा; पैंतालीस महात्मा, गुरुका उपदेश हो चुका, जो महात्मा ब्रह्मका लक्षण कहता है वह सुनकर परम आनंद हो जाता है परन्तु जब विचार करके शंका की जाती है तब वे मिथ्या हो जाते हैं आपने नामको ब्रह्म कहा और बहुत प्रकारका दृष्टांत और बोध दिया परंतु खंडन होनेके पीछे मिथ्या हो जावेगा। आप लोग बात जानते हैं, बातका भेद नहीं जानते, नाम शब्द स्वतःनहीं है रूप आधीन है जैसे परमेश्वरका नाम जपो विद्वान्विचार करेंगे

मेरा नाम घरमें और था, सरकारमें और था, अब और है नाम चिन्ह जैसे पलटनवालोंका नाम दूसरा होता है और अक्षर अधीन है, कदाचित् अक्षर न होवे तो नाम या कोई शब्द उच्चारण न होवे, छोटी जातवाले लडका लडकीका नाम अविचारसे रखते हैं, कोई नाम दुष्ट है, कोई सज्जन है नाम कुछ पदार्थ नहीं है, नामका कर्ता पंडित अथवा मा बाप होते हैं, उसमें ब्रह्मका कर्ता कोई नहीं होता, बडे बडेका नाम डूब जाता है नाममें बट्टा लगता है, नामकी निंदा होती है, जिस योनिमें नाम नहीं है उसमें ब्रह्मका अनुभव किस प्रकारसे होगा ? जो मनुष्य विद्याके अधिकारी हैं उनके सत्संगमें नामकी चर्चा है नामको ब्रह्म कहना अपराध है तब महात्मा गुरु बोले कि, ऐसा झगडा ब्रह्मज्ञानका देखनेमें नहीं आया और सब ग्रन्थ वेदांतके सरिता समान हैं यह अभिलाखसागर महा सिंधु है इसके पार जाना कठिनदुर्गम है, मेरेको दृढ ज्ञान हो गया था कि, मैं तत्त्वपदको जानता हूं, वह ज्ञान आज जाता रहा, तुम्हारे विचारसे नाम ब्रह्म नहीं है और यथार्थमें अक्षर आधीन है परन्तु एक उपदेश करता हूं कि, यहांसे थोडी दूरपर आगे एक पर्वत है तुमको रास्तेमें मिलेगा उसपर एक महात्मा सिद्ध जिनके पास देवलोकसे देवता आते हैं वह विराजमान है, कदाचित् उनकी कृपा तुम्हारे ऊपर होवेगी तो तुम्हारा सब भ्रम दूर हो जावेगा ॥

इति अभिलाखसागर गुरु शिष्य संवाद दशवें तरंगमें पहली लहरी

प्रत्यक्ष ब्रह्म विचार

प्रत्यक्ष दर्शन हुआ

श्रीहनुमते नमः ॥ जब नाम ब्रह्म भी खंडन हो गया तब बडी चिंता हुई कि, सारी उमरका परिश्रम मिथ्या हुआ दुनियामें कोई उद्यम करके पडे रहते, धनपरिवार भोगका सुख प्राप्त होता, ब्रह्मकी खोजनामें बूढे हो गये, अब ब्रह्ममें भ्रमका ज्ञान प्राप्त हुआ, ऐसी ग्लानि करके चला जाता था कि, उसी पर्वतपर कुछ दूरसे धूम नजर आया । मैं वहां गया तो बहुत अच्छा एक बंगला रंगीन पत्थरका बना हुआ है, उसमें पलंग चांदीका बहुत मनोहर बिछा हुआ है, बहुत भक्त लोग सेवामें बैठे हैं । स्वामीजी विष्णुस्वरूप विराजमान हैं । दश पांच चेला अधिकारी अपने२काममें लगे थे, मैंने साष्टांग दंडवत् किया, महात्मागुरुने बडी कृपासे मेरा हाल पूछा।मैंने सब हाल अपना कहा । तब महात्मा गुरु बोले कि नाम ब्रह्म जरूर है, परंतु यह काम जल्दीका नहीं है बहुत काल सत्संग होगा तब तुम्हारी शांति होगी, वह महात्मा गुरु जिनने नामको ब्रह्म कहा था हमारे गुरु भाई हैं;शंका समाधान करना सिद्धका काम है पहिले तुम इस पहाडपर एकान्तमें एक स्थान अपने रहनेके वास्ते बनाओ और अपना चित्त एकाग्र करके उसमें रहो पीछे जैसा हम उपदेश करेंगे वैसा करना । मैं महात्मा गुरुकी आज्ञानुसार एक फूसका बंगला उसी पहाडपर अच्छे मौकेसें एकांतसत्संग योग्य बन-

बाया; पचास रुपैया उसमें खर्च हुवा, महात्मा गुरुने अपने पाससे दिया मैं उस स्थानमें आनंदसे भजन करता रहा, महात्मा गुरु नित्य आठ बजे दिनको आवें, बारह बजे तक मुझको कुछ उपदेश करें पीछे रातको आठ बजे आवें बारह बजे राततक ज्ञान ध्यान बतावें, छःमास इसी प्रकार नित्य सत्संग रहा, जो महात्मा गुरुने तेरह प्रश्न किये वे सूक्ष्म कहता हूं, पहिला प्रश्न किया कि ब्रह्म निराकार अथवा साकार जिसको तू जानता है वह क्या पदार्थ है और तू जो चाहता है वह कौन है, दोनोंका तत्त्वभेद जैसा तुम्हारे मनमें आवे सो कहो। मैंने हाथ जोडकर कहा कि, ब्रह्मका स्वरूप कुछ नहीं है और मेरे स्वरूपका भी कुछ पता नहीं है, निश्चय करके दोनों नाम प्रसिद्ध हैं, यामें वह सिद्ध होता है इसका भेद कठिन है, मैं और ब्रह्म दोनों नाम हैं दूसरा प्रश्न यह किया कि-जब तू गर्भमें रहा तथा पैदा हुआ या बालक रहा उस समय कैसा रहा और अब कैसा है ? मैंने कहा कि, जब गर्भमें था तब कुछ नहीं जाना।पैदा हुआ तो बच्चा अज्ञान रहा. जब नाम हुआ तो मैं अभिलाखदास हो गया अब मैं नाम हूं ऐसा सिद्ध होता है, तीसरा प्रश्न यह किया कि जो कोई किसको पुकारता है तो वह बोलता है दोनोंमें जो शब्द उच्चारण हुवा उसका भेद कहो, मैंने कहा कि रामदासने श्यामसुंदरदासको पुकारा उसने हां कहा, यह शब्द उच्चारणका भेद हुवा, महात्मागुरु बोले कि, श्यामसुंदरदास नाम

है या स्वरूप है, मैंने कहा नाम है तब महात्मा गुरु बोले कि, नामको हां कहने की सामर्थ्य नहीं है, मैंने कहा कि स्वरूप नाम आधीन है और स्वरूपको नामका ज्ञान है, चौथा प्रश्न यह किया कि-एक पुरुषको तू पहिचानता है, नाम उसका नहीं जानता दूसरे पुरुषका नाम जानता है, स्वरूपका पहिचान नहीं, कदाचित् दोनों अपनेसे बिछड जावें तो किसको ढूंढ सकता है ? मैंने कहा कि, जिसका नाम जानता हूँ उसको ढूँढ सकता हूं, अनामकी खोजना नहीं हो सकती, पांचवां प्रश्न यह किया कि कोई कर्जा लेनेवाला रुपैया लेवे और कागद लिख देवे उसपर अपनी तसबीर बनावे तथा अपने शरीरका रुधिर उसपर छिडक देवे तो कागद पक्का होवे या नहीं ? मैंने कहा जब नाम उसपर लिखा जावेगा तब पक्का होगा, कचेरी सरकारमें नाम प्रधान है, छठवां प्रश्न यह किया कि-मानुषयोनि और पशुयोनिमें क्या भेद है ? अच्छी तरह विचार करके कहो मैंने विचारसे देखा तो निद्रा मैथुन आहार हर्ष भय प्रकृति उत्पत्ति जीवन मरण दोनोंको समान है, मैथुन सृष्टिसे दोनोंकी उत्पत्ति है केवल यह भेद है कि, जानवरको नाम नहीं है, आदमीको नाम है और सब कार्रवाई व्यवहार बराबर हैं दोनोंमें नामका भेद है, महात्मा गुरुसे यह विचार कह दिया कि, पशुयोनि और मानुष योनिमें नामका भेद है । सातवां प्रश्न यह किया कि जो कर्म शरीर आत्मासे होता है उसका फल मरने उपरांत

कौन भोगता है ? नेकनामी बदनामी पीछे उस कर्मके कौन पाता है ? मैंने कहा कि, सब नामको होता है, अग्नि वायु निराकारमें लय हो जाती है, जल पृथ्वी नष्ट होकर मिल जाता है, नाम बना रहता है, नेकनामी बदनामी नरक स्वर्ग नामको होता है । आठवां प्रश्न यह किया कि—जो यंत्र मंत्र तन्त्रसे किसीको वश करता है, या शत्रु मित्रपर उच्चाटन मारण करता है; तथा देवता दैत्य अथवा किसीके ऊपर करता है तो किस तरह करता है ? मैंने कहा कि, उनके नामपर करता है, जब नाम वश हो गया तब स्वरूप आप वश हो जाता है, परमेश्वर भी नाम लेनेपर प्रगट होता है । आठ प्रकारका मंत्र यंत्र तंत्र नामपर होता है । नववां प्रश्न यह किया कि— चौरासी लाख सृष्टि चेतन जड और ब्रह्मचर्य गृहस्थ वानप्रस्थ संन्यास परमहंस पांचों आश्रमवाले किसका रटन करते हैं और शैव वैष्णव भक्त अर्थात् योगी जंगम सेवडा नाथ उदासी कबीरपंथी दादूपंथी सत्तनामी रामसनेही परनामी मानभाउ किसका भजनकरते हैं?विचार करके कहो। मैंने कहकि, सब नाम रटन करते हैं और नामका भजन करते हैं, प्रत्यक्ष स्वरूपकी पुजा कोई नहीं करता, दशवां प्रश्न यह किया कि-तुम अयोध्यामें रहते हो काशीमें तुम्हारे सेवक और चेलेने तुम्हारा नाम लेकर कुछ साधन किया वह सिद्ध हो गया और शरीरसे तुमने उपकार किया, नहीं हुआ तो कौन बडा हुआ। मैंने कहाकि, नाम बडा हुआ, ग्यारहवां

प्रश्न यह किया कि-ब्रह्म निराकार आकार होकर कोई योनिमें अपनेको दरसावे परंतु ब्रह्म नाम उसका प्रगट न हो तो उसका दर्शन कोई न करे और नाम प्रगट होनेसे कदाचित् नीचयोनि भी होवे सूकर आदि तो सब कोई पूजा करे सेवा करे, झाड मशान आदिकमें देवका नाम प्रसिद्ध हो जाता है, तो यात्रा मेला लगता है, मैंने कहा कि, इस सिद्धांतमें भी नाम प्रसिद्ध होता है, बारहवां प्रश्न यह किया कि-कोई महाजन करोडपति दूसरे शहरमें जावे अपनेस्वरूपके विश्वाससे एक रुपैया उधार मांगे कोई न देवे, नामसे हुंडी लिख देवे लाखों रुपैया मिल जावे, कौन बडा हुआ ? मैंने कहा कि, नाम बडा हुआ, यही दृष्टांत हाकिमपर जानो तेरहवां प्रश्न यह किया कि-नामका भेद और रूप जो तेरे ज्ञानमें आता है वह कहो, मैंने कहा कि, नामका रूप अक्षर दरशाता है और अक्षरका रूप शब्द दरशाता है शब्दका रूप आकाश अनुभव होता है, आकाशका रूप नाम और कुछ रूप आकार सकार नहीं है, आकाश केवल नाम है, ये तेरह प्रश्न महात्मा, गुरुने किये और कहा कि, कुछ काल इसका विचार करो। जो जो शंका तुम्हारे ज्ञानमें आवे निर्भय होकर करो। जो पदार्थ निराकार है तथा शब्द है या नाम है, उसका बोधज्ञान (बुद्धि) से होगा प्रत्यक्ष दृष्टिसे नहीं होगा और दृष्टांत भी रूपवान् पदार्थका हो सकता है निराकारका नही, जैसे आकाशके शरीर नहीं है, नाम और

गुण है उसी तरह ब्रह्म नाम है विचार करो, मैंने इन तेरह प्रश्नोंका विचार किया आंखसे देखा तो अणुप्रमाण नाम ब्रह्म होनेसे शंका नहीं रही, यह सिद्धांत ऐसे अचल हैं कि अज्ञानीको ब्रह्मका ज्ञान हो जावे, लवलेश शंका न रहे, ऐसा सिद्धांत ब्रह्मज्ञानका अनुभव सहित आजतक देखनेमें नहीं आया, अनेक ग्रंथ वेदांतके आचार्योंने बनाये, परन्तु ऐसी शांति किसीमें प्राप्त नहीं होती। मेरे ज्ञानमें नामके सिवाय और कोई ब्रह्म नहीं है। परन्तु एक संदेह नाश नहीं हुआ। यह कि, नामरूपी ब्रह्म जगत्का कर्ता नहीं हो सकता, तब महात्मा गुरु बोले कि, संपूर्ण सृष्टि अनादि है इसकी आदि अनुमान करना मूर्खका काम है, मनुष्यसृष्टि और पशु समान दोनों जंगलमें रहते थे उनको कुछ ज्ञान अक्षरका नहीं था। निद्रा, मैथुन, आहार जानते थे जैसे अब भी बहुत टापूमें मनुष्य पशु समान पहाडोंमें रहते हैं, बहुत काल पीछे जिसकी संख्या कहनमें कुछ प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं है, आर्यदेशमें संस्कृत विद्या उत्पन्न हुई, आठ तरंगमें नास्तिक मतवालेने वर्णन किया, उस विद्याके आधारसे ब्रह्म, माया और जगत् तीन नाम प्रधान हुए, पीछे चौदह भुवन चौरासी लाख सृष्टिका नाम रक्खा गया और अनेक ग्रंथ इस विचारमें बनाये गये, जबसे ब्रह्मका नाम प्रगट हुआ तबसे ब्रह्म हुआ कदाचित् वह कुछ हो, इसी तरह जगत् और मायाका जिस वक्त नाम रक्खा गया, उसी वक्त वह भी उत्पन्न हुआ अथवा जिस रोज तुम्हारा नाम

रखा गया उस रोज तुम्हारी उत्पत्ति हुई, जिस पदार्थका नाम जब रक्खा गया सब पदार्थ उत्पन्न हुआ, जब तक नाम नहीं होगा वह कुछ पदार्थ अनुमान नहीं होगा । यह सिद्धांत अंशक है पुराण आदिकमें जो कथा लिखी है वह बहुत दिन पीछेकी है, उसमें गुप्त अर्थ और है । अभी कविलोग पुराणी कथाको छंद चौपाईमें कहते हैं, तो वह काव्य पुराणी दरशाती है, लंडनमें दो हजार बरससे विद्या हुई, अर्बस्थान पारसमें सात हजार बरससे विद्या हुई, हिंदुस्थानमें बहुत पहले हुई, जबसे अक्षर शब्द हुआ तबसे ब्रह्मांड हुआ, मैंने हाथ जोडकर कहा कि, यह सिद्धांत मेरे ज्ञानमें दृढ हो गया कि, जब अक्षर हुआ तबसे शब्द हुआ और जब शब्द हुआ तब नाम हुआ जब नाम हुआ तब सर्व पदार्थका अनुभव हुआ, परन्तु इस ज्ञानसे नामरूपी ब्रह्म जगतका कर्त्ता हुआ । परन्तु एक संदेह और है कि नामरूप ब्रह्मका भजन करनेसे क्या अर्थ सिद्ध होगा ? अपना कुछ भला बुरा वह ब्रह्म कर सकता है या नहीं ? तब महात्मा गुरु बोले कि, प्रत्यक्ष देखो—गुरु नानक, शाह साहब, दादुसाहब, कबीर साहेब, शंकरस्वामी, रामानंदस्वामी, तुलसीदास, पलटुदास ऐसे अनेक महात्मा कलियुगमें नामके आधारसे ब्रह्म समान पूजे जाते हैं, इसके सिवाय और क्या अर्थ सिद्ध होगा। वर्तमानमें गुरु माधवदासजी, युगलानंदजी, रघुनाथदासजी तिवारी, उमापतजी बाबा रामप्रसादजी, अयोध्यामें देवता

समान हो गये नामरूपीब्रह्मसे सब अर्थ सिद्ध हो सकता है। मैंने हाथ जोडकर कहा कि, मुझको अब कोई शंका नहीं है। सर्वमोह संदेह भ्रमवासना शंका नाश होगया। निष्कामशांति ज्ञान बोध प्राप्त हो गया, ये सब आपकी कृपा है। मेरेको प्रत्यक्ष ब्रह्म प्राप्तिका आसरा हो गया। तब महात्मा गुरु बोले कि, श्रवण, मनन, अध्यासका बीज सत्संग है और तीनों मूल हैं। उसमें ज्ञानरूपी झाड तीन शाखासे प्रगट हुआ। ब्रह्म-ज्ञान, आत्मज्ञान, मायाज्ञान जिसको अनात्मज्ञान भी कहते हैं। श्रवणमूलमे अनात्मज्ञान हुवा, मनमूलसे आत्मज्ञान झाड हुआ, अध्यासमूलसे ब्रह्मज्ञानका झाड प्रगट हुवा। उस ज्ञानका लक्षण यह है-पहिले अनात्म ज्ञानका लक्षण और भेद कहता हूँ, जैसे जलमें लहरी या बुदबुदा उत्पन्न और नाश होता है, उस प्रमाण पंचमहाभूतसे चौरासी लाख सृष्टिकी उत्पत्ति नाश होता है। उस संपूर्ण सृष्टिमें कोई छोटा बडा अधिक न्यून उत्तम मध्यम भलाबुरा नहीं है सबकी उत्पत्ति और स्थिति और नाश अद्वैत स्वरूप है। उसीको तीन गुण तीन काल कहते हैं। पंचमहाभूत अनादि हैं। उनका भेद कोई नहीं कह सकता। मैं कुछ अनुमानसे कहता हूं कि, पहिले आकाशरूपी ब्रह्म निर्गुण निराकार निर्विकार निश्चल निरंजन अनादि है। उस निराकारकी इच्छा मूल मायाप्रकृति चलायमान होकर वायुरूप हुई। वायु आकाशसे प्रकाश हुआ, उसको तेज कहते हैं। ये दोनों स्वरूप सूक्ष्म हैं, स्थूल

नहीं, परंतु ज्ञानसे वायु तेजका अनुभव हो सकता है, आकाशका नहीं, उन दोनोंसे जल पृथिवी हुआ; जो प्रत्यक्ष सृष्टिका मूल है । पृथिवीसे स्वरूप जलसे बीज, अग्निसे ज्ञान, वायुसे श्वास उत्पन्न और नाश हुआ करता है, स्थूल सूक्ष्म होना अनादि जगत्‌का स्वभाव है इसको अनात्मज्ञान कहते हैं अब आत्मज्ञानका लक्षण और भेद कहता हूं कि, उन चारों तत्त्व सूक्ष्म स्थूलके भीतर या बाहिर जो आकाश तीन रूपसे व्यापक है । घटाकाश, मठाकाश, चिदाकाश, वह ही आत्मा है, वो अपनी मायाको चार खानसे देखकर चौरासी लाख घटमें अपने अद्वैतरूपको जुदा जुदा जाना और मायासे द्वैतज्ञान दृढ़ होकर अहंरूपी अहंकार प्रगट हुआ, उस अहंकारसे मैं मैं की कल्पना उत्पन्न होकर संकल्पविकल्प सुखदुःख भोगने लगा परंतु आकाशके आधार विना चारों तत्त्वसे घटकी उत्पत्ति नहीं हो सकती । इसको आत्मज्ञान कहते हैं, अब ब्रह्मज्ञानका लक्षण कहता हूं कि उन तीन आकाशके भीतर बाहर जो महाकाश शून्य आकाश है जिसका अंत कोई नहीं जानता । उसमें अथवा वह निर्गुण निराकार ब्रह्म मूलतत्त्व अद्वैत अखंड पदार्थ है, वही ब्रह्म है; उसका अनुभव ब्रह्मज्ञानीको होता है । सुषुप्ति अवस्थामें जो सुख भोगता है अथवा पांच ज्ञानइंद्रियमें जिसकी सत्ता है वही ब्रह्म है, उसके रंग रूप नहीं है । यथार्थमें अनुराग है । अधिकारी ब्रह्मज्ञानी निराकार नामरूपी ब्रह्मको पहिचानकर निर्गुण मुक्तिको प्राप्त होते हैं, इसको ब्रह्मज्ञान कहते

हैं, इस तीनों ज्ञानके बलसे तू भ्रमणाको छोडकर शांतस्व-रूप जीवनन्मुक्त रह, अंतमें निर्गुणमुक्तिको प्राप्त होकर निराकार नामरूपी ब्रह्ममें लय हो जावेगा, मैंने हाथ जोडकर कहा कि, अब मेरे रोमरोममें ब्रह्मका ज्ञान व्यापक और प्रवेश हो गया, कुछ शंका संदेह नहीं रही, अब कृपा करके केवल उसके रूपका अनुभव अथवा मरने उपरांत उसके रूपमें लय होजानेकी विधि संपूर्ण प्रमाणसे इस दासानुदासको उपदेश कीजिये। जिसमें जन्म मरण आवागमनसे रहित होकर निर्गुणमुक्तिको प्राप्त हो जाऊं और अद्वैत अखंड पदवीको प्राप्त होकर अभिलाखदाससे अभिलाखशाह हो जाऊं। तब महात्मा गुरु बोले कि, जबतक चैतन्यशक्तिका पंचतत्त्वके शरीरसे संयोग अर्थात् संबंध है तबतक उसमें लय नहीं हो सकता। शरीर छोड़ने उपरांत कदाचित् सब संयोग मिल जावे तो हो सकता है। संयोगका विस्तार ऐसा है कि, पहिले शिष्य अधिकारी संबंधी होना चाहिये। अधिकारी उसको कहते हैं कि, जो चार साधनमें प्रवृत्त हो, मल-विक्षेप—अज्ञानको छोडना चाहिये, मल निष्कामसे, विक्षेप उपासनासे, अज्ञान ज्ञानसे नाश होता है, और चार साधनके नाम ये हैं—विवेक, वैराग्य, समाधि, मोक्ष, आत्माके अविनाशी अचल जानना, जगत् नाशवान् जानना, यह लक्षण विवेकका है, ब्रह्मलोकतकके सुखको विष्ठासमान जानना, यह लक्षण वैराग्यका है, समाधि, में छः भेद हैं—शम, दम, श्रद्धा, समाधान, उपरम, तितिक्षा। मनको

रोकना शम है। इंद्रियोंको रोकना दम है। वेद गुरुवाक्य पर निश्चय करना श्रद्धा है। मनकी भ्रांति जाय वह समाधान है साधनसे विषय कर्मका त्याग करे वह उपराम है। आतप, शीत, क्षुधा, वर्षा एक जानकर सहन करे वह तितिक्षा है भ्रमका नाश और ब्रह्मकी प्राप्ति उसको मोक्ष कहते हैं। इन चार नाधनके मूल तीन है—श्रवण, मनन; अध्यास, तत्पद, त्वंपद असिपद महावाक्य हैं। कोई तत्त्वमसि कहता है। इसका अर्थ अंतरंग और बहिरंग और जैसाका तैसा। विवेक आदिक अंतरंग हैं युग आदिक बहिरंग हैं। अंतरंग समीप, बहिरंग दूर। जिसकी बुद्धिमें विपर्यय असंभावना नहीं है उसको असिपद कहना चाहिये। श्रवण विना विवेक आदिक होवे नहीं, श्रवण सबका मूल है, ज्ञान भी श्रवणसे होता है। श्रवण युगादिक बहिरंग हैं, उसमें ज्ञान नहीं है विवेक आदिकमें है, श्रवणसे होवे है। बहिरंगसे अंतरग होता है वेदवाक्य दो प्रकारके अवांतरवाक्य महावाक्य है उसके लक्षण ये हैं कि अवांतरवाक्य अप्रत्यक्षज्ञान, है। उसका अर्थ ब्रह्म है। महावाक्य अप्रत्यक्ष ज्ञान, उसका अर्थ मैं ब्रह्महूं, प्रत्यक्षज्ञान विवेक आदिकसे होता है। अप्रत्यक्षज्ञान श्रवण आदिसे होता है, यह लक्षण अधिकारीका है। और संबंधी उसको कहते हैं कि, ग्रंथमें जो जीव और ब्रह्मकी एकता है, वह प्रतिपादन है और करनेवाला प्रतिपादक है, फल प्राप्य है, अधिकारी प्रापक है, जो वस्तु प्राप्त होवे प्राप्य और जीव ब्रह्मकी एकता विषय है, अधिकार और विचा-

रमें संबंध कर्ता कर्तव्यका है, अधिकारी कर्ता हुआ, विचार कर्तव्य हुआ; ग्रंथ और ज्ञानमें संबंध जन्य जनकका है, ग्रंथ जनक हैं, ज्ञान जन्य है जैसे उत्पत्ति करनेवाला जनक है। जो उत्पन्न होवे सो जन्य है, जन्म मरण आवागमनकी निवृत्ति ब्रह्मकी प्राप्ति प्रयोजन है इससे ज्ञान आत्मा अप्राप्त हुआ, यह शंका बने नहीं। आत्मा सदा प्राप्त है जैसे हाथका कंकन खोया हुआ दूसरेके उपदेशसे पाया, रज्जुमें सर्पका भान अधिष्ठानसे नाश हुआ। अज्ञानको ज्ञान होता है, अज्ञानरूपी दुःख तीन प्रकारका है—आध्यात्मिक, आधिभौतिक; आधिदैविक रोग क्षुधा आध्यात्मिक; दुःख चोर व्याघ्र सर्प आधिभौतिक, यक्ष राक्षस प्रेत ग्रह शीतपात आधिदैविक इन तीनों दुःखसे निवृत्त मोक्ष है। निवृत्ति अभ्याससे होती है। भ्रांतिकी उत्पत्ति और निवृत्ति दोनों अभ्याससे हैं। इस ज्ञानका जानने वाला शिष्य अधिकारी और संबंधी होता है। ऐसे शिष्यको प्रारब्धके संयोगसे सद्गुरु भी ऐसा मिलना चाहिये कि जो दूसरा व्यास हो अठाईस ग्रंथका सार जानता हो, योगशास्त्रका संपूर्ण अभ्यास किया हो, समाधि आदिका फल पा चुका हो, निराकार ब्रह्मका भेद जानता हो और पंचीकरण त्रिगुणका ज्ञाता हो, संत महात्माका सत्संग कर चुका हो, चारों धाम सातों पुरी देख चुका हो, चौदह विद्यानिधान हो, मैंने हाथ जोडकर कहा कि, गुरु और शिष्य संयोगसे दोनों अच्छे हैं जो आप कृपा करेंगे वह होगा, दासको जबतक प्रत्यक्ष ब्रह्मका अनुभव

नहीं होगा तबतक चित्त शांत नहीं होगा ! तब महात्मा गुरु बोले कि, ब्रह्म परमेश्वरभगवान् नारायण राम सर्वज्ञ अविनाशी निर्गुण निरंजन निराकार अनंत नाम जिसके हैं वह देखने सुनने सूंघने छूने छुबुकने पांचो ज्ञानमें नहीं आता। वह निराकार उपमा देने योग्य नहीं है, शरीरका साक्षी ब्रह्म जो इसका अंश है और घटघटमें व्यापक है, वही अपना रूप है। उसको संत महात्मा लोग प्रत्यक्ष ध्यान स्वप्न समाधिमें अनुभव करके सदा आनंदमें रहते हैं, वह भी यथार्थमें ब्रह्म है। परंतु वह ब्रह्म जो अपनेमें है जैसे वायु घटाकाश मठा काश चिदाकाशमें एक है,मैं मैं की कल्पना मिथ्या है, सब अनुभव उसी ब्रह्म निराकार का है। उस रूपमें लय होनेसे आत्मा परमात्मा एक हो जाता है, अंतमें निर्गुण मुक्तिको प्राप्त होता है. मैंने हाथ जोडकर कहा कि, मुझको प्रत्यक्ष ब्रह्मका अनुभव होनेकी विधि संपूर्ण उपदेश कीजिये मैं केवल उसके दर्शनका, भूखा हूँ। तब माहत्मा गुरु बोले कि, तुमको हठयोग बताना उचित नहीं है; राज योगकी विधि उपदेश होना चाहिये, दूसरा योग तुम्हारे योग्य नहीं है। ब्रह्मका प्रत्यक्ष अनुभव देखना बहुत कठिन है, जैसा मैं उपदेश करता हूँ उस प्रमाणसे कदाचित् चालीस दिन मन कर्म वचनसे साधन करोगे तो वह प्रगटमें दर्शन देवेगा। पहिले इस स्थान कोठेका परदा होना चाहिये,जिसमें हवा धूप गर्द पिस्सु मच्छड दुखदाई जीव न आवे १. और स्थानको अंजनीगौके गोबरसे तीनवार लीपना चाहिये,पीछे

सफेद मिट्टीसे ऊपर नीचे पोतना चाहिये २, एक धोला कपडा छतमें दीवालमें लगाना चाहिये, जिसमें ध्यानके समय कूडा कचरा उरसे या बाहिरसे न आवे, मक्खी, मच्छड, पिस्सु, खटमल, मकोडा कोई जीव दुःखदाई पास न आवे ३, अच्छे अच्छे पात्र मृतिकाके उसमें छोटे छोटे झाड सुगंध शोभावाले सर्व स्थानमें रखना चाहिये, उसमें जल भरा रहना चाहिये ४, उदबत्ती, लोबान, कपूर, धूप, कस्तुरी आदिक चालीसरोज पूजनके समय जलाना चाहिये ५, घृतका दीपक पांच बत्तीका, पूजनके वक्त जलता रहे एक दीपक तिलके तेलका अष्टप्रहर चालीस रोज अखंड उस स्थानमें जलता रहे ६, मोगरा, चमेली, चंपा, गुलाब्, जुही, कैतकी, केवडाका, फूल माला, गुलदस्ता, नित्य नया आना चाहिये ७, एक चौकी चंदनकी आसन प्रमाण बहुत सुन्दर बनवाना चहिये, एक वाघंबर जो संपूर्ण नख शिखसे हो उसपर बिछाना चाहिये। उसके ऊपर पंचरंगी आसनी बहुत मुलाइम ऊनकी बिछाना चाहिये ८, अपने पहरनेके वास्ते एक जोडा धोती दुपट्टा रेशमी पीतवर्ण पूजन के वास्ते मँगाना चाहिये ९, नैवेद्यके वास्ते कृष्णा गौका दूध एक सेर, मिश्री पाव सेर, चावल छटांक, मेवा छटांक उसकी खीर देव निमित्त निराकार अर्पण करके एक वार तारा देखकर भोजन करना चाहिये १०, पीछे पान,

इलायची, जावित्री सब मसाला संयुक्त दो बीडा पानका खाना चाहिये ११ अबीर, अरगजा, अतर, कस्तूरी, केशर आदिक शरीर और वस्त्रमें लगाना चाहिये। सब सामान चालीस रोजके वास्ते जमा करना चाहिये १२, पीछे अच्छा दिन विचार करके पूजा आरंभ करे; नित्य प्रहर रात्रि बाकी रहे उठे झाडा जंगल जावे, दंत मंजन करे, सूक्ष्म गजकरण क्रिया करे, गरम जलमें भागीरथी गंगा जल थोडा छोडे शुद्ध होकर स्नान करे, पांवमें खडाऊं रक्खे स्थानका दरवाजा भीतरसे बंद कर लेवे, कोई नादान आते जाते पुकारे नहीं, वह रेशमी वस्त्र पहर करके उस चौकीपर सिद्धआसन बैठे, कंघेसे केश आदिकको सफा करे; अष्टगंधका तिलक लगावे व बांसकी पत्ती समान खडा, धूपदानी दीपदानी अच्छी तरह जलती रहे, पहिले आसन शुद्धिका मंत्र पढे पीछे शरीर रक्षा पढे, फिर विघ्न निवारण पढे, चंद्र सूर्यकी नाडी एक करके सुषुम्ना नाड़ीको चलावे, पद्मासन लगावे उन्मनी मुद्रा धारण करे; सद्‌गुरु मंत्र जो कानमें अथवा एकांतमें बताया हो वह ही गुरु गायत्री है उसको अजपा जाप करे, श्वासमें ओहं सोहंका व्यवहार रक्खे, गुदामुखसे श्वास बंद करे, मनके संकल्प विकल्पको नाश करे, चित्त श्वासमें रक्खे, बुद्धि दृष्टिमें रक्खे, सत्त्वगुणी अहंकारको अपना रूप जानकर ज्ञानदृष्टिसे देखे, शरीरको ब्रह्मांड जाने ब्रह्मांडको ब्रह्मलोक जाने, हम अहंकारको नाश करे, शुद्ध

चैतन्य जो संकल्प विकल्पसे रहित है उसको अपना रूप जाने नासिकाग्रमें ध्यान रक्खे दृष्टि बंद करे, उलटा हृदयको देखे, गुदास्थानसे नेत्रस्थानतक षट्चक्र हैं, उनमें बावन कमलदल हैं, पंचप्राण, पंचवायु, अंतःकरणपंचक, पचीस प्रकृति, सबका स्वरूप और गुण दरशावेगा, पंचविषय, पंच ज्ञानेंद्रिय, पंच कर्मेन्द्रियोंको भूल जावे हृदयको अच्छी तरह ध्यान करे, श्रवणमार्गको रुईसे बंद कर देवे आंखको पलकसे, नाकको अंगुलीसे, मुँहको हाथसे, त्वचाको चित्तसे रोके, श्वास प्रमाणसे खींचकर रोके, श्वास जब ब्रह्मांडमें स्थिर हो जावे, तो जिह्वासे तालमाको बंद करे तुरिया अवस्था ग्रहण करे, अष्ट दल चक्र ब्रह्मांडमें है उसको देखे, पहिला अठवाडा यह ध्यान दुःख देवेगा । शरीरमें अनेक प्रकारकी पीडा प्रगट होगी, प्राण घबरावेगा । दूसरे अठवाडेमें मनोहर भयानक शांत अनुभव बहुत दरशावेगा । उस समय भयभीत नहीं होना चाहिये और चित्त चलायमान न होना चाहिये, साधनको कम सिवाय न करना चाहिये, तीसरे अठवाडेमें गुदास्थानसे हृदय कंठ स्थान तक सूक्ष्म प्रकाश दरशावेगा । चौथे अठवाडेमें ब्रह्मांडका प्रकाश और हृदयका प्रकाश दोनों एक होकर करोड सूर्यके समान चमत्कार दरशावेगा । द्वैतबुद्धि और भ्रम नाश होता जाता है, दिव्यरूप दिव्यदृष्टि दिव्यबुद्धि प्राप्त हो जाती है, अपने रूपका भान भूल जाता है । पांचवें अठवाडेमें प्रत्यक्ष साकार रूप जैसा मैं उपदेश कर चुका हूं सो अनुभव होगा । चालीस दिनमें

मनोरथकी सिद्धि हो जाती है; नित्य सूर्यके उदयसे अस्त-तक यह ध्यान रखना चाहिये, पीछे तारा देखकर भोजन करे। एक प्रहर शरीरको आराम देवे, प्रहर रात्रि व्यतीत होने उपरांत संध्यासमय पूजाका ध्यान करे, बारह बजेसे चार बजे तक उसी चौकापर शयन करे। चार बजेसे फिर वही नित्य कर्म ऊपर लिखे प्रमाण करे इस प्रकारसे चालिस दिन तक अनुष्ठान करता रहेगा तो मनोरथ सिद्ध होगा, गर्मीका दिन होवे तो पंखा फराशी, ठंडका दिन होवे तो लोहेकी अंगीठी जिसमें कोइला निर्धूम भरा हुआ हो, सन्मुख रक्खे, जापके वास्ते मूंगाकी माला, मोतीकी माला अष्टोत्तरी हाथमें रक्खे। चालीस दिन पीछे कादाचित् अपना मनोरथ सिद्ध हो जावे तो एक भंडरा संत महात्माओंका करना होगा और यह गुप्त ध्यान जो हमने बताया, किसीको प्रगट न करना कदाचित् कोई शिष्य शुद्ध आचरणका तत्त्वज्ञानी होवे तो उसको गुप्त उपदेश करना, यह उपदेश संपूर्ण मुक्तिदाता है। जो सत्त्वगुणी अहंकार शरीरमें परमेश्वरका अंश है वही पर-महात्मासे मिलकर अपनी भावनाको शान्त करता है अथवा जो चैतन्य शक्ति शरीरमें है वह सर्व शक्तिसे मिलकर अपना निराकाररूप रखकर प्रगट होता है, अनुभव इसके सिवाय और जो महात्मा गुरुने बताया सब सामान बहुत द्रव्य खर्च करके मँगाया और अच्छी सायत देखकर साधनका आरंभ कर दिया। उस वक्त चार चेले मेरे साथ थे, पहिले अठवाडेमें ऐसा दुःख मालुम हुआ कि, उस दुःखको सहन कोई नहीं

कर सकता । हजार बिच्छू मारनेके बराबर शरीरमें दुःख हुआ पीछे दूसरे अठवाडेमें वह दुःख जाता रहा, परंतु भयानक मनोहर चमत्कार हजारों दरशाये । मैं गुरुकी कृपासे कुछ भयभीत नहीं हुआ । पीछे तीसरे अठवाडेमें वह चमत्कार शांत हुआ और गुदास्थानसे हृदयतक सूक्ष्म चमत्कार चंद्र समान दरशाया और रोमरोमका ज्ञान हो गया । शरीरमध्य जो जो भेद गुप्त था सब देखनेमें आया, चौथे अठवाडेमें वह प्रकाश ब्रह्मांडमें पहुंच कर करोडों सूर्यके समान हो गया । अपने शरीरके भीतर सात आकाश सात पाताल संपूर्ण मृत्युलोक सातों समुद्र सूर्य चंद्रमा सब देखनेमें आये । उस प्रकाशको देखकर मैं अपनेको भूल गया सहज समाधि लग गई, सुषुम्ना नाडीदिन रात चलने लगी । सोऽहं सोऽहं श्वासमें स्वरूपभान हो गया। एक आसन पर आठ दिन मुर्दे समान बैठ रहा । निद्रा क्षुधा आहार तृष्णा तंद्राका ज्ञान जाता रहा । पांचवे अठवाडेमें मुझको सर्वव्यापक ब्रह्मका दर्शन हुआ, अथवा आत्मा जीवने परमात्मा ब्रह्मका दर्शन पाया तथा द्वैतका भ्रम जाता रहा । उस मोहनी स्वरूपको शोभा देखकर मैं ऐसे मोहित हो गया कि; आठ दिन तक आंख नहीं खोला व सोलह दिन मेरेको समाधिमें व्यतीत हो गये, श्वास चौथे शून्यमें जाता रहा । सतरहवीं कला ज्योतिकला ब्रह्म गुफा ब्रह्मरंध्र सब गुप्तस्थान प्रगट हो गये । चक्रोंमें जो देवता वा ऋषि हैं मेरेको दंडवत् प्रणाम किया, पांचों मुक्ति पांचो आनंद, पांचो अहंकारका सुख तुच्छ दरसाया, चारों अवस्था

चारों शरीरका नाश होकर केवल ज्ञानस्वरूप निर्मल अवस्था हो गई, चौदह भुवन, तीनों लोक; चौरासी लाख सृष्टिका ज्ञान नाश होकर सर्वत्र प्रकाश दरशाया। वह सुख जो सुख इंद्रको है उससे हजार गुणा ज्यादाही प्राप्त हुआ, अपना स्वरूप आनंदस्वरूप हो गया; जब सोलह दिन मैं बाहिर नहीं निकला तब एक चेला मेरा बहुत घबडा कर महात्मा गुरुके पास गया और सब हाल मेरा कहा, तब महात्मा गुरु भी बडी चिंतामें हुए, जलदीसे आकार स्थानका दरवाजा बाहिरसे खोला और योगकी युक्तिसे मेरे प्राणको ब्रह्मांडसे शरीरमें उतारा और बहुत धीरजसे मेरेको चैतन्य किया, उस समयमें उस ध्यान छूटनेसे बहुत दुःखी हुआ और क्षुधा तृषाके कारण गिर पडा, शरीरको बैठे रहनेकी सामर्थ्य नहीं रही, तब महात्मा गुरुने उठाकर मेरेको गोदमें बैठाया कुछ दूध शक्कर घी गरम करके पिलाया, तब मुझको होश आया और कुछ शांति हुई, महात्मा गुरुको पहिचान कर उनके चरणकमलको मत्था टेक करके विनती किया कि, आपकी कृपासे मेरा मनोरथ सिद्ध हो गया; जो पदार्थ मैं सारी उमर चारों दिशामें खोजता रहा, वह आपकी कृपासे अब प्राप्त हुआ। अब मेरेको सात् स्वर्गका सुख तुच्छ दरशाता है मैं तत्त्वपदको प्राप्त हो गया, जो पदार्थ देवता सिद्ध ऋषि मुनि सदा खोजते रहते हैं जलदी प्राप्त नहीं होता वह पदार्थ मेरेको आपकी कृपासे प्राप्त हो गया। अब मैं निर्भय निष्काम परमानंदमें मग्न हुआ, तब महात्मा गुरु

बोले कि, तेरेको जो स्वरूप देखनेमें आया उस स्वरूपकी शोभा कुछ सूक्ष्म वर्णन करो । मैंने हाथ जोडकर कहा कि, कदाचित् चौरासी लाख जन्म लेकर मैं उस आनंद और सुखको कहूं तो भी नहीं पूरा हो सकता । आप अंतर्यामी हैं आपको सब दरशाता है, मेरेको जो दरशाया वह भी आपकी कृपासे हुआ । मैं अपने रूपको देखकर मस्त हो गया, मेरा रूप बहुत सुंदर शृङ्गार आदिकसे संयुक्त मेरे देखनेमें आया अर्थात ब्रह्म निराकार परमात्माका प्रत्यक्ष अनुभव आत्माने पाया, मैं ज्ञानी हूं मेरा रूप निश्चय करके ब्रह्म है यह मेरेको दृढ निश्चय हो गया । कदाचित् जगद्गुरु मेरेको दूसरा उपदेश देवे मैं नहीं मानूंगा । आत्मप्रतीति गुरु प्रतीति;शास्त्र प्रतीति तीन प्रकारका निश्चय है मेरे को सम्पूर्ण तीनों प्रकारसे निश्चय होगया, जब पांचवे अठवाडेमें करोड सूर्यके समान प्रकाश हो गया और मैं उस प्रकाशमें तदाकार हो गया उस समय एक पुरुष उत्तम वर्ण श्यामरंग अलसीके फूल समान, बडे बडे रतनारे आंख रसीली जादु भरे, कुंदुरुसमान अरुण पतले पतले ओंठ, अमृत भरा हुआ तोतेके टोड समान लंबी ऊंची नाक, गुलाबके फूल समान गोल गोल कपोल, उसपर काला तिल, भवरसमान बांकी तिरछी भौंह, बिच्छूके डंक समान बरोणी, जिसके देखनेसे कामका जहर चढ जावे, छोटे छोटे कान, जिसमें जडाऊवाला मोती माणिकके पडे हुए,शिरपर एक दुपट्टा रेशमी कामदार जरीका बँधा, ललाट पर केशरका तिलक खडा बांसकी पत्ती

समान, कमलनाले समान हाथ लंबे लंबे गोल गोल जिनमें हीरा आदिकका नवरतन जडाऊ भुजदंड, कलाईमें जडाऊ पहुंची; अंगुलीमें लाल मणिक, हीराकी मुद्रिका, गलेमें हीरा माणिक नीलमका कंठा सुवर्णका जनेऊ, चौडी छाती, पतली कमर, गंभीर नाभि, रेशमी पीतांबरकी धोती, कामदार चोलना. जरीको चांदीकी पांवडी, हाथमें सुवर्णकी छड़ी, मुखमें पानका बीडा, मोती समान दांत, नारंगी समान ऐंड़ी, नखकी उजियारी दुइजके चन्द्रसमान, कोकिला शब्द सिंहठवन, किशोर अवस्था, बहुतशोभायमान, शातरूप, मोहिनीस्वरूप, लंबे लंबे काले बाल नागसमान घुंघरवारे पूर्णचन्द्र समान मस्तक, वृषभकंध ऐसे और अनेक शोभासे संयुक्त ऐसा मेरा रूप उस प्रकाशमें प्रगट हो गया। उस रूपका दर्शन करके मैं अपनेको भूल गया अथवा मेरा चैतन्य उस रूपमें समा गया । यह पंचमहाभूतका पिंजरा मुर्देके समान श्वासरहित दो अठवाडे बैठा रहा । उसका धनी मैं सत्त्वगुणी अहंकारसे अपने असली स्वरूप अविनाशी प्रकाशमान मैं बहार करता रहा । स्वर्ग, नरक, वैकुण्ठ, ब्रह्मलोक, शिवलोक, इंद्रलोक सूर्यलोक, चन्द्रलोक अनेक लोक मेरेको प्रत्यक्ष दरशाये। मेरी दिव्यदृष्टि चौदह भुवनमें सर्वत्र होगई । कदाचित् आप योगकी युक्तिसे मेरेको इस शरीरमें न लाते तो मैं कोटि जन्म नहीं आता, तब महात्मा गुरु बोले कि, अब उस रूपको दृढ़ करके हृदयमें रक्खो । सर्व पूजा, पाठ भजन कीर्तन प्रगटमें जो करते हो छोड़ो । केवल

उस रूपका ध्यान करो, निर्भय होकर जहां चाहो वहां रहो मनमें दया रक्खो, आत्मा सर्वत्र एक है, उपकार करना धर्मका मूल है । इसी प्रमाण अनेक सिद्धांतका उपदेश करके बहुत प्रसन्न होकर मेरेको अपनी छातीसे लगाये हाथ पांव माथा चूमा और बहुत भांतिका आशीर्वाद और वरदान देकर पीठ ठोक कर देखते देखते अंतर्धान हो गये । मैं पीछे उनके एक भंडारा यथा शक्ति उस जगह किया, अच्छे अच्छे संत महात्मा जो उस पर्वतपर रहते थे सब कृपा करके आये । आठ दिन उत्साह रहा पांच हजार रुपया उस भंडारेमें खर्च हुआ । जो कुछ जायदाद अपने पास थी सब खर्च कर डाला, सबकी पूजा करके बिदा किया, पीछे सब साधन भजन स्मरण जो नित्यकर्म करता रहा सो त्याग दियां केवल उस मोहिनी रूपको हृदयमें दृढ़करके पकड लिया, और महात्मा गुरुके रूपको भी ध्यानमें रक्खा । जिसकी कृपासे सर्व मनोरथ सिद्ध हुआ, भविष्यमें मेरेको आसरा है कि, शरीर छूटने उपरांत मेरा चैतन्य उस रूपमें लय हो जावेगा । मेरा रूप सर्व सृष्टि ब्रह्मांडका कर्ता है और मूल है श्रोता वक्ताजन ज्ञानके अधिकारी भक्ति प्रेमके संबंधी मेरे अविचार मूर्खता और अवगुणको विचार न करके इस ग्रंथ अभिलाखसागरमें जो सार पदार्थ निर्मल उत्तम देखें हंसरूपी ग्रहण करें जलरूपी असार वर्तावको त्याग करके

मेरे सर्व अपराधको क्षमा करें और सिद्धांतमें यह ग्रंथ सिद्धांतसागर जानकर सिद्धांत अर्थ ग्रहण करें ॥

इति अभिलाखसागर गुरु शिष्य संवाद दशवें तरंगमें दूसरी लहरी

इति दशवां तरंग समाप्त ॥ १० ॥

ग्यारहवां तरंग प्रारंभ

वर्तमान ज्ञान विचार
प्रत्यक्ष अनुभव वर्णन

श्री भागीरथ्यै नमः ॥ अब ग्रंथ श्री अभिलाखसागर गुरु-शिष्यका संवाद, वेदांतका मूल, ज्ञानका सिंधु दश तरंगमें समाप्त हुआ, उसके पीछे एक तरंग सिद्धांत ब्रह्मज्ञानका केवल शिष्य अभिलाखदास अपने ज्ञान व विचारसे जो प्रत्यक्ष अनुभवमें आया सूक्ष्म वर्णन करता हूं, श्रोताजन ज्ञानाधिकारी बहुत सावधान होकर चित्त एकाग्र करके श्रवण करें–

(१) जगत् अथवा ब्रह्मांडका तथा संसारका आदि अंत मध्य कोई नहीं जानता १, आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी पांचों तत्त्वका भेद कोई नहीं जानता २, चौरासी लाख सृष्टिका भेद कोई नहीं जानता ३, सूर्य, चंद्र, तारा, बिजली, धनुष्य आदिक अनेक चमत्कारका भेद कोई नहीं जानता ४, तीन प्रकारके काल, छः प्रकारकी ऋतु जो होती हैं उसका भेद कोई नहीं जानता ५, निद्रा, मैथुन, क्षुधा, तीन

प्रकारकी प्रकृति जीवमात्रको है, उसका भेद कोई नहीं जानता ६। नाम, जीव, शरीर तथा ब्रह्म, माया, जगत् क्या पदार्थ है कोई नहीं जानता ७। शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध पांच विषयका भेद कोइ नहीं जानता ८। काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद पांचों विकारका भेद कोई नहीं जानता ९। पांचों शरीर पांचो अवस्थाका फेर कोई नहीं जानता १०। अंडज पिंडज, ऊष्मज, स्थावर, मेघ, पांच योनिका भेद कोई नहीं जानता ११। बारह राशि, नवग्रह, नक्षत्र, योग, करण क्या पदार्थ है कोई नहीं जानता १२। सर्व प्रकारके देवता दैत्य जो शुभयोनि है, सच्चे हैं या झूठे हैं ? कोई नहीं जानता १३, प्रथम बीज है अथवा झाड है कोई नहीं जानता १४ चुंबक पत्थर लोहा खींचता है, पारस पत्थर लोहेका सोना करता है कारण कोई नहीं जानता १५। भृंगी कीड़ेको भृंगी करता है उसका भेद कोई नहीं जानता १६। यावत् व्यवहार इस ब्रह्मांडमें जो हो चुका और होता है उसका भेद कोई नहीं जानता। इस भेदका जानने वाला अबतक कोई नहीं हुआ और आगेभी नहीं होगा। जो काम कभी नहीं हुआ और किसीसे नहीं हुआ वह अब भी नहीं हो सकता।

(२) जो अबतक किसीके जाननेमें नहीं आया वह अब भी नहीं आवेगा १। जो अनहोनी बात है वह होवंत नहीं होगी २। जो होवंत है वो अनहोनी नहीं होगी ३। जो प्रमाण है वह अप्रमाण नहीं होगा ४। जो अप्रमाण है वह प्रमाण नहीं होगा ५। जो साकार निराकार नहीं होगा ६। जो निरा-

कार है वह साकार नहीं होगा ७।जो भूतवर्तमानमें नहीं है वह भविष्यमें नहीं होगा ८ । जो अचल है वह चलायमान नहीं होगा९। जो विष है वह अमृत नहीं होगा १० । जो गुप्त है वह प्रगट नहीं होगा ११।जो अंधकार है वह प्रकाश नहीं होगा १२। जो निर्गुण है वह सगुण नहीं होगा १३। जो शांत है वह भ्रमित नहीं होगा १४ । जो शुद्ध है वह अशुद्ध नहीं होगा १५। जो ज्ञान है वह अज्ञान नहीं होगा १६। जो काम अनादि जगत्‌का संयोग वियोग अधीन जैसा चला आता है चला जावेगा, यह सिद्धांत अचल है ।

(३) संयोग वियोग सृष्टिका मूल है जगत्‌की उत्पत्ति नाश संयोगसे है १। चौरासी लाखका जन्म मरण संयोगसे है २ । स्त्री पुरुष होना संयोगसे है ३ ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र होना संयोगसे है ४ । राजा प्रजा साधु होना संयोगसे है ५। मूर्ख ज्ञानी पंडित होना संयोगसे है ६।गृहस्थ त्यागी होना संयोगसे है ७ । बडा छोटा उत्तम मध्यम होना संयोगसे है ८। धनवान् दरिद्री होना संयोगसे है ९।सत्संगका संग होना संयोगसे है १० । गरमी सरदी बरसात संयोगसे है ११।दिन रात होना संयोगसे है १२। मूर्ख होना ज्ञानी होना संयोगसे है १३ । धन परिवार आरोग्यता बड़ाई मिलना संयोगसे है १४ । हार जीत होना संयोगसे है१५। सर्व प्रकारका दुःख सुख होना संयोगसे है १६ । संयोगका पूर्वरूप अनुमानमें नहीं आता ॥ (४)

स्त्रीपुरुषका संयोग होता है वायुके आधारसे रक्त बीज गर्भ योनिमें स्थिर होता है वायुसे जीव, बीजसे शरीर उत्पन्न

होता है । नव मास गर्भमें रहकर पूतला माता पिता समान बन जाता है, स्त्रीका रुधिर जो रजस्वला धर्ममें मास मास जाता है वही बंद होकर पूतला बनता है । नवमासके पीछे वह पूतला पेटसे बाहिर निकलता है । माताका बल अधिक हुआ तो पुत्री, पिताका बल अधिक हुआ तो पुत्र, दोनों समान हुए तो नपुंसक होता है, संपूर्ण वायु बीज स्थिर हुआ तो आयु सौ बरसकी होगी, बहुत कम होनेमें बालक मरा हुआ उत्पन्न होता है तथा गर्भ गिर जाता है, वही वायु बीज गर्भस्थानमें दो भागसे स्थिर हुआ तो बच्चा जोडा पैदा होता है । खंडनवायु बीज स्थिर होनेसे बालक हाथ पांवसे खंडित होता है,राजसी दरिद्र मूर्ख ज्ञानी चोर महात्मा रोगी नीरोगी होनेका कारण स्त्रीपुरुषका स्वभाव है । माताका लक्ष्य जिस रूपपर होगा वैसा स्वरूप बालकका होगा । उत्पत्तिके पहिले जीव रहता है. ज्ञान नहीं रहता,प्रथम बालक माताको पहिचानता है, पीछे परिवारको पहिचानता है, तोता मैंनाके समान सर्वपरिवार शब्द सिखाते हैं, जो धर्म मर्याद परिवारका है वह ही व्यवहार उसको सिखाते हैं,जो विद्याका मान उस देशमें होता है, वही विद्या पढाते हैं, मुंडन कान छेदन जनेऊ विवाह कुलरीत प्रमाण माता पिता करते हैं। विवाह पीछे वही पुत्र स्त्रीको माता पितासे विशेष जानेगा और ससुरारकी प्रीति परिवारसे अधिक करेगा, स्त्रीके कहनेसे माता पिताको छोड देवेगा, मातापिता मर जावेंगे तो यथा शक्ति क्रिया कर्म करेगा, अनेक उद्यम उत्तम मध्यम करके परिवा-

रकी पालना करेगा सर्व परिवारके दुःखसुखको अपना दुःख सुख जानेगा, तब पंचमहाभूतका पूतला निर्जीव हो जावेगा जैसाका तैसा होजावेगा । यह सिद्धांत जन्म मरणका है ॥

(५) अपने २ गुणबुद्धिप्रमाणसर्व जीव अपना निर्वाह करता है । कोई वेदपुराण शास्त्र पढकर निर्वाह करता है१। कोई त्याग वैराग्यमें निर्वाह करता है २। कोई देवका पुजारी होकर निर्वाह करता है ३। कोई नीच व्यापार करके निर्वाह करता है ४। कोई सेवा चाकरीसे निर्वाह करता है ५। कोई युद्ध संग्राम करके निर्वाह करता है ६। कोई चोरी आदिक भ्रष्ट कर्म करके निर्वाह करता है७।कोई मध्याह्नकालमें चार घरसे भिक्षा करके निर्वाह करता है८। कोई रातको टुकडा मांगकर निर्वाह करता है ९। कोई जंगलमें घासका दाना जमा करके निर्वाह करता है१०।कोई राजा बादशाह महाजन होकर निर्वाह करता है ११।कोई मांस मदिरा बेचकर निर्वाह करता है १२। कोई संसारी विषय भोगमें निर्वाह करता है १३।कोई अखंड समाधिमें निर्वाह करता है १४। कोई इंद्रजाल जादू करके निर्वाह करता है १५।कोई खेती मजूरी करके निर्वाह करता है १६। सारा जगत् अनेक प्रकारका उत्तम मध्यम उद्यम करके निर्वाह करता है ॥

(६) बहुत जीव ऐसे हैं कि, जिनका निर्वाह आपो आप होता है, उद्यम करना नहीं पडता । जलमें अनेक प्रकारके जीव रहते हैं,१। वनस्पतिके मूल झाड पानफूल फलमें बहुत जीव रहते हैं २। शरीरमें अनेक जीव रहते हैं ३। सर्व जीवके

मलमूत्रमें जीव रहते हैं ४। सूखे लक्कड पत्थरमें जीव रहते हैं ५। धानमें अनेक जीव रहते हैं ६। आकाश वायुमें अणु-प्रमाण जीव रहते हैं ७। गूलरके फलमें जीव रहते हैं ८। मरे हुए शरीरमें जीव रहते हैं ९। मेवा मिठाईमें जीव रहते हैं १०। मुखमें नाकमें कानमें गुदामें जीव रहते हैं ११। अच्छे अच्छे व्यंजनमें जीव रहते हैं १२। मिट्टीके बीचमें जीव रहते हैं १३। वस्त्रमें जीव रहते हैं १४। ग्रंथमें जीव रहते हैं १५। अग्निमें जीव रहते हैं १६। ऐसे जीव अनंत हैं, उनको अपने निर्वाहके कारण उद्यम करना नहीं होता।

(७) और बहुत जीव ऐसे हैं कि, अपनी क्षुधा शांतिके निमित्त दूसरे जीवको खाजाते हैं। नाहर गौ मारता है १। चीता हिरण मारता है २। बिल्ली मूसा मारती है ३। मोर सांप मारता है ४। भोई मच्छी मारता है ५। कसाई बकरा मारता है ६। बाज कबूतर मारता है ७। बगुला मेंडक मारता है ८। किलकिला गिरगट मारता है ९। चरस कुत्ता मारता है १०। कुत्ता खरगोश मारता है ११। बदुहजातवाले खीरवाले हवषवाले आदमी मारते हैं १२। छपकली मकड़ी मारती है १३। डाकू मुसाफिर मारते हैं १४। अंग्रेज लोग सरमा मारते हैं १५। भेडिया भेड मारता है १६। ऐसे लाखों जीव हैं, जिनको जीव मारनेमें दया नहीं आती।

(८) मनुष्य योनि जो विद्या और ज्ञान रखते हैं वे भी अपने स्वार्थके वास्ते दूसरे जीवके दुःख देनेमें दया नहीं करते। दुष्टराजाको प्रजाके दुःख देनेमें दया नहीं आती १।

बेईमान महाजनको ब्याजपर ब्याज लेनेमें दया नहीं आती २। घूस खानेवाले हाकिमको झूठा इन्साफ करनेमें दया नहीं आती ३। चोरको दूसरेका माल चुरानेमें दया नहीं आती ४। ठगको बटोई लूटनेमें दया नहीं आती ५। खोटेको किसीकी बहू बेटी बिगाडनेमें दया नहीं आती ६। हिंदुस्थानके क्षत्रियोंको लड़की मारनेमें दया नहीं आती ७। पाखंडी साधुको विश्वस्त भक्तके ठगनेमें दया नहीं आती । ८ दुष्ट किसानको बूढे बैलके जोतनेमें दया नहीं आती ९। कुचाल पुत्रको मातापिताके जुदा करनेमें दया नहीं आती १०। कलियुगके गृहस्थको भूंखे साधु संतपर दया नहीं आती ११। कुपात्र स्त्री पुरुषको छोडनेमें दया नहीं आती १२। उद्यमी पुरुषको शहद निकालनेमें दया नहीं आती १३। झूठे दूकानदारको दूना चौगुना पैसा लेनेमें दया नहीं आती १४। अंग्रेजोंको कुत्ता मारनेमें दया नहीं आती १५। दुष्ट जीवको जानवर बधिया करनेमें दया नहीं आती १६। इसी प्रमाण अनेक जीवोंको दूसरे जीवको दुःख देनेमें दया नहीं आती । कोई अनादि स्वभावसे दया नहीं करता कोई संयोगसे लाचार हो दया नहीं करता कोई अपने मतलब बड़ाईके निमित्त दया नहीं करता । बड़ाई इस संसारमें बडी वस्तु है । जिस तरह ज्ञानी मुक्ति चाहते हैं उसी प्रमाण विषयी पुरुष बडाई चाहते हैं ।

(९) यथार्थमें बडाई वैकुंठ समान है । बडाईके वास्ते कष्ट करके अनेक गुण सीखते हैं १। बडाईके वास्ते मकान

बाग बावड़ी बनाते हैं २, बडाईके वास्ते धर्मशाला देव-मंदिर बनाते हैं ३, बडाईके वास्ते विवाह मरोनीमें लाखों रुपैया खर्च करते हैं ४, बडाईके वास्ते पांखंडी साधु अनेक ढोंग करते हैं ५, बडाईके वास्ते सदावर्त अन्नक्षेत्र बनाते हैं६, बडाईके वास्ते हाथी घोडा ऊंट रथ सवारी रखते हैं ७, बडाईके वास्ते राजा लोग सिक्का चलाते हैं ८, बडाईके वास्ते धर्मपुत्र लेते हैं ९, बडाईके वास्ते तीर्थमें घाट बनवाते हैं १०, बडाईके वास्ते गया काशी जाते हैं ११, बडाईके वास्ते महाजन करोडपति कौडी कौडी जमा करते हैं १२, बडाईके वास्ते हाथी शेरका शिकार करता है १३, बडाईके वास्ते फौज खजाना मुल्क रखते हैं १४, बडाईके वास्ते पहलवान कुस्ती मारते १५, बडाईके वास्ते संग्राममें सम्मुख शूरवीर शिर कटवाते हैं १६, सर्व जीव छोटा बड़ा बडाई चाहते हैं । यथार्थमें बडाई मिलना बहुत कठिन है ।

(१०) बडा उसको कहना चाहिये जो यथार्थमें बडा होकर छोटा जाने १, दूसरेका दुःख दूर करे २, यथाशक्ति दाता और दानी हो ३, धनवान् दयावान् हो ४, मिथ्या-शब्द न बोले ५, सच्चा व मीठा बोलने वाला हो ६, संत महात्मा गुरुका सेवक हो ७, गौ ब्राह्मणका पूजक हो ८, परस्त्री परद्रव्यको बिष्ठा जाने ९, कामको, क्रोध, मद, लोभ मोह न हो १०, आशा, वासना, तृष्णा न हो ११, शील, लज्जा आदर भाव हो १२, मन कर्म वचनसे परोपकारी हो १३, जगत्के विषयसे त्याग वैराग्य हो १४, माता पिताकी सेवा

करता हो । परिवार पालनहार हो १५, माया ब्रह्म जगत् तीनोंको जानता हो १६, ऐसे और अनेक लक्षणमें प्रधान हो तब वह बडाई पावेगा ॥

(११) अनेक व्यवहार जो सृष्टिमें हैं कुछ अपने आधीन नहीं हैं । हम रूपी अहंकार तथा मैं रूपी अज्ञानको मिथ्या जाने चार अन्तरिंद्रिय अपने आधीन नहीं १, पंच ज्ञान इंद्रियें अपने आधीन नहीं २, पंचकर्मेंद्रिय अपने आधीन नहीं ३, पंच प्राणवायु अपने आधीन नहीं ४, पंच विकार तीन ताप अपने आधीन नहीं ५, तीनों ताडीका बदलना अपने आधीन नहीं ६, आंखका खुलना बन्द होना अपने आधीन नहीं ७, चार प्रकारकी अवस्था अपने आधीन नहीं ८, निद्रा मैथुन आहार अपने आधीन नहीं ९, स्त्री अर्धांगी है, अपने आधीन नहीं १०, पुत्र अपना रूप है । अपने आधीन नहीं ११, अनेक प्रकारकी बीमारी अपने आधीन नहीं १२, सर्व प्रकारकी हानि लाभ अपने आधीन नहीं १३, ठोकर लगना झाडपरसे गिरना अपने आधीन नहीं १४, सांपका काटना, बिच्छू मारना अपने आधीन नहीं १५, लडका होना लडकी होना अपने अधीन नहीं १६, कोई व्यवहारका शरीर अपने आधीन नहीं है । जो इस शरीरको अपना जानता है, वह निपट मूर्ख है यह भूल जबतक नहीं छूटे तबतक वह दुःख सुखका मूल बना रहेगा; इस भ्रमका नाश होने वास्ते अथवा दुःख छूटने वास्ते जो वेद पुराण शास्त्र देखा तो कुछ बोध नहीं हुआ । चार

वेद चार प्रकारका है और अठारह पुराणोंमें अठारह कथा हैं और छः शास्त्रोंमें छः उपदेश हैं, इसके सिवाय तीन शास्त्र और हैं उनका मत जुदा है ॥

(१२) कोई ग्रंथमें ब्रह्म पुरुष है १। कोई ग्रंथमें ब्रह्म स्त्री है २।कोई ग्रंथमें ब्रह्म नपुंसक है ३। कोई ग्रंथमें कर्म प्रधान है ४।कोई ग्रंथमें निष्कर्म प्रधान है ५। कोई ग्रंथमें आत्मा ब्रह्म है ६।कोई ग्रंथमें निष्कर्म आत्मा जीव है ७। कोई ग्रंथमें वैष्णवमत प्रधान है ८। कोई ग्रंथमें शाक्तमत प्रधान है ९। कोई ग्रंथमें जीव मारना दोष है १०। कोई ग्रंथमें बलिदान हवन करना मुक्तिदाता है ११। कोई जनमार्गी हैं। उनका ग्रंथ जुदा है १२। कोई ग्रंथमें नामकी रटन प्रधान है १३। कोई ग्रंथमें ब्रह्म निरंजन निर्गुण निराकार हैं १४।कोई ग्रंथमें ब्रह्म चौबीस अवतार होकर अनेक लीला करता है १५। कोई ग्रंथमें जगत् मिथ्या है १६। कोई ग्रंथमें जगत् सत्य है विराट रूप है १७। ऐसे अनेक उपदेश श्रवण करके महाभ्रम उत्पन्न होता है। शांतिके बदले भ्रांति प्राप्त होती है ॥

(१३) संत महात्मा सिद्ध आचार्य जो संसारमें प्रसिद्ध हैं उनका मत अनेक प्रकारका है—कोई शैव है १। कोई शाक्त है २।कोई रामानंद है ३। कोई नानकशाई है४।कोई कबीरपंथीहै ५। कोई दादूपंथी है ६। कोई रामसनेही है७।कोई तुकारामी रामदासी है ८।कोई मानभावु है ९। कोई सत्यनामी है १०। कोई नाथ है ११। कोई परनामी है १२।

कोई विद्रावनी है १३। कोई नंगावत जंगम है १४। कोई पलटूदासी है१५।कोई अघोरमत है १६।ऐसे अनेक मत हैं॥

(१४) अनेक प्रकारकी तपस्या करते हैं, कोई मौन धारण करता है १। कोई शूलशय्यापर शयन करता है २। कोई जलशयन लेता है ३। कोई पंच धूनी तापता है ४। कोई समाधी लगाता है ५। कोई खडा रहता है ६। कोई हाथ उठाता है ७। कोई इंद्रियमें कड डालता है ८। कोई नंगा रहता है ९। कोई वज्र लंगोट चढाता है १०। कोई दंड कमण्डलु धारण करता है ११। कोई झूला लटकता है १२। कोई नख जटा बढाता है १३।कोई विष्ठा, मूत्र खाता है१४। कोई नींब खाता है १५। कोई दूध पीकर रहता है१६। इसी प्रमाण लाखों तपस्या व योग प्रसिद्ध हैं। जितने आचार्य हैं उतने मत हैं, आगे भी अनेक मत प्रगट होंगे अपने अपने मतमें सब सिद्धहैं,कोई छोटा नहीं हो सकता है॥

(१५) सजन कसाई शालिग्रामकीमूर्तिसे मांसतोलता था १। रोहिदास चमार जूता बनाता था २। नामदेव दरजी कपडा सीता था ३। सैना नाऊ हजामत बनाता था ४। कबीरदास कपडा बुनता था ५। गणिका पिंगला नाचना गाना करती थी ६। अजामिल भील डाका मारता था ७। निषाद मच्छी मारता था ८। धनाजाट हल जोतता था९। पीपा कपडा छापता था १०। कालु भोई मच्छी खाता था ११। कूबरी जूंठा खाती थी १२। जटायू धूर खाता था १३।

शबरी भीलनी मांसाहारी थी १४। कागभुशुंड विष्ठा खाता था १५। गरुड सर्प खाता था १६। ऐसे अनेक प्रकारके नीचकर्म करनेवाले परम भक्त और देवता समान हो गये उनको सहजमें भगवान् भी प्राप्त हुए ॥

(१६) वर्तमानमें जो संत महात्मा कलियुगमें हैं उनकी करामात सिद्धि अनेक प्रकारकी प्रसिद्ध हैं, कोई मोकलको ताबेमें रखता है १। कोई जिन्नातको वश कर लेता है २। कोई सब प्रकारका मेवा विलायतसे क्षणमात्रमें मँगा देता है ३। कोई सेरों मनों मिठाई गुप्तसे मँगवा देता है ४ कोई हाजरातमें जिन्नातके बादशाहको भय फौज कचहरी बुलाता है और उससे गुप्त भेद विचार कर लेता है ५। कोई गडा हुआ धन दिखा देता है ६। कोई आदमीको बीमार कर देता है ७। कोई बावला बना देता है ८। कोई मूठसे मार डालता है ९। कोई अगिया वैतालसे आग लगा देता है १०। कोई आसनके नीचेसे रुपैया निकालता है ११। कोई दूसरेके घरसे पदार्थ मँगवा लेता है १२। कोई अपने शरीरको टुकडा करके दिखाता है १३। कोई औरतके पगर लगा देता है १४। कोई आठ प्रकारका तंत्र जो मोहन, वशीकरण, आकर्षण, स्तंभन, विद्वेषण, शांति, उच्चाटन, मारण, प्रसिद्ध कर सकता है १५। कोई लोप हो जाता है १६। कोई ज्योति खडी करता है १७। कोई सोना चांदी बनाता है कोई गुटिका बनाता है १९। कोई शेर होजाता है २०। कोई जादू दूस-

रेको तोता बकरा बैल बनाता है २१। कोई परीको वश करता है २२। कोई यक्षिणी साधन करता है २३। कोई आराताका मंत्र जानता है २४। कोई नजरबंद खेल जानता है २५। कोई भूत प्रेतकी बाजार भराता है २६। कोई बांझको लडका देता है २७। कोई नित्य रुपैया दो रुपैया गुप्तसे पाता है २८ कोई अन्नपूर्णाको बुलाता है २९। कोई देवका दर्शन करा देता है ३०। कोई पानी बरसाता है ३१। कोई रातको पत्थर बरसाता है ३२ ऐसे नाना प्रकारके करामात सिद्धि वाले माहात्मा कलियुगमें प्रगट हैं, देशांतरमें उनका नाम प्रसिद्ध है, जबसे तुकाराम सदेह वैकुंठको गये उनके सिवाय लाखों दुनियादार गृहस्थ कालबेलिया संयोगी हिंदू मुसलमान साधुका रूप बनाकर अच्छे दिगंबर खाकी होकर संसारको लाखों सिद्धि करामात दिखाकर लुटते हैं और इन्द्रजाल आदिक ग्रंथ पढकर सर्व प्रकारका यंत्र मंत्र तंत्र जान लेते हैं,रुपैया पैदा करनेके उपरांत स्त्री लेकर भाग जाते हैं, सर्व प्रकारका खोटा कर्म करते हैं, इस वक्त हिंदुस्थानमें हजारों पाखण्डी साधु बंदीखानेमें चक्की चलाते हैं. उनके संगसे ज्ञान नहीं होगा और कुछ भी बोध नहीं हो सकता। सर्वभेष ऊपर लिखे प्रमाण गृहस्थ होगया । भेष बनानेका कुछ माहात्म्य नहीं रह गया ।

(१७)गृहस्थ–आश्रम धर्मशास्त्र जो उनकी मर्यादा है स्वप्नमें नहीं देखते–गुरु धनवान् खोजते हैं १। गयाश्राद्ध-

क्रिया कर्म बडाई निमित्त करते हैं २। लडकी बेचकर पैसा खाते हैं ३। दान पुण्य कर्जा समान दंड प्रमाण अदा करते हैं ।४। तीर्थ यात्रा माल खरीदने तमाशा देखने जाते हैं५। जो जानकर बूढा मरनेके समान हो गया वह दान देते हैं६। साधूसंतको सडी ज्वारी तथा उसका आटा देते हैं ७। देव-निमित्त हलका कपडा और खोटा पैसा चढाते हैं ८। अपने देशपरिवारकी मर्यादा छोडकर दूसरे विलायतका वस्त्र श्रृंगार धारण करते हैं ९ । ब्राह्मण संस्कृत विद्या छोडकर अंग्रेजी फारसी पढता है; पाद्री डाक्टर होकर वेद खंडन करता है, मुर्दा फाडता है, गायका रुधिर निकालता है, सेवा चाकरीकी नोकरी करता है, इसी प्रमाण लाखों खोटा कर्म करता है १०। क्षत्री जो राजा शूर वीर होते थे वे खेती मजूरी दंडी तौलाना वैश्यका कर्म शूद्रका कर्म करते हैं नाऊ बारीके समान झूंठा खाते हैं। स्त्री पुरुष छोडकर दूसरे शूद्रके पास जाती है । लडकी बेचकर पैसा लेते हैं और सर्व मध्यम कर्म करते हैं ११। वैश्य जो महाजनी करते थे और झूटा नहीं बोलते थे वे लाखों रुपेयोंका सट्टा करते हैं, व्याजका व्याज लेते हैं, ब्राह्मण साधु देवतासे व्याज नफा खातें हैं, चमडा दारू हड्डीका व्यापार करते हैं १२। शूद्र सब विद्वान् हो गये, गीता भागवत रामायणका पाठ करते हैं; जनेऊ पहिरते हैं, तिलक लगाते हैं कथा सुनते हैं, त्रिकाल गायत्री पढते हैं १३। पुत्र माता पिताका आदर नहीं

करता १४ । चेला गुरुको नहीं मानता १५ । स्त्री पुरुषको नौकर समान जानती है १६ । जो व्यवहार संसारी गृहस्थोंका धर्मशास्त्र प्रमाण रहा वह सब जाता रहा ॥

(१८) पशुयोनि जो अनादि चाल चलती थी बदल गई, गौ ऐसी पूजनीय विष्ठा खाती है, बकरी समान दूध देती है १। कुत्ता बारह मास भोग करता है २। काग पक्षी सब रात बोलता है ३ । चकवी चकोर रातको जुदा नहीं होते और आग नहीं खाते ४। घूघू दिनको बोलता दीखता है ५। मोर पक्षी विषय करता है ६। मछली विना पानीके पहाडमें रहती है ७।कोला जानवर दिनको बोलता दीखता है ८ । खंजनपक्षी वर्षा ऋतुमें दरशाती है ९ । कोयलका अंडा काग सेवन नहीं करता १०। हाथी शहरमें बच्चा देता है ११ । कूकडा सुबहके वक्त नहीं बोलता १२ । बैलका सांड भैंसपर चढता है १३। पपैया नदी कुएका पानी पीता है १४। सर्पके मणि नहीं होती १५। हाथीके गजमुक्ता नहीं होती १६ । ऐसे सब पशुपक्षी कलियुगमें अनादि चाल छोडकर कुचाल चलते हैं ॥

(१९) जड योनि वनस्पति आदिकका भी स्वभाव कुछ बदल गया । सारा व्यवहार उलटा पलटा हो गया, जिस बीडमें लाख पूला घास होता था, अब पंचान हजार होता है १। जिस झाडमें दश हजार फल फूल लगते थे अब पांच हजार लगते हैं २ । जिस खेतमें बीस मन धान होता था

अब दश मन होता है ३। जिस कुएका पानी मीठा होता था अब खारा होता है ४। वर्षा आगे पीछे होकर समय पर नहीं होती ५। जिस पृथ्वीका महसूल सौ रुपैया था अब हजार रुपैया हो गया ६। बहुत नदी नाला जो हमेशा भरे रहते थे तथा बहते थे अब सूखकर बंद हो गये ७। सोना चांदी आदिक धातु कम निकलती हैं, लोहा बहुत निकलता है ८। समुद्रमें मोती बडा मोलवाला कम निकलता है ९। झन्ना पन्नाकी पृथिवीमें हीरा बडा भारी नहीं निकलता १०। जडी बूटी औषधीमें वह पिछला गुण नहीं रहा ११। फल फूल खानेवाले झाड जंगली जो हरसाल फलते थे अब दिनों दिन कुछ नामको फलते हैं १२। भूचाल-तूफान-आंधी-बुंडल पहिलेसे अब बहुत आता है १३। मरीकी बीमारी जिसको है जा ऊबा कहते हैं हरसाल आती है १४। नदीपूरसे हरसाल हजारों गांव बह जाते हैं १५। टीडी हरसाल खेत खा जाती है १६। ऐसे अनेक प्रकारकी रीतिं जडयोनिकी पहिलेसे अब बदल गई ।

(२०) प्रत्यक्ष देखो। भविष्यमें यह निश्चय है कि, हिंदुस्थानका संपूर्ण धर्म नष्ट हो जावेगा छःसौबरस इस द्वीपमें मुसलमामानका राज्यरहा १। डेढसौ बरससे अंग्रेजी सरकारका राज्य है २। सातसौ बरससे हिंदूका धर्म विना राजा नष्ट होता जाता है ३।पहिले लाखों आदमी मुसलमान हो गये, अब क्रिस्तान होते जाते हैं ४। पाद्री लोग गांव गांव बजा

रेमें खडे होकर वेद शास्त्र पुराण देवता मूर्तिकी निंदा करते हैं ५। कुछ कालसे हैद्राबादमें नेचर मत प्रगट हुआ है, बडे बडे आदमी उस मतमें चले गये ६। मुंबईमें ब्रह्मसमाज मत प्रगट हुआ है, हजारों आदमी उस मतके अधिकारी हो गये और होते जाते हैं ७। अच्छे अच्छे विद्वान् ब्राह्मण क्षत्रिय और मुसलमान अंग्रेजोंके साथ बैठकर भोजन करते हैं ८। अच्छे अच्छे शहरमें सब गृहस्थ चारों वर्ण नलका पानी पीते हैं ९। जो लोग सौला पहिरते थे अब चमडेका वस्त्र पहिरते हैं १० । सुवर्ण रूपा ताम्र आदिकके बर्तनमें पूजन भोजन जलपान करते थे, अब कलई गिलट कोपर बरा-समें सर्व कार्य होता है ११। इस जंबूद्वीपमें अथवा चारों धामके भीतर गौ मारना नहीं होता, अब अच्छी अच्छी पुरी व धाममें नित्य गौ मारी जाती है १२ । अस्पतालमें दारू मिली हुई दवा अथवा मांस मिली हुई चारों वर्ण एक पात्रमें पीते हैं १३। गौका रुधिर बचेको माता गोदकर उसके नसमें लगाते हैं । उसका अंश इसके शरीरमें लय हो जाता है, सारा घर इस हिसाबसे भ्रष्ट हुआ १४। रेल या जहाज लक्कडके पाटसमान है, उसपर जो कुछ भोजन करे सर्व जातका छूना सिद्ध हो गया १५। वेद पुराण शास्त्र पंडित लोग शूद्र मुसलमानके निकट नहीं बोलते थे, अब वह ही वेद अंग्रेजमुसलमान सब पढते हैं १६। आगेके महात्मा कविलोग कलियुगका गुण जैसा कह गये हैं उसके प्रमाण उससे ज्यादा हो रहा है ।

(२१)आगे एक पुरुष आठ स्त्री रखता था, अब एकका समाधान नहीं होता, वही स्त्री दूसरेके पास जाती है। कोई पुरुष साथ ले जाता है बुलाकर लाता है १। बारह बरसकी लडकी पहिले वस्त्र नहीं पहिरती थी, अब उसके लडका होता है २।आगे कोई मर्द सृष्टि विरुद्ध काम नहीं करता था अब गांवमें चौथाई आदमी सृष्टिविरुद्ध काम करते हैं स्त्रीसे ज्यादा उनका मान है ३। आगे कोई अज्ञानी अधर्मी परस्त्रीमें मन नहीं करता था, अब माबहिनबहूबेटीसे अच्छे अच्छे नामवाले खोटा काम करते हैं ४। वैश्य महाजन जैन वाले जीव रक्षा निमित्त सरकारमें लाखों रुपैया पांचोसनका देकर दुकान दारू मांस भडभूजा।आदिकको बंद कराते थे और रातको रसोई नहीं खाते थे, मुँह बाँधते थे, अब वे कपासका रेचा चलाते हैं, लाखों जीव क्षणमात्रमें जलकर मर जाते हैं, चरबी आदिक गौकी मोल लेते हैं.५।सट्टाका काम पूरा जूआ है, चिट्ठी डालना,घुड दौड करना वर्षाका निश्चय करना ये सब जूआ है। वे हाकिम अमीर महाजन व्यापारी सब करते हैं ६। आगे कोई कर्ज उधार जो लेता था कागज बगैरह कुछ नहीं लिखाता था, वायदेपर दे आता था, वह मर जाता था तो उसका बेटा हाथ बांधकर देता था अब जो! कर्ज लेता है स्टाम्पपर कागज लिखता है, रजिष्टर करता है,जमानत देता है,पीछे अदा करने समय ये विचारी सब झूठ करके बेइमान हो जाताहै औरकदाचित तीन बरस

महाजन न मांगे तो उसको कानून बताते हैं कि, मियाद जाती रही। कचहरीमें गंगा गौ कर्म ईमान कर लेते हैं७। आगे दो आदमी झगडा करते थे, हाकिम उनका झगडा मिटाता था, दोनोंको दंड बक्षीस करता था, अब वह झगडा तहशील दार मिटाता है, तो डिपटी कमिशनर पलटाता है, वह फैसला कमिशनर झूठ कर देता है, कमिशनरका किया रेसिडेंट उलट देता है, उसका किया हायकोर्टमें रद्द होता है, उसका किया विलायतमें झूंठा होता है, कोई हाकिम को दंड नही होता सिद्धांतमें यह व्यवहार दुकानदारी है ८। आगे किसीकी बहू बेटी कुचाल चलती थी तो घरवाले मारपीट करके सुचाल कर लेते थे, राजा कुछ नहीं बोलता था अब सीको मारो तो फौजदारीमें सजा मिले, जिसके साथ राजी हो जावे उसकी है ९। आगे कोई साधु पाखंडी कमाईके वास्ते स्व- रूप बनाता था तो हम लोग तथा अखाडेवाले उसका इम- तहान लेते थे; अगर पूरा आता था तो छोड देते थे, नहीं तो सब जायदाद उसकी जप्त कर लेते थे और गधेपर सवार करके निकाल देते थे। अब चाहे सिद्ध महात्माका स्वरूप बनाकर चोरी छिनारा करें। हजारों करते हैं सिद्ध महात्मा बदनाम होते हैं १०। आगे हिंदुस्थानमें ऐसे बलवान् राजा होते थे कि, दैत्यों से युद्ध करते थे, और हजारों सिपाहियोंको अकेले मारकर हटा देते थे, अब उसी खानदानमें ऐसे राजा लोग हैं कि, जब दोनों तरफसे दो आदमी बगलमें हाथ देते

हैं तब खडे होते हैं ११। राजा बलि, राजा कर्ण, राजाभोज, राजा नृग, राजा विक्रम, राजा नल, राजा रघु, राजा परीक्षित्, राजा हरिश्चंद्र ऐसे दानी हो गये कि, नित्य एकभार सोना देते थे, जहां संकल्पकी गौ खडी होती थी वहां तालाब हो जाता था, करोड गौ नित्य दान देते थे, अब उसी गद्दी पर जो राजा हैं नौकरोंसे व्याज लेते हैं, साधु ब्राह्मणसे कर लेते हैं, उसपर भी लाखों रुपैयोंके कर्जदार हैं१२। आगे कोई झूठी सौगंध खाता था तथा गंगा उठाता उसको तुरंत दंड होता था अब जिलेकी कचहरीमें सौ पचास आदमी झूठी गंगा उठानेके वास्ते सदा बैठे रहते हैं, उनका यही उद्यम हो गया वकील बालिस्टर जाल फरेबकी रोटी खाते हैं १३। आगे पिताके जीते हुए पुत्र नहीं मरता था और एक पुत्र सबके होता था अब पितासे पहले पुत्र मरता है, दोको औलाद है तो चार को नहीं है, सब जगत् औलादका दुःखी है जिसके है भी तो शत्रु समान है१४।आगे जो धान घी तैल एक रुपैयेको मिलता था वह अब पांच रुपैयोको नहीं मिलता, कारण दूसरे द्वीपको चला जाता है १५। आगे जो गांजा, भांग, दारू, अफीम एक रुपैयोको मिलता था अब दस रुपयोंपर नहीं मिलता इस प्रकार अनेक व्यवहार जगत्का पहिलेसे प्रतिकूल हो गया, आगे नित्य सर्व व्यवहार परमार्थका हो जावेगा । धर्म, दान पुण्य डूब जावेगा । लाखोंमें एक सज्जन पुरुष होगा,

सर्वमनुष्य परसंतापी होंगे, उसका विस्तार सारी उमर पूरा नहीं हो सकता, इस कारण सूक्ष्म वर्णन किया गया, विद्वान् ज्ञानी जान लेवेंगे। ऐसे जगत्को और युगको अपना नमस्कार है और चौरासी लाख सृष्टिको अपनी वंदना है। निराकारसे भी वंदना है कि, ऐसे युगमें मेरा जन्म इन्द्रपदवीपर भी न देवे और जल्दी मेरी निर्मल आत्मा शुद्ध स्वरूपको इस जगतको विषयसे निर्मोह करके अपने निराकार प्रकाशमें मिला लेवे। मेरेको इस संसारमें एक क्षण एक कल्पके समान व्यतीत होता है, श्रोता वक्ता ग्रंथके अधिकारी संबंधी मेरे संपूर्ण अपराधको मूर्ख अज्ञानी जानकर अपनी कृपासे क्षमा करके कुछ दोष न देवें। जैसा मेरी दृष्टि और बुद्धि ज्ञानमें आया था सूक्ष्म व्योहार सर्व संसारका जो प्रत्यक्ष दरशाया वर्णन किया ॥ १६ ॥

इति श्रीस्वामीजी महाराज बाबा माधवजी उदासी अयोध्यावासीके शिष्य अभिलाखदासकृत अभिलाखसागर गुरु शिष्य संवाद ग्यारहवां तरंग समाप्त ॥ ११ ॥

इति अभिलाख सागर समाप्त

मुद्रक एवं प्रकाशक:

खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,

खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, मुंबई - ४०० ००४.

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS